CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

3.3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निवेदिता

स्वामी सहजानन्द सरस्वती अंक

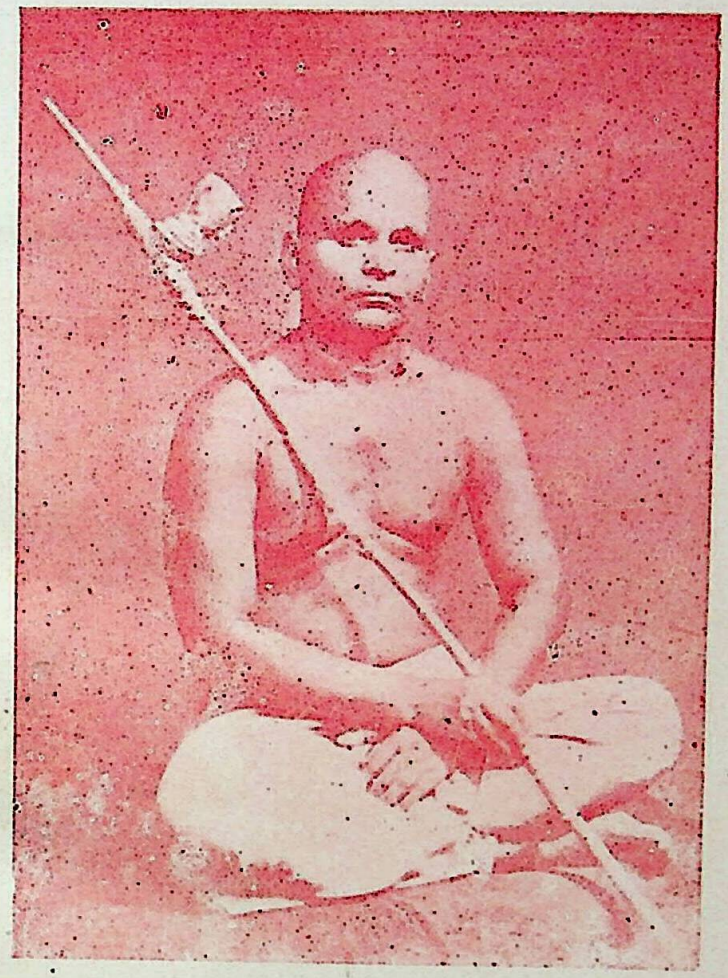

स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ महाविद्यालय, गाजीपुर

पत्रिका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding MKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निवेदिता

स्वामी सहजानन्द सरस्वती अंक

संरक्षक एवं प्रकाशक—डा० मान्धाता राय (प्रभारी प्राचार्य)

सम्पादक — डा० मान्धाता राय

सहयोग — रामचन्द्र शर्मा, डा० जगदीश्वर प्रसाद राय,
विद्याशंकर मिश्र, डा० उबैदा बेगम,
कमलनारायण पाण्डेय (छात्र प्रतिनिधि)

अंक - ३

मार्च १९८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभ कामना

आपका दिनांक २८-१-१९८१ का परिपत्र मिला। आपके सद्प्रयत्न के साथ मेरी पूरी सहानुभूति और सहमति है। यह एक बहुत ही उपयोगी और आवश्यक कार्य करने जा रहे हैं। इस अवसर पर तो मैं अस्वस्थ होने के कारण लाचार हूं लेकिन भविष्य में ऐसे प्रयत्न में सहयोग देकर या हाथ बंटाकर मुझे प्रसन्नता होगी आपके इस प्रयत्न की सफलता चाहता हूं।

गंगा शरण सिंह
१२. राजेन्द्र नगर
पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुझे प्रसन्नता है कि आपके महाविद्यालय की पत्रिका 'निवेदिता' का इस वर्ष का अंक 'स्वामी सहजानन्द सरस्वती अंक' के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है। स्वामी जी केवल पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार के ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में किसान आन्दोलन के प्रणेता थे। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में उनका महान् योगदान था। मुझे विश्वास है कि आपके इस अंक से उनके जीवन दर्शन तथा उनके द्वारा किसान समस्या के समाधान के लिये किये गये कार्यों पर समुचित प्रकाश पड़ेगा।

डा० हरिशंकर श्रीवास्तव
(प्रोफेसर इतिहास विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय)

—:)०(:—

दिनाँक १५-४-१९८१

अपार हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की ओर से निष्काम कर्मयोगी एवं किसान आन्दोलन के पुरोधा स्वामी सहजानन्द सरस्वती की पुण्य स्मृति में 'निवेदिता' का यह अंक प्रकाशित होने जा रहा है। पत्रिका में विद्वानों के विचार स्वामीजी तथा उनके द्वारा उठायी गयी सामाजिक समस्याओं के बृहत विश्लेषण के रूप में सामने आयेंगे जिनके निराकरण का दायित्व युवा वर्ग के कन्धे पर है। राष्ट्रीय उत्थान एवं नवनिर्माण में इस पत्रिका की अभूतपूर्व भूमिका होगी। मुझे आशा है कि इसके अध्ययन से सभी लाभान्वित होंगे। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन पर शुभ कामनायें व्यक्त करता हूं।

सुबोध नाथ झा
जिलाधिकारी, गाजीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Fundihg IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय

महाविद्यालय पत्रिका का तीसरा अंक आपके हाथों सौपते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है। इस अंक के साथ महाविद्यालय अपना १० वाँ वर्ष पूरा करने जा रहा है। महाविद्यालय का आरंभ जिस भव्य रूप में हुआ था उससे जनपद विश्वविद्यालय एवं अन्य लोगों को बड़ी आशा थी कि शीघ्र ही यह संस्था एक उच्च महाविद्यालय के रूप में सामने आयेगी। किन्तु अभागे बच्चे की तरह महाविद्यालय पर एक अभिशप्त छाया अल्पावस्था में ही छा गई और तबसे झंझावातों के बीच से गुजरते हुए इसे नियति के क्रूर थपेड़े सहने पड़ रहे हैं। कालिदास की तरह देखें कब यह अपना उद्धार कर पाता है

पत्रिका के सपादन का दायित्व मुझसे छीन लिया गया था जो एक वर्ष पूर्व अकारण सौपा गया। संस्था के उद्देश्य के अनुसार प्रकाशित करने के लिए इस अंक का नाम पूज्य स्वामी जी की स्मृति में 'स्वामी सहजानन्द सरस्वती अंक' रखा गया है। इस क्रम में उच्च स्तर की सामग्री संकलन हेतु, स्वामी जी के शिष्यों, श्रद्धालुओं और लेखकों को पत्र लिखा गया। यद्यपि जैसी इच्छा थी वैसा तो अंक नहीं निकल पा रहा है किन्तु मन को कहीं न कही ठहराव तो चाहिए ही। जिन महानुभावों ने सन्देश, लेख, संस्मरण कविता जिस रूप में कोई सामग्री दिया है उनके हम आभारी है। दण्डी स्वामी विमला नन्द सरस्वती, श्री केशव प्रसाद शर्मा (महामंत्री आर० एस० पी० आई०) पं० रामानन्द शर्मा, पाण्डेय सूर्यनारायण शर्मा, स्वामी शिवानन्द सरस्वती, चौधरी राजनारायण शर्मा और श्री शिवजतन सिंह के लेखों को प्रकाशित करते हुए हमें गर्व का अनुभव हो रहा है। मुझे विश्वास है कि इन लेखों के माध्यम से स्वामी जी के बारे में राजनेताओं द्वारा प्रचारित धुन्ध का पटाक्षेप होगा। इस अंक से स्वामी जी के जीवन दर्शन की कुछ भी झलक समाज के सम्मुख आ सकी तो हमारा श्रम सार्थक होगा।

इसी अंक से गाजीपुर सम्बन्धी एक दो लेखों को प्रकाशित किया जा रहा है। पत्रिका में उर्दू के लेख के प्रकाशन का आरम्भ भी इस अंक के साथ हो रहा है। विश्वास है इस कड़ी में आगे महत्वपूर्ण रचनाए प्रकाशित होंगी।

महाविद्यालय परिवार में वृद्धि की दृष्टि से यह वर्ष बहुत शुभ रहा है। प्रवक्ता वर्ग में डा० अशोक राय (प्राचीन इतिहास), श्री शशिकान्त राय (दर्शन शास्त्र) और श्री ओंकार नाथ राय (भूगोल) के आगमन से जहां हमारी संख्या बढ़ी है वहीं चतुर्थ श्रेणी के मृतक कर्मचारी स्व० रामकृत राम शर्मा की विधवा पत्नी श्रीमती दुलारी देवी को उनके रिक्त स्थान पर नियुक्त कर एक स्वस्थ एवं अनुकरणीय परंपरा स्थापित हुयी है। छात्र संख्या भी पिछले वर्ष की तुलना में लगभग १०० बढ़ी है। स्थानाभाव एवं विस्तार भय से कई लेखों में काट-पीट करनी पड़ी ; इसके लिए हम उन सभी लेखकों के समक्ष विनम्रतापूर्वक क्षमा प्रार्थी हैं।

मान्धाता राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ महाविद्यालय, गाजीपुर

के

संस्थापक

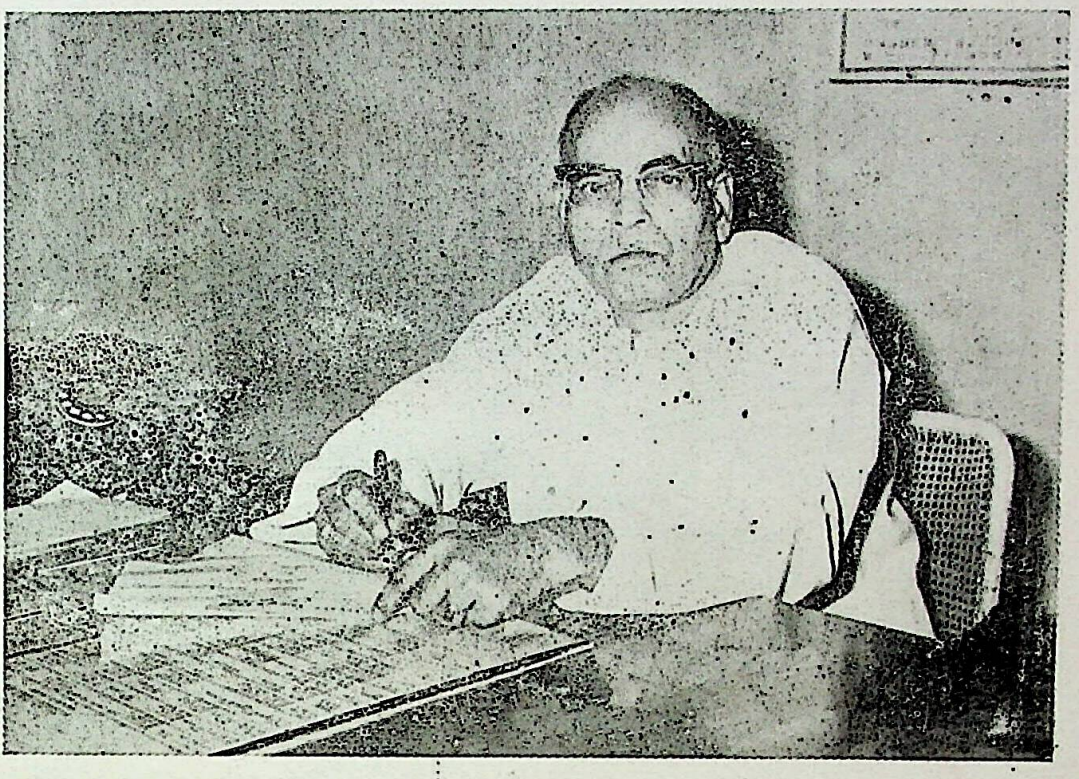

श्री केशव प्रसाद शर्मा

जिनके त्याग, सेवा, अथक प्रयास और स्वामी जी के प्रति अगाध श्रद्धा के परिणामस्वरूप १९७२ में गंगा के पावन सुरम्य तट पर इस शिक्षण संस्था की स्थापना हुई। शिक्षा के व्रती, राष्ट्र भाषा के प्रेमी एव भारतीय संस्कृति के अनुरूप शिक्षण संस्थाओं का संचालन करने वाले शर्मा जी विक्रम विद्यालय के प्रधानाचार्य, विक्रम विद्यालय ब्रांच, टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल एवं कन्या पाठशाला के संस्थापक हैं। इसके अतिरिक्त अनेक शिक्षण संस्थाओं के संचालन में आपने सक्रिय योगदान किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ
महाविद्यालय, गाजीपुर
के
सचिव/प्रन्बधक

श्री कृष्ण चन्द्र राय एडवोकेट
जिनके सबल नेतृत्व में महाविद्यालय सफलतापूर्वक
सचालित हो रहा है

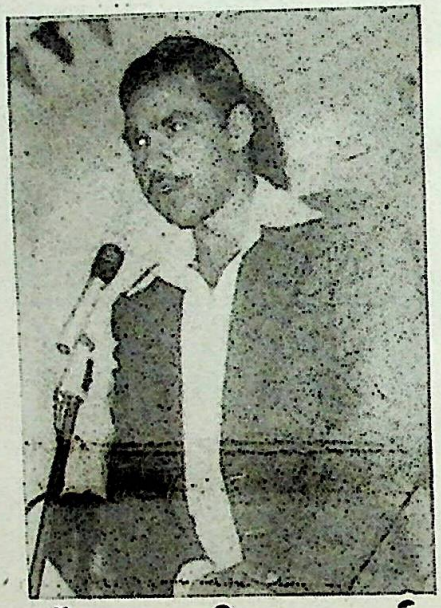

प्रभारी प्राचार्य डा० मान्धाता राय
छात्र संघ उद्घाटन के अवसर पर
धन्यवाद देते हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-क्रम

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं०
१- श्रीस्वामि वन्दना (संस्कृत कविता)	कन्हैया लाल शर्मा [बिहटा, पटना]	१
२- युग प्रवर्तक स्वामी सहजानन्द सरस्वती जीवन दर्शन और किसान समस्या	दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती [राजगुरू मठ शिवाला काशी]	२
३- जागो तुम एक बार (कविता)	मनोज कुमार सिन्हा, बी० ए० द्वितीय वर्ष	१४
४- मार्क्स, लेनिन और श्री स्वामी जी	रामानन्द शर्मा	१५
५- स्वामी जी के प्रति (कविता)	रामाकांत सिंह यादव, बी० ए० प्रथम वर्ष	१७
६- स्वामी सहजानन्द सरस्वती	चौधरी राजनारायण शर्मा [बैनी, रामपुर, अयोध्या, समस्तीपुर]	१८
७- स्वतन्त्रता के बाद स्वामी जी	स्वामी शिवानन्द सरस्वती	२०
८- स्वामी सहजानन्द की पुण्य स्मृति में (कविता)	जितेन्द्र कुमार सिंह 'राही' बी०ए०प्रथम वर्ष	२०
९- श्रद्धा का प्रतीक स्वामी सह० सरस्वती विद्यापीठ	केशव प्रसाद शर्मा [संस्थापक]	२१
१०- सहजानन्द भी क्या है (कविता)	सूबेदार सिंह यादव, बी० ए० प्रथम वर्ष	२२
११- दण्डी स्वामी सहजानन्द जी के दीक्षा गुरू	रासबिहारी राय शर्मा,दक्षिणटोला-डुमरांव,भोजपुर	२३
१२- मेरे गुरुदेव	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	२४
१३- किसान सगठन एक राष्ट्रीय आवश्यकता	डा० मान्धाता राय	२५
१४- स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जीवन दर्शन और किसान समस्या	डा० शिवमंगल राय [विक्रम विद्यालय हावड़ा]	२९
१५- ब्राह्मण्य और दण्डी स्वामी	पाण्डेय सूर्यनारायण शर्मा भूतपूर्व विधायक सिमरी; भोजपुर	३१
१६- स्वामी सहजानन्द सरस्वती और भारतीय किसान समुदाय	केशव प्रसाद शर्मा [महामन्त्री आर.एस.पी.आइ. एम. एल.]	३२
१७- भारतीय समाज के चतुर्दिक विकास के अग्रदूत-स्वामी जी	शिवजतन सिंह, [पुस्तकालयाध्यक्ष महाविद्यालय जहानगंज, गया]	३५
१८- स्वामी जी की क्रांति का प्रतीक-श्री सीताराम आश्रम, बिहटा	रामचन्द्र शर्मा, प्रवक्ता संस्कृत	३८
१९- किसानों का ममीहा	कैलाश नाथ राय, [वायरलेस इन्सपेक्टर]	४१
२०- स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जीवन दर्शन	डा०कुलदीपनारायण राय 'झड़प' बलिया	४२
२१- प्रेरणा के स्रोत-स्वामी सहजानन्द सरस्वती	स्वामी दयानन्द सरस्वती [अध्यक्ष तदर्थ समिति कलकत्ता]	४४
२२- बिखरा हुई आज मानवता (कविता)	प्रद्युमन चौबे, बी० ए० द्वितीय वर्ष	४५
२३- गाजीपुर के विकास की परियोजना	डा० जे० पी० राय, [प्रवक्ता भूगोल]	४६
२४- आधुनिक छात्र की प्रार्थना (कविता)	निर्मल कुमार श्रीवास्तव, बी० ए० द्वितीय वर्ष	५०
२५- मैं सोचता हूं कि	ओमप्रकाश राय, बी० ए० भाग १	५१
२६- कालेज स्टूडेन्ट (कविता)	गनेश राय, बी० ए० प्रथम वर्ष	५२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२७- अन्तरिक्ष विज्ञान–कृत्रिम उपग्रह	कमलनारायण पांडेय, संयुक्त मंत्री, बी०ए० भाग २	५३
२८- दो कविताएं	दिनेश कुमार राय, बी०-ए० द्वितीय वर्ष	५५
२९- कबीर जनसंघी थे	जितेन्द्र कुमार सिंह, बी० ए० प्रथम वर्ष	५६
३०- एक अच्छा सबक (कहानी)	दिनेश चौबे, बी० ए० भाग २	५७
३१- विद्यार्थी जीवन	चन्द्रिका सिंह यादव, बी० ए० द्वितीय वर्ष	५९
३२- भूगोल का वर्तमान स्वरूप	शशिकला राय	६०
३३- नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के उद्गार	संकलनकर्ता-ब्रह्मदेव राय, बी० ए० भाग २	६२
३४- मन का शृंगार न हो पाया (कविता)	नगेन्द्र प्रताप राय, बी० ए० प्रथम वर्ष	६४
३५- स्वर्ग-नरक [कहानी]	प्रमोद कुमार राय, बी० ए० द्वितीय वर्ष	६५
३६- सच्चा समाजवाद लाना है (कविता)	नागेन्द्र राय, पुस्तकालयाध्यक्ष	६७
३७- आक्रोश	सुरेन्द्रनाथ राय, बी०ए० भाग १ (स०क०मंत्री)	६८
३८- स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जीवन दर्शन किसान समस्या [गोष्ठी रिपोर्ट]	--	६९
३९- दीक्षान्त समारोह (रिपोर्ट)	--	७०
४०- छात्र संघ उद्घाटन समारोह (रिपोर्ट)	--	७१
४१- महाविद्यालय परिवार (सूची)	--	७३
४२- मैं कवि हूं (कविता)	मनोज कुमार सिन्हा, बी० ए० भाग २	७५
४३- जो हमारे बीच नहीं रहे	--	७६
1. Macbeth A Historical study	S. K. Singh, B. A. II	1
2. How to prepare for retirement	Pramod Kumar Rai, B. A. I	4
3. Puzzle (Poem)	Nirmal Kumar Shrivastava, B.A. I	5
१- भूल का एहसास	हसनू खान	१
२- अब इनका क्या होगा	एजाज अहमद खान	२
३- बागों बहार पे एक नजर	डा० आबिदा बेगम	४

मुद्रक – श्री दुर्गा मुद्रणालय, लालदरवाजा–गाजीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

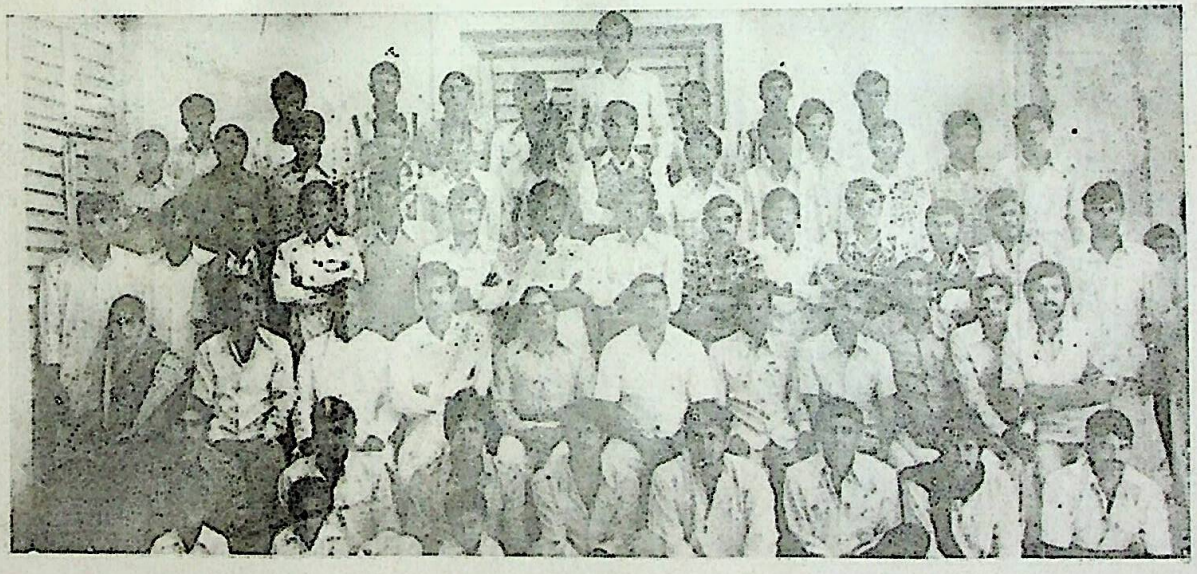

राष्ट्रीय सेवा योजना (१९८१-८२) के विशेष शिविर

के समापन समारोह के अवसर पर

जिलाधिकारी श्री राधेश्याम के साथ छात्र, प्राध्यापक एवं कर्मचारीगण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

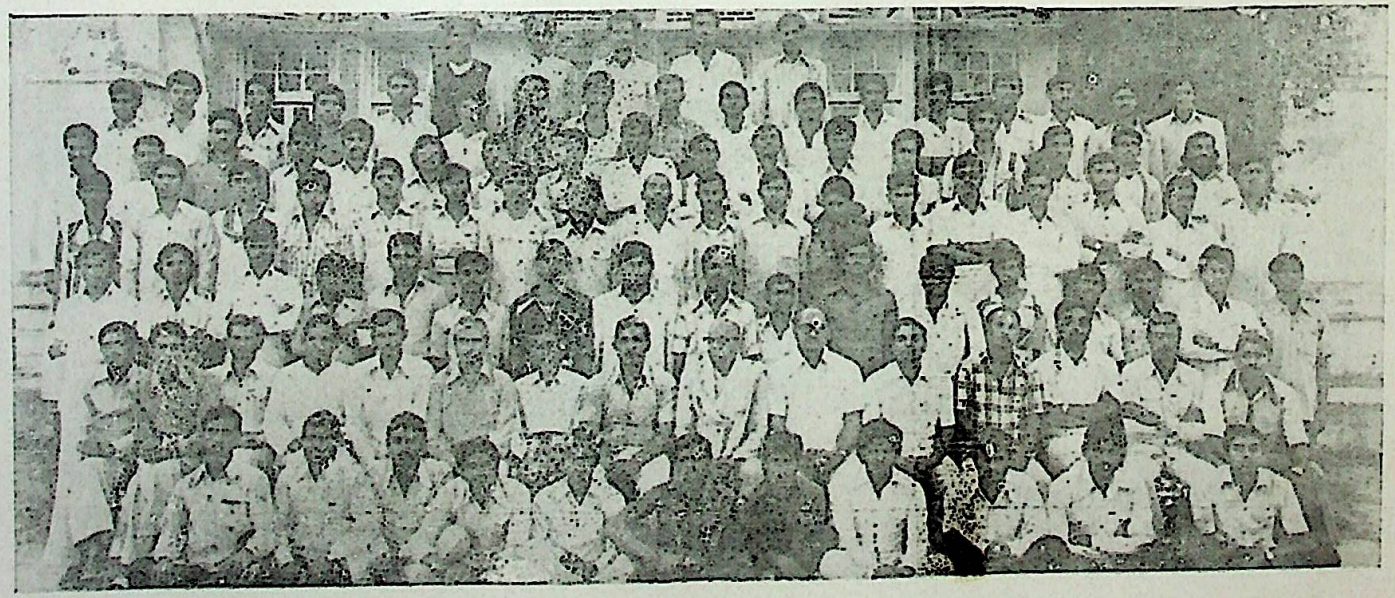

भूगोल परिषद् [१९८१—८२]

वार्षिक समारोह के अवसर पर

स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं मुख्य अतिथि डा० कृपाशंकर सिंह अध्यक्ष भूगोल विभाग उदित नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय पड़रौना देवरिया के साथ छात्र, कर्मचारी एवं प्राध्यापक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीस्वामि-वन्दना

—पं० कन्हैया लाल शर्मा

स्वामिन्, धर.धर पुनरवतारम् ।
धरामिमां भूयः सुपवित्रय देव, त्वमेकवारम् ।
वेदाः शोक—सागरे मग्नाः
वेदाङ्गेष्वाच्छन्ना विघ्नाः
दर्शनादि—सम्पूर्ण—वाङ्मयम्
याति साम्प्रतं घोरसंक्षयम्
आर्य-संस्कृतेर्मूलं सकलं जातं हि निराधारम् ।
शिक्षा-पद्धतिरनुत्तमा ते
त्वयैव साकं दिवं गताऽऽस्ते
क्वाध्ययनं क्व च तदध्यापनम्
सा प्रतिभा तच्छास्त्र—मन्थनम्
दिव्यं स्वं ज्योतिः प्रकाशय प्रसारय श्रुति-सारम् ।
रुदन्ति सन्तो हसन्त्यसन्तः
सतां सम्प्रति क्लेशोऽनन्तः
अन्तर्ज्वालामुखाः सर्वतः
स्फुटन्ति मानव—वर्ग—गर्वतः
कालानलमिव विश्व-व्याप्तं प्रशमय हाहाकारम् ।
कुरुते सर्वलोक आह्वानम्
जन-नायक, कुरु जन-कल्याणम्
सहजानन्दं त्वाऽनुनयामः
आगमनाय वयं विनयामः
भारत भूमिः करोति तव पदपद्मेषु नमस्कारम् ।
अस्माकं शास्त्रं यदि सत्यम्
अवतारस्य न वचनमसत्यम्
भगवद्—वाक्यं परं प्रमाणम्
गीताणस्तदिदं विज्ञानम्
अतोऽवतीर्य विधेहि विभो, सुखशान्तिमयं संसारम् ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग प्रवर्तक स्वामी सहजानन्द सरस्वती :

जीवन दर्शन और किसान समस्या

(स्वामी विमलानन्द सरस्वती)

महापुरुषों का परिचय उनके कार्यों से होता है। चरित्रवान पुरुष ही समाज के प्राण और मस्तिष्क होते हैं। यह सत्य है कि धर्म पयस्विनी का पुनीत प्रवाह सदा एकरस नहीं रहता, उसकी धारा कालक्रमानुसार अवरोध को पाकर किञ्चित शिथिल होती है, किन्तु समय पाकर सत्य अपनी दिव्य संजीवनी शक्ति के सहारे अपने पथ को विभिन्न रूकावटों को दूर करने में समर्थ होता है। अंधेरी रात के गत होने पर दिव्य अंशुमाली अपनी अलौकिक ज्योति से जिस प्रकार भूमण्डल को देदीप्यमान बना देता है, वैसे ही भगवान की दिव्यविभूतियां संस्कृति-जाह्नवी को स्पन्दनहीन देखकर सहसा मृतप्राय जातीय जीवन को अपनी अलौकिक प्रतिभा से अनुप्राणित कर देती हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, विशेषतः १८५७ की राष्ट्रीय क्रांति के बाद कुछ ऐसी दिव्य विभूतियां भारत में अवतरित हुई हैं जिनके आविर्भाव से युगान्तर उपस्थित हुआ है और राष्ट्र की सोयी आत्मा जाग उठी है, मानवता ने नई करवटें ली हैं और नई दिशा पाकर जनता नवयुग के प्रशस्त पथ पर आगे बढ़ी है। हमारे यतिराज स्वनामधन्य महर्षिप्रवर श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी ऐसी ही दिव्य विभूतियों में थे। आप ज्ञानियों में मूर्द्धन्य शुकदेव, व्यास, याज्ञवल्क्य, गौड़ पाद, गोविन्दमुनि एवं भगवान् आद्य शंकराचार्य की परम्परा के वीतराग संन्यासी थे। हमारे स्वर्गीय स्वामी जी ने अपनी विलक्षण दिव्यवाणी एवं लेखनी के सहारे दासता की लौह जंजीरों को तोड़कर भारत जननी को मुक्त करने, राष्ट्र के मेरुदण्ड किसानों में नयी चेतना फूंकने तथा समाज के सर्वांगीण विकासमें अभूतपूर्व चमत्कार दिखलाकर राष्ट्रीय स्वातंत्र्य-संग्राम के इतिहास में एक सुनहला पृष्ठ जोड़ दिया है, जो गौरवपूर्ण है और अपनी मौलिकता के कारण चिर-शाश्वत बना रहेगा।

आपका जन्म स्थान उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले का देवाग्राम है। आप काश्यपगोत्रीय जिझौतिया (जजाकभुक्ति) ब्राह्मण कुल में अवतरित हुए थे। वि०सं०१९६८ में आपने काशी जाकर सन्यास ग्रहण किया। आपने भगवान की खोज में घरबार त्यागा, तीर्थों को ढूंढ़ा, जंगल, गुफा और पर्वत-कन्दराओं की खाक छानी। काशी, मिथिला नदियां-शांति आदि स्थानों में आसन मारकर वेद, षड्दर्शन एवं शास्त्र-पुराणों को हृदयङ्गम किया—उन्हें चाटा और हजम किया, किन्तु कहीं भगवान के दर्शन नहीं हुए। उन्हीं के शब्दों में उनका भगवान किसान—मजदूरों में मिला। स्वामी जी केवल एक दार्शनिक ही नहीं थे, वे जीवन और जगत् के द्रष्टामात्र नहीं थे, किन्तु दोनों के उद्धारक थे। वे सत्य के अवतार कहे जा सकते हैं। वे सत्य के प्रतिपादक ही नहीं उसके प्रचारक थे। स्वामी जी की आत्मकथा से झलकता है कि वे संस्कार सम्पन्न पुजारी और धार्मिक विभूति थे।

पूजा मनुष्य का ब्रह्म (दिव्य) तक पहुंचने का प्रयत्न है। धर्म वह अनुशासन है, जो अन्तरात्मा को स्पर्श करता है और हमें बुराई और कुत्सितता से संघर्ष करने में सहायता देता है, काम, क्रोध और लोभ से हमारी रक्षा करता है, नैतिक बल को उन्मुक्त करता है, संसार को बचाने के महान् कार्य के लिए साहस प्रदान करता है। व्यक्ति और शाश्वत् के बीच लुप्त हो गये सम्बन्ध को पुनः स्थापित करना ही धर्म का लक्ष्य है।

आत्मा की भी ठीक वैसी ही आँखें हैं, जैसी शरीर की हैं, उन आंखों से वह परम सत्य का ज्ञान प्राप्त करती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है और परमपूर्णता से, जो परमात्मा है, प्रेम करना सीखती है। जैसे आँख आकाश को देखती है, वैसे ही साधक लोग परमात्मा के उच्चतम निवास स्थान को देखते हैं।[1] विचारों की कोई भी गंभीर साधना, विश्वासों की कोई भी खोज, सद्गुणों के अभ्यास का कोई भी प्रयत्न, ये सब उन ही स्रोतों से उत्पन्न होते हैं, जिनका नाम धर्म है। न्यायपूर्वक आचरण करना, सौन्दर्य से प्रेम करना, और सत्य की भावना के साथ विनम्रतापूर्वक चलना यही सबसे ऊंचा धर्म है।

वेदान्त साध्य को एक चरम सत्य के रूप में देखता है। इसमें सामाजिक परिस्थितियों की एक काल्पनिक व्यवस्था के रुप में नहीं, किन्तु एक ऐसी आध्यात्मिक सत्ता के रुप में साध्य की कल्पना की गयी है जिसमें मनुष्य अपनी चरमपूर्णता प्राप्त कर लेता है। यह आध्यात्मिक सत्ता प्रत्येक व्यक्ति की सत्ता है। पूर्णता प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है और प्रत्येक मनुष्य अपने में साध्य है।

मनुष्य की मानवीय तथा पाशविक प्रवृत्तियों का आध्यात्मिकीकरण ही एकमात्र साधन है जिसके द्वारा मनुष्य की शारीरिक तथा भौतिक आवश्यकताओं का जीवन के उच्चतम आदर्श से सामञ्जस्य हो सकता है। अपने तथा समस्त प्राणिजगत् के व्यक्तित्व के तत्वरूप में आत्मा का दर्शन तथा इसके फलस्वरूप समस्त प्राणिजगत् के एकत्व का अनुभव ही एक ऐसा सिद्धान्त है जिसके आधार पर एक स्थायी और संतोषकर सामाजिक व्यवस्था का विधान अथवा स्थापन हो सकता है। सर्वात्मभाव ही मनुष्य की सबसे बड़ी साधना और मानवजाति की मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय है।

डा० राधाकृष्णन के शब्दों में 'साधु भावना ही उच्चतम नैतिकता है। जब जीवन के प्रति एक साधु दृष्टिकोण प्राप्त हो गया तो समस्त आचरण स्वाभाविक रूप में साधु होगा। जब नैतिक नियम हमारे व्यक्तित्व में अन्तर्भूत हो गया तो नैतिकता हमारे व्यक्तित्व की प्रकृति बन जाती है। जब हम अपने मूल स्वरुप के रूप में चरम सत्य का साक्षात्कार कर चुके तो श्रेय हमारा स्वभाव बन जाता है। कोई भी कर्म हम करेंगे वह स्वभावतः साधु होगा। जब अपनी आत्मा के साथ समस्त प्राणिजगत की आत्मा के एकत्व का अनुभव कर सर्वात्मभाव की प्राप्ति कर चुके तो हमारा समस्त आचरण विश्व के निश्रेयस के लिए होगा।

अपनी आत्मकथा के 'योग और भ्रमण' प्रकरण पृष्ठ ५४-५५ में स्वामी जी ने अपने प्रारम्भिक जीवन की मनोदशा और वैचारिक-संघर्ष की जो तस्वीर खींची है उससे उनकी अन्तर्दृष्टि और उनके निरन्तर प्रगतिशील विलक्षण व्यक्तित्व का सहज ही अनुमान किया जा सकता है। स्वामी जी लिखते हैं--"संन्यास लेने के पूर्व मेरे हृदय में रह-रह के यह विचार आता था कि 'आखिर मेरा यह पढ़ना-लिखना सिर्फ इसलिए है न कि धन कमाकर खाऊं-पहनूं या दूसरों को खिलाऊं-पहनाऊं ? लेकिन जंगल के जानवरों और पशुओं को कौन खिलाता है ? वे तो स्वयं न खेतीबारी करते हैं, न खाने-पीने की सामग्री जुटाने की चिन्ता ही रखते। तो भी अच्छी तरह खाते-पीते ही हैं। फिर मैं क्यों इसके लिए फिक्रमंद होकर मरूं ? मुझे तो कोई दूसरा ही खिलाये-पिलायेगा।" यही विचार मुझे परेशान कर रहा था और आखिर इसी ने मुझे घर-बार से जुदा किया। मैं तो खाने-पीने की चिन्ता कतई छोड़कर भगवान की एक मात्र प्राप्ति के लिए ही दिन रात प्रयत्न करने के विचार से संन्यासी बना और जंगल की शरण लेने को उद्यत हुआ।

पहले थोड़ा बहुत योग का चसका लगा था। फिक्र थी कि कोई अच्छे योगी को ढूंढ़ कर उससे प्राणायाम और योगाभ्यास सीखूं। सांसारिक कामों से मुझे ऐसी घृणा थी कि कह नहीं सकता। यह भी जान लेना चाहिये कि सिवाय प्राणायाम, योगाभ्यास, ध्यान, समाधि, वेदान्त चिन्तन और तत्संबन्धी विचारों के बाकी को मैं सांसारिक काम ही मानता था।

आज जो अर्थ गीता का मैं समझता हूं उससे निराला ही समझता था उन दिनों। नहीं तो वह हालत नहीं होती। चाहे कितना ही उच्च कोटि का परोपकारी काम क्यों न हो, उस समय मेरी दृष्टि में वह

१. "सदा पश्यन्ति सूरयः तदविष्णोः परमं पदं दिवीव चक्षुराततम्" — ऋग्वेद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाचीज सांसारिक काम ही था। फर्क इतना ही था कि देश सेवा आदि को तब जानता तक न था कि वह कोई खास चीज या काम है, जिससे मेरा कोई सम्बन्ध होना चाहिये। मेरा तो एकमात्र कर्तव्य था भगवान की प्राप्ति।

यह लम्बा उद्धरण देने का तात्पर्य है कि किस प्रकार स्वामी जी ने अनुभव के प्रकाश में वेदांत का मनन-चिन्तन किया और वेदांत का असली अर्थ समझा और तदनुसार बाद में उनका समस्त जीवन, सभी कार्य असली वेदांत के प्रतीक बन गये। सर्वात्मदर्शन या यों कहिये कि भगवान के विराट रूप दर्शन के फलस्वरूप उनका उनसे तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित हो गया। बादमें उनके जीवन के अन्तिम दस वर्षों में उनकी सेवा में रहकर मैंने देखा कि वे सोऽहं की अखंडवृत्ति में सदा मस्त रहते थे।

१९४४ के अ० भा० किसान-सम्मेलन के बेजवाड़ा (आन्ध्र) अधिवेशन में अध्यक्ष पद से बोलते हुए उन्होंने कहा था—"आज मैं भारत के उन करोड़ों नर-नारियों—किसानों के प्रति श्रद्धा भक्ति प्रकट करने के लिए खड़ा हूं जिन्होंने अपने निःस्वार्थ त्याग से—उन्हीं के लिए त्याग कर, जिन्होंने उनका सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक तरीके पर शोषण किया है और कर रहे हैं और उनका सारा खून चूस चुके हैं—मुझे और मेरे जैसे हजारों को अपना पुजारी बना लिया है। सिर्फ एक ही श्रेणी के लोग किसान ही हैं जिनके अनन्त त्याग पर यह दुनिया टिकी है।"

स्वामी जी महान क्रांतिकारी थे। उन्होंने अपने मौलिक चिन्तन एवं दिव्य आत्मानुभूति के सहारे उपनिषद्, गीता तथा षड्दर्शनों को उनके वास्तविक अर्थ में समझा और लोकसंग्रह की दृष्टि से ज्ञानपूर्वक कर्म किया। वे कहते हैं कि ज्ञानपूर्वक किये कर्म, साधारण कर्मों की श्रेणी में नहीं आते, वे तो भगवान की पूजा-अराधना हैं। धर्म के सम्बन्ध में लिखते हैं-"यह धर्म का प्रश्न इतना पेचीदा और खतरनाक है कि लोगों को इससे भ्रम हो सकता है। कहते हैं कि आत्मा की भूख की शांति के लिए धर्म का आविष्कार हुआ। फिर उसके दो आकार हुए—एक वैज्ञानिक और दूसरा व्यावहारिक। पहले में दर्शन और दार्शनिक विचार आ जाते हैं। उन्हीं विचारों को अमली जामा पहनाने के सिलसिले में बाहरी तथा व्यावहारिक पूजापाठ आदि आते हैं।

प्रत्यक्ष तो आज यही देखते हैं कि धर्म में तर्क, दलील और विचार को स्थान नहीं है। यही उसका व्यावहारिक रूप है। पंडित, मौलवी और धर्माचार्य जो कहें, उसे आंख मूंदकर मानो। ये धर्माचार्य गुरु, पंडित वगैरह भी कैसे कि उन्हें अक्ल से ताल्लुक ही नहीं। मगर मंतर और दीक्षा देकर वैकुण्ठ भेजने का, बिहिश्त पहुंचाने का दावा जरूर रखते हैं। फलतः धर्म के नाम पर सबसे ज्यादा अंधेर खाता देखते हैं। इस प्रकार धर्म दिल की चीज न होकर बाहरी और दिखावटी वस्तु हो गयी है। हम शिखा और दाढ़ी से ही प्रायः हिन्दू और मुसलमान का परिचय करते हैं।

मगर मैं इस धर्म को कत्तई नहीं मानता। बल्कि कह सकते हैं कि मैं ऐसे धर्म को समाज, देश और मानवता का शत्रु मानता हूं। यह हमारी आजादी का भी बाधक है। जहां विवेक को स्थान नहीं और फतवा या आदेश चले, मैं उस चीज को नहीं मानता।

स्वामी जी ने गीता के अपने अलौकिक भाष्य 'गीता-हृदय' में जो गहन और गूढ़तम विचार व्यक्त किये हैं उनसे उनके जीवन दर्शन को समझने में कुछ सहायता मिलती है। गीता-हृदय की भाषा बहुत स्थानों में महर्षि वेदव्यास की समाधि-भाषा हो गयी है। गीता में स्वधर्म और स्वकर्म की कर्त्तव्यता की पुष्टि में आत्मा के स्वरूप का जिस प्रकार बारीकी से प्रतिपादन किया गया है, उससे यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि गीतोपदेश की भित्ति की बुनियाद अध्यात्मवाद से ही बनी है। स्वामी जी ने अपने 'गीता-हृदय' में पृष्ठ ५९ में 'आत्मा का स्वरूप' प्रकरण में उस आत्मस्वरूप की अत्यन्त सुन्दर और सरल बोधगम्य व्याख्या करके गूढ़दर्शन को सहज स्वाभाविक रूप में हमारे सामने रखा है। 'देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा' "एक ही जन्म में कुमारावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्था से हमें गुजरना होता है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी लिखते हैं—'यह याद रखना होगा कि इन तीनों अवस्थाओं का शरीर एक हर्गिज नहीं होता। कम से कम तीन तो होते ही हैं जो एक दूसरे से सोलहों आने जुदा हो जाते हैं। जिन अनन्त परमाणुओं से खून, मांस, हड्डी आदि के जरिये किसी एक अवस्था का शरीर बना होता है दूसरी अवस्था में वह एक भी पाये नहीं जाते। वे तो जाने कहां गायब हो जाते हैं और उनकी जगह बिल्कुल ही नये और निराले परमाणु (atoms) ले लेते हैं। नहीं तो तीनों अवस्थाओं में पार्थक्य क्यों होता ? यो भी कुमारावस्था के शुरु में होने वाली देह के साथ युवावस्था के अन्तिम परिपाक के समय के शरीर से कोई मिलान हो सकती है क्या ? वे दोनों तो साफ ही जुदे हैं—जुदे मालूम होते हैं ! फिर वृद्धावस्था से मिलान का सवाल क्या ? विभिन्न अवस्थाओं के जुदे-जुदे और परस्पर विरोधी काम ही इस बात के सबूत हैं कि शरीर जुदे जुदे हैं। बाल्यावस्था की निपट असमर्थता और जवानी की पूर्ण समर्थता के बाद बुढ़ापे की निराली असमर्थता ही पुकार-पुकार के अपने-अपने शरीरों को अलग बताती हैं।

इसे यों भी समझ सकते हैं। नया चावल कोठी के भीतर बन्द करके रखते हैं और किसी तरफ से हवा न जा सके इसका पूरा प्रबन्ध करते हैं—कोई जरा भी छिद्र या सुराख रहने नहीं देते। नहीं तो बाहर से कीड़े घुस जायं और बरसाती हवा चावल को चौपट कर दे। फिर भी चार छे साल के बाद अगर उन्हीं चावलों को निकालें, पकायें और खायें तो निराला ही स्वाद, निराली गंध और निराली तृप्ति होती है। जो बातें नयों में पाई ही न जाती थी। पचने में तब भारी थे अब हलके हो गये, तब देर से पकते थे, अब फौरन पक जाते हैं, तब मांड़ छोड़ते न थे; अब मांड़ से उनका कोई ताल्लुक ही नहीं ऐसा प्रतीत होता है। यह बात क्यों और कैसे हो गई ! मोटी बुद्धि में तो यह बात समानी नहीं। मगर यह तो मानना ही होगा कि हजार कोशिश करने और हवा का प्रवेश रोकने पर भी परमाणुओं की आवाजाही रोकी जा सकती नहीं ! वे तो सर्वशक्तिमान जैसे हैं ! उनकी अपार महिमा है ! फलतः चावल के भीतर जितने भी पुराने परमाणु थे, जिनसे वह बना था, एक-एक करके सभी भाग निकले, खिसक गये इन्हीं चार-छे सालों में, और उनकी जगह बिलकुल ही नयों ने ले ली ! दूसरी बात होई नहीं सकती! हमें पता ही नही लगा और चावल दूसरे हो गये !

स्वामी जी ने 'गीता हृदय' के अपने भाष्य के दूसरे प्रकरण—'गीता धर्म और मार्क्सवाद' में अपनी अद्वैतवादी वेदांती-उदारता का अलौकिक परिचय देकर दर्शन के अध्येता एवं जिज्ञासुओं का, वर्तमान युग की परिस्थितियों के संदर्भ में आवश्यकतानुसार यथोचित पथ-प्रदर्शन किया है। इससे स्वामी जी के व्यापक सार्वभौम विचारों और उनकी दिव्य-अनुभूतियों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। वे सच्चे अर्थों में एक महान् दार्शनिक और मानवता के संदेशवाहक सिद्ध होते हैं। मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद तथा धर्म, और धर्म, सरकार और पार्टी' आदि महत्वपूर्ण मशलों को आपने गीता एवं वेदान्त के प्रकाश में भलीभाँति निपुणता से सहज ही सुलझा दिया है। आपकी, गीता, आपके वेदांत से, जहाँ तक भौतिक जगत् के प्रश्नों का सम्बन्ध है, मार्क्सवाद का कहीं विरोध या दुराव नहीं।

स्वामी जी ने अपनी मनीषा की कुशलता से बड़ी बारीकी से भौतिक जगत के व्यावहारिक प्रश्नों के समाधान के लिए मार्क्स के द्वन्द्वात्मक दर्शन एवं वर्ग संघर्ष की यथोचित मर्यादा स्थापित करके उसका अनुमोदन किया है। यह उनके वेदांती जीवन दर्शन की अनूठी उदारता है। स्वामी जी लिखते हैं—

"जब इस भौतिक संसार में गीता धर्म—योग—अपवाद हो सकता है, न कि नियम तो स्वभावतः यह प्रश्न उठता है कि सर्वसाधारण के लिए जो चीज साध्य हो और इसीलिए जो हमारे लिए नियम जैसी सार्वजनिक वस्तु हो सके वह क्या है ? उत्तर में बेखटके कहा जा सकता है कि वह है मार्क्सवाद। बहुत लोग इस बात को न समझ के ही नाक भौं सिकोड़ते हैं। .....असल में तो मार्क्सवाद साम्यवाद या वर्गविहीन समाज का निर्माण ही है। मार्क्सवाद का तो यही लक्ष्य माना जाता है कि इस संसार को आनन्दमय, सुखमय, स्वर्ग या वैकुण्ठ बना दिया जाय, न बीमारियाँ हों और न अकाल मृत्यु हो, न कोई गरीब हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न अमीर, सबों को समान रूप से खाने-पीने, पढ़ने-लिखने कला-कौशल तथा ज्ञान-विज्ञान की सभी सुविधायें प्राप्त हो, सबसे ऊंचे दर्जे के आराम का सभी के लिए—मानव मात्र के लिए-पूरा सामान होने पर भी अन्वेषण, विज्ञान, कला आदि के लिए पर्याप्त समय सबको प्राप्त हो, अना-वृष्टि, अतिवृष्टि, पालन आदि को निर्मूल कर दिया जाय, प्रकृति के साथ ही संघर्ष करके मौत के ऊपर भी कब्जा कर लिया जाय, आदि आदि। एक वाक्य में **"सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग्भवेत्।"** पूरी तरह चरितार्थ हो जाय। ये बातें केवल मनोराज्य नहीं हैं। विज्ञान के लिए यह यह सभी सम्भव हैं। यदि विश्वामित्र की नई सृष्टि मानी जाती है तो आज भी विज्ञान क्या नहीं कर सकता है? विश्वामित्र ने भी किया होगा तो विज्ञान के ही बल से।"

स्वामी जी के विचार धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में कितने व्यापक और विवेकयुक्त थे, इसका अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि अपने 'गीता हृदय में 'गीता में ईश्वर' प्रकरण में उन्होंने शरीरी कृष्ण को ईश्वर नहीं माना है। सामान्य धार्मिक जनों और साधु संतों को यह बिल्कुल भड़काने वाली बात है। किन्तु उन्होंने प्रबल दार्शनिक युक्तियों से इसे सुन्दर ढग से सिद्ध करके हमारे भ्रम और रूढ़िगत धारणा को मिटाने का प्रशंसनीय कार्य किया है। वे लिखते हैं :—

"गीता में ईश्वर की किसी न किसी रूप में सैकड़ों बार से ज्यादा चर्चा आई है। मगर असली रूप में हम उसे १८वें अध्याय के ६१वें श्लोक में ही साफ-साफ पाते हैं। कृष्ण ने खुद जो "मैं" और "मेरा" आदि के रूप में सैकड़ों बार कहा है उसमें कुछी बार अपने लिए—साकार वोसुदेव पुत्र के लिए—कहा है। मगर आम तौर से अपने ईश्वरीय स्वरूप को लक्ष्य करने बोल गये हैं। यदि पूर्वापर का विचार करके देखा जाय तो शरीरी कृष्ण में वे बातें लागू होई नहीं सकती हैं जिनका उल्लेख उनके उपर बताये स्थानों में जाने कितनी बार किया है। जब चौथे अध्याय के शुरू में ही उनने कहा है कि मैंने यह योग पहले विव-स्वान् को बताया था और विवस्वान ने मनु को, तो यह बात शरीरी कृष्ण में कथमपि लागू हो सकती है नहीं। उसी के आगे जब अवतार की बात के प्रसंग में कहा है कि मैं समय-समय पर पैदा हो जाता हूं, तो यह भी शरीरकारी के लिए सम्भव नहीं। कोई नहीं मानता कि कृष्ण बार-बार जन्म लेते हैं। यों तो हर मनुष्य भी बार बार जन्मता है। मगर उसे अवतार नहीं कहते। चातुर्व--र्ण्य की रचना भी कृष्ण के शरीर से नहीं होती। हालांकि उनने कहा है कि मैं ही चातुर्वर्ण्य बनाता हूं। सातवें अध्याय में अपने को अधियज्ञ कहा है। यह भी ईश्वर के लिए ही सम्भव है, न कि शरीर वाले के लिए ... .

इस प्रकार प्रत्येक प्रसग को देखने से पता चलता है कि आत्मज्ञान के बल से कृष्ण अपनी आत्मा को परमात्मस्व--रूप ही अनुभव करते थे और वैसा ही बोलते भी थे। वह उपदेश के समय आत्मा का ब्रह्मा के साथ तादात्म्य मानते हुए ही बातें करते थे। मालूम होता है, जरा भी नीचे नहीं उतरते थे! उसी ऊंचाई पर बराबर कायम रहते थे। इसीलिए तो इन उपदेशों में अपूर्व आकर्षण शक्ति और मोहिनी है।"

स्वामी जी ने आगे चलकर बताया है कि गीता के मत से ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने का एक ही परिणाम होता है कि हमारा आचरण प्रशंसनीय और लोकहितकारी हो जाता है। उनके विचार से ईश्वर के हृदय में रहने का अर्थ है कि वह हृदय-ग्राह्य है। सरस और श्रद्धालु हृदय ही उसे ठीक-ठीक पकड़ सकता है।

स्वामी जी जीवनमुक्त, परमवीतराग सन्यासी थे। मुक्तपुरुषों के लिए भी लोकसंग्रह के लिए कर्म करना परम कर्तव्य है। उन्होंने ईश्वर को ढूंढने के लिए श्रद्धा-भक्ति के साथ घरबार का त्याग किया। त्याग से ही अमृतत्व की प्राप्ति होती है। शास्त्र की इस मर्यादा के के अनुसार स्वामी जी ने वस्तुतः अपने जीवनकाल में ही जीवनमुक्ति प्राप्त की।

स्वामी जी ने श्रीमद्भागवत और गीता के विचारों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अनुसार अपने कर्तव्यों के पालन को ही भगवान की पूजा माना है। श्रीमद्भागवत में राजा रहूगण और जड़-भरत के सम्वाद में कहा गया है कि—'स्वधर्म आराधनमच्युतस्य यदीह मानो विजहात्यधौघम्' (५।१०।२३)। इसका आशय यह है कि "अपने कर्तव्यों का पालन करना ही भगवान की पूजा है, जिसके चलते पाप का पहाड़ भी खत्म हो जाता और नजदीक नही आता है।"

यहां 'स्वधर्म' और गीता में 'स्वकर्म' कहा है। इन दोनों में 'स्व' शब्द देकर यहीं बताया गया है कि खुद कर्मों के अच्छे बुरे होने की कोई बात नहीं। अपने--अपने कर्म ही पूजा बन जाते हैं। उनकी बाहरी बनावट और रुपरेखा कोई चीज होती नही। स्वामी जी के प्रत्येक कर्म कामना--सकल्प से रहित, ज्ञान की दीप्त अग्नि-शिखा में तपाये हुए विशुद्ध कंचन की भांति थे। उन्हें पूर्ण विरक्ति थी। वे संगदोष से रहित पूरे स्थितप्रज्ञ ज्ञानयोगी थे जो सदा आत्मतुष्ट और मस्त रहे। चिन्ता उन्हें छू तक नहीं गयी थी।

समाजसेवा में ही स्वामी जी ने मुक्ति के आदर्श की चरितार्थता पाई। नरसिंह और प्रह्लादके प्रसगमें एक श्लोक भागवत में आता है जिसमें भक्तवर प्रह्लाद ने नरसिंह भगवान को उत्तर देते हुए स्पष्ट कर दिया है कि जनता की सेवा ही भगवान् की सेवा और आराधना है।

स्वामी जी ने इस प्रकार सेवा का अर्थ समझा और निष्ठापूर्वक उसमें जुट गये। भूमिहार ब्राह्मण-समाज के उद्धार करने में भी वे इसी दृष्टि से पड़े थे। वे उस सम्बन्ध में अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि—"मैं तो किसी मतलब से उसमें पड़ा न था। एक बहुत बड़े समाज को—एक कुलीन और उच्च ब्राह्मण-समाज को मैंने औरों से पददलित पाया और देखा कि वह तिलमिला रहा है, अपमानित हो रहा है। मगर कुछ कर नही पाता। अपमानित होता है बुरी तरह। मगर उसका प्रतिकार नहीं कर पाता। मेरा दिल तड़प उठा और मैंनेउसे उठाया उठाने की कोशिश की और अपमानित करने वालों को ठीक-ठीक उत्तर दे दिया। उनके होश ठिकाने कर दिये। जिसका हक छीना जाय या छीना गया हो, उसे तैयार करके उसका हक वापस दिलाना यही तो मेरे जानते आजादी की लड़ाई और असली समाज सेवा का रहस्य है।"

समाज और देश की सेवा-भावना से अनुप्राणित स्वामी जी उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होते गये। वे १९२० में पटने में मौलाना मजहरुल हक के मकान पर ठहरे हुए गांधी जी से मिले और बातचीत के बाद निश्चय किया कि "मुझे भी राजनीति में फौरन कूद पड़ना चाहिए। इसलिये नहीं कि देश का उपकार होगा। बल्कि इसलिए कि तभी मैं सच्चा सन्यासी बन सकूंगा। अभी तो कच्चा हूं।"

कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन से लौटकर स्वामी जी ने असहयोग में बक्सर में काम करना शुरु किया। उन्ही के शब्दों में यहां यह कह देना अनुचित न होगा कि कट्टर गांधीवादी के रुप में ही कांग्रेस में और राजनीति में उनका प्रवेश हुआ। आगे चलकर भोजपुर क्षेत्र का सिमरी गाँव उनके कार्यो का प्रधान केन्द्र बना और वहीं से वे चतुर्दिक कांग्रेस के संगठन तथा खादी प्रचार आदि का कार्य करते रहे। उन दिनों सिमरी में पांच सौ चर्खे और चार कर्घे चला करते थे। वहाँ बहुत खादी तैयार होती थी और गाजीपुर भेजी जाती थी अथवा गाजीपुर से अन्यत्र भी जाती थी।

कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन से लौटते ही गाजीपुर में १९२२ की २ जनवरी को स्वामी जी पहली बार जेल के भीतर दाखिल हुए। इस तरह वे फैजाबाद लखनऊ आदि जेलों में आचार्य नरेन्द्रदेव, आचार्य कृपलानी और प० जवाहर लाल नेहरु के साथ रहे। जेल जीवन में स्वामी जी ने बड़े-बड़े नेताओं तथा असहयोगियों के साथ रहकर बहुत कुछ अनुभव किया। लखनऊ जेल में बहुतेरे नेतागण उनसे गीता पढ़ने आते थे और उनमें नेहरु जी भी थे।

स्वामी जी धीरे-धीरे राजनीति के क्षेत्र में भी आगे बढ़ते गये। उनके अनुभवों ने उनके गुरु-शिक्षक आदि का काम दिया। १९२६ ई० में स्वामी जी दरभंगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिले के समस्तीपुर में रहने लगे। वहां से लोगों के प्रेरित करने पर उन्होंने "लोकसंग्रह' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला जो कुछ दिनों तक उनके सम्पादन और देख रेख में चलता रहा। बाद में उन्हें अनुभव हुआ कि प्रेस रखना भारी भूल है, और अखबार निकालना तो साधारणतः अक्षम्य अपराध है।

प्रगतिशील स्वामी जी ने पटना जिले के बिहटा नामक स्थान में अपना आश्रम कायम करके १९२७ के अन्तिम दिनों में वहीं पश्चिम पटना किसान सभा स्थापित किया। वे मसौढ़ा परगने के जालिम जमीदारों की जालिमाना हरकतों से मर्माहत हो गये थे। किसानों की दुर्दशा उनसे सही नहीं गयी। यहीं से भारतीय समाज के मेरुदण्ड किसानों की करुणदशा का उनको प्रत्यक्ष ज्ञान हुआ और वे क्रमशः किसान समाज में भीतर पैठकर उनकी करुणा भरी कहानी सुनने तथा अत्याचार को मिटाने का यत्न करने में लग गये।

स्वामी जी 'मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्' के मूर्तिमान स्वरुप थे उन्होंने कथनी और करनी में कभी अन्तर नहीं आने दिया। यही कारण था कि सत्य के उस नैष्ठिक पुजारी से, कथनी भिन्न करनी भिन्न वालों से व्यवहार क्षेत्र में कभी एकरस नहीं पटी।

स्वामी जी उच्चकोटि के मानवतावादी और करुणा के अवतार थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा के पृष्ठ ४२७–४२८ में 'जीवन की तीन घटनाएं' प्रकरण में जिन तीन दर्दनाक दृश्यों का चित्रण किया है उससे उनकी सुकोमल मनोदशा का सहज ही पता चल जाता है। वे घटनायें, गाजीपुर जिले के विश्वम्भरपुर गांव के पास मौजे मौरा में मरे हलवाहे तथा मुंगेर जिले के चकाय थाना क्षेत्र के नग्नप्राय संथाल किसानों और वहीं बेगूसराय इलाके के एक मृत्य किसान की है। शास्त्रचिन्तन और जीवन के सच्चे रोमांचकारी अनुभवों के आधार पर स्वामी जी का क्रांतिकारी स्वभाव अत्यन्त क्षुब्ध और मर्माहत हुआ। फलतः वे इस अंधेरगर्दी को मिटाने के लिए परशुरामावतार बनकर किसानों के बीच आ उतरे। धीरे-धीरे बिहार से शुरु करके उन्होंने सारे भारत में, किसानों का संगठन किया और १९३६ में पहली बार लखनऊ में कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर अ० भा० किसान सभा का संगठन हुआ और वे ही वहां सर्वसम्मति से उस अधिवेशन के अध्यक्ष हुए। १९३६ से १९४३ तक इस प्रकार अ० भा० किसान सभा का कार्य चलता रहा और कोई गड़बड़ी नहीं हुई। १९३६, १९३८ और १९४३ ई० में स्वामी जी ही इस सभा के अध्यक्ष और शेष वर्षों में प्रधानमंत्री रहे। १९३७में प्रोफेसर रंगा, १९३९में आचार्य नरेन्द्र देव, १९४० में बाबा सोहन सिंह 'भखना' और १९४२ में इन्दुलाल याज्ञिक अध्यक्ष थे।

स्वामी जी पार्टियों की पण्डागिरी और छल-छद्म की नीति के सदा विरोधी रहे। इसीलिए वे कभी किसी पार्टी में न तो दाखिल हुए न उनकी इस गलाघोंटू नीति का समर्थन ही किया। किसानों का अलग संगठन बनाने का पहले तो कांग्रेस के नेताओं ने बड़ा विरोध किया और कांग्रेस के किसान सभा समर्थक बहुतेरे तपेतराये कार्यकर्त्ताओं को अनुशासन के नाम पर कांग्रेस से दूध की मक्खी की तरह बाहर निकाल फेंका। यहां तक की स्वामी जी के विरुद्ध भी तरह तरह के दुष्प्रचार कांग्रेस संगठन की ओर से होने लगे और अन्त में विवश होकर उन्हें बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी की सदस्यता एवं कांग्रेस से त्याग पत्र देना तथा सदा के लिए अलग हो जाना पड़ा।

जेल जीवन में राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं का व्यवहार की कसौटी पर नग्नरुप देखने में आता है। स्वामी जी ने इस सम्बन्ध में अपनी आत्मकथा में लिखा है कि—यह बात मुझे बहुत ही खलती थी, खासकर इस लिए कि धार्मिक सम्प्रदायों की ही तरह ये राजनीतिक सम्प्रदाय एक दूसरेको गालियां देते और उनके नेताओंको देश द्रोही और गद्दार तक कह डालते हैं। हर पार्टी सोचती हैं कि देश का उद्धार एकमात्र उसी के बताये रास्ते से हो सकता है। खुद यही नासमझ बने आपसी टीका टिप्पणी और छिद्रान्वेषण में ही सारा समय बिताते हैं।

स्वामी आत्मिक स्वतंत्रता और हृदय की शुद्धता के कायल थे। वे सदा अपने जीवन में दिल-दिमाग की इस एकता के पक्षपाती रहे और कर्मणा-मनसा वाचा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक हो किसी काम में लगते और उसे ईमानदारी से पूरा करते थे। एक बार सम्यक् संकल्प लेने के बाद जब उनका कदम आगे बढ़ता था तो वे विरोध और कठिनाइयों से घबड़ाकर पीछे नही मुड़ते थे। उनका सदा यही उद्घोष रहता था कि "अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्।"

पार्टियों में क्यों नहीं'—इस सम्बन्ध में अपने 'मेरा जीवन संघर्ष' के पृष्ठ ५५७ में वे लिखते हैं कि—मैं यदि पार्टियों से भड़कता हूं तो उसकी यह एक बहुत बड़ी वजह है। आज तो मैं पार्टी लीडरों को देशभक्त मानता हूं और कल ही किसी पार्टी में घुसा कि बाकियों को गद्दार समझने की नादानी ही करनी पड़ी।

स्वामी जी सच्चे अर्थों में एक योद्धा और वीरपुंगव थे। उन्होंने अन्याय, अनीति और गलत-कार्यों से कभी समझौता नहीं किया। कांग्रेस में स्वामी जी सदा उग्र विचारों के समर्थक रहे। फलतः हरिपुरा में सुभाषचन्द बोस के अध्यक्ष होने तथा त्रिपुरी अधिवेशन में दूसरी बार उनके अध्यक्ष निर्वाचित होने तक उनके साथ रहे और उन दो वीर देशसेवकों का यह साथ अंत तक एकरस और सुदृढ़ बना रहा। १९४० का रामगढ़ में हुआ समझौता विरोधी सम्मेलन इसका ज्वलंत उदाहरण था। सुभाषचन्द बोस और स्वामी जी ब्रिटिश साम्राज्यवाद से भारतीय स्वतन्त्रता के प्रश्न को लेकर कभी भी समझौते के पक्ष में नहीं थे। स्वामी जी ने सम्मेलन में योरोपीय युद्ध में सहायता का खुल्लमखुल्ला विरोध किया और विरोध करने की प्रतिज्ञा की। फलतः उसी अपराध में पकड़ा जाकर तीन साल के लिए जेल में बन्द हो गये।

स्वामी जी अपने अनुभवों के आधार पर राजनीति में सदा कमाने वाली जनता के हाथों में अधिकार देने के पक्षपाती रहे। इसीलिए १९३८ में गया में होने वाले अ० भा० किसान सम्मेलन में उन्होंने नया नारा दिया कि—कमाने वाला खायेगा, इसके चलते जो कुछ हो।' स्वामी जी ने बिहार के कोने कोने में किसान सभाओं का, बृहद् सम्मेलन और प्रदर्शनों का आयोजन करके धूम मचा दिया रेवरा, बड़हिया और अमवारी में जमकर किसनों का बकाश्त संघर्ष चलाया। इतना ही नहीं भारत के विभिन्न प्रान्तों का तूफानी दौरा करके उन्होंने सर्वत्र किसान सभाओं के मजबूत संगठन बनाये। पलासा, कोमिल्ला, बेजवाड़ा आदि के विशाल किसान सम्मेलन उनकी कर्मठता और क्रांतिकारी शक्ति के परिचायक थे। हरिपुरा एवं त्रिपुरी के कांग्रेस अधिवेशनों के अवसर पर वहां किसानों का विराट प्रदर्शन, स्वामी जी की विलक्षण तेजस्विता और निर्भीकता का प्रतीक था।

भारत में किसानों की समस्या ही सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण है। क्यों कि भारत कृषि प्रधान देश है। कांग्रेस सदा मध्यमवर्गीय लोगों की संस्था रही है। कांग्रेस के अधिकांश नेता उसी वर्ग के हैं जिनका जनता से निकट का सम्पर्क नही रहा है। अतः वे न तो किसानों की दैनिक कठिनाइयों, उनकी आवश्यकताओं और उलझनों से परिचित हैं न उनकी आर्थिक समस्याओं को कभी समझने की कोशिश करते हैं। भारत में किसान सभा, और किसानों की करुण कहानियों के एक मात्र नाम लेने उन्हें जगाने और उनकी जीवन की ज्वलन्त समस्याओं को देश के कर्णधारों के सामने रखने का एकमात्र श्रेय स्वामी जी को ही है अतः वे किसानों के भगवान या मसीहा कहे गये।

उन्होंने लिखा है— "यह आन्दोलन या किसान सभा उन्हीं विप्लवी या विस्फोटकारी शक्तियों का प्रतीक है, जो भीषण भूकम्प लातीहै और महारुद्र का महाताण्डव कराती है। लेकिन, एक बात अब सत्य है। शोषितों ने अंगड़ाइ ली है। समस्त समाज के सबसे निचले स्तर में आजादी की तड़प की यह आग पहुंचकर धू-धू जलने लगी है, निरंतर तेज होती जा रही है। यह कभी भड़केगी और बुरी तरह भड़केगी। ये भुक्खड़ करवटे बदलेगे और उनके ऊपर लदे सभी स्तर और इस प्रकार समस्त समाज ही उलट जाएंगा, धंस जाएगा। परिणाम में यह जीर्णशीर्ण और शोषण चीत्कारों से पूर्ण समाज ध्वस्त हो के उसके स्थान पर शोषणहीन समाज बनेगा और संसार--भारत मंगलमय होगा। आज की भाषा में शोषित पीड़ित जनता के इसी करवट बदलने को विप्लव या क्रांति कहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम इसे ही प्राचीन भाषा में महारुद्र का महाताण्डव नृत्य कहते हैं और शायद उसी तांडव की तैयारी कराने के लिए ही, नही,नही, संभवतः उसी के साक्षात् दर्शन के वास्ते ही मैं कोरे अध्यात्मवाद की निष्क्रिय दुनियां से भटककर इस सक्रिय संसार, सक्रिय वेदांतवाद में आ फंसा हूं, कौन कहे !

स्वामी जी सच्चे अर्थों में विरक्त थे । विरक्त साधु संतों को भी उन्होंने एक बार कसकर ललकारा और धर्म की दुनियां में जो क्षवेर मची है, ठगी और पाखण्ड पाप, धूर्तता, तृष्णा का नंगा नाच हो रहा है उसे मिटाने की कोशिश की । नकली वेदांत को छोड़कर असली वेदांत को अपनाने की सलाह दी । १९४९ की राम नवमी ९ अप्रिल को अयोध्या में अ० भा० विरक्त महामंडल के महाधिवेशन में अध्यक्षपद से उन्होंने जो महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया था उससे उनके जीवनदर्शन की सच्ची झलक मिलती है और वह किसी महत्वपूर्ण मंच से प्रायः उनकी अंतिम घोषणा थी उसका अपना विशेष महत्व है ।

मुझे भय है, आप वाली धर्म की परिभाषा के भीतर मैं शायद ही आ सकूं आपके भीतर तो सिर्फ आस्तिक नास्तिक का झमेला है और नास्तिक आपके पास फटकने भी नही पाता, बल्कि हजार सम्प्रदायों के झमेले में भी आप व्यस्त हैं और एक दूसरे की निन्दा शिकायत करने में आपको आनन्द आता है । पता नही विषम और विरक्ति के पेट में ये सब बातें कहां से आयी ? पुष्पदत ने तो महिम्नस्तोत्र में स्पष्ट ही कहा है कि विभिन्न मत-वाद निराली सूचियों के परिचायक मात्र हैं । भगवान के पास तो सभी शुद्ध हृदय वाले पहुंचते ही हैं फिर चाहे वह किसी भी मतवाद तथा सम्प्रदाय के मानने वाले हों, जैसे सभी पानी घुमघाम कर समुद्र में ही जाता है गीता में भी कहा है कि परधर्म की बात भूलकर स्वधर्म पालन में ही मर मिटना श्रेयस्कर है । पता नही यह निन्दा स्तुति किस पोथी में लिखी है, जो विरक्त समाज के लिए आज शिरोधार्य है गीता में तो स्वधर्म को भी छोड़ केवल स्व-कर्म को ही कल्याण का साधन माना गया है ईमानदारी और सचाई से किया गया हरेक काम आराधना है, साधना है, तपस्या है । उसी से कल्याण होगा । नाक दबाना, टीका चन्दन लगाना, कंठी माला पहनना, उस तपस्या के सामने छोटी सी चीज हो जाती है । फिर धर्म सम्प्रदाय का झगड़ा कैसा ?

हमारे यहां ऊंच-नीच और छूत-अछूत का भूत डेरा डाले पड़ा हमें परेशान कर रहा है । फिर भी हम विरक्त और भक्त होने के गुमान में मरे जा रहे हैं । क्या छूत-अछूत जानवर नहीं है और नरसी मेहता भक्त न थे ? लेकिन बात क्या हुई ? उनकी पकाई रोटी कुत्ता लेकर भाग चला तो वे उनके पीछे हांफते हुए दौड़े जा रहे हैं, 'महाराज, रूकिये तो सही रोटियाँ रूखी हैं, गले में अटकेंगी, जरा घी तो लगा दूं ।' नरसी की भक्ति कुत्ते में भगवान को देखती है, उनके सामने कुत्ता हई नही मगर हमारी भक्ति हमें ऊच-नीच के फंदे में फंसाकर मार रही है । एक ओर तो हम विरक्त और विरागी होने का दावा करते हैं । जिसके मानी है सभी सांसारिक पदार्थों का त्याग, उनमें रसहीनता । दूसरी ओर अपने दिलों में राग, द्वेष, ऊंच नीच की भावना जैसी गन्दी चीजों को रखते हैं । ..... घर छोड़ा कुटिया मिली; कुल छोड़ा, चेले किये । जर जमीन छोड़ी तो मठों में अड्डा लिये हैं । यह क्या है ? यह वैराग्य है या उसका उपहास ?''

गांधी टोपी पर आफत आई है । यह कुछ दिन पहले तक त्याग-बलिदान की प्रतीक मानी जाती थी जब तक मुल्क गुलाम था, अंग्रेजी शासन भारत में कायम था ।

.....आज वही टोपी चोरबाजारी, घूस-खोरी आदि का साधन बन गई है । जिसने अंग्रेजी जमाने में इसे छुआ तक नहीं उसी के सर पर आज यह ज्यादातर दीखती है । .....यदि साधुनामधारियों ने कंठी, माला, तिलक-छाप को ठगी एवं प्रवचना का साधन बना डाला था तो खादी और गांधी टोपी के रूप में यह नये ढंग की कंठीमाला आ गई। जो लोग ईमानदारी और मर्दानगी के साथ कांग्रेस के लिए कटे मरे, उसके झंडे को सदा ऊंचा किये रहे, मगर चापलूसी और दरबारदारी से घृणा करते थे, न्याय चाहनेवाले हैं, उनकी पूछ गद्दीधारी कांग्रेस में अब नहीं रही, उन्हें ये नये स्वराजी महन्त फूटी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आंखों नहीं देख सकते ।".....

गांवों की समस्याओं का वास्तविक अध्ययन करने की छुट्टी इन स्वराजी शासकों को न पहले थी, न आज है। इन्हें यह भी पता नहीं कि गन्ना कब बोयी जाती है और गेहूं की खेती किन नक्षत्रों में होती है। सभी फसलों की खेती करने में खर्च क्या होता है, इसका भी पता इन्हें मुतलक नहीं है। फिर भी कोई कृषिमंत्री बन बैठा है तो कोई मालमंत्री। फलतः सेक्रेटरियट में आसन लगाये जो बैठे हैं, वही इन मन्त्रियों को बंदरों की तरह नचाते हैं ऑफिस में और गाँवों में नचाते हैं इनके दलाल।"

जो धोबी सवेरे कपड़ा धोता वह धपाधप्प धुले कपड़ा पहनता है। जो कुम्हार बर्तन बनाता उसे घड़े और हांड़ी का अकाल नहीं होता। मगर साल में हजारों मन गेहूं, बासमती घी दूध पैदा करने वाले किसान के बच्चे दूध के लिए तरसते हैं। और मट्ठे पर गुजर करनी पड़ती है। इसे मिटाना ही सबसे बड़ा धर्म है, पूजा है, तपस्या है, आराधना है।"

....देश की ९० प्रतिशत जनता के तन पर चिथड़े नहीं हैं पेट में सुन्दर अन्न नहीं है। घर पर फूस की छप्पर नदारद है। रोगी होने पर दवा नहीं है, पढ़ने लिखने का कोई सामान नहीं है। पैसे नहीं कि किताब खरीदें, फीस नहीं कि डाक्टरों को बुलाकर दवा करायें। यह सब इसीलिये होता है कि यह कमाने वाली किसान-मजदूर जनता गूंगी है, चीख पुकार मचा नहीं सकती। इसकी समस्त कमाई की जैसी निर्दय लूट विदेशी शासक शोषक करते थे वैसे ही स्वदेशी शोषक करते हैं।

"..... ....सबसे बड़ी चीज है कि आपको दुनियां से वैषम्य मिटाना है और यहां समता लानी है, साम्यवाद चलाना है। सभी को सुन्दर अन्न-वस्त्र, घर, दवादारु पढ़ने लिखने आदि का तथा सर्वांग विकास का पूरा अवसर समान रुप से मिले यही करना है .....।"

भूमि की व्यवस्था के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए किसानों के निस्पृह पथप्रदर्शक स्वामी जी ने कहा है —'रूस के किसानों की गुलामी जब १८६५ में मिटी तो उन्हें थोड़ी जमीन मिली लेकिन, उनके पास खेती का सामान न था। नन्हें नन्हें खेती के टुकड़ों के लिए, सामान आता भी कैसे ? यदि हल चलाने के लिए उन्होंने किसी प्रकार घोड़े खरीदे-क्योंकि वहां बैलों से हल नहीं चलता था-तो इनके खिलाने के लिए घास वगैरह की सुविधा न थी। फलतः इन्होंने जमीने बेच दी और अन्यत्र चले गए या नौकरी कर ली। इस प्रकार वहां कुलकों, धनी किसानों का जन्म हुआ जो जमींदार ही थे। संयुक्त परिवार के टूटने तथा उत्तराधिकार कानून के करते यहां बटवारा होता है और नन्हें नन्हें खेत बनकर बनियों या दूसरों के हाथ चले जाते हैं। वही लोग समय पाकर जमींदार बनते हैं।

इसीलिए जमींदारी मिटाने के साथ बहुत सी दूसरी चीजें भी मिटानी होंगी। तभी इस मिटाने के कुछ मानी होंगे नहीं तो वह मिटाना हाथी का नहाना ही होगा। उत्तराधिकारी तथा बंटवारे के कानूनों की भी बदलना होगा। किसके पास जमीन रहे, किसके पास नहीं, यह बात व्यक्तिगत रुप से तय करनी होगी। कुछ जातियों को खेतिहर बनाकर उन्हीं के पास जमीन रहे और उन्हीं के हाथ बेची खरीदी जाय, जैसा कि इस शताब्दी के शुरु में ही पंजाब में किया गया था, वैसा करने से काम न चलेगा। किसान ही जमींदार बनेंगे और खाली खरीद-बिक्री होगी। इसलिए व्यक्तिगत के बारे में ही यह व्यवस्था की जानी चाहिए। पांच आदमियों का परिवार कम से कम और ज्यादे से ज्यादा कितनी जमीन रख रख सकता है, यह भी तय कर देना होगा। बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी होल्डिंग-तख्ता कितने एकड़ों की होगी, यह भी निश्चित करना पड़ेगा। यह भी कानून बनाना होगा कि उन होल्डिंगों को घटाना या बढ़ाना जुर्म है। लगान पर दूसरों को खेत देना भी अपराध करार दिया जायेगा। जो किसान अपनी जमीन में अच्छी तरह खेती न करें उसकी जमीन के सरकार के हाथ चली जाने का भी कानून होगा।

लेकिन, इन निषेधात्मक बातों के साथ ही खेती की सफलता के लिए कम से कम तीन विधानात्मक बातों की भी फौरन जरुरत है। एक यह कि वर्तमान जनसंख्या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के आधे को खेती से हटाकर उद्योग-धंधे, या नौकरियों में लगाना पड़ेगा। यदि खेती की पैदावार काफी हो, तो भी भारत की खेती के योग्य भूमि से सिर्फ आज के आधे लोगों की ही गुजर हो सकती है। मुश्किल से भारत की ३० करोड़ एकड़ भूमि में खेती होती है। 'इन्डियन इन्स्टीच्यूट आफ एग्रीकल्चर' नाम की संस्था ने युद्ध के अंतिम दिनों में अनुसंधान करके बताया था कि प्रायः २५ करोड़ एकड़ जमीन और भी है, जो खेती के योग्य बनाई जा सकती है। इसमें पर्याप्त समय और पैसा लगेगा। फिर भी, कुल मिलाकर ५५ करोड़ एकड़ ही तो होगी और प्रति मनुष्य दो एकड़ उपजाऊ जमीन से कम में काम चलता नहीं। फलतः इतनी जमीन दस करोड़ से अधिक लोगों का भरणपोषण कर नहीं सकती। जन-संख्या तो बढती ही जायेगी, मगर जमीन तो बढ़ेगी नहीं। इसीलिये गांवों के आधे लोगों को खेती से हटाकर दूसरी जीविका देना सरकार का पहला काम होगा।

दूसरा काम है—भूमि के उत्पादन को बढ़ाने तथा समुन्नत कृषि के सभी साधनों को सम्पन्न कर देना। सिंचाई, खाद, अच्छे बीज, खेती की उपज एवं उसके लिये आवश्यक वस्तुओं की खरीद बिक्री आदि का प्रबन्ध खुद सरकार को करना पड़ेगा और स्थान-स्थान पर सलाहकार रखने होंगे, जो किसानों को राय मशविरा देते रहें। समुन्नत खेती की शिक्षा का भी प्रबन्ध करना होगा। पंचायती खेती और ट्रैक्टर आदि की व्यवस्था जरुरी है। पथप्रदर्शन के लिये सरकार के द्वारा संचालित समुन्नत खेती के बड़े-बड़े फार्मों का होना भी आवश्यक है। एतत सम्बन्धी साहित्य को भी किसानों तक पहुंचाना होगा। प्रचारक और सिनेमा आदि से ही इसमें काम लेना ही पड़ेगा। समुन्नत खेती के लिये इनाम, पारितोषिक आदि की व्यवस्था भी चाहिये ही।

सरकार का तीसरा काम होगा, लंबी मुद्दत के लिये नाममात्र के ब्याज पर किसानों को खेती-बारी तथा घर-गृहस्थी के कामों के लिए ऋण देने की समुचित व्यवस्था करना। यह ऋण खेती की उपज से ही आसान किस्तों में धीरे धीरे वसूल होगा, न कि जमीन निलाम करके या बिकवा कर। यह भी नियम होना जरुरी है। तभी तो सरकार और किसान, दोनों ही को चिन्ता होगी कि जमीन की उपज बढ़े। यह भी जान लेना होगा कि उपजाऊ जमीन के दस टुकड़ों से और मामूली के पचीस एकड़ से पांच आदमियों का भरण पोषण अच्छी तरह हो सकता है। ऐसा परिवार पचीस एकड़ से अधिक जमीन में अच्छी तरह खेती नहीं कर सकता। खामखा लापरवाही करता है। इसीलिए ज्यादे से ज्यादे पचीस एकड़ों की होल्डिंग, लाभदायक या व्यवसायक होगी। बड़ी से बड़ी होल्डिंग भी पचास एकड़ की ही होगी उससे ज्यादा जमीन कोई न रखेगा। यही नियम चाहिये।"

भूमि व्यवस्था कैसी हो-इसका उत्तर है जमीन के मालिक किसान ही हों। निजी जोत जमीनें किसान बोयें उतना उसी की है, यही कानूनी व्यवस्था जारी हो। जमीन को राष्ट्र या समाज की सपत्ति बनाने के समर्थक लेनिन जैसे महापुरुष को भी यही काम रूसी क्रांति के बाद, १९१७ में, करना पड़ा था। उसने किसानों में मौजूदा जमीन को भूख देख ली थी। उसे यह भी मालूम था कि भोला-भाला रूसी किसान जमीन की राष्ट्रीयता की बात समझता नहीं, वह उससे बुरी तरह भड़कता है, भड़केगा। यदि उसे यह विश्वास न हुआ कि क्रांति के फलस्वरूप उसकी जोत की जमीन अपनी हो गई, तो वह विद्रोही बन जायेगा और क्रांति को मिट्टी में मिला देगा। फलतः लेनिन ने अपने भूमि संबंधी आदेश में किसानों को तत्काल जमीन का मालिक घोषित करके, उनके दिलों को जीत लिया। लेनिन की उसी जीत के कारण, पीछे, धीरे धीरे वहां पचायती एवं सामूहिक खेती का भी प्रसार हो सका। तब भारत उसका अपवाद नहीं हो सकता। यहाँ भी यही करना होगा।

साथ ही लगान की प्रथा या प्रणाली को खत्म करके कर या भू-कर की प्रथा जारी करनी होगी। जमीन की उपज किसानों को करना होगा, यही नियम हो। जैसे दूसरे-दूसरे आयकरों का कायदा है कि एक निश्चित आय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को छोड़कर शेष पर कर लगता है, किसानों के सम्बन्ध में भी वहीं किया जाना चाहिये। पांच व्यक्तियों के परिवार के लिये तीन हजार रुपये ऐसी ही आय छोड़, शेष पर कर लगे, तो ठीक हो। जब खेती की समुन्नति के सभी साधन किसानों को मिल जायेंगे, तो गल्ले या किराने की फसलों से उन्हें पर्याप्त आमदनी होगी, यह निर्विवाद है। किराने से तो आज भी काफी पैसे मिलते ही हैं। जब घनी खेती होगी तो यह आय और भी बढ़ेगी। पंचायती एवं सामूहिक खेती का प्रसार होने तथा विपणन की ठीक व्यवस्था कर देने पर, सरकार को पर्याप्त पैसे मिलेंगे। सरकार को भी चिन्ता होगी कि किसानों की आय बढ़ायें, ताकि हमारी भी आय बढ़े।

अब तो यह भी सर्वमान्य हो गयी है कि लगान, माल या भूमि कर से कोई राष्ट्र या उसकी सरकार चल नहीं सकती। सरकारें अब आयकर पर ही अवलंबित रहा करती हैं। जितनी ही वृद्धि, उद्योग धंधों की होती है, सरकार की आमदनी उतनी ही बढ़ती है। इसलिये सरकार को फिक्र भी बराबर रहती है कि ये उद्योग-धंधे कैसे समुन्नत हों। भारत में तो इस चीज की भी जरूरत है। फलतः सरकार को यदि आयकर का ही सहारा हो तो विवश होकर वह उद्योग-धंधों का प्रचार करेगी, लेकिन इसके लिये कच्चे माल की आवश्यकता होती है। और उनका उत्पादन किसान की जमीनें करेंगी। जमीन के तो दो ही काम हैं। राष्ट्र के खाने-पीने के लिये अन्न, फल--शाक-तरकारी पैदा करे और कारखानों के लिये आवश्यक कच्चा माल। यही तो उसके मौलिक काम हैं। फिर उससे लगान या माल पैदा करने के क्या मानी? इन्हीं से सरकार की आय होगी, जैसे दूध से दही। फिर गाय, भैंसों से सीधे दही पैदा करने की कोशिश क्यों, यदि खाद्य-पदार्थ सस्ते हों, राष्ट्र और समाज शक्तिशाली और हृदय पुष्ट हो! इसी तरह कच्चा माल सुलभ और सस्ता हो, उद्योग धंधे चमकें और राष्ट्र शक्तिशाली हो। अमेरिकाकी समृद्धि का प्रधान कारण यह है कि उसने जमीन से लगान या कीमत लेने के बजाय किसानों को मुफ्त जमीनें दी हैं और खेती में बिना कहे सभी सुविधाएं पहुंचाई हैं। राष्ट्रीय सरकार लगान लेनेकी परवाह छोड़कर कृषिकी सर्वाङ्गीण उन्नतिकी ही परवाह करे, किसानों को खेतों की समुन्नति का मार्ग प्रशस्त करे, बिना मांगे सभी साधन उनके पास पहुंचा दे। तभी हमारी अन्न समस्या और कच्चे माल की समस्या हल होगी। उत्तरोत्तर बढ़ने वाली जनसंख्या को अन्न-वस्त्र देने का कोई अन्य मार्ग है भी नहीं।

भारतीय दर्शन के अनुसार मनुष्य शरीर इस ब्रह्मांड का लघु स्वरूप है। सृष्टि का सब कुछ शरीर में भी स्थित है। उपनिषदों में भी कहा है कि सूर्य ही आत्मा, अन्तर्यामी और सनातन है। ये वैज्ञानिक उपलब्धियां वेदों और उपनिषदों के तथ्यों का प्रमाणीकरण हैं। आत्मा हृदय के निकट नहीं अणु अणु में व्याप्त है।

हमारे जननायक, महामनीषी संन्यासी दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती की दिव्य आत्मा अपने प्रत्येक कार्य से इस सर्वात्मदर्शन के अपने पूर्ण बोध को प्रकटकरती है। यह उनकी अद्वैत आचारनिष्ठा और वास्तविक शांकर वेदांत अथवा यो कहें कि शंकराचार्य के आचारदर्शन का परिचायक है।

आध्यात्मिक साधना का पर्यवसान मोक्ष में होता है जो पूर्ण शांति तथा आनन्दमय है, किन्तु यह शांति मृत्यु की शांति नहीं और न यह अनंत आनन्द अनुभव-शून्यता है। यह शांति उच्चतम जीवन से अनुप्राणित है जिसमें आध्यात्मिक साधना और नैतिक नियम की अवस्था के संघर्ष और उष्णता का मोक्ष के आलोक तथा आत्मिक शांति के आनन्द में पर्यवसान होता है। वेदांत का उद्देश्य जीवन और जगत् के विषय में अज्ञानमय दृष्टिकोण का निवारण है, जीवन का अन्त और जगत् का विनाश नहीं। शास्त्र और गुरु की कृपा से तत्वज्ञान प्राप्त कर लेने के कारण ज्ञानी सत्याऽसत्य में विवेक कर सकता है, वह यह जान लेता है कि एक अद्वैतब्रह्मा ही चरम सत्य है। वह मेरी तथा सर्वभूतों की आत्मा है।

जीवन में प्रत्येक मनुष्य एक से अधिक का व्यंजक है। जितने अधिक मनुष्यों की व्यंजना उसके व्यक्तित्व में होगी उतना ही उसमें मनुष्यत्व अधिक होगा, सच्चा और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्ण मनुष्य मनुष्यमात्र का व्यंजक है। उदार चरित्र वालों के लिये समस्त भूमण्डल एक कुटुम्ब के समान है। सर्वात्म भाव ही मनुष्य की सबसे बड़ी साधना और मानव जाति की मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय है। श्री शंकराचार्य ने लोक संग्रह को मुक्तों का स्वाभाविक कर्त्तव्य कहा है। बस इसी परिपेक्ष्य में स्वामी जी के जीवन दर्शन को समझा जा सकता है। किसान समाज की उनकी सेवा तथा किसानों की विविध समस्याओं की ओर उनका क्रियात्मक ध्यान उसी दृष्टिकोण का परिचायक है।

——

जागो तुम एक बार

मनोज कुमार सिन्हा, बी०ए० प्रथम वर्ष

जागो तुम एक बार—ओ श्रमजीवी किसान,
मध्य वर्ग ! कर निनाद, जागे जिससे समाज ।
तुम समाज के अन्तस्तल, तुम समाज के रीढ़स्थल,
तुम पर आधारित सारा समाज ओ शेषनाथ ।।

× × × ×

तुम पहुंचाते अन्न सभी को तुम पहनाते वस्त्र सभी को,
तुम करते सब राज काज ओ राष्ट्र पोषक कर शंखनाद।
आज तुम्हारा शोषण करके बना है पूंजीवाद समाज,
करता है शासन से जो साँठ गाँठ, हे सर्वहारा तोड़ो इनका प्रमाद।

× × × ×

शोषण का निदान है समाजवाद, एकाधिकार का क्रान्तिवाद,
करना है विषमता का विनाश, ओ प्रलयंकर कर प्रलय आज।।
पर क्रान्ति भरी इस बेला में, मत भूलो तुम भारत समाज,
जिस स्वामी जी की शिक्षा पाकर, है सजग हुआ मानव समाज।
ओ दर्शन जनक कर दो प्रकाश, जग जाये सकल जिससे समाज,
जागो तुम एक बार .....।।

—:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मार्क्स, लेनिन और श्री स्वामी जी

—रामानन्द शर्मा

जननायक श्री स्वामी जी के विषय में लिखना आसान कार्य नहीं—यह अत्यधिक कठिन कार्य है और साधारण जनों के लिए सुकर नहीं है। जिनका जीवन प्रारम्भ से ही संघर्षमय रहा हो, जिनके जीवन में सारी जटिल समस्याएं केन्द्रीभूत हों और वह हस्ती दिलेरी से गुत्थियों को सुलझाती हुई, समस्याओं को पलों और क्षणों में हल करती हुई आगे बढ़ती जाय—उनके विषय में कोई लेखनी का धनी ही कलम उठाने का अधिकारी हो सकता है। आज हमने अनाधिकार चेष्टा की है और श्री स्वामी जी महाराज के बारे में कुछ लिखने को लेखनी उठाई है। कही चुके हैं, श्री स्वामी जी का जीवन प्रारम्भिक काल से ही संघर्ष का जीवन रहा है। विभिन्न प्रकार की विषम समस्यायें आपके चिर परिचित मित्र है। आपने संघर्ष को देखकर घबराना तो सीखा ही नहीं—उलटे उसका स्वागत करते है। बगैर संघर्ष के आप को अपना जीवन नीरस मालूम पड़ता है।

आज नवयुग की प्रकाश किरणें विश्व की अंधकार पूर्ण कन्दराओं में भी अपना प्रकाश बिखरने लगी हैं। सहस्त्रों वर्षोंसे गाढ़ निद्रा में निमग्न हम भारतवासी अपने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में अगड़ाइयां लेने लगे हैं। परन्तु आज से पूर्व जब हमारी चेतना लुप्त प्रायः थी तो उस समय जिस महापुरूष की वाणी ने हमारी सुषुप्ति को जगाया—वह हमारे जनसाधारण के नेता श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी ही हैं।

आप जीवन भर प्रवाह के विरूद्ध तैरते रहे जो अत्यधिक कठिन कार्य है। जब हम स्वामी जी की जिन्दगी की तुलना जर्मनी के बहुत बड़े दार्शनिक तथा वैज्ञानिक समाजवाद के अधिष्ठाता कार्ल मार्क्स तथा उस समाजवाद को रूस में सर्व प्रथम प्रतिष्ठित करने वाले लेनिन की जिन्दगी से करते हैं तो हम श्री स्वामी जी में नयी चीज नया दृष्टिकोण पाते है। श्री स्वामी जी के जीवन में हमें ऐसी रोशनी मिलती है। जो मार्क्स और लेनिन के जीवन में उपलब्ध नहीं। श्री स्वामी जी का जीवन मार्क्स और लेनिन के जीवन से भी वृहत्तर है क्यों कि मार्क्स और लेनिन एक दूजरे के पूरक हैं। एक ने सिद्धांत का प्रतिपादन किया और दूसरे ने उसे कार्यान्वित किया। परन्तु हमारे स्वामी जी स्वयं अपने में पूर्ण हैं। उन्हें अलग से किसी पूरक की आवश्यकता नहीं। ये सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं और स्वयं उसे कार्यान्वित भी करते हैं। इन्हें अपने सिद्धांत को कार्यान्वित करने के लिए किसी लेनिन की आवश्यकता नहीं रहती। मार्क्स और लेनिन दोनों का कार्यक्षेत्र संकुचित रहा है। वे लोग जीवन पर्यन्त समाज की आर्थिक हालत को उन्नत बनाने पर ही जोर देते रहे हैं और उसी को बेहतर बनाने के लिए वे लोग प्रयत्नशील रहे हैं। परन्तु श्री स्वामी जी ने राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक आदि समाज के प्रत्येक अंग को अपना क्षेत्र बनाया और उनमें जो बुराइयां आ गयी थीं उन्हें दूर किया। आज भारतीय समाज का कोई भी अंग ऐसा नहीं है जो आप से प्रभावित न हो। भारतीय समाज की छोटी से छोटी समस्याओं से लेकर बड़ी समस्याओं तक को श्री स्वामी जी एक दृष्टि से देखते हैं। आप सर्वतोमुखी सिद्धांत के निर्माता और सर्वतोमुखी क्रांति के अग्रदूत है। आपने सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक गरज कि प्रत्येक क्षेत्र के लिए नया सिद्धांत निकाला और इन क्षेत्रों में क्रांति की, लेकिन मार्क्स ने तो कोई क्रान्ति की नहीं, सिर्फ आर्थिक सिद्धांत निकाला इसलिए उसकी तुलना श्री स्वामी जी से करने का प्रश्न ही नहीं उठता हैं। लेनिन ने अवश्य क्रांति की थी। लेकिन उसने भी दूसरे के ही सिद्धांत को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमली जमा पहनाया है—किसी मौलिक सिद्धान्त का आविष्कार नहीं किया है। अतएव इन दोनों के सम्मिलित व्यक्तित्व से श्री स्वामी जी के एक कार्य (आर्थिक) की तुलना की जा सकती है। जहां ये लोग नदीं है वहां श्री स्वामी जी समुद्र की तरह दिखाई पड़ते है। जो साधारण जनों के लिए अगम और अथाह है। उन लोगों जैसी असंख्य नदियां श्री स्वामी जी के वक्षस्थल पर हिलोरें लेती रहती है।

श्री स्वामी जी का जीवन प्रारंभ से ही पवित्र और स्वच्छ रहा है। सादगी के तो ये अवतार ही हैं। इन बातों में मार्क्स और लेनिन इनसे कोसों दूर है। खान पान, रहन सहन आदि इनकी सारी आदतें सादी है—परन्तु विचार हैं बहुत ऊंचे। स्वामी जी देहात की जिन्दगी पसन्द करते है तभी तो निरी देहाती कुटिया में निवास करते हैं। प्रातःकाल सवेरे जब हवा बिलकुल शान्त और स्वच्छ रहती है उसी वक्त बिस्तर छोड़ देते हैं और दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर कोसों दूर घोर देहात में टहलने चले जाते हैं। उधर से किसानों के दुख-सुख को देखते हुए—उनकी समस्याओं की जानकारी प्राप्त करते हुए अपने आश्रम में वापस आते हैं। इस तरह की जिन्दगी मार्क्स और लेनिन को नसीब कहां ? ऐसी जिन्दगी किसी भारतीय सन्त को ही हासिल हो सकती है। अपने बाल-काल से ही घर बार छोड़कर संन्यास धारण किया है। परन्तु ये श्री अरविन्द जैसे संन्यासी नहीं कि सारे संसार से अलग होकर किसी पांडिचेरी में जाकर बंद हो गये। ये जीवन की विषमताओं से पलायन करना नहीं जानते बल्कि दिलेरी के साथ उसका मुकाबला करते हैं। इनका जीवन कर्म का जीवन हैं। कर्म में ही ये इह-लोक तथा परलोक के सारे सुखों का अनुभव करते हैं। नर के नीच ही नारायण को देखते हैं। गरीबों की सेवा ही इनका सबसे बड़ा धर्म है। समाज से शोषण और उत्पीड़न दूर करना ही इनके जीवन का एकमात्र ध्येय है। इन्हीं चीजों के जरिये सच्चे स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है। इसमें इनका अटल विश्वास है। इस ऊंचे उद्देश्य की वजह से ही स्वामी जी को इतनी लोकप्रियता प्राप्त है। जिस रास्ते से ये प्रस्थान कर दें—'इनकी जय जयकार होने लगती है। ये जो कह दें वह जन साधारण के लिए महा-मंत्र हो जाता है। जिस ओर ये कदम बढ़ा दें करोड़ों कदम उसी ओर बढ़ जाते हैं। ऐसी लोकप्रियता अपने जीवन में न तो मार्क्स को हासिल हुई थी और न लेनिन को। मार्क्स तो जन्म भर खाक ही छानते रहे। लेनिन ने अपनी जिन्दगी के अन्त में लोकप्रियता प्राप्त की थी। लेकिन श्री स्वामी जी जैसी लोकप्रियता मयस्सर कहां। इसका प्रत्यक्ष सबूत यह है कि लेनिन के जीवनके आखिरमें रूसी जनता उसे गोली का शिकार बनाना चाहती थी और वह गोली लगने से मरते-मरते बचा था। उसके यहां दिन रात संरक्षकों का कड़ा पहरा रहता था। किसी को उसके नजदीक जाने की अनुमति नहीं थी। लेकिन श्री स्वामी जी बगैर एक छड़ी के भी अकेले भारतवर्ष के गांवों की गलियों में घूमा करते है :—भूखे किसानों से मिलते हैं—उनके बच्चों को प्यार करते है। कभी स्वप्न में भी ऐसा नहीं सोचा जाता कि उन पर भी ऐसी बीतेगी। जहां इनका चरण पड़ता है वह सर जमीन काशी जैसा पवित्र समझा जाता है। जिस रास्ते से ये गुजरते हैं वह बद्रीनारायण का पथ बन जाता है। तभी तो ये आज सारे हिन्दुस्तान के गुरु बने बैठे है।

ये बहुत बड़े स्पष्ट वक्ता हैं। चाहे कोई भी। क्यों नहीं निर्भीक होकर ये खरी बातें सुना देते हैं। सर्व प्रथम उनकी बातों को सुनकर लोग इनको कठोर दिल वाले समझते हैं लेकिन इनकी तुलना नारियल फल से ठीक जचती हैं। ये उसी के अनुरूप हैं। ऊपर से सख्त और भीतर से कोमल हैं। अधिकार के लिये लड़ने में ये सर्वदा अगली कतार में रहते हैं। ये किसी के जुर्म को बर्दास्त नहीं कर सकते। ये ऐसे कर्तव्यनिष्ठ हैं कि जिस काम को हाथ में लेते हैं उसे पूरा करके छोड़ते हैं। चाहे उसके चलते इन्हें बहुत बड़ी मुसीबत ही क्यों न उठानी पड़े।

हिन्दुस्तान में किसान सभा के जन्मदाता आप ही हैं। आप ही ने फैजपुर कांग्रेस के महाधिवेशन में यह प्रस्ताव रखा था कि किसानों का देशव्यापी स्वतन्त्र संग-ठन हो और कांग्रेस ने इसे फैजपुर कार्यक्रम के अन्दर इसे स्वीकार किया था। जिस तरह गज को ग्राह से बचाने के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिये भगवान स्वयं दौड़े आये थे उसी तरह जहां जहां किसानों पर मुसीबत आई वहाँ ये स्वयं नंगे पांव दौड़े गये हैं और किसानों के संकट को दूर किया है। इसलिये ये किसानों के प्राण कहे जाते हैं। आज तक हिन्दुस्तान के सात लाख गांवों की आंखे आप पर ही हैं। आप ही से हिन्दुस्तान के दीन हीन किसान नेतृत्व की आशा रखते हैं। बिहार प्रान्त के किसानों के तो सर्वस्व आप ही हैं। कोई भी बिहार का गांव ऐसा नहीं है जिसे श्री स्वामी जी ने अपने पैरों से पवित्र नहीं किया हो। यहां के गांवों का इन्होंने तीर्थयात्रा के अनुरूप भ्रमण किया है। बिहार का प्रत्येक किसान श्री स्वामी जी के नाम से परिचित है। प्रत्येक नौजवान, प्रत्येक बूढ़ा और प्रत्येक बच्चा भी स्वामी जी के लिये जान देने के लिए तैयार रहता है।

आप की यह लोक प्रियता किसी की दया, सहायता या अवलम्बन पाकर नहीं बनीं। बल्कि आप में कुछ ऐसे विलक्षण गुण हैं जिसके कारण भारतवासियों ने आपको अपनी आंखों में बिठाया है। लोकसेवा की बृहत्तर भावनाओं में आपने अपनी व्यक्तिगत सुख सुविधा आमोद प्रमोद, आशा और आकांक्षाओं को विलीन कर दिया है। आप स्वयं निर्मित और स्वावलम्बी आदमी हैं। जो सोचते हैं वही बोलते हैं और जो बोलते हैं वही करते हैं। आप के प्रत्येक कार्य के पीछे दृढ़ संकल्प और उसकी सफलता पर दृढ़ विश्वास रहता है। आपके हृदय में किसानों के प्रेम की अजस्र धारा सर्वदा फूटती रहती है। आज आप को पृथक कर भारतवर्ष के किसानों की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। आप स्पष्टवादी, सिद्धान्त के बड़े पक्के और धनी हैं। यही कारण है कि भारतवर्ष की निःसहाय और निरवलम्ब जनता की सतृष्ण आँखे भारतवर्ष के एक अजस्तम्भ दुर्जेय, कर्मशील, युगद्रष्टा श्री स्वामी जी महाराज की ओर लगी रहती है।

—:(०):—

स्वामी जी के प्रति

रमाकान्त सिंह यादव, बी०ए० प्रथम वर्ष

पवित्र गंगा के रम्य तट पर, है विद्यापीठ चिर स्नेह की रानी।
कर्मवीर सहजानन्द की, यह संस्था है अमर निशानी॥
मां भारती के इस सपूत ने, जनहित का संकल्प लिया।
सरस्वती का सुरभित सदन ये, उनकी पुण्य स्मृति में आया॥
उस अमर्त्य मानव के श्रम से, नूतन एक विहान हुआ था।
कण-कण से मुखरित यह स्वर तू, मेरे लिए बलिदान हुआ था॥
उनकी स्मृति को 'केशव' ने, पनपाया दे पौरुष का पानी।
नन्दन वन की छवि है देती, तरुपुंजों की हरियाली॥
आंगन में हरियाली का आंचल, लहराया करता है।
ईंटों का सिरमौर ताज, हर समय विहंसता रहता है॥

——

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती

—चौधरी राजनारायण शर्मा, विशारद

महान कर्मयोगी, संस्कृत के प्रकांड विद्वान्, सन्यास को सार्थक बनाने वाले, किसानों के एकछत्र नेता जननायक दंडी स्वामी सहजानन्द सरस्वती को जन्म देने का गौरव उत्तर प्रदेश को प्राप्त है। उनका जन्म गाजीपुर जिले के देवा ग्राम में १८८९ ई० को शिवरात्रि के दिन हुआ था।

सन् १९०७ ई० में ही काशी के श्री अद्वैतानन्द सरस्वती से दीक्षाग्रहण कर दंडी सन्यासी हुए। तीर्थ स्थानों का भ्रमण किया। काशी और दरभंगा में संस्कृत का अध्ययन किया।

सामाजिक क्षेत्र में ब्राह्मणों में परस्पर भेद भाव बढ़ते देख आपने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण कर ऐतिहासिक सामग्रियां एकत्र कर "ब्रह्मर्षिवंश विस्तर" नामक ग्रन्थ लिखकर आपने ब्राह्मणों की एकता प्रदर्शित की।

धार्मिक क्षेत्र में तथा कर्मकांड में बढ़ते हुए अन्धकार और अज्ञान को मिटाने और सर्वसाधारण की जानकारी के लिए सभी संस्कारों से युक्त एक बड़ा ग्रन्थ हिन्दी विधि सहित 'कर्मकलाप' की रचना कर महान पांडित्य का परिचय दिया। 'गीता हृदय' लिखकर आपने लोकमान्य तिलक की तरह यश अर्जन किया।

मठ मन्दिरों से भ्रष्टाचार मिटाने के लिए आपने अ० भा० विरक्त महामंडल की स्थापना की और उसके प्रथम अध्यक्ष आप ही चुने गये।

संस्कृत शिक्षा के प्रसार के लिए श्री सीतारामाश्रम विहटा में संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की तथा बिहार और उत्तरप्रदेश में अनेकों संस्कृत शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करायी।

स्वतन्त्रता संग्राम में १९२१ में गिरफ्तार होकर उत्तर प्रदेश के जेलों में रहकर १९२३ में रिहा हुए। बाद में कार्यक्षेत्र बिहार हो गया और १९३० में नमक कानून तोड़ने में छः माह की सजा हुई। १९४० में तीन वर्ष की सजा हुई।

आप प्रारम्भ में गाजीपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष तथा बाद में पटना जिला कांग्रेस के अध्यक्ष, बिहार प्रदेश कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य तथा जब तक कांग्रेस में रहे अ० भा० कांग्रेस के सदस्य चुने जाते रहे।

जब कांग्रेस में समझौता और विपक्ष की बात हुई तो स्वामी जी नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस के साथ रहे और रामगढ़ (बिहार) में अ० भा० समझौता विरोधी सम्मेलन का आयोजन आपने किया। उक्त सम्मेलन में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए नेताजी ने कहा था—"स्वामी जी ने जब बिगुल बजा दी है तो हम लोगों को आगे बढ़ना है। इस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष स्वामी जी हैं। इसलिए इसका महत्व बढ़ जाता है।"

देश की स्वतन्त्रता के बाद १९४८ में स्वामी जी ने कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया।

किसानों की दयनीय दशा देखकर आपने किसान सभा की स्थापना की थी। १९२८ ई० में प्रथम प्रान्तीय किसान सम्मेलन के आप प्रथम अध्यक्ष और डा० श्रीकृष्ण सिंह प्रथम प्रधान मन्त्री हुए। अ० भा० किसान सभा का संगठन भी आपने किया। फैजपुर कांग्रेस के अवसर पर सम्पन्न अ०भा० किसान सम्मेलन तथा कुमिल्ला (बंगाल) में सम्पन्न अ० भा० किसान सम्मेलन की अध्यक्षता आपने ही की तथा वर्षों तक अ० भा० किसान सभा के प्रधान मन्त्री भी रहे। आपने अंबारी, बड़हिया, रेवरा आदि कई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसान सत्याग्रह का सफल संचालन किया। आपके ही कारण काश्तकारी कानून में संशोधन हुआ तथा जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ।

'लोक संग्रह' नामक हिन्दी साप्ताहिक का वर्षों सम्पादन करते रहे।

सन् १९४९ ई० के शिवरात्रि को ६० साठवीं जयन्ती के अवसर पर साठ हजार की थैली आपको भेंट दी गयी, जिसे आपने सार्वजनिक कार्यों में व्यय किया।

२६-३-५० को मुजफ्फरपुर में श्री मुचकुन्द शर्मा वकील के निवास स्थान पर पक्षाघात के आक्रमण से आप का देहावसान हो गया। देश में सन्नाटा छा गया।

आपके दर्शन के लिए पटने के गांधी मैदान में अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। बिहार के मंत्रियों और नेताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

अर्थी का जुलूस स्वामी जी के आश्रम में बिहटा (पटना) पहुंचाया गया, जहां उन्हें समाधि दी गयी। राष्ट्रपति ने शोक प्रकट करते हुये कहा—"स्वामी जी एक शक्तिशाली व्यक्ति थे। उन्होंने जनता की बड़ी भलाई की। उनकी मृत्यु से बिहार का जन जीवन रिक्त पड़ गया और अब उसकी पूर्ति में पर्याप्त समय लगेगा। श्री जयप्रकाश नारायण ने भी तार भेज कर शोक प्रकट किया। बिहार के सभी समाचार पत्रोंने सम्पादकीय लिख कर शोक प्रगट किया।

३०-६-५० को पटने में डा० श्री कृष्ण सिंह (तत्कालीन मुख्यमंत्री) की अध्यक्षता में शोक सभा में राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन भी श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए विशेष रूप से उपस्थित थे।

स्वामी जी निर्भीक और तेजस्वी वक्ता थे। आप खुशामद पसन्द व्यक्ति न थे। लल्लो चप्पो पसन्द नहीं करते थे। नियम विपरीत होते देख आप उबल पड़ते थे।

स्वामी जी रचित 'ब्रह्मर्षिवंश विस्तर, कर्मकलाप गीता हृदय, क्रांति और संयुक्त मोर्चा, मेरे संस्मरण आदि प्रमुख पुस्तकें हैं।

स्वामी जी की स्मृति में श्री सीताराम आश्रम बिहटा स्वामी सहजानन्द कालेज, जहानाबाद (गया), स्वामी सहजानन्द कालेज बचरी पीरो (भोजपुर), स्वामी सहजानन्द कालेज आरा (भोजपुर) तथा स्वामी सहजानन्द विद्यापीठ महाविद्यालय, गाजीपुर (उ० प्र०), स्वामी सहजानन्द स्मारक प्रेस, बिहटा (पटना), स्वामी सहजानन्द स्मारक, पटना, स्वामी सहजानन्द सरस्वती परिषद सिन्दरी, मुजफ्फरपुर, रांची और बेगूसराय में है। संस्कृत हाईस्कूल तथा कई अन्य संस्थायें उनके नाम पर है। स्वामी सहजानन्द स्मारक समिति के महासचिव श्री वैद्यनाथ पांण्डेय एम० एल० सी० के प्रयत्न से बोकारो स्टील सिटी (धनबाद) ने आठ एकड़ जमीन निवन्धित कर दी है जिसमें भी स्वामी जी के नाम पर नीची से ऊंची शिक्षा तक की व्यवस्था रहेगी। प्रतिवर्ष स्वामी जी की जयन्ती मनाई जाती है। लेकिन उनकी सबसे बड़ी जयन्ती उनकी लिखी पुस्तकों का उचित मात्रा में प्रकाशन कर जनता के लिए सुलभ किया जाना ही होगा। वर्तमान काल में स्वामी सहजानन्द स्मारक प्रेस रहते हुए भी स्वामी जी की पुस्तकों का प्रकाशन ठीक से नहीं होता और चाहने वाले को पुस्तक मिल भी नहीं पाती। स्वामी जी के विचारों के प्रसार के लिए पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था अपेक्षित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वतन्त्रता के बाद स्वामी जी

—स्वामी शिवानन्द सरस्वती

आजादी के बाद तो स्वामी जी केवल ३ वर्ष रहे ही-जेल जाने का प्रश्न ही क्या रहा ? मुख्यमंत्री श्री बाबू थे, जो स्वामी जी के भक्त ही थे। हां आजादी के बाद १९४९ में किसान रैली गांधी मैदान में हुई थी, जिसमें लाखों किसान इकट्ठे हुये थे, पटना के कलक्टर ने जुलूस निकालने पर रोक लगाया था, श्री बाबू को मालूम हुआ, तब उसने कलक्टर से रोक हटवा लिया और जुलूस निकला था।

मीटिंग में स्वामी जी ने जोरदार शब्दों में कलक्टर को फटकारा और लौह पुरुष पटेल को जमींदारों के मुआवजा देने के प्रश्न पर काफी फटकार सुनाया और कहा कि अंग्रेजी सरकार जिसने जमीन्दारी की व्यवस्था की उसके लिये जमींदारों को मुआवजा देने जा रहे हैं तो दो सौ वर्षों से अंग्रेज शासन करते हैं तो उन्हें मुआवजा क्यों नहीं देते ? उन्हे मुआवजा दें। पटेल बोल सकते हैं, कोई आश्चर्य नहीं है। वे पैलेस में रहते हैं। किसानों की तरह झोपड़ी में रहते, और उनकी स्त्रियां सैकड़ों पेवन के कपड़े पहनती और आकाश के बूंद घर से बाहर नही जाता, तब पता चलता मुआवजा देना योग्य है या अयोग्य। मुआवजा के पैसे गरीबों के खून से आयेगे। इसी ढंग से वे बोलते ही थे, किसी की परवाह करते नहीं थे।

——

स्वामी सहजानन्द की पुण्य स्मृति में—

जितेन्द्र कुमार सिंह 'राही', बी० ए० प्रथम वर्ष

तुम्हारी सेवा का सत्कर्म।
विश्व की विद्या का यह शान ॥
धरा को स्वर्ग बनाया तूने।
बना यह भारत देश महान ॥
रश्मि की मादकता से युक्त।
विधाता कह न सके अभिशाप ॥
बहा पीयूष धारा ज्योति।
मिटाया तूने जग का पाप ॥
शस्य श्यामल यह भारत भूमि।
विधाता की है मंगल मूल ॥
तुम्हारे चरणों में हे देव।
कभी तो खिलेगा सुन्दर फूल ॥
तुम्हारे स्नेहिल उर में देव।
सदा मानव ने करुणा पाया ॥
क्षमा करना "राही" के पाप।
तुम्हारे पावन स्थल पर आया ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धा का प्रतीक स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ

(केशव प्रसाद शर्मा, संस्थापक)

सन् १९२२ में मेरे किशोर पितृव्य ब्रह्मदेव राय ने स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा "विहटा" में स्थापित श्री सीताराम आश्रम में पढ़ना आरम्भ किया। उन पर स्वामी जी के आचरण का बड़ा गहरा असर पड़ा, घर-वालों के समझाने बुझाने के बावजूद उन्होंने विवाह करने में इन्कार कर दिया। इससे कुटुम्बीजन घबड़ाने और उनकी तथा स्वामीजी के कार्यों की चर्चा करने लगे। उन्हीं दिनों यह ख्याति कि स्वामी जी गाजीपुर जनपद के एक गांव के निवासी और अब धारी सन्यासी तथा वेद, वेदांग शास्त्र, पुराणादि के प्रकाण्ड विद्वान हैं, सर्वत्र फैल गई। समाज को गर्हित जीवन से ऊपर उठाने के उद्देश्य से उन्होंने अपने अध्ययन- अध्यवसाय का सम्बल ले भूमिहार वंश के उद्भव और विकास पर एक प्रामाणिक ग्रन्थ लिखा। किसी भी प्रकार की उत्तम साधना के लिए परा-धीनता को अभिशाप मानने वाले स्वामी जी जन-जन को अधिकार बोध कराने तथा उन अधिकारों की उपलब्धि के लिए सघर्ष करने को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से कांग्रेस के कार्य-क्रमों को क्रियात्मक रुप देने में संलग्न हुये। किसानों को जमींदारों के पाशविक अत्याचारों से मुक्त करने कराने के उद्देश्य से किसान सभा की स्थापना करके जमींदारों की मनमानी के विरुद्ध भी संघर्ष करने में सक्रिय हुये। गृह त्यागी सन्यासी के इन कार्यों की जानकारी ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया क्यों कि उस समय तक मेरा मन एक सन्यासी के द्वारा ऐसे कार्यों के सम्पादन की कल्पना तक नहीं कर सकता था। काल-क्रम से विदित हुआ कि समाज को छोड़कर निज सुख के लिए साधना करने वालों की अपेक्षा कराहती मानवता की मुक्ति और उसके उत्कर्ष के लिए प्रयत्नशील कर्म निष्ठ सन्यासी कहीं अच्छे, बहुत अधिक अच्छे होते हैं। इस प्रकार के ज्ञान ने मुझे स्वामी जी के प्रति श्रद्धावान बना दिया।

जैसे-जैसे मेरी समझ शक्ति बढ़ती गई, वैसे ही वैसे स्वामी जी को देखने और समझने-परखने की मेरी लालसा भी बढ़ती गई। उधर स्वामी जी भी शनैः शनैः मेरे परिवार के सदस्यों के निकट सम्पर्क में आते गये। सम्पर्क इतना बढ़ा कि कलकत्ता आने पर वे हावड़ा स्थित हमारे ही आवास पर ठहरने भी लगे। उस समय तक मैं भी अपने गांव डेढ़गांवां से हावड़ा आकर कलकत्ता में उच्च शिक्षा प्राप्त करने लगा था। मेरे पिता श्री विक्रमादित्य शर्मा तथा पितृव्य द्वय श्री कालिका प्रसाद शर्मा और श्री चन्द्रिका प्रसाद शर्मा हावड़ा में रहते और स्वामी जी के प्रति श्रद्धा निवेदित करते रहते थे। स्वामी जी के हावड़ा प्रवासकाल में मुझे उनसे बहुत कुछ सुनने-समझने का अवसर मिला। मैंने कई बार उन्हें किसानों की दुर्दशा की बातों को कहते-सुनते समय आकुल-व्याकुल तथा अश्रु-पूरित होते और जमींदारों के जो मुख्यतः उनके ही स्व-जातीय थे, अत्याचारों के प्रसंगों में क्रोध से लाल हो दुर्वासा का रुप धारण करते देखा। उनकी बात-चीत और उनके आचरण व्यहार को देख कर मुझे हमेशा यही अनुभव हुआ कि वे न समाज से पलायन करने वाले सन्यासी थे और न ही जाति-वादी, कांग्रेसी अथवा कम्युनिस्ट। वे तो पद, धन, जाति आदि की गर्हित भावनाओं से युक्त, मानवता के उत्कर्ष के लिए अपना सर्वस्व आहुत करने को प्रस्तुत एक कर्मनिष्ठ सन्यासी थे।

ज्ञान और वाणी के धनी, भावुक और संवेदनशील तथा लोगों को उद्वेलित कर देने वाली वक्तृता की शक्ति से सम्पन्न स्वामी सहजानन्द सरस्वती सन् १९५० में भगवान को प्रिय हुए। मुझे आशा थी कि जन-पद के लोग गाजीपुर में उनका कोई स्मारक निर्मित करेंगे, किन्तु बीस वर्षों की प्रतिक्षा के बाद भी जब किसी को उस दिशा में पहल करते न देखा, तब गाजीपुर नगर में उनके नाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक डिग्री कालेज खोलने का संकल्प ले प्रयत्न आरम्भ किया और हावड़ा, कलकत्ता तथा गाजीपुर जनपद के स्वामी जी के प्रति आस्थावान और शिक्षानुरागी सज्जनों ने मुझे इतना अधिक सहयोग और प्रोत्साहन दिया कि सन् १९७२ आते आते मैं अपने संकल्प को "स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ (डिग्री कालेज) के रुप में मूर्तिमान करने में समर्थ हुआ। यह विद्यापीठ स्वामीजी के प्रति मेरी अचूक अटूट श्रद्धा का प्रतीक है। इसको वर्तमान रुप देने में जिन--जिन व्यक्तियों ने सहयोग दिया है, मैं उन सबके प्रति कृतज्ञ हूं।

-()-

सहजानन्द भी क्या है

अहा ! सहजानन्द भी क्या है।
इतनी सुविधा और कहाँ है।
थोड़े में निर्वाह यहाँ है।
क्यों न यहाँ सबका मन चाहे।

गंगा का सुरम्य किनारा,
विद्यालय है जहां हमारा।
चमक रहा है जगमग प्यारा,
तारों में जैसे ध्रुवतारा।

सहजानन्द में पढ़ना सीखो,
संघर्षों से लड़ना सीखो।
दिन—दिन आगे बढ़ना सीखो,
ज्ञान शिखर पर चढ़ना सीखो।

इसको कभी भुला मत देना,
तुच्छ समझ ठुकरा मत देना।
श्रद्धा सुमन चढ़ाते आना,
जीवन सफल बनाते जाना।

सूबेदार सिंह यादव, बी०ए०प्रथम वर्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दण्डी स्वामी सहजानन्द जी के दीक्षा गुरू

—रासबिहारी राय शर्मा

स्वामी जी के शिक्षा गुरु सभी प्रचण्ड विद्वान थे। उनको काशी के प्रसिद्ध वैय्याकरण पं० देवनारायण त्रिपाठी ने बहुत लगन से तीन चार वर्षों में सिद्धान्त कौमुदी, मनोरमा, शेखर आदि ग्रन्थ पढ़ाये थे। स्वामीजी ने उनके प्रति भूरि भूरि प्रशंसा की है। काशी के प्रखर पण्डित पं० अच्युता नन्द नैयायि में उन्हें न्याय, पं० शंकर भट्टाचार्य ने वेदान्त और सन्यासी पाठशाला के साहित्य गुरु ने साहित्य, काव्य और अलंकार पढ़ाया था। स्वामी जी को नव्य न्याय पढ़ने के लिए काशी छोड़कर मिथिला आना पड़ा था। नव्य नाम के पण्डित उस समय दरभंगा के पं० बालकृष्ण थे। उन्होंने स्वामी जी को नव्य न्याय बहुत प्रेम से पढ़ाया था। स्वामी जी की मेधा और प्रतिभा प्रशंसनीय थी, जहां जाते वहां सम्मान होता था काशी के अन्य पण्डितों के यहां जा जाकर शंका समाधान करते थे। सब लोग आदर करते थे। प्राइमरी स्कूल में श्री रामधनी सिंह और हाईस्कूल में सर्वत्र सफल शिक्षकों के आदर के पात्र रहे। उत्तर प्रदेश में बराबर छात्रवृत्ति (स्कालर--शिप) पाते रहे।

अपारमठ के स्वामी अच्युतानन्द दशनामी सन्यासी से पहली दीक्षा ली थी। वे भी प्रगाढ़ विद्वान थे। पीछे स्वामी जी ने दशाश्वमेध घाट पर विराजमान स्वामी अद्वैतानन्द सरस्वती से दराड ग्रहण लिया था। दराड ग्रहण की महिमा उनको पीछे मालूम हुई थी। स्वामी जी ने अपने दीक्षा गुरु दराडी स्वामी अद्वैतानन्द की भूरि भूरि प्रशंसा की है। वे वास्तव में सन्यासी थे। उनको छल कपट आदि से चिढ़ थी। वे निर्विकार थे। स्वामी जी बारे में हाई स्कूल के साथी प्रोफेसर लौटू सिंह गौतम और प्रतिवाद भयंकर शास्त्री के विजेता रुद्र भट्ट ने मुझ से काशी में बहुत बहुत प्रशंसा की थी। पढ़ने के समय स्वामी जी रात दिन स्वाध्याय में लगे रहते थे। पीछे सराय गोवर्द्धन के पं० शिवजगत सिंह शर्मा और पं० श्यामनारायण शर्मा के अनुनय विनय पर एक प्रेस की स्थापना की थी। वही प्रेस पीछे भूमिहार ब्राह्मण प्रेस सराय गोवर्द्धन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वहां भूमिहार ब्राह्मणों के सामाजिक जीवन का कार्य आरम्भ हुआ स्वामी जी ने बलिया की महासभा में १९१३ दिसम्बर की २८ तारीख को सर्वप्रथम ब्राह्मण समाज की स्थित पर भाषण किया था जिस सभा के सभापति हथुआ नरेश महदेव गुरु आश्रम प्रसाद शाही थे।

स्वामी जी के प्रभाव से बिहार में संस्कृत का बहुत प्रचार हुआ था। आज सैकड़ों विद्वान सर्वत्र संस्कृत विद्यालयों में ऊंचे पदों पर विराजमान हैं। स्वामी जी के समय काशी में लक्ष्मणाचार्य अपने समाज के बहुत बड़े विद्वान थे। रामनारायण शर्मा, पं० रामपदार्थ शर्मा डा० रामकर्ण शर्मा आदि का नाम बिहार में प्रसिद्ध है। स्वामी जी के भक्तों में सर्व शास्त्राचार्य पं० श्रुतिदेव शास्त्री इस समय बिहार राष्ट्रभाषा के निदेशक डायरेक्टर हैं। स्वामी जी ने जीवन पर्यन्त चन्डी और गीता को साथ में रखा था। स्वामी जी ने किसी को दीक्षा शिष्य नहीं बनाया था। दीक्षा शिष्य 'कन फुकवां गुरु के सिद्धान्त के विरोधी थे। धन्य हैं स्वामी जी का जीवन चरित्र जिसको मनन कर कोई भी अपना जीवन सुधार सकता है।

—:०(:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे गुरूदेव

स्वामी सहजानन्द सरस्वती

जिनसे मैंने दण्ड ग्रहण किया उन गुरुदेव महाराज का नाम था श्री स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती। वे संस्कृ-- तज्ञ न थे। केवल गीता आदि का पाठ कर लेते थे। लेकिन प्रेम और भक्ति की मूर्ति ही थे। मेरे जैसे तार्किक और रूखे मनुष्य के दिल को भी उन्होंने बलात् अपनी ओर आकृष्ट किया था, यही क्या कम है ? जब कभी भक्ति की बात आ जाती तो इधर बोलते जाते और उधर आखों से प्रवाह चलता था। यह तो मैंने सैकड़ों बार देखा जरा सी भी भगवान की बात निकली कि आंखे छल छला आई। जब अत्यन्त वृद्ध अशक्त प्राय हो गये तभी विश्व-नाथ बाबा के मन्दिर में जा कर दर्शन करना बन्द किया। तब चर्चा होने पर स्वयं ही कह बैठते जलपूर्ण आंखों के साथ ही "क्या वे मन्दिर नाथ हैं ? वह तो विश्वनाथ हैं। वे तो सर्वत्र हैं। फिर मन्दिर में क्यों जाऊं। वे कैद तो हैं नहीं उन पंडों के हाथ।" नित्य दर्शन का फल अन्त में यह अनुभव और अपार सन्तोष ! यही तो भक्ति का असल रूप है।

वे सदा श्वेत भस्म लगाते थे। भेंट होने पर हमें भी देते थे। रुद्राक्ष की माला पहने रहते। उनकी सुमि-- रनी (हाथ में पड़ी रहने वाली हरदम जपने की छोटी माला) बराबर चलती रहती। उसे कभी विराम नहीं मिलता। संयोग वश जब वह हाथ में नहीं रहती तो उंग-लियों पर अंगूठा ही घूमा करता और सुमिरनी का काम उसी से निकल जाता। ऊंगलियों वाला यह अभ्यास तो बहुत ज्यादा हो गया था। एक प्रकार से सांस की तरह उनकी यह स्वाभाविक चीज हो गयी थी। इसीलिए निद्रा के समय भी उनकी उंगलियों पर अंगूठा घूमता ही रहता था। जाने कितनी बार मैंने स्वयं यह दृश्य देखा जब कि अकस्मात मैं पहुंच गया और वे नींद में थे।

उनकी आंख और उनके दाँत मरते दम तक ठीक रहे। चश्मा लगाने की उन्हें जरुरत उस सौ वर्ष की उम्र में भी न हुई। दांतों से वृद्धावस्था में भी चबेनी चबा लेते थे। मैं हैरत में रहता। उन्हें सुंघनी सूंघने की सख्त आदत थी। पीछे तो यह हालत थी कि बाजार की बनी जिस सुंघनी को नाक में घुलाते ही हम छीं-छीं करने लग जाते उसका उनपर कुछ असर ही न होता। इसलिए काली मिर्च की अत्यन्त महीन बुकनी उसमें मिलाकर सूंघा करते थे। तब कहीं उसकी तेजी का भान उनको होता था। उनका कहना था कि बाल्यावस्था से ही सुंघनी से उनका ससर्ग हो गया था। वह यह भी कहते थे कि मस्तिष्क के विकार की यह रहने नहीं देती। उसमें गर्मी का नाम नहीं रह जाता। इसी लिए आंखें ठीक हैं और दांत भी। मैंने औरों से भी ऐसा सुना है। कह नहीं सकता कि बात क्या है ? इसकी पूरी पूरी जांच हो तो ठीक। क्यों कि आज कल तो दांतों और आंखों की बीमारी से प्रायः सभी परेशान हैं। इसलिए अगर यह सच हो तो बड़ी आसान दवा है।

गुरु जी महाराज अतिथि सत्कार में एक ही थे। पास में खाने पीने की चीजे बराबर अपनी कुटिया में रखते और जो जाता उसे बिना कुछ खिलाये मानते ही न थे। मेरी तो सदा से खाने पीने के बारे में सख्त नियम की आदत रही है। लेकिन उनका निश्छल स्वभाव मुझे भी विवश करता। सीधे वह इतने थे कि सभी बातें कह देते। छिपाते एक भी न। कभी कभी ऐसा करने से अप्रतिष्ठा की सभावना रहती है। क्यों कि अपनी कमजोरियां और छिद्र सभी को विदित हो जाते हैं। मगर उन्हें कोई परवा न थी। उनका हृदय अगाध और स्वच्छ गंगाजल की तरह शुद्ध था। वहां छल कपट की गुन्जाइश भी ही नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं कई ऐसी घटनाएं जानता हूं जिन्हें प्रकट करने की हिम्मत किसी को भी नहीं होती। मगर उन्होंने उन्हें कभी नहीं छिपाया। फलतः मरते दम तक उनकी पूजा होती ही रही। भगवान में तो उनका अपार विश्वास था। खाने पीने की फिक्र उन्हें इस लिए न थी। उनका भण्डार भरपूर भी शायद इसी से रहता था।

कभी कभी ऐसा होता कि अपने बचपन की बातें सुनाते थे। कहा करते कि एक रूपये के तीन मन पक्की तोल खेसारी कोई पूछता न था। हम गांव के बनिये के पास तौलकर जबरदस्ती रख आते थे कि वर्ष दो वर्ष में जब हो सके इसका दाम देना। इसी प्रकार खेती की और चीजों के बारे में भी कहते थे। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थदश की यह बात वह कहते थे। बनारस जिले में ही इनका जन्म स्थान था गंगा से दक्षिण। कहते थे कि एक गौ उसने पाली थी। उसकी सेवा अपने हाथों करते थे। वह कामधेनु थी। जब चाहें उससे दूध दूह लेते थे। कोई सन्यासी या महात्मा यदि समय कुसमय पहुंच जाय तभी ऐसा करना पड़ता था। उन्होंने महात्माओं की सेवा खूब ही की थी।

अन्त में उनका एक उपदेश सुनाऊंगा जो और किसी से मुझे नहीं मिला। साधु और असाधु की जो परिभाषा अपने शब्दों में की वह स्मरणीय होने के साथ ही काव्यमय थी। एक दिन उन्होंने इसी प्रसंग में कहा "गुणग्राही साधु, अवगुणग्राही असाधु। अवगुणग्राही साधु, गुणग्राही असाधु।" फिर मुझ से चट पूछा कि इसका मतलब समझा? मेरी समझ में तो आया नहीं। अतः मैंने कहा कि नहीं। यह महाभारत के कूट श्लोक के तरह की चीज थी। फिर समझता कैसे? तब उन्होंने समझाया कि साधुका यह कामहै कि दूसरोंके गुणोंको ही देखे। उनके हजार अवगुणों पर दृष्टि करे ही न। इसी प्रकार अपने सहस्त्र गुणों पर दृष्टि न रख कर यदि एक भी अवगुण हो तो बार बार उसी पर दृष्टि लाये। विपरीत इसके असाधु वह है जो गैर के हजार गुणों को छोड़ कर उसके ऐब को ही देखता फिरे। पर अपने सहस्त्र छिद्रों को न देख एकाध गुण भी अपने में पाया जाय तो मुनादी करता रहे।" यह एक नई चीज मुझे उनसे मिली, इतनी नई और ऊंची कि कह नहीं सकता। मैं उनकी सेवा न कर सका इसका दुख मुझे सदा रहेगा। कुछ समय तो पढ़ने से ही फुर्सत नहीं थी। पीछे सार्वजनिक कार्यों से ही। इस बीच शीघ्र ही वे इस छल प्रपंच से भरी दुनियां को छोड़ कर चल बसे। सन्तोष यही रहा कि शरीरान्त के समय मैं उनके चरणों में ही था।

—:(०):—

किसान संगठन एक राष्ट्रीय आवश्यकता

—डा० मान्धाता राय

आम आदमी को राजनीतिक पार्टियों द्वारा किये गये आयोजन एवं प्रदर्शन राजनीतिक स्टंट लगते हैं और उनका सम्बन्ध कहीं न कहीं वोट से जुड़ा होता है। दूसरी ओर नेताओं के इस कथन में कुछ सच्चाई है कि आजादी के बाद किसान आन्दोलन इसलिए शान्त पड़ गया कि सरकार किसानों की दशा सुधारने के लिए काम करेगी। किन्तु शहरी उद्योग धन्धों की चकाचौंध में उलझी सरकार ने किसानों के लिए जो थोड़ा बहुत किया वह नहींके बराबर दीखता है। उन्हें केन्द्र में रखकर कागजी योजनाएं ही अधिक बनाई गई हैं उनकी दशा सुधारने के लिए ठोस काम कम हुआ है। आपात काल में नसबन्दी और लगान में वृद्धि जैसे जुल्म उन पर ढाहे गये। विकास कर का बोझ पहले से था। यही नहीं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में हर प्रकार के करों का बोझ उन पर पड़ा है। भूमि आवंटन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं चकबन्दी की दुर्व्यवस्था के चलते उनमें टकराहट बढ़ गई है। जिस अनुपात में खाद, बिजली और खेती के यन्त्रों की कीमतें बढ़ी हैं। उस अनुपात में उनकी पैदावार की कीमत नहीं। यू० पी० में कांग्रेस ने जाते-जाते बढ़ी लगान वापस ले लिया था। किन्तु किसानों की हिमायती जनता सरकार ने पुनः लगान बढ़ा दिया। किसानों का एक बार फिर न केवल मोह भंग हुआ बल्कि आत्मघाती निराशा हाथ लगी। वर्तमान सन्दर्भ में किसान संगठन का औचित्य इन्हीं मुद्दों को लेकर आवश्यक हो गया है ताकि उसके माध्यम से वे भी अपनी आवाज उठा सकें।

किसान विद्रोह से किसान संगठन तक

ब्रिटिश हुकूमत में जमींदारों के जुल्म के खिलाफ उन्नीसवीं शती में ही कहीं-कहीं छिट-पुट विद्रोह होने लगे थे। किसानों का पहला विद्रोह १८३६ ई० में मालाबार के मोपला किसानों द्वारा हुआ था। किन्तु उसे धार्मिक बताकर साम्प्रदायिक रूप दे दिया गया। १९२० के पहले तक होने वाले सभी आन्दोलनों को यही संज्ञा मिली। बिहार और बंगाल की सीमा पर १८८५ में सथालों ने विद्रोह किया। गुजरात और अहमदनगर में भी मारवाड़ियों के विरुद्ध विद्रोह हुआ। परन्तु असंगठित होने के कारण ये आन्दोलन दब गये। १८७५ के बाद संगठित आन्दोलन हुए जैसे नील बोने वालों का आन्दोलन। १९२१ में नेताओं और समाजसेवियों के सहयोग से पहली बार किसान आन्दोलन असहयोग आन्दोलन के रूप में हुआ जिसने सरकारको हिला दिया। स्वामी सहजानन्द सरस्वती के प्रयास से ४ मार्च १९२७को बिहटामें 'बिहार किसान सभा' नाम से किसानों का पहला संगठन बना। इस तरह स्वामी जी किसान आन्दोलन के जनक माने जाते हैं। १९२८ का बारदौली आन्दोलन इसी संगठन के परिणामस्वरूप हुआ। १९३६ में लखनऊ में 'अखिल भारतीय किसान सभा' की स्थापना हुई और इसका प्रथम सम्मेलन हुआ। ब्रिटिश सरकार की उग्र कार्यवाईयों के कारण बीच में यह दब सा गया था। किन्तु १९४५ में इसका पुनर्गठन 'आल इण्डिया किसान सभा' नाम से बम्बई में किया गया। आजादी के बाद अपनी सरकार बनने जमींदारी उन्मूलन हो जाने और स्वामी जी के देहावसान के पश्चात् उचित नेतृत्व के अभाव में यह संगठन भंग हो गया। वैसे तो कहने के लिए हर पार्टी की किसान संघर्ष समिति है लेकिन वह राजनीतिक हथियार ही है।

अर्थनीति की दृष्टि से राजनीति

स्वामी सहजानन्द ने इस आन्दोलन से, जातिगत कवच को दूर फेंककर इसे वर्गगत संगठन का रूप दिया था। उन्होंने किसानों को वर्ग विहीन समाज की संरचना के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु संघर्ष करने के लिए ललकारते हुए कहा-"मजदूरों एवं खेतिहर मजदूरों की भी संस्था किसान सभा ही है" इसके उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया-"कांग्रेस राजनीति के लिए अर्थनीति अपनाती है जबकि किसान सभा अर्थनीति पर ही आधृत है और अर्थनीति की दृष्टि से वहां राजनीति की जाती है" इसके लिए समन्वय और राष्ट्रीयताकी भावना पर उन्होंने बल दिया। उन्होंने किसानों को बार-बार आगाह किया कि केवल राजनीतिक स्वराज्य धोखे की टट्टी है। उनका स्वराज्य आर्थिक स्वराज्य है। उनके प्रयास से किसानों को कुछ राहत मिली।

स्वतन्त्रता पूर्व और स्वातन्त्र्योत्तर किसानों की स्थिति

बीसवीं शती के दूसरे और तीसरे दशक में किसानों की स्थिति के बारे में स्वामी जी ने लिखा है-"कहीं के किसान कंदन पर जीते थे तो कहीं के मछली और घास पर" आजादी के पन्द्रह वर्ष बाद गाजीपुर के संसद सदस्य स्वर्गीय गहमरी जी ने लोकसभा में आम की गुठली की रोटी दिखाकर पूर्वांचल की दयनीय स्थिति का शब्द चित्र खींचा था जिसके परिणामस्वरूप पटेल कमीशन आया किन्तु उसकी सिफारिशें फाइलों तक सीमित रह गयी। आज भी पूर्वी जिलों के मजदूर किसान पशुओं को खिलाए जाने वाले अन्न खेसारी (लतरी) खाते हैं, पशुओं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के गोबर का अन्न (गोबरहा) को अनाज में मिलाकर पीस कर खाते हैं। यह जरुर है कि उनमें स्वाभिमान जागा है किन्तु वह रचनात्मक और अन्तःप्रेरित न होकर नेताओं द्वारा वोट के नाम पर भड़काए जाने के कारण प्रतिक्रिया वादी बन गया है। जिनके साथ उसे रहना और काम करना है उन्हीं से वह लड़ रहा है। सच्चाई यह है कि १९६७ के पूर्व तक कम्युनिस्टों को छोड़कर सभी पार्टियां बड़ी जातियों में दो-तीन गुट बनाकर अपना काम निकाल लेती थीं और तथाकथित बड़े लोग अपने प्रभाव से शेष वोट दिलाते थे। १९६७ के बाद राजनीति ने करवट लिया। चौधरी चरण सिंह ने भाक्रांद बनाकर पिछड़ी जातियों में प्रमुख अहीर एवं कुर्मियों को अपनी ओर खींचा। उधर पश्चिम बंगाल से होकर बिहार तक पहुंचने वाले नक्सली उपद्रवियों से सम्बद्ध लोगों ने अपने-अपने क्षेत्र में अनुसूचित जातियों मुख्यतः हरिजनों को उभाड़ा और इनके वोट बड़ी जातियों के हाथ से निकल गये। तब से हर पार्टी का ध्यान इनकी ओर गया क्यों कि इनकी संख्या अधिक है और ये संगठित हैं। विडम्बना यह है कि यह सब केवल वोट तक सीमित है कांग्रेस एवं जनता दोनों शासनों में हरिजन मतों को आकृष्ट करने लेतु आंख मूदकर उनकी सभी हरकतों को सही करार दिया है। यदि यही शक्ति उनके आर्थिक विकास की तरफ लगाई जाती तो शायद वे बड़ी जातियों से उलझने एवं नफरत करने की बजाय अपनी स्थिति सुधारने में जुट जाते।

फुटबाल की तरह लुढ़कता मध्य वर्ग

आजादी के बाद किसान की परिभाषा के दायरे में आने वाले कास्तकार, छोटे खेतिहर और मजदूर किसानों में आज हर तरह की उपेक्षा उत्पीड़न और मोह भंग के शिकार काश्तकार हैं। यद्यपि मजदूर किसानों की स्थिति आज भी सबसे नीचे है किन्तु पहले से उनका जीवन बेहतर है। आज वे दबाव से मुक्त हैं। मजदूरी निर्णय का अधिकार उनके हाथ में है। कास्तकार अब उनसे मनमानी नहीं करा पाता। किन्तु जमींदारी उन्मूलन के बाद छोटे जमींदार तथा अन्य खेतिहरों की हालत बराबर दयनीय होती गयी है। कास्तकार से आशय ऐसे किसानों से हैं जो थोड़ा बहुत काम स्वयं करते है शेष मजदूरों से कराते हैं। इनमें बड़ी जातियों के लोग अधिक हैं। इनमें जो लोग अपने हाथ से कर रहे हैं वे तो किसी तरह अपना काम चला रहे हैं किन्तु दूसरों पर आश्रित रहने वालों ने १९५० से अबतक हर मौकों पर बराबर गवांया हैं। नई खेती के आकर्षण में ऋण लेकर पम्पिंग सेट लगया किन्तु उनकी हालत कहावत वाले उस ब्राह्मण की हुइ है जों चौबे से छब्बे बनने की बजाय दूबे बनगया। धरती की उर्वरा शक्ति दिनों दिन कम होने, स्वयं मेहनत न करने, सामाजिक स्थिति को बरकरार रखने का झूठा दंभ, शान के नाम पर परस्पर मुकदमें बाजी, घृणा, द्वेष उपेक्षा और खर्च में निरन्तर बढ़ोत्तरी जैसी गड़बड़ियों के चलते उनकी दशा गिरती जा रही हैं। रहीम ने ऐसे ही लोगों को लक्ष्यकर लिखा था —

"बढ़त – बढ़त सम्पत्ति सलील, मन सरोज बढ़ जाहि,
घटत–घटत पुनि ना घटे, बरु समूह कुमिलाहि।"

आज हालत यह है कि इनमें आपसी फूट तो पहले से थी ही इनके सहयोगी मजदूर किसानों को भी राजनीति ने न केवल इनसे दूर किया अपितु इनका शत्रु बना दिया इनके साथ काम करने वाले, खेतों की रखवाली करने वाले मददगार ही आज इनके एवं फसलों के दुश्मन बन गएहैं। इनकी फैक्ट्री तो खेतों एवं खलिहानों में हैं जिसे ताले में बंदनहीं किया जा सकता दैवी आपदा तो दूर रहे अब फसल उखाड़ने और काटने से लेकर गल्ला फूंकने एवं खेतों में सोये व्यक्तियों की हो रही हत्या के कारण इस वर्ग में आतंक की स्थिति पैदा हो गयी है। इनकी कमजोर हालत और आपसी फूट के चलते राजनीतिक दलों को अब इनमें कोई दिलचस्पी नहीं है। यहां तक कि इस वर्ग के एम० एल० ए० और एम० पी० सिर्फ चुनाव में इनसे जाति-वाद की दुहाई देकर वोट मांगते हैं। जीतने पर इनके खिलाफ बोलते हैं। फिर इनकी बात कहे कौन। आज शहरों में झाड़ू देने वाले मेहतरों से लेकर गजटेड आफि-सरों तक सब का संघ बन गया है और उसके प्रत्यक्ष लाभ मिल रहे है। गांव का किसान ही ऐसा है जो संगठन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभाव में मारा मारा फिर रहा है। विभिन्न संघों के माध्यम से लोग चेतावनी, अनशन, कामठप घेराव जैसे हथकण्डों को अपना कर अपनी बात मनवा रहे हैं और दिनोंदिन सुविधा जीवी बन रहे हैं। छोटे शहर गाजीपुर की नगर पालिका में इतने अधिक मेहतर हैं कि ठीक से काम करें तो सड़क पर एक तिनका न दीखे किन्तु कूड़ों का अम्बार लगा रहता है। जिस दिन सड़कें साफ दिखती हैं उसका अर्थ होता है कि कोई मंत्री आने वाले हैं। किसान आजादी के बाद कभी कांग्रेस, कभी तोशलिस्ट, जनसंघ और भालोद के चक्कर में भटकते रहे। पहली बार उन्होंने संगठित होकर जनता पार्टी को वोट दिया कि यह सरकार उनके लिए काम करेगी किन्तु लगान एवं बिजली की दरों में हुई वृद्धि और फैक्टरियों से उत्पन्न माल की तुलना में उनकी वस्तुओं की कीमतों में कमी के चलते यहां भी उसे धोखा मिला। इस पार्टी द्वारा भी उनके बीच वर्गभेद बरकरार रखने के षड़यन्त्र के कारण उनका मोह भंग हो गया और उन्होंने पुनः कांग्रेस को वोट दिया पर यहां भी उनकी पूछ नहीं है।

मजदूर किसानों की समस्या का निदान

किसान संगठन

आज भले ही मजदूरों और कास्तकारों में तनाव है किन्तु कल तक मजदूरों के सुख-दुख में २४ घन्टे का साथी कास्तकार ही था। आज भी जहाँ सम्बन्ध ठीक है वही संभाल रहा है। ऐसी स्थिति में आवश्यकता है एक कुशल नेतृत्व की जो सारे देश में दौड़कर किसानों के इन दो वर्गों में व्याप्त मतभेद की खाई को पाटे क्यों कि खेती की हालत में सुधार होने पर ही मजदूर किसानों की हालत सुधरेगी-नारेबाजी और भाषण से नहीं। भूमिहीनों को दो या चार बिस्वा भूमि देने से उनकी गरीबी दूर नहीं हो सकती। जब गल्ला अधिक पैदा होगा तभी कास्तकार उसे भी अधिक दे सकेगा--यह एक कटु सत्य है। सभी मजदूरों को सरकार फैक्टरियों में नौकरी नहीं दे पायेगी और न अन्त्योदय कार्यक्रम सबको धना-ढ्य बना पायेगा। कास्तकार और मजदूर किसान एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं। जिस प्रकार स्वामी सहजा-नन्द ने बीसों वर्ष तक उत्तरी भारत के गांव गाँव में रात दिन भाग दौड़ की थी, बरसात में पैदल चलकर कीचड़ व पानी पार कर उन्हें सुसंगठित किया उसी प्रकार यदि एक कर्मठ नेता इस काम को अपने हाथ में ले तो सरकार की सरदर्द हरिजन समस्या भी आसानी से सुलझ जायेगी। गो कि इसे राजनेता पसन्द नहीं करेंगे क्यों कि वोट के नाम पर तोड़ने के लिए या कहने के लिए उनके पास मसाला क्या रह जायेगा। कार्यक्रम तो दिखावा मात्र के लिए रह गए हैं। असली राजनीति जोड़-तोड़ पर चल रही हैं। ऐसी स्थिति में अगर कास्त कारों और मजदूर किसानों के दिमाग में यह बात बैठ जाती है कि उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार, आपसी सहयोग और संगठन पर निर्भर है तो आने वाले कल का नेतृत्व पूंजीपति नहीं किसान करेंगे। किन्तु जैसे पुराने जमाने में यज्ञ में बाधा डालने के लिए राक्षस और देवता दोनों आते थे उसी प्रकार किसान संगठन का प्रयास शुरु होने पर जातीय कुचक्र का नारा देकर मौज करने वाले नेता और पूंजीपति दोनों विरोध करेंगे और करना शुरु भी कर दिए हैं। गड़बड़ी यह भी है कि आज सहजानन्द जी जैसा दौड़ धूप करने वाला कोई त्यागी एवं पूर्ण समर्पित व्यक्तित्व भी नहीं रह गया है।

किसानों के हमदर्द बनकर समय समय पर कई लोग आये। चौधरी चरण सिंह, राजनारायण, शरद यादव, केशव प्रसाद शर्मा जैसे दर्जनों नाम गिनाये जा सकते है। किन्तु किसानो को छोटे पैमाने पर एक सूत्र में बांधने का प्रयास किसी ने नहीं किया। क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी शहरी मजदूरों को संगठित कर उनके नेतृत्व में गांव वालों को संगठित करना चाहती है। दूसरे आन्दोलनों का सहारा ले रहे हैं। काश किसी भी रूप में किसान संगठित हो पाता तो जहां उद्योगपति अपने माल तथा दूसरों के सामान का मूल्य तय करते हैं यूनि-यने अपनी वाली कराती है, उन सबकी नकल किसानों के हाथमें आज भी है आजतक यूरिया खादको छोड़कर किसी भी वस्तु का मूल्य एकाएक दुगुना नहीं हुआ है। लगान भी दुगुनी तिगुनी कर दी गयी है। चारों ओर से किसान का शोषण हो रहा है किसान कातर दृष्टि से सब देख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहा है। वस्तुओं के भाव बढ़ जाने पर कम नहीं होते किन्तु सीजन में हर साल गल्लों का भाव गिर कर पुरानी जगह पहुंच जाता है और बाद में दुगुना हो जाता है। यही आकर शासन की कलई खुलती हैं कि बिना साठ-गांठ के कैसे होता है ? आज आवश्यकता हैं किसी निस्पृह नेता की जो ईकाई स्तर से किसानों को सगठित कर सके अथवा भारत को कृषि प्रधान देश कहने में कोई सार्थकता नहीं रह गई है।

—:)०(:—

स्वामी सहजानन्द सरस्वती

का

जीवन-दर्शन और किसान समस्या

—डा० शिवमंगल राय

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जीवन-दर्शन विलक्षण और विस्मयकारी था। मात्र अठारह वर्ष की आयु में उन्होंने गृहस्थी के जंजालों को छोड़कर जीवन के रहस्य को समझना अपना लक्ष्य बनाया। गृह-त्याग कर सुयोग्य गुरु की खोज में दो वर्ष तक भारत के विभिन्न भागों का पैदल भ्रमण किया। फिर काशी का अपारनाथ मठ में सात वर्ष रहकर वेद, वेदांग, शास्त्र और पुराणादि का अध्ययन किया। भूमिहारों के उद्भव के प्रश्न पर ब्राह्मणों और भूमिहारों को परस्पर संघर्ष करते देखकर उस एकान्तिक आध्यात्म-चिन्तन और साधना के आकांक्षी दण्डी-धारी सन्यासी ने समाज को ऐसे गर्हित जीवन से ऊपर उठाने के उद्देश्य से प्रयत्न आरम्भ किया और पांच वर्षों के भ्रमण और तथ्यान्वेषण के उपरान्त 'ब्रह्मर्षि वंश विस्तर' की रचना के माध्यम से समस्या का अभूतपूर्व और अचूक समाधान प्रस्तुत किया। प्रयत्न के इस क्रम में उन्होंने अनुभव किया कि पराधीन राष्ट्र में की जाने वाली समस्त साधनाएं भी पराधीन रहती हैं। इस अनुभूति ने उन्हें देश के स्वाधीनता संग्राम में उतार दिया। वे कांग्रेस के कार्य-क्रमों में भाग लेते और नाना प्रकार की यन्त्रणाओं को झेलने लगे। वर्षों के इस अभियान-क्रम में उनके जीवन-दर्शन में किंचित् और परिवर्तन आया। शोषित और अत्याचार-पीड़ित किसानों की दशा ने उस अति भावुक और संवेदन-शील महा मनीषी को तत्काल कुछ ठोस करने के लिए प्रेरित किया। उस समय तक बड़े-बड़े जमींदार नगरों में रहने लगे थे। छोटे जमींदार गाँवों में रहकर भी अपने ही हित चिन्तन और भोग-विलास में मस्त थे। इस प्रकार किसानों के हित सर्वथा उपेक्षित थे। जमींदार प्रतिवर्ष लगान निश्चित करते और उसकी वसूली गल्ले में करते थे, किन्तु लगान पाने की रसीद तक नहीं देते थे। किसानों से बेगार कराते पर्व उत्सव के अवसर पर दूध, दही, अन्नादि का उपहार लेते तथा अपनी हर आज्ञा का पालन करने के लिए उन्हें मजबूर किये रखते थे। उलटे, लगान न चुकाने वालों पर नाना प्रकार का जुल्म ढाते और उनकी पुत्र-वधुओं को नंगा तक करके धमाटवाते थे। महाजन भी जो बहुधा जमींदार ही हुआ करते थे, उनका मनमाना शोषण करते थे। इस प्रकार किसान अर्थ और इज्जत के दोहरे संकट से गुजर रहे थे। सन् १८४३ की जिमरमान की पुस्तक 'हिस्ट्री आफ टि ग्रेट पीजेण्ट वार' तथा १८५० को फ्रैडरिक ऐंगल्स की पुस्तक 'दि पीजेण्ट वार इन जर्मनी' से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी को ज्ञात हुआ कि किसानों के शोषण–उत्पीड़न की समस्या अति प्राचीन और विश्व व्यापी है। भारत में भी सन् १८३६ में मालावार के मोपला में, १८४५ और १८७५ के मध्य महाराष्ट्र, खान देश और गुजरात में, १८७० में आकस्मिक सस्ती के समय बिहार में तथा १८७० और १८७५ के मध्य खेड़ा, अहमद नगर, पूना, रत्नगिरि, सितारा, सोलापुर और अहमदाबाद में आन्दोलन हुए थे। ये सभी विद्रोह या तो जमींदारों के अथवा सूद–खोरों, मारवाड़ियों, अन्य बनियों और जुलियों के विरुद्ध हुए थे। सन् १९२० में ही सरकार ने हर प्रान्तों में कृषि के विकास के लिए एक अलग स्वतन्त्र विभाग बनाया, किन्तु इससे भी किसानों की समस्या को कोई समाधान न मिला। स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने यह सब जानकर और यह भी देखकर कि सरकार भी जमींदारों का ही समर्थन करती हैं, किसानों के लिए कुछ ठोस काम करने के उद्देश्य से सन् १९२७ में 'किसान सभा' की स्थापना की और दो वर्षों के अपने भ्रमण और सतर्क भाषणों के द्वारा बिहार के किसानों को उत्साहित कर उसे 'बिहार प्रान्तीय किसान सभा' का स्वरूप दे किसानों पर होने वाले अत्याचारोंके विरुद्धसीधा संघर्ष आरम्भ कर दिया जमींदारोंके दबाव और उनके उग्र विरोधके बावजूद किसान आन्दोलन के जनक स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने किसान सभा के मंच से सन् १९३१ में लगान–प्रगति की रसीदों की तथा १९३२ में सजामी बेगार और असबाब से मुक्ति की जोरदार मांग की और इन मांगों की आपूर्ति के लिए जम कर संघर्ष आरम्भ कर दिया। सन् १९३६ आते आते स्वामी जी ने किसान सभा की स्थापना कर किसानों के आन्दोलन को अखिल भारतीय स्तर पर उपस्थित कर दिया। आंदोलनके बढ़ते प्रभावसे जमींदारों और महाजनोंमें खलबली मचने लगी। ऐसेही परिवेशमें किसान सभा ने लगान घटाने और ऋणोंमें राहत की मांग की।

अत्याचारों के उन्मूलन के अचूक आकांक्षी स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने १५ वर्षों तक कांग्रेस के कार्यक्रमों में भाग लेने और गांधी, नेहरु और पटेल जैसे चोटी के नेताओं के अति निकट सम्पर्क में रहने के बावजूद कांग्रेस का त्याग किया क्यों कि वे ऐसे किसी भी व्यक्ति अथवा संगठन के साथ एक क्षण भी काम करने को प्रस्तुत न थे जो अत्याचारियों से भी समझौता करके अपना अभियान चलाता हो। उनके जैसे वीत–रागी सन्यासी के लिए जिसे पद, धन अथवा मिथ्या सम्मान का किंचित मोह न था और जिसका एक मात्र मिशन था अत्याचार का उन्मूलन और मानवता का उत्कर्ष, ऐसा करना सहज स्वाभाविक था। यही कारण है कि कांग्रेस के इन कार्यों से भी निराश न होकर बल्कि और अधिक उत्साह और दृढ़ता के साथ अपने संघर्ष को गतिशील बनाये रखा। आन्दोलन की विफलता के लिए उनके प्रभाव को घटाने तथा उनकी छवि को धूमिल बनाने के उद्देश्य से उन्हें कभी कम्युनिस्ट कहा गया क्यों कि रामवृक्ष बेनीपुरी और राहुल सांकृत्यायन से उनका सम्पर्क और किसान आन्दोलन के प्रश्न पर वैचारिक साम्य था।

उनमें लक्ष्य तक पहुंचने का अदम्य उत्साह और अचूक आत्म–विश्वास था। वे कीचड़ से अलग रह कर पक–मुक्त होने का दम्भ भरने अथवा एकान्त साधना में विश्वास करने वाले नहीं, संकीर्णताओं के दलदली समाज में रहकर और जीवन के भी मोल पर अत्याचारों को उच्छेद और मानवता के उत्कर्ष के लिए क्रियात्मक संघर्ष और संघर्ष का नेतृत्व करने वाले सन्यासी थे। यदि राजनीति सफलता उनका लक्ष्य होती तो वे अपनी प्रतिभा, लगन और अपने ज्ञान, त्याग और ओज–पूर्ण प्रखर भाषण आदि के संयोग से किसी भी राजनितिक दल के शीर्षस्थ नेता अथवा सर्वोच्च नेताओं में से एक होते और यदि भूमिहार (जातिवादी अर्थ में) होते तो भूमिहार–बहुल जमींदारों के ही गढ़ बिहार में किसानों के लिए जो मुख्यतः छोटी जाति के थे। किसान सभा की स्थापना नहीं करते और न ही स्वजातीय जमींदारों–महाजनों के अत्याचारों के विरुद्ध जीवन के अन्तिम क्षणतक संघर्ष का नेतृत्व नहीं करते। सच तो यह है कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती किसी भी प्रकार के प्रलोभन और संकीर्ण स्वार्थ से मुक्त एक ऐसे महामानव थे जिनकी समस्त साधना का एकान्त लक्ष्य 'जीवित भगवानों' को चाहे वे किसी भी जाति, वर्ग वर्ण अथवा धर्म के क्यों न हों, सब प्रकार की संकीर्णताओं और अत्याचारों से उन्मुक्त करना था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मण्य और दण्डी स्वामी

—पाण्डेय सूर्यनारायण शर्मा, भूतपूर्व विधायक

दण्डी स्वामी केवल ब्राह्मण ही हिन्दु शास्त्रों के अनुसार हो सकते हैं। इसलिए दण्डी स्वामी ब्राह्मणत्व के महान प्रतीक थे। दण्डी स्वामियों का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। सिकन्दर के काल में जो मनीषि भारत में आये उन्होंने दण्डी स्वामी का वर्णन अत्यन्त उत्कंठित एवं भावविभोर होकर किया है। यूनानी लेखकों ने दण्डी स्वामी का दण्डमिष शब्द से उल्लेख किया है। ब्राह्मणत्व का मतलब ही है कि सर्वस्व जाने पर भी ज्ञान एवं सत्य का संग न छोड़ें। और उसी ब्राह्मणत्व के दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती प्रतीक थे। स्वामी जी का तीन स्वरूप है। पहला स्वरूप उनका तब दृष्टिगोचर होता है। जब उन्होंने ब्राह्मण आंदोलन शुरु किया दूसरा स्वरुप उनका तब दिखलाई पड़ता है जब उन्होंने जब वे राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुए, तीसरा स्वरुप उनका तब दिखाई पड़ता किसान आन्दोलन द्वारा संसार के सामने दलित किसानों की आवाज बुलंद की। इस तरह से देखते हैं तो पुराणों ने विराट ब्रह्म का स्वरुप तीन रुपों में वर्णन किया है। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। उसी तरह स्वामी जी पहले ब्रह्मा के सदृश्य ज्ञान अर्जित कर ब्रह्मण आन्दोलन के माध्यम से बिखरे एवं टूटे हुए ब्राह्मण दलों को जोड़ने का बेजोड़ प्रयास किया। दूसरे कांग्रेस के माध्यम से राष्ट्रीय अधः पतन से मुक्त करने का सतत् सत् प्रयास किया। तीसरा जोर जुल्म और अत्याचारों से पूरित दुनिया को बदलने के निमित्त उन्होंने किसानों का मार्ग दर्शन किया। लेकिन ब्राह्मणत्व वाली बात उनके जीवन से इतनी अभिन्न थी कि उन्होंने अपने मानसिक जगत से उसका कभी परित्याग नहीं किया। स्वामी जी एक महान योगी थे। योगी का काम दो चीजों को मिलाकर जोड़ने का है। स्वामी जी की ही दिव्य दृष्टि इस सत्य को देख सकी कि विभिन्न नामों से अख्यात एवं विख्यात ब्राह्मण गण आपस में सभी सीमाओं पर वैवाहिक सम्बन्धों से आबद्ध हैं। चाहें उनका नाम मैथिल ब्राह्मण हो, या पश्चिमा ब्राह्मण। चाहे सरयूपारी ब्राह्मण हों या भूमिहार ब्राह्मण। चाहे कान्य कुब्ज ब्राह्मण हो या भूमिहार ब्राह्मण हो। चाहे गौड़ ब्राह्मण हो या त्यागी ब्राह्मण हों। चाहे सारस्वत ब्राह्मण हों चाहे महियाल ब्राह्मण हों। चाहे चितपावन ब्राह्मण हों चाहे देसस्थ हों। इस तरह सभी ब्राह्मण वैवाहिक सम्बन्धों से अपनी अपनी सीमाओं पर एक दूसरे से वंश परम्परा से विवह करते चले आ रहे हैं और आज भी हैं। इस बात क लोग देखते हुए भी दूसरे लोग बिसार दिए थे। स्वामी जी इन सभी ब्राह्मणों को एक मंच पर लाकर उनका संगठन करना चाहते थे। और उसका असली रुप भी उन्होंने अपनी पुस्तकों एवं लेखों के द्वारा कैसे प्रदान किया जाएगा सभी को विस्तार से बतलाया इसलिए स्वामी जी के स्वरुप को समझने के लिए उपर्युक्त तीनों स्वरुपों का सम्यक ढंग से स्वाध्याय एवं मनन होना चाहिए। उनके नामों पर संचालित संस्थाओं का यह पुनीत कर्तव्य था होना चाहिए कि स्वामी जी द्वारा लिखित विशाल साहित्य का संकलन किया जाए।

उनका साहित्य प्रकाशित एवं अप्रकाशित उनके द्वारा लिखित पुस्तक रुप में है। तथा १९१४ में जब भूमिहार ब्राह्मण पत्रिका काशी से प्रकाशित हो रही थी उस समय उन्होंने उसका दो साल सम्पादन किया। उसमें धर्मशास्त्र सम्बन्धी विषयों पर उनकी अत्यन्त गंभीर तथा विद्वानों के पढ़ने लायक लेख हैं। उसको खोजकर संग्रह करना चाहिए। उसके बाद उन्होंने लोकसंग्रह नामक पत्रिका का सम्पादन भी कई वर्षों तक किया। जिसके सम्बन्ध में उस समय के मूर्धन्य हिन्दी लेखकों ने मुक्त कंठ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से प्रशंसा की है। उसके बाद जनता नामक पत्रिका में भी उनके विशाल लेखों की संख्या हैं। तत्पश्चात उन्होंने 'हुकार' नामक पत्रिका निकाली और उसका भी सम्पादन किया। प्रारम्भ में इनकी लेख माला 'आज' बनारस तथा 'बंगवाशी' कलकत्ता पत्र में गीता रहस्य पर धारा प्रवाह प्रकाशित हुई हैं। उसके बाद उसी पत्र में विधवा विवाह आदि पर 'हमारी दो विषम समस्यायें' शीर्षक से धारा प्रवाह प्रकाशित हुई है जिसमें वेद से लेकर शास्त्र-पुराण एवं धर्मशास्त्रों से पुष्कल प्रमाण उद्धृत किये गये हैं। वह लेखमाला बहुत दिनों तक सनातनी पंडितों की आधार था। आर्य समाजियों के साथ शास्त्रार्थ करने में इसके अलावे विशाल भारत, वेदान्त केशरी, कल्याण के विशेषांकों में उनके लेख भरे पड़े हुए हैं। इन सभी को एक जगह संकलित करना यह स्वामी जी के नाम पर संचालित सस्थाओं का पुनीत कर्त्तव्य हैं। इसके साथ ही स्वामी जी ने बहुत से व्यक्तियोंके पास चिट्ठी पत्री लिखी है। अभी भी बहुत से लोगों के पास में उनके सन्दूकों में बन्द है। उनकी खोज कर संग्रह करना चाहिए। इसके साथ ही बहुत से लोग अभी जीवित हैं जो स्वामी जी के साथ रहे हैं, उनका संस्मरण उनसे लिखवाकर संग्रहित करना चाहिए। इस प्रकार करके ही हम स्वामी जी की जयन्ती अद्यतन काल में मना सकते हैं। तथा आने वाली औलाद के लिए एक अमूल्य निधि का सृजन कर सकते हैं।

-: (०) :-

स्वामी सहजानन्द सरस्वती और भारतीय किसान समुदाय

—केशव प्रसाद शर्मा, महामंत्री आर० एस० पी० आई० [एम० एल०]

स्वामी सहजानन्द सरस्वती के जीवन के सम्बन्ध में स्वभावतः यह प्रश्न उठता है कि मध्यमवर्गीय किसान परिवार में जन्में सन्यासी जीवन धारण करने वाले सहजानन्द भारतीय किसान समस्याओं को हल करने हेतु संघर्ष रत क्रियाशील सामाजिक सांस्कृतिक जीवन क्यों ग्रहण किए ?

सदियों तक विशाल भारतवर्ष साम्राज्यवादी ब्रिटेन का गुलाम था। गुलाम भारतवर्ष के गाँव सामन्ती वर्ग समाज थे। वर्ग समाज का एक अंग किसान परिवार भी होता है। वर्ग समाज के आर्थिक सामाजिक समस्याओं का शिकार किसान परिवार अनिवार्यतः होता है। वर्ग समाज के आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक जीवन के गठन और संचालन का आधार अध्यात्मवाद होता है। अध्यात्म वाद शासक शोषक वर्ग का दर्शन होता है। शासक शोषक वर्ग का वर्गीय स्वार्थ यह होता है कि श्रमिक शोषित शासित वर्ग शासक शोषक वर्गीय दर्शन और सिद्धान्त से अवश्य लैस रहे। इसके लिए वह सतत् प्रयत्नशील भी रहता है। इसके समाज शास्त्रीय संघात में ही समाज से मानव वाद का लोप सा होता है।

स्वामी जी का जन्म एक मध्यमवर्गीय किसान परिवार में होने एवं सामंती वर्ग समाज में सामंतों तथा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के निरन्तर तीव्र और व्यापक होते हुए श्रमिक शोषित जनता के रक्त शोषण, दोहन, उत्पीड़न और दमन तथा गुलामी के आर्थिक सामाजिक संघात में अध्यात्मवाद के साथ मानववाद स्वामी जी के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन का आधार विकसित हुआ था। मानव वाद के दार्शनिक संघात में स्वामी जी परिवार से विरक्त होने पर भी संसार से कतई विरक्त नहीं हो सके। क्रमागत मानववाद अध्यात्मवाद से प्रबल होता गया और मानवतावाद के सामाजिक सांस्कृतिक संघात में सन्यासी सहजानन्द राजनीतिक जीवन में प्रविष्ट हुए। अध्यात्म वादी जंजीर तोड़ते हुए मानववादी स्वामी सहजानन्द का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्यासी जीवन मानववादी राजनीतिक जीवन में विकसित मानववाद विप्लवी मानवतावादी राजनीतिक जीवन का आधार नहीं बना। अतएव इसके राजनीतिक संघात में स्वामी सहजानन्द गांधीवाद के आधार पर गठित, संचालित, विकसित सशस्त्र जनक्रांति विरोधी सुधारवादी पूंजीवादी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल अवश्य हुये।

किसान नेता के रूप में दण्डी स्वामी का उदय

प्रथम विश्व युद्ध के संचालन से विश्व पूंजीवाद की आंतरिक असंगतियों का संघर्ष समाप्त होने के बजाय और भी उग्र हो उठा। भारतीय जनता भी इससे अछूती नहीं रह सकी। भारतीय श्रमिक शोषित जनता के जन आन्दोलनों को रूस के मजदूर क्रांति की विजय भी प्रभावित करने लगी। अतः स्वभावतः इन आन्दोलनों का नेतृत्व कांग्रेसियों ने हथिया लिया। गाँधीजी के पूंजीवादी सुधारवादी नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन के रूप में इनका सचालन होने लगा। इस मोहक राजनैतिक मंत्र से भारतीय मेहनतकश शोषित जनता विशेषतः किसान वर्ग उबल पड़ा। इसने स्वराज्य का अर्थ अंगरेजी गुलामी के साथ साथ जमींदारों, तालुकेदारों के भी शोषण, उत्पीड़न तथा गुलामी से मुक्त होना समझा। मानववादी दण्डी स्वामी सहजानन्द भला चुप कैसे रहते? आन्दोलन में कूद पड़े और पहली जनवरी १९२२ को गिरफ्तार कर जेल भेज दिए गए। गांधीजी की सत्य अहिंसा की वेदी पर उठते हुए जन उभार की बलि चढ़ा दी गई। यह था गांधीजी के पूंजीवादी सत्य अहिंसा का प्रयोग। इसका बुरा प्रभाव दण्डी स्वामी सहजानन्द पर पड़ा। वे यह महसूस करने लगे कि इसमे काम नहीं चलेगा।

भारतीय श्रमिक शोषित जनता के क्रमागत तीव्रतर होते हुए जन आन्दोलनों को कुचलने में केवल दमन चक्र से ही काम नहीं चलेगा, ऐसा अंगरेज साम्राज्यशाही अनुभव करने लगी। अतः अपने साम्राज्यवादी राज्य के अस्तित्व को मजबूत बनाये रखने के लिए भारतीय मध्यम वर्गीय बुद्धिजीवियों तथा पूंजीपति वर्ग को मिलाना इसने आवश्यक समझा। दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती सम भते थे कि भारत मूलतः किसानों का देश है। जब तक किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं होता राजनीतिक आजादी बेमानी होगी। देश की अधिकांश जनता शोषण और गुलामी का शिकार होती रहेगी। इसी पृष्ठभूमि में स्वामीजी ने बड़े-बड़े जमींदारों के खिलाफ विद्रोह का नारा बुलन्द किया। जमींदार केवल अंगरेजों के पृष्ठ पोषक ही नहीं सक्रिय दलाल भी थे। बिहार के किसानों की दयनीय हालत ने स्वामी सहजानन्द को विशेष रूप से आकर्षित किया। उन्होंने इससे मुक्ति का रास्ता केवल सामूहिक आन्दोलन को समझा। अतः सन् १९२९ ई० में सर्व प्रथम दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने पटना में किसान सभा की स्थापना की और उनके नेतृत्व में किसानों का वर्ग संगठन संगठनात्मक रूप अपनाने लगा। केवल बिहार में ही नही अन्य प्रान्तों में भी किसान संगठन और आन्दोलन तेजी से गठित और संचालित होने लगा। सन् १९३० आते-आते किसान आन्दोलन उग्र रूप अपनाकर राष्ट्रीय जनक्रांति में रूपान्तरित होने लगा था। इसके फलस्वरूप कांग्रेसी नेताशाही गांधीजी के पूंजीवादी सुधारवादी नेतृत्व में अंगरेज सरकार से समझौता किया। पर किसान आन्दोलन शान्त होकर भी समाप्त नहीं हुआ। जमींदारी, तालुकेदारी, जुल्म तथा पुलिस दमनका सामना किसान डटकर करते थे। सन् १९३६ ई० में स्वामी सहजानन्द सरस्वती के नेतृत्व में अखिल भारतीय किसान सभा लखनऊ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन के समय गठित की गयी। इसके उपरांत त्रिगुट स्वामी सहजानन्द सरस्वती, प्रो० रंगा तथा इन्दुलाल याज्ञिक के नेतृत्व में सारे भारतवर्ष में संगठित किसान आन्दोलन गठित और सचालित होने लगे। अखिल भारतीय किसान सभा के उद्देश्य का वर्णन करते हुए उसके विधान के दूसरी धारा में कहा गया था —

"सभा का उद्देश्य किसान बन्धुओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा दूसरे शोषणों से रहित पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान कराना तथा उसके निमित्त देश में समाजवादी जनतांत्रिक व्यवस्था कायम करना है जिसमें हर प्रकार का अधिकार श्रमजीवी जनता के हाथ में रहेगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की चुनौती के रूप में अखिल भारतीय किसान सभा का उदय

उपरोक्त उद्देश्य से गठित और संचालित किसान आन्दोलनो के राजनीतिक संघात में १९३५ के भारत कानून के अन्तर्गत १९३७ में राज्य विधान सभाओं के चुनाव होने जा रहे थे। १९३७ के चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को सात राज्यों की विधान सभा में पूर्ण बहुमत मिला। इससे किसानों में आशा का सचार हुआ पर शीघ्र ही उनकी आशा निराशा में बदल गयी। फलतः सारे भारतवर्ष में और विशेषतः उत्तर प्रदेश और बिहार में किसान आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। बिहार में तो जमीदारों का शोषण इतना तेज था कि अधिकांशकिसानों को अपनी जमीन से हाथ धोना पड़ा।

स्वामी जी के नेतृत्व में बकाश्त जमीन दखल करने को किसान संघर्ष गठित और संचालित होने लगा। ऐसे ही समय में लगातार ६ वर्ष तक नजरबन्दी का जेल जीवन यू० पी०, बंगाल तथा राजपूताना की जेलों में बिताने के बाद मैं (केशव प्रसाद शर्मा) जेल से छूट कर आया। कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन (१९३८) के समय सर्व प्रथम स्वामी सहजानन्द के अखिल भारतीय उग्र किसान नेतृत्व को अनुभव करने का अवसर मुझे कांग्रेस के लौह पुरुष सरदार पटेल के प्रांत में हुआ। कांग्रेस अधिवेशन के समय ही किसानों की रैली को स्वामी जी ने सम्बोधित किया था। कांग्रेस अधिवेशन से कम भीड़ उसमें नहीं थी। भारत में राष्ट्रीय जनतांत्रिक क्रांति की विजय के लिए स्वामी जी का सहयोग प्राप्त करना क्रांतिकारियों के लिए आवश्यक था। बिना इन्कलाबी मजदूर किसान एकता के राष्ट्रीय जनतांत्रिक क्रांति की विजय सम्भव नहीं थी। अतः स्वामी जी से घनिष्ट सम्पर्क करने का मैंने प्रयास किया और काफी तक इसमें सफल भी हुआ।

इसके बाद ही बछरावां (मुजफ्फरपुर) में किसान सभा का बिहार प्रान्तीय सम्मेलन हुआ। स्वामी जी के निमन्त्रण पर मैं वहां भी पहुंचा। बिहार के किसानों पर स्वामी जी का जादू भरा प्रभाव था। कांग्रेस उनकी किसान सभा के आगे दुर्बल प्रतीत होती थी।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के साथ स्वामी जी का कांग्रेस से निष्कासन

किसान मजदूरों के व्यापक जन आन्दोलनों का प्रभाव कांग्रेस के संगठनात्मक चुनावों पर भी पड़ा। सन् १९३९ में त्रिपुरा अधिवेशन के पूर्व अध्यक्ष पद का चुनाव हुआ वहांभी पट्टाभि सीता रमैयाको हराकरअत्यधिक मतों से नेता जी सुभाष बोप कांग्रेस अध्यक्ष चुने गये थे। वास्तव में उनकी जीत वाम पंथी शक्तियों की विजय तथा सुधारवादी पूंजीवादी शक्तियों की हार थी, जिनका प्रतिनिधित्व गांधी जी करते थे। तभी तो गांधी जी ने कहा था "यह पट्टाभि की हार नहीं मेरी हार है।"

जून ३९ के अंतिम सप्ताह में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में बम्बई में हुई। इस बैठक ने दो प्रस्ताव पारित किए। इनमें कांग्रेस सदस्यों को किसान मजदूर आन्दोलनो मे भाग न लेने तथा कांग्रेस मंत्रिमंडलों की आलोचना न करने का निर्देश दिया गया था। किन्तु नेता जी सुभाष चन्द्र वसु तथा स्वामी सहजानन्द सरस्वती के नेतृत्व में विप्लवी शक्तियों ने सारे भारतवर्ष में इसका विरोध किया। इसके लिए स्वामी तथा नेता जी सुभाष ३ वर्ष के लिए कांग्रेस से निकाल दिये गए।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के स्तालिनवादी चंगुल में स्वामी जी

इसके बाद दो महीने भी नही बीते कि २२ अगस्त १९३९ को रुप जर्मन मित्रता संधि हो गयी। आजादी हासिल करने का अच्छा अवसर समझ कर भारत के किसानों को स्वामी जी प्रोत्साहित करने लगे। रामगढ़ में कांग्रेस अधिवेशन १९४० के अवसर पर नेता जी स्वामी जी के नेतृत्व में मार्च के तीसरे सप्ताह में समझौता विरोधी सम्मेलन हुआ। किसानों में विशेष रुप से साम्राज्य विरोधी भावना देख कर अंग्रेजी सरकार ने स्वामी जी को गिरफ्तार कर हजारी बाग जेल में बन्द कर दिया। उसी जेल में कांग्रेस समाजवादी नेता जय-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाश नारायण तथा कम्युनिस्ट भी बन्द थे।

मार्क्सवादी स्वामी सहजानन्द सरस्वती

स्वामी जी ने कहाकि भारत में किसी भी पार्टी में समाजवादलानेकी क्षमता नहींहै। मुझे केवल भारतकी क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी (मा० ले०) पर ही आस्था है। यही पार्टी मजदूर क्रांतिको गठित तथा संचालित कर समाजवाद ला सकेगी। मेरीपुस्तक 'क्रांति क्यों और कैसे' की भूमिका लिखकर स्वामी जी ने मेरे मार्क्सवादी लेनिन वादी विचारों का पूर्ण समर्थन किया।

अक्टूबर १९४७ के अन्तिम सप्ताह में स्वामी जी ने नयी दिल्ली में सभी वामपंथी दलों कों बैठक बुलायी। इसके बाद पटना में एक व्यापक वामपंथी सम्मेलन स्वामी जी के नेतृत्व में हुआ। इसमें १७ वामपंथी छोटे और बड़े दलों का एक संयुक्त मोर्चा गठित किया गया। इस मोर्चे के महामंत्री स्वामी जी बनाये गए। यह भी तय किया गया कि किसानों और मजदूरों के वर्ग संगठनों में शामिल होकर सभी एक साथ वर्ग संघर्ष और जन संघर्षों को गठित और विकसित करनेका प्रयास करेंगे सयुक्त किसान सभा और अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस में सभी दल काम करेंगे। पर इसके बाद ही कम्युनिस्ट पार्टी ने स्वामी जी तथा संयुक्त किसान सभा पर हमला शुरु कर दिया।

कम्युनिस्टों के विश्वासघात की स्वामी जी पर गहरी प्रतिक्रिया हुई। स्वामी जी ने योगेश चन्द्र चटर्जी तथा मुझे पटना में बुलाया उन्होंने हम लोगों से स्पष्ट: कहा कि भारतीय मेहनतकश शोषित जनताकी समस्याओं का हल केवल मार्क्सवाद लेनिनवाद ही प्रस्तुत करता है। आज भारत में केवल भारत की क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी (मा०ले०) ही एक मात्र ऐसी पार्टी है जो मार्क्सवाद लेनिनवाद के सर्वहारा समाजवादी सशस्त्र क्रांति को विजयी बनाने के लिए सही माने में प्रयत्नशील हैं। अतः इसमें शामिल होकर मैं इसे विकसित करना चाहता हूं।

जनवरी सन् १९५० में पार्टी की केन्द्रीय कार्य-कारिणी की बैठक गाजीपुर में हुई थी। इस बैठक में भारत के नये संविधान को जो २६जनवरी सन्५० से सारे भारत में लागू हुआ, पर विचार किया गया और उसे श्रमिक शोषित जनता के शोषण और गुलामी का चार्टर घोषित किया गया। इस अवसर पर भी स्वामी जी आये थे और गाजीपुर टाउनहाल की जन सभा को सम्बोधित करते हुए क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी को मजबूत बनाने की अपील की थी। पर चन्द महीने बाद ही २६ जून सन् ५० को स्वामी जी सदैव के लिए चल बसे।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती की स्मृति में स्थापित स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ महाविद्यालय गाजीपुर अपने नवे वर्ष प्रवेश पर 'न दिता' पत्रिका का स्वामी सहजानन्द सरस्वती अंक प्रकाशित कर रहा है और उनके जीवन दर्शन किसान समस्या पर गोष्ठी आयोजित कर रहा है यह भावी सर्वहारा समाजवादी सशस्त्र क्रांति की सफलता की दिशा में सराहनीय कदम हो सकता है। आशा है स्वमी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीट महाविद्यालय गाजीपुर के छात्र तथा शिक्षकगण स्वामी जी के जीवन आदर्शों से अवश्य प्रेरित होंगे।

-: (०) :-

भारतीय समाज के चतुर्दिक विकास के अग्रदूत – स्वामी जी

—शिवजतन सिंह

भारतीय संस्कृति की सामाजिक विशिष्टताओं के प्रतीक स्वामी जी के जीवन में हमारी सामाजिक मर्यादाएं एवं आदर्श अभिव्यक्त हुए हैं। स्वामी जी का समस्त जीवन त्याग प्रधान एवं उदात्त कर्तव्य भावना से परिपूर्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। उनका जीवन एक आदर्श से प्रेरित, एक आदर्श के के लिए समर्पित और उस आदर्श को आचरण में व्यक्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहा है। वह व्यक्तिगत सुख और भोग पर कर्त्तव्योन्मुख लोकहित की प्रधानता का जीवन है। निर्भीकता की मूर्ति, शांकर संप्रदाय के दंडी सन्यासी, आदित्यवत् ज्ञानी, तप और व्रत में अचल अविचल, परमहंस, परिव्राजकाचार्य स्वामी जी का पवित्र चरित्र नित्य स्मरणीय है। श्री वैद्यनाथ शर्मा, अध्यक्ष श्री सीतारामाश्रम, बिहटा (पटना) ने अक्षरसः सही कहा है कि स्वामी जी के विषय में यदि कुछ कहा भी जाय तो यही कहा जा सकता है "गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः"। सार्वजनिक कार्यक्षेत्र को ही अमली परिचय का क्षेत्र उद्घोषित करते हुए उन्होंने अपनी पुस्तक 'मेरा जीवन संघर्ष' प्रथम पृष्ठ पर लिखा है "यही तो असली परिचय है, जिसे लोग न सिर्फ कामों से ही पाते हैं, वरन् जिसका रूप निरन्तर संसर्ग और व्यवहार की कसौटी पर कस कर ठीक-ठीक समझ और देख सकते हैं। जो भाग अन्धेरे में हैं, उसे देखने की नाहक कोशिश से तो अच्छा हैं कि बराबर उजाले में और हजारों आँखों के सामने रहने वाला ही भाग गौर से देखा जाय"।

कुरीतियों और कुप्रथाओं के अन्धकार में मरते हुए समाज के पथ प्रदर्शन के लिए ही प्रकाशपुंज स्वामी जी की अवतारणा हुई। इनका व्यक्तित्व भारतीय समाज में उस समय अवतरित हुआ था जब भ्रमन और अनिश्चय में भ्रमित समाज इधर उधर भटक रहा था। ऊंच नीच के भेद भाव ने मानव के बीच दिवारे खड़ी कर मानवता को अस्तित्वविहीन कर दिया था कुरीतियों और अन्धविश्वासों के कीटाणुओं ने समाज की नैतिक शक्ति छीण कर दी थी। विदेशी शासन की लम्बी अवधि ने दयनीय कर के आम आदमी के आत्म सम्मान को क्षत विक्षत कर डाला था। ऐसी कठिन घड़ी में देवदूत सा एक महामानव ज्ञानामृत की बूंदे टपकाता, समाज को नव जीवन देने आया। संसार के अन्य महापुरुष ईसा, बुद्ध और महात्मागांधी आदि की तरह स्वामी जी भी आजीवन समाजसेवी रहे। 'बहुजन-हिताय, बहुजन सुखाय ही उनके जीवन का उद्देश्य रहा है।

शैशवकाल से ही वे विवेकशीलता के आलोक से आलोकित थे। अपनी मां की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने परिवार के अन्य सदस्यों से कहा कि "मां तो मर गयी, क्या रोते-रोते आप बाकी लोग भी मर मिटेंगे"। विवाह के बंधन में बंधकर भी ये समस्त भौतिक सुविधाओं का त्याग कर १८ वर्ष की आयु में ही सन्यासी के रुप में अग्रसर हो गये। उनके इस त्याग में कहीं आवेश नहीं था। यह सब उनके लिए सहज आनन्द प्रदान करने वाला था, प्रत्येक धर्म जिज्ञासु के लिए इनके जीवन चरित्र का अध्ययन आध्यात्मिक संजीवन बूटी है। इनकी चेष्टा ऋषि जीवन के क्रियात्मक रूप में हो रही। "अमृतात सव्य पुमैंपि इस महामंत्र की दिव्य गूंज पुनरपि इस विकट सत्यशील सहजानन्द साधु के रुप में उद्दीप्त हुई। स्वामी जी का दृढ़ निश्चय था कि समाज सेवा का समीष्ट रूप भगवान की सेवा है। इसके लिए मन, वचन, कर्म और दिल में परस्पर सामन्जस्य रहने पर मनुष्य में अभूतपूर्व शक्ति अनुभूति की उपस्थिति अत्यावश्यक है।

स्वामी जी के धर्ममय जीवन में सतत सेवा, त्याग और प्रेम की त्रिवेणी लहराती थी। सेवा से जीवन जगत के लिए, त्याग से अपने लिए और प्रेम से सर्व समर्थ प्रभु के लिए उपयोगी होता हैं। धर्मरहित अनुपयोगी जीवन किसी को भी अभिष्ट नहीं होता है। इसी कारण से जगत् स्वामी जी जैसे महात्मा की आवश्यकता सर्वदा अनुभव करता है। स्वामी जी ने जनता की सेवा को ही भगवान की सेवा माना है और इस प्रसंग में श्रीमद्भागवत के नरसिंह और प्रहलाद के प्रसंग का एक श्लोक अपनी पुस्तक "मेरा जीवन संघर्ष" में लिखा है इसमें प्रह्लाद जी कह रहे हैं कि ऋषि मुनि लोग तो स्वार्थी बन के अपनी ही मुक्ति के लिए एकान्तवास करते हैं, उन्हें औरों की फिक्र नहीं होती। लेकिन मैं कभी भी ऐसा नहीं कर सकता। सभी दुखियों को छोड़कर मुझे सिर्फ अपनी मुक्ति नहीं चाहिए। मुझे तो इनके ही साथ जीना और मरना है। कर्तव्यपालन ही भगवान की पूजा है।

कृषि प्रधान भारतीय समाज के मूलाधार कृषकों की दयनीय दशा का सुधार करना स्वामी जी ने अपना कर्तव्य समझा और उनके चतुर्दिक विकास के लिए अथक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिश्रम किया। कृषक समाज को लीलने के लिए अंग्रेजी सत्ता के दलाल जमींदारों के अत्याचार का जो तूफान खड़ा हुआ था, वह स्वामी सहजानन्द के हिमालय जैसे वक्ष से टकराकर लौट गया। हमें तो यही कहना चाहिए कि स्वामी जी एक प्रकार से संगठित किसान आन्दोलन के जन्मदाता थे। स्वामी जी कमाने वाली जनता के हाथ में ही शासन सूत्र सौप देने के पक्षधर थे। इसी तरह के विचार भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय राधाकृष्णन ने एक जगह व्यक्त किया है।

इस क्षेत्र में स्वर्गीय पटेल ने भी स्वामी की प्रेरणा से इस उपेक्षित वर्ग के प्रति उचित दृष्टिकोण अपनाने के लिए आह्वान किया था। समाज के ऐसे महत्वपूर्ण अंग के विषय में स्वामी जी ने अपनी मार्मिक वेदना व्यक्त करते हुए लिखा है कि लाखों किसान बर्बाद हैं। उनके झोपड़े और घर गिर गए हैं। जमींदार उनकी जमीनें और पशु आदि धड़ाधड़ नीलाम करवा रहे हैं। इस समाज के शोषक जमींदार वर्ग के प्रति तो उन्होने यहां तक कह डाला कि मैं तो इस निष्कर्ष पर पहुचा हूं कि जमींदार नाम की चीज ही बुरी है।

आर्थिक लड़ाई के बिना आजादी की लड़ाई का कोई मूल्य नहीं होता। स्वामी जी ने एक जगह लिखा है कि भारतीय समाज की रीढ़ किसानों के आर्थिक मोर्चा पर लड़ा गया युद्ध ही वास्तविक आजादी का युद्ध है। समाज के बहुसंख्यक किसानों की अवहेलना करने में कोई सुधारक किसी भी आदर्शवाद का प्रचार करना चाहता है तो वह चट्टान से अपना माथा टकराता है। संसार के अन्नदाता को दोनों शाम सूखी रोटी भी नहीं मिलती है। किसानों की एक सभा में स्वामीजी ने कहा था कि आर्थिक विषमता अशांति की जड़ है। दिनकर जी ने भी कुरुक्षेत्र में कहा है —

"शांति नहीं तब तक, सुखभाग न नर का सम हो।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो, नहीं किसी को कम हो"

अछूतों के मसीहा स्वामी जी ने अपने प्रखर तर्कों द्वारा समाज में ऊंच-नीच के भेद भावों को फैलाकर गलत लाभ उठाने वालों की धज्जियां उड़ा दीं। हिन्दुओं ने धर्म की दीवारें इतनी संकीर्ण कर दी थीं कि समाज के विशाल समुदाय ने उस घुटन को असहनीय मानकर इस्लाम एवं क्रिश्चियनरी की खुली वायु में सांस लेना बेहतर समझा। स्वामी जी ने धर्म की वास्तविक व्याख्या करके इसका द्वार सबके लिए खोल दिया और घूम-घूम उनको धर्म में पुनः लौटने का आह्वान किया। अछूतोद्धार तथा शुद्धि के आन्दोलन में इन्होंने महात्मा गांधी का साथ देकर हिन्दू जाति के पैरों को बचा लिया। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने भी अपने जीवन में निषादराज शबरी आदिको अपनाकर इसी आदर्शको हम लोगोंके लिए प्रतिष्ठित किया है। इस सम्बन्ध में अपनी पुस्तक 'मेरा जीवन संघर्ष' में स्वामी जी लिखते हैं "छुआछूत में बाहरी और भीतरी दोनों ही प्रकार की शुद्धियां मानता हूं। बाहरी जो धोने-धाने, नहाने और स्नान आदि की सफाई को कहते हैं। भीतरी है चरित्र की शुद्धि के साथ ही सभी प्रकार के संक्रामक रोगों का अभाव"।

स्वामी जी ने भी विवेकानन्द की तरह सामाजिक विकृति का दोष मुख्यतः ब्राह्मण समाज पर ही मढ़ा है। स्वामी जी मानवता के प्रधान समर्थक थे। भारतीयों को कर्ममय जीवन की शिक्षा दी और जीवन से विरक्ति को हेय माना। अपनी पुस्तक 'गीता हृदय' में गीता कीप्रवृत्ति मार्गी व्याख्या की। इन्होंने इसमें योग का अर्थ कर्मयोग करके भारत की सोयी हुई क्रियाशीलता को ललकारा। राष्ट्र और मानवता की सेवा ही मोक्ष माना।

स्वामी जी के अनुसार धर्म से पोषित राजनीति ही सच्ची नीति है, अन्यथा वह दुनीति और कपटाचार से पोषित कूटनीति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। राजनीति में धर्म की वैसी ही आवश्यकता है, जैसे शरीर पोषण के लिए अन्न जल की। उन्होंने भारतीय स्वराज्य की प्राप्ति में 'भिक्षां देहि' का रास्ता छोड़ आत्मसम्मान का मान पकड़ा। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर क्रान्ति की बात सोची। मनुष्य की क्रियाशीलता ही उसका धर्म है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि जो धर्म मनुष्य के दैनिक कार्य से अलग होता है उससे मेरा परिचय नहीं है। उनका समस्त जीवन अनैतिकता एवं अधर्म के विरुद्ध एक निरन्तर संघर्ष का जीवन है। लगता है स्वामी जी के बाद अब धर्म समन्वित राजनीतिक एवं सामाजिक जगत के पतझड़ के दिन आ गये हैं।

—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी की क्रान्ति का प्रतीक

श्री सीताराम आश्रम, बिहटा

—रामचन्द्र शर्मा

पटना से लगभग ३० किलोमीटर पश्चिम, आरा-पटना के बीच बिहटा महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशन है। गुड़ और चावल की मण्डी के अतिरिक्त बिहटा अपनी चीनी मिल के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां भगवान शकर का एक प्रसिद्ध मन्दिर है। हर महाशिवरात्रि के अवसर पर पशुओं का एक दीर्घकालिक विराट मेला लगता है।

सन् १९२६-२७ में स्वामी जी ऐसे स्थान की खोज में थे जहां वे एक विद्यालय खोलकर सस्कृत भाषा का प्रचार प्रसार तथा सांस्कृतिक जागरण की लहर पैदा कर सकते। बिहटा के बगल में ही राघवपुर ग्राम के एक सन्त थे श्री सीताराम दास जी। उनके पास इकट्ठा कई बीघे जमीन तो थी ही उसमें बहुत सुन्दर आम का बगीचा भी था। जरा-जीर्ण हो जाने पर श्री सीताराम जी ने चाहा कि वह जमीन लेकर कोई व्यक्ति अथवा संस्था वहाँ वेद शास्त्रादि की शिक्षा की व्यवस्था करे। स्वामी जी श्री सीताराम जी से मिले और सस्कृत विद्यालय के नाम पर पूरी जमीन का बन्धन नामा एक ट्रस्ट के नाम कर दिया गया। स्वामी जी भी इस ट्रस्ट के सदस्यों में थे।

भूमि मिल जाने के बाद स्वामी जी ने संस्कृत वाङ्मय की विभिन्न शाखाओं के अध्ययन-अध्यापन के लिए एक आश्रम की नींव रखी। सन्त श्री सीताराम दास जी के नाम पर आश्रम का नाम श्री सीताराम आश्रम रखा गया। शीघ्र ही स्वामी जी ने विभिन्न समाजप्रेमियों को प्रेरित कर आश्रम भवन का निर्माण कराया। जो भवन जिस व्यक्तिने बनवाया उनका नाम आज भी आश्रम के उस भवन की दीवाल पर लगे संगमरमर पर खुदा है। आश्रम का विशाल भूखण्ड एक भव्य चहारदीवारी से घिर वाया गया और ब्रह्मचर्याश्रम का संचालन प्रारम्भ हुआ। वेद, उपनिषद्, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, आयुर्वेद, षड्दर्शन, व्याकरण आदि विभिन्न विषयों के साथ आधुनिक विषयों के साथ आधुनिक विषयों के भी अध्यापन की आश्रम में समुचित व्यवस्था रखी गई। प्रारम्भ में स्वामी जी ने भी इस आश्रम में अध्यापन का कार्य किया।

स्वामी जी जब किसान आन्दोलन में कूदे तब आश्रम की व्यवस्थासे उनका लगाव कम हो गया। कारण उन्हें समय ही उसके लिए नही मिल पाता था। परन्तु २२ वर्षों तक उन्होंने किसान आन्दोलन का जो नेतृत्व किया उसका केन्द्र यह आश्रम ही था। आश्रम में आज भी एक छोटा सा प्रेस है। स्वामीजी का निजी पुस्तकालय-ब्रह्मर्षि पुस्तकालय है, एक आयुर्वेदिक औषधालय है। इन सबके साथ ही वहां स्वामी जी का भव्य समाधि मन्दिर भी निर्मित है। मन्दिर के सम्मुख खड़ा होते ही संगमरमर पर अंकित स्वामी जी का यह सन्देश हृदय को आवर्जित कर देता है—

सर्वेषां मङ्गलं भूयात्, आनन्दाब्धिः प्रवर्तताम्।
नानात्वं विलयं यायात्, आत्मैकत्वं प्रकाशताम्॥

बात १९५५-५६ की है। स्वामी जी १९५० में ही ब्रह्मलीनहो चुके थे। मैं आश्रम का छात्र था। संस्कृत का परीक्षार्थी। बिहटा के ही निवासी और स्वामी जी के प्रिय शिष्य प० कन्हैया लाल शर्मा वहां संस्कृत के अध्यापक थे। मुझे उनसे व्याकरण के अतिरिक्त छन्द शास्त्र पढ़ने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुवर शर्मा जी कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्दों के लक्षण पढ़ाने के बाद दूसरे दिन जब मिलते थे तो कम से कम एक छन्द का स्वरचित उदाहरण सुनाते थे। यही नहीं मुझे भी वे लक्षणों के अनुसार उदाहरण रचना के लिए प्रेरित करते रहते थे। शर्माजी के उदाहरणों की विशेषता थी उनकी आश्रम परकता वे सरल और सरस तो हैं ही हृदयावर्जक अलंकारों से अलंकृत भी हैं। इन सरल सरस उदाहरणों में से जो कुछ मुझे आज भी स्मरण हैं उनका अभिप्राय यह है—

महाशिवरात्रि के अवसर पर एक व्यक्ति बहुत दूर से बिहटा का मेला देखनेके लिए आ रहा है। उसके बगल में एक दूसरा व्यक्ति भी हाथ में एक विज्ञापन लिए तेजी से चल रहा है। पहला पथिक दूसरे से पूछता है कि भाई तुम इतनी प्रसन्नता से कहाँ चल रहे हो ? तुम्हारे हाथ में यह कैसा विज्ञापन है। मैं महाशिवरात्रि के शुभ पर्व पर मेला देखने के लिए बिहटा चल रहा हूं। तुम्हारी यहचाल, यह विज्ञापन और यह हर्ष, सबके सब मुझे तुम्हारी यात्रा प्रयोजन पूछने के लिए का विवश कर रहे हैं।

भोः पान्थ कुत्र चपल चलसि प्रद्धष्यन्,
विज्ञापनं च किमिद करयोस्तवास्ति ।
मेलापकाय बिहटाँ शिवरात्रि योगे,
थान्तं पथि त्वमि व मां मुखरी करोषि ॥

पूछे जाने पर विज्ञापनधारी पथिक की चाल धीमी पड़ जाती है और वह कहता है कि यही शिवरात्रि की तिथि थी चारों दिशाएं प्रसन्न थीं। वृक्षों और लताओं में नई-नई पत्तियाँ निकल आई थीं। फूल और सुरभित पवन मन्द मन्द वह रहा था। मधुर ध्वनि वाले, निर्मल जल-वाही निर्झर मानों गान मग्न थे। मयूर नाच रहे थे। कोकिलाएं कूजनरत थीं। बच्चे उनकी ध्वनि का अनुकरण कर आनन्द ले रहे थे। लोग आनन्द मग्न थे। शस्य श्यामला वसुन्धरा चारो ओर से मन को मोह रही थी। ब्राह्मणों ने वेदपाठ की अमृत वर्षा प्रारम्भ कर दी थी। वातावरण में शंखों और घंटों की आवाज गूंजने लगी थी। हमारे जैसे लोगों का तो मानो भाग्य ही जग गया था और अब तक निगूढ़ ब्रह्मतेज बड़ी तेजीसे बढ़ने लगा था ये सारी स्थितियां वसन्त ऋतु में मानों एक साथ उपस्थित हुईं और इस स्वर्गोपम भारतभूमि के उत्तर प्रदेश स्थित गाजीपुर जिले के देवा ग्राम में परम पूज्य स्वामी जी अवतीर्ण हुए।

तिथिरियमतिपुण्या सर्वतो दिक् प्रसन्ना,
तरुवर लतिकाली नूत्नपत्रा प्रफुल्ला ।
शुचि सुरभि समीरः संववौ मन्द मन्दं,
जगुरिव कलनादा निर्झरा निर्मलायाः ॥

नन्हतुरथ मयूराः कोकिलाः सञ्चुकू जुः,
सपदि मनुजवालास्तौस्तथैवानुचक्रुः ।
स्वर युत करताला सज्जना आननन्दुः,
दिशि दिशि शुशुभेऽसौ शस्य पूर्णा धरित्री ॥

विदधुरमृत वर्षं ब्राह्मणा ब्रह्मघोषं,
सुबहु दिवि जुगुञ्जुः शङ्ख घण्टा निनादाः।
प्रबुबुध इव सुप्तं भाग्यमस्मद्विधानां,
प्रववृध लोके ब्रह्मतेजो निगूढम् ॥

युगपदिव वसन्ते सर्वमेतत्प्रयेदे,
सुरुचिर पुर वर्ये नाम देवाभिधाने ।
स्वरिव भरत भूमौ गाधिपुर्यां यदाऽसौ,
यतिवर चरणानां सम्बभूवावतारः ॥

अजनबी पथिक को लिए पुराना पथिक आश्रम पर पहुंच गया। उसने पुनः कहना प्रारम्भ किया—

जन नायक तथा ब्रह्मर्षि स्वामी जी जिस आश्रम में समाधिस्थ हैं, हे पथिक उस आश्रम को तुम सिर झुका कर प्रणाम् करो। यह आश्रम वैदिक ज्ञान का दीपस्तम्भ है और लौकिक ज्ञान का नवीन आरम्भ। इसकी छत्रछाया में रह कर सभी लोगों को अपनी अपनी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। यह वही सीताराम आश्रम हैं जहां कोई छात्र वेद पढ़ता था, कोई शास्त्र पढ़ता था और कोई नीति का अध्ययन करता था। वे दिन याद आ रहे हैं जब यहां सस्वर वेद पाठ चला करता था। नित्य विधिपूर्वक हवन होता था और छात्र ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते थे। इस आश्रम में रहने वाले छात्रों के मुख से उच्चरित होने वाली पवित्र भाषा संस्कृत ने किसके मन को नहीं मोहा ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी यत्र समाधिस्थो ब्रह्मर्षिर्जन नायकः ।
सततं शिरसा पान्थ आश्रमः स नमस्यताम् ॥

वैदिक्या यो दीपस्तम्भो लौकिक्या यो नव्यारम्भः ।
तस्यच्छायां प्राप्तैः सर्वैः स्वीया स्वीया शिक्ष ग्राह्यया ॥

कश्चिदधीते वेदं कश्चिच्छास्त्रं तथैव नीतिं च ।
यत्रच्छात्रोऽप्रतिमः सीतारामाश्रमः सोऽयम् ॥

विद्वद्वर्यैः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रैः प्राभेतस्मिन्नाश्रमे पूज्यपादैः ।
तच्छास्मं तैः स्वामिभिः प्रोच्यमानं येऽशृण्वंस्ते स्नातका धन्य धन्याः ॥

स्मर्यन्ते ते मधुरदिवसाः सस्वरो वेदपाठो,
नित्यं होमोऽप्रतिहतविधिर्ब्रह्मचर्यं ससन्ध्यम् ।

आचार्यास्तेऽस्य वरबटवो ब्रह्मचर्याश्रमस्य,
श्रीमान् वात्सो विनतशिरसां वैद्यनाथो गुरूनः ॥

गुञ्जन्ती सा शुचि सुरमोरा तेषां तेषा मिहनिवसताम् ।
केषां चित्तं नहि हृद्यवती म्लेच्छीं भाषामिह निगदताम् ॥

आगे के श्लोकों में आश्रम की दिनचर्या वर्णित है–ब्राह्म मुहूर्त में घंटा बजता था, अन्तेवासी जागते थे और वैदिक मन्त्रों का पाठ होने लगता था। सुबह और शाम को स्नान और हवनादि के बाद गैरिक वस्त्रधारी ब्रह्मचारी जब गुरुओं के चरण स्पर्श के लिए चल पड़ते थे तो लगता था कि सूर्य किरणें ही गुरु चरणों में प्रणति निवेदन के लिए पहुंच रही हैं। इसके बाद छात्र गुरुओं की उपस्थिति में वेदमंत्रों का पाठ करते थे। १०॥ बजे के बाद विभिन्न विषयों का अध्यापन शुरु हो जाता था। यह कार्य पूरा होने पर ब्रह्मचारी नित्य कर्मों में वैसे ही लग जाते थे जैसे तत्ववेत्ता लोग भौतिक कर्मों में लगते हैं। सन्ध्या समय अखाड़े में उतरना छात्रों के लिए अनिवार्य था। रात्रि में मिट्टी के दीप जलाकर छात्र पढ़ने में लग जाते थे। नौ बजे के बाद छात्र भोजन और भजन के पश्चात निद्रा को समर्पित हो जाते थे। शयन के समय छात्रों की देखभाल के लिए एक गुरु जागते रहते थे।

जाग्रदसौ वरवर्णिसमाजो ब्राह्ममुहूर्तं निनादिनः घण्टः ।
वैदिक मन्त्र विबोधित लोकः प्राक्तन पुण्यमिव स्मृति मेति ।

स्नात्वा च हुत्वा च पुरा द्विसन्ध्यं,
काषायवस्त्रा वटुकाः पवित्राः ।
यान्तो नमस्तुर्तुमिह प्रतीता,
आचार्यं पादानिव सूर्यपादाः ॥

ततस्तु ते वर्णिवराः प्रभाते,
गुरोः पुरस्ताच्छ्रुति पाठ लग्नाः ।
अयुः प्रभामत्र यथा परत्र,
बृहस्पतेश्छात्रगणाः सुदिव्याः ॥

आरभ्य सार्धं दशवादनं ते,
ऽपराणि शास्त्राणि च तानि तानि ।
दिवा पठन्तो जलधीनगस्त्याः,
स्ववाल्य चुल्लूमिखिपुरम ॥

तत्पर च बहवोऽपराह्णके,
नैजमध्ययनकं समाप्य ते ।
नित्य कर्मसु रतास्तथाऽभवन्,
भौतिकेष्वपि यथात्मवेदिनः ॥

मल्लभूमि मुपगम्य तु सायं,
मल्लयुद्ध मपि कारितवन्तः ।
धूलिधूसरितका वटुकास्ते,
तेऽधुनाऽपि च समक्षमयन्ते ॥

सम्पाद्यैवं ते सान्ध्यकृत्यं समग्रं,
याते सूर्येऽस्तं दूरयन्तोऽन्धकारम् ।
दीप्यन्ते स्म प्राक् पाठिताभ्यासचित्ता,
एरण्ड स्नेहां मृण्मयीं दीपमालाम् ॥

नववादन रात्रिगते वटुका
अशन्नोत्तर मत्र सुसम्मिलिताः ।
विनयं व्यपदिश्य विभोश्चरणो,
कृतकर्म विसर्ग मकार्षुरिव ॥

ततश्चाश्रमेऽस्मिन् स्वपद्वर्णिवृन्दे,
निरीक्षा परो दीक्षितः केवलोऽसौ ।
अजागस्तथा नाम देहे यथैकः,
प्रसुप्तेन्द्रिये सर्वदा शुद्ध आत्मा ॥

स्वामी जी को आम्रवाटिका मण्डित आश्रम की भूमि सन्त श्री सीताराम जी से वेद शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन के लिए मिली थी। पथिक उनके प्रति श्रद्धांजलि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निवेदित करके अन्त में श्री सीताराम आश्रम तथा ब्रह्म-लीन स्वामी जी के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा व्यक्त करता है—

अहो सीतारामः स च परमहंसो विजयते;
प्रसिद्धो यन्नाम्ना समभवदसावाश्रम इति।
कृपाचिह्नं तद् यद् घटितमिह तस्यैव सकलं.
ततः स्वर्गे-प्यस्य प्रभवतु सुखं तर्पणमिदम् ॥
केचित्तीर्थं प्रयागं हरिहर सदनं वा प्रयान्ति प्रयान्तु,
ब्रह्माणं वा महेशं मधुरिपुमथवा वेच्छयन्ति श्रयन्तु।
किन्त्वावद्धैक चित्ता वयमति विनतास्तीर्थराजाधिराजं,
सीतारामश्रमं तं यतिवर चरणं च प्रयामः श्रयामः ॥

—: (०) :—

किसानों का मसीहा

—कैलाशनाथ राय

स्वामी जी ने देश के सबसे बड़े वर्ग किसान का न केवल मार्ग दर्शन किया वरन स्वयं उनका नेतृत्व भी। एक किसान परिवार में जन्में स्वामी जी के लिए यह स्वाभाविक ही था कि उनका ध्यान किसानों की दयनीय दशा पर जाता। स्वामी जी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किसानों की वास्तविक स्थित को समझना और उन्हें शोषण और दरिद्रता से बचाने के लिए कमर कस कर सामने आना था। उपेक्षित अशिक्षित किसानों को संगठित कर अपने को शोषण से मुक्त कर मर्यादा पूर्वक जीने का मंत्र दिया। खेद है कि राष्ट्रीय कर्णधारों ने अपने हित में स्वामी जी को भुला दिया। फूट डालो और शासन करो की नीति उन्होंने अपनाई। यह घोर अराष्ट्रीय कार्य किसी षडयंत्र का ही परिणाम लगता है आज से २२ साल पूर्व मसूरी में आचार्य कृपलानी ने नेहरू सरकार की आलोचना करते हुए कहा था आज कांग्रेस सरकार जनता पर जो अत्याचार कर रही है उसकी मिसाल नहीं।" आगे उन्होंने कहा "चाहे जो भी सरकार हो आप के साथ न्याय तब तक नहीं हो सकता जब तक आप अपने अधिकार न समझें और उसे प्राप्त करने की शक्ति न प्राप्त करें। एक बार चौधरी चरण सिंह ने कहा था कि मैंने सोचा था कि स्वतन्त्रता के बाद किसान आन्दोलन की क्या आवश्यकता है पर अब मैं समझता हूं कि किसान संगठन की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है।

हमारे दूरदर्शी स्वामी जी को इस तथ्य का पता बहुत पहले चल गया। उन्होंने देख लिया कि किसानों की मुक्ति, बिना उनके अलग संगठन के होनहीं सकती। यही विचार उनके 'किसान सभा' के संगठन का कारण थी। उस भविष्य दृष्टा सन्त ने देखा कि राजनीतिक शक्ति का आधार संगठित मजदूरऔर संगठित साम्प्रदायिक शक्तियाँ ही होंगी और किसान सदा की भाँति उपेक्षित रहेगा। समय ने उनकी आशंका को सत्य प्रमाणित कर दिया।

राजनेताओं को इतने से ही सन्तोष नहीं। वे समझते हैं कि यदि किसान संगठित होकर आगे बढ़ा तो समुद्र के तूफान की तरह सब कुछ अपने में समेट लेगा। अतः उनमें फूट आवश्यक है। जमींदारी उन्मूलन के बाद इस व्यवसाय में लगे लोगों में अलगाव का कोई कारण नहीं। पर आज जाति के नाम पर बड़े छोटे किसानों के नाम पर और किसान मजदूर के नाम पर उन्हें लड़ाया जा रहा है।

यदि बारडोली का किसान निर्दयी विदेशी शक्ति को घुटने टेकने को बाध्य कर सकता हैं तो वही दलित और उपेक्षित किसान आज के राजनेताओं की आँखे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोलने और अपने साथ न्याय करने को भी विवश कर सकता है। आवश्यकता है मात्र इन्हें जगाने और संगठित करने की। स्वामी जी के नाम पर चलने वाले इस विद्यालय में अधिकांश इस क्षेत्र के किसानो के बच्चे ही पढ़ते हैं। क्या हम आशा करे कि इस महाविद्यालय के विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने के साथ साथ किसानों में नई चेतना पैदाकर एक ऐसे सन्त की स्मृति कायम रखेगे जिनमें ज्ञान और कर्म का अद्भुत संयोग था।

—:)०(:—

स्वामी सहजानन्द सरस्वती

का जीवन दर्शन

(डा० कुलदीप नारायण राय 'झड़प')

स्वामी जी का जीवन एक पहेली है और साधारणतया लोग यह समझ नहीं पाते कि सांसारिकता से सर्वथा अन्य मनस्क एक परम विरक्त साधु देश की राजनीति और किसान आन्दोलन के पचड़े मे कैसे पड़ गया? इस पहेली का स्पष्टीकरण ही स्वामी जी के जीवन दर्शन की व्याख्या है। जो पुरुष माता पिता के करुणतम क्रन्दन पर भी न पसीजा। वे बिलखते बिलखते मर गए, पर उधर झाका तक नहीं, वही लौह पुरुष किसानों के परिताप से पानी बन कर बह कैसे चला यह रहस्य नहीं तो क्या है?

स्वामी जी जन्म ही से विरक्त बालक थे। २४ वर्ष की अवस्था में उनकी माता का देहान्त हो गया, पर वे परिवार वालों को समझाते थे कि क्यों रोते हो? लड़कपन में अन्य लड़कों से प्राय: अलग ही रहते थे।

खिलाड़ी प्रकृति के नहीं होने के कारण उनका जीवन पढ़ाई-लिखाई में केंद्रित हो गया। श्रद्धालु और तीव्र बुद्धि होने के कारण वे अध्यापकों के कृपा पात्र बन गये। परिवार के लोगों की आस्तीकता और शिक्षकों की पूजा अर्चा की अमिट छाप स्वामी जी के चित पर पड़ी, स्वामी जी का पारिवारिक नाम 'नवरंग राय' था। वे अपने भाइयों अथवा परिवार में सबसे छोटे होने से सबके प्रिय भी थे। भाग्यवश उन्हें गांव के एक ऐसे पुरुष का साथ मिल गया, जो उनसे अवस्था में बड़े थे तथा संस्कृत भाषा के जानकार थे। उनकी प्रवृत्ति ज्ञान-वैराग्य की ओर उन्मुख थी और वे तीन-तीन चार-चार घन्टे तक पूजा-पाठ और प्राणायामादि की साधना में संलग्न रहने लगे।

हिन्दू-धर्म और संस्कृति के प्रति उनकी आस्था दिनो दिन बढ़ती गई। उस पर किसी प्रकार का आक्षेप वे सह नहीं सकते थे। एक बार गाजीपुर स्थित मिशन स्कूल के जर्मन अध्यापक को इसके लिए फटकारा भी था। स्कूल का उनका वस्त्र अलग था और घर का अलग। गाजीपुर रहते हुए वे गगा तटवर्ती एक मंदिर में निवास करते थे, जहाँ उन्हें गंगा स्नान और पूजा-पाठदोनो की सुविधा थी। संयम नियम का ही प्रभाव था कि १६ वर्ष की आयु तक वे कभी एक दिन के लिए भी अस्वस्थ नहीं हुए। उनके हृदय में वैराग्य का तीव्र दावानल प्रज्वलित हो रहा था। विषयों के प्रति उनके मन में किसी प्रकार का आकर्षण और मोह नही रह गया था, इसी से भगवत प्राप्ति के लिए सतत आकुल और आतुर थे 'मैं तो खाने पीने की चिन्ता छोड़कर एक मात्र भगवान की प्राप्ति के लिए ही दिन रात प्रयत्न करने के विचार से सन्यासी बना और जंगल की शरण लेने को उद्यत हुआ। यह भी जान लेना चाहिए कि सिवा प्राणायाम, योगाभ्यास,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्यान, समाधि, वेदान्त चिन्तन और तत्सम्बन्धी विचारों के बाकी को में सांसारिक काम ही मानता था।

उन्होंने योगाभ्यासी गुरु की खोज में विन्ध्याचल से लेकर हिमालय तक तीर्थों और जंगल जंगल, पहाड़-पहाड़ आदि की धूल फांकी, परन्तु कोई योग्य गुरु नहीं मिला। हाँ इससे कष्ट-सहन करने की शक्ति आ गई और संसार की अनेक बातों का अनुभव भी हुआ। यात्रा में उन्हें अपार कष्ट हुआ और ढोंगी साधुओं-सन्यासियों के हीं प्रायः दर्शन हुए। यात्रा से लोटने के बाद वे मनो-योग पूर्वक संस्कृत-साहित्य के दर्शन आदि विविध विषयों का अध्ययन करने लगे। प्रतिभावान थे कुछ ही वर्षों में दर्शन, न्याय मीमासा, व्याकरण आदि विषयो के प्रकाण्ड विद्वान बन गये।

काशी में निवास करते हुए उन्हें स्वामी पूर्णानन्द जी से परिचय हुआ पूर्णानन्द जी इनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए सदा सहायता करने थे। वही प्रेरित कर उन्हें १९१४ में बलिया में आयोजित भूमिहारब्राह्मण महासभा में ले गये। वहां ब्राह्मणों के कर्त्तव्य और 'भूमिहार ब्राह्मणों का ब्रह्मणत्व' पर स्वामी जी के दो भाषण हुए। उस सभा में उन्होंने देखा कि भूमिहार ब्राह्मणों को अपने गौरव का ज्ञान नहीं है। इससे वे द्रवित हुए तथा निश्चय किया कि इस ब्राह्मण जाति का उद्धार परमावश्यक है। उक्त सभा से अपना सम्बन्ध जोड़ लिया और समाज सुधार के काम में जुट गये। उन्होंने लिखा है "एक बहुत बड़े समाज को एक उच्च और कुलीन ब्राह्मण समाज को — मैंने औरों से पद दलित पाया और देखा कि यह तिलमिला रहा है अपमानित हो रहा है मगर कुछ कर नहीं पाता। मेरा दिल तड़प उठा और मैंने उसे उठाया। इसमें क्या अपराध हुआ?

समाचार-पत्रों के पन्ने उलटते पलटते वे राष्ट्र-धर्म के मर्म समझने लगे। रौलट-ऐक्ट, जालियां वाला बाग-हत्याकांड और सत्याग्रह आन्दोलन ने उन्हें मर्माहत किया। गांधी जी से उनकी बात-चीत हुई और उससे प्रभावित होकर वे राजनीति के मैदान में आ गए। इस प्रकार सिमरी (शाहाबाद) को केन्द्र बनाकर पांच सौ चरखे और कई करघे नियमित रूप से चलवाने लगे।

स्वामी जी किसी लोभ-लालच से राजनीतिक क्षेत्र में नहीं घुसे थे। उनकी कर्त्तव्य भावना ने उन्हें इसके लिए प्रेरित किया था। वे अनुचित का विरोध और उचित का समर्थन के लिए ही उसमें उतरे थे। गांधीवाद के जिस आदर्श के अनुसार उन्होंने आन्दोलन में भाग लिया था, उसका अनुशासन मानना भी उचित, और आवश्यक था, किन्तु गांधी जी के अनुयायियों को ही जब उसका उल्लंघन करते देखा तो उन्हे घोर आश्चर्य और निराशा हुई।

वे परम कारुणिक सर्वभूत हितेस्ताः पुरुष थे। भारत का भ्रमण करते हुंए, विशेषकर विहार में उन्होंने जमींदारों का जो जुल्म और किसानों की जो दुर्दशा देखी तो उनका हृदय भट्ठी की भांति भभक उठा। किसानों की पीड़ा देख वे करुणा विस्मित होकर तिलमिला उठे। पहले तो उन्होंने इस समस्या को कांग्रेस के सम्मुख रखा। उन्हें आशा थी कि जमींदार इस समस्या को सुलझा लेगे, परन्तु जमींदारो के तिकड़म और कांग्रेस की जमींदार परस्ती नीति से उन्हे उस ओर से निराशा ही हाथ लगी उन्होंने निश्चय कर लिया कि जमींदार नाम का मिट्टी का लोंदा भी खतरनाक है, इसलिए जमींदारी कीअन्त्येष्टि हो जाने पर ही किसानों का कल्याण सम्भव है।

किसान सभा का कांग्रेस से अलग, उस के समकक्ष मोर्चा तो बन ही चुका था, अब उन्होंने किसान--- आन्दोलन का बिगुल बजाते हुए जेल--यातना की चिन्ता न कर क्विक मार्च कर ही दिया। कष्ट उठाकर धुआंधार यात्राएं कीं, किसानों को जगाया, ऊपर उठाया और उनका हक दिला कर ही रहे जमींदारी को जहन्नुम में भेजकर ही दम लिया। उनका आदर्श था— 'न दैन्यं न पलायनम।' पुरोहित वर्ग के ब्राह्मणों की चुनौति के उत्तर में एक ही चौमासे में 'कर्म-कलाप' जैसा महाग्रन्थ लिख दिया।

अपनी कमजोरी को सच्चाई के साथ स्वीकार करना वे पुरुष का बल मानते थे। जनता के पैसे का दुरुपयोग उन्हे तनिक भी पसंद न था। स्वाभिमान को ठोकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मार कर खुशामद से कोई काम कराना उनकी प्रकृति के विपरीत था। पूंजीपतियों के नग्न नृत्य को उन्होंने निकट से देखा था, इसलिए पूंजीवाद के प्रति उनके मन में घृणा उत्पन्न हो गई थी। वे यह नहीं चाहते थे कि पूंजीपतियों को गरीबों के शोषण की छूट देकर उनके दान द्वारा सार्वजनिक कामों का ढोंग रचाया जाय। गांधीवादियों के छल-कपट, ठगई और ढोंग को देख कर उनकी आस्था गांधीवाद से हट गई। आर्थिक आधार पर वे साम्यवाद के समर्थक थे क्यों कि किसी को दुखी और दीन हीन देखना नहीं चाहते थे। 'गीता-हृदय' में उन्होंने [illegible] गीता धर्म का अनुसारी बताया है। सन् १९८९ म विरक्त-महामण्डल के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए उन्होंने कहा था कि ईमानदारी से किया गया काम ही आराधना है, साधना है, तपस्या है सभी को सुन्दर अन्न-वस्त्र, घर, दवा-दारू, पढ़ने लिखने आदि की तथा सर्वांग विकास का पूरा अवसर समान रूप से मिले, यही करना है।

स्वामी जी के जीवन-दर्शन के विषय में ऊपर जो विश्लेषण किया गया है, उससे यह स्पष्ट हैं कि स्वामी जी जन्म जात विरक्त साधना शील विषय-वासना से पराङ्गमुख, एकान्त प्रिय, निश्छल, स्पष्टवादी धुन के पक्के, शुद्धाचारी और सबकी भलाई चाहने वाले महात्मा थे। करुणा की साक्षात मूर्ति थे। करुणा के ही कारण सामाजिक सेवा; राष्ट्रीय आन्दोलन और किसानों के उद्धार का बीड़ा उठाया था। मानव मात्र का हित चिन्तन उनका उद्देश्य था। व्यावहारिक दृष्टि से वे साम्यवादी और दार्शनिक दृष्टि से शांकर मतानुयायी अद्वैतवादी थे।

—:)०(:—

प्रेरणा के स्रोत — स्वामी सहजानन्द सरस्वती

(स्वामी दयानन्द सरस्वती)

स्वामी सहजानन्द जीवन काल में ही ईश्वर से एक हो चुके थे उनकी वाणी जनहित में बोल रही थी। परन्तु अभागे जीव जो सदा ही मुखर हैं उनका दिव्य सन्देश न सुन सके। प्रायः देखने सुनने में आया है कि आदि से ही दर्शक के रूप में वे लोगों को दिव्य सदेश देने लग गये थे परन्तु कम ही लोगों ने उस सन्देश को सुना होगा।

मैं अपने लड़कपन की एक बात आपको बताऊं।

स्वामी जी जब कुण्डेसर आकर रुके तो कम ही लोग उनकी सेवा में जाते थे। इसलिये कि उनके पास पूर्ण सावधान व्यक्ति ही निभ पाता था। स्वामी की दिनचर्या में रात्रि में दुग्धपान के उपरांत जल्द ही सोने का उपक्रम होता था। जब सोने लगते तो उनके पैर के तलवे में कड़वे तेल की मालिश होती। एक बार मैं तेल लगा रहा था और स्वामी जी सो रहे थे। मुझे ऐसा लगा कि स्वामी जी पूर्णतया सो गये हैं या जगे हैं। तेल लगाते लगाते उनके पैर के ऊपरी हिस्से में पंजे के ऊपर मैंने केवल एक ऊंगली से छू मात्र दिया जबकि ऊपर छूना सर्वथा वर्जित था। मेरा छूना था कि स्वामी जी का दूसरा पैर मेरी छाती में लगा और मैं चौकी के नीचे गिर पड़ा। स्वामी जी उठ कर बैठ गये और मुझे डाँटते हुए पूछे कि तू कौन है? मैंने तुरन्त कहाकि मैं ब्राह्मण हूं। उन्होंने पूछा कि यज्ञोपवीतहै तो मैंने उनको दिखलाया। फिरउन्होंने कहाकि गायत्री मन्त्र बताओ तो मैंने गायत्री मन्त्र का शुद्ध उच्चारण करके सुना दिया। फिर तो सारागुस्सा शांतहो गया। फिर उन्होंने पूछा कि तुमने अपने को ब्राह्मण कैसे कहा तुम तो भूमिहार हो? मैंने पुरजोर शब्दों से कहाकि नहीं,भूमिहार तो कोई जाति नहीं। केवल ब्राह्मण ही तो है। वास्तव में मुझे लड़कपन से ही भूमिहार शब्द से घृणा सी थी। मैंने कभी भी अपने को भूमिहार नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहा। यह सन्देश देने वाले स्वामी जी ही तो थे। उन्होने फिर मुझे ग़ौर से देखा फिर बोले कि क्यों रे तू सन्यासी तो नहीं बनेगा ? मेरे मन में स्वामी जी की पूजा प्रतिष्ठा देखकर मुझे भी यह चाव जगा कि मैं भी साधु बनंगा, मैंने स्वामी जी से यह प्रार्थना किया कि मुझे भी आप साधु बना लीजिये। परन्तु उस समय उन्होंने मुझे फुसला दिया कि नहीं यह समय तुम्हारे पढ़ने का है साधु बनने का नही। अतः खूब मन लगाकर पढ़ो। यह भी एक सन्देश ही था। मैं पड़ने में बहुत तेज हो गया और सन् ३५ में ही साधु हो गया। पीछे स्वामी जी ने सुना कि मैं साधु हो गया हूं। फिर मुझे बुलवाया और गायत्री पुरश्चरण करने आज्ञाकी दिया तथा व्याकरण पढ़ने की। और बोले कि अनपढ़ सन्यासी नहीं होता तुम. पढ़ कर सन्यासी बनना।

——

विधवा हुई आज मानवता

प्रद्युम्न चौबे, बी० ए० द्वितीय वर्ष

ऐसे लगा कि जैसे रवि-रथ रुका अचानक
एक ज्योति सी उठी, ज्योति में लीन हो गयी,
धरती का धन छीन बढ़े रवि अपने पथ पर
तपती हुई दुपहरी गहरी व्यथा बो गयी ?
कोई सांस न ऐसी जिसमें नीर नहीं था,
चारो ओर कुहासा छाया था धरती पर
कोई हृदय न ऐसा जो कि अधीर नहीं था !

कृष्ण मृत्यु पर यह आभास हुआ था युग को
कलाकार मिट गया कला का अन्त हो गया।
बुद्ध मृत्यु पर सत्य अहिंसा सिसक उठे थे
पतझर के मौसम में मधु बसन्त सो गया
कूटनीति निर्जीव हुयी चाणक्य मृत्यु से
लगा कि भूभृति प्रत्यंचा अब न तनेगी रिपुपर
जिस दिन मिटे अशोक, मिटी युग की क्षमताएं
मूक हो गये सुखद शान्ति की वीणा के स्वर

गाँधी मरे विलख रोई, बूढ़ी भारत मां
लगा कि जैसे नहीं रही धरती पर ममता
किन्तु तुम्हारी मृत्यु ! स्तब्ध है धरती अम्बर
विधवा आप हुई, भटके युग की मानवता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाजीपुर के विकास की परियोजना

[डा० जे० पी० राय, प्रवक्ता–भूगोल]

पूर्वी उत्तर प्रदेश के सबसे पिछड़े उपेक्षित जिलों में गाजीपुर एक है। गाजीपुर जनपद का विस्तार २५°१०' –२५°५५' उत्तरी अक्षांश एवं ८३°५ ८३°५५' पूर्वी देशान्तर के मध्य है। यह जिला उत्तर प्रदेश के आजमगढ़, बलिया तथा वाराणसी जनपदों एवं बिहार के भोजपुर जिले के बीच स्थिति है। जिले की प्रधान नदी गंगा जिले को दो भागों में बाटती है और जमानियां तहसील को जिले के अन्य भाग से पृथक करती है।

जिले का क्षेत्रफल ३३८१ वर्ग किलोमीटर है १९६१ की जनगणना के अनुसार इस जिले की आबादी १४४१००० थी और १९८१ में ६०,००,००० हो गई। जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर ५८० व्यक्तियों का है। उत्तत प्रदेश में ८८°१ प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों की है जबकि इस जिले में ग्रामीण क्षेत्रों की आबादी ९६°०६ प्रतिशत है। जमानियां, सैदपुर तथा मुहम्मदाबाद चार सब डिवीजन, १६ विकास खण्ड, २३३ न्याय पंचायते, १३७१ गांव सभाये तथा २४५० ग्राम हैं।

यहा मुख्यरुप से दो प्रकार की मिट्टी पायी जाती है (१) बांगर और (२) खादर। यहाँ औसत तापमान १४° सेन्टीग्रेड से ३०° सेण्टीग्रेड के मध्य रहता है। वार्षिक वर्षा लगभग १०० सेमी० है।

आर्थिक दृष्टिकोण से इस जनपद का भौगोलिक क्षेत्र बहुत अपर्याप्त विकसित है। इसका आभास इस बात से भी होता है कि लाख से भी अधिक व्यक्तियों की आबादी में ०°७८ प्रतिशत से कुछ अधिक लोग औद्योगिक व्यवसाय में लगे हैं। इस जनपद में भारत सरकार का एक अफीम कारखाना है, किन्तु जिले के लोगों की आर्थिक दशा पर इस उद्योग का कोई प्रभाव नहीं है। क्यों कि इस कारखाने द्वारा यहां से कच्चे माल प्राप्त नहीं किये जाते हैं।

यहां पर १०१७३७ आबादी वाले ५०,००० परिवार हैं जो सब–मार्जिनल कृषक कहे जा सकते हैं। इन कृषकों के पास बहुत कम सम्पत्ति है जिससे उनके परिवार के सदस्यों के आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती इस प्रकार उन्हे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है।

इस जिले में यातायात की समस्या भी दयनीय है। यहां पर ५८० किलोमीटर पक्की सड़के और ५४६°४० किलोमीटर कच्ची सड़के हैं। लगभग ७५ प्रतिशत कच्ची सड़के केवल वर्षा ऋतु के अतिरिक्त वर्ष के शेष आधे समय में चालू रहती है।

सितम्बर १९६३ में एक विस्तृत सर्वेक्षण श्री वी० पी० पटेल, के नेतृत्व में किया गया था। जिले का भली भाँति सर्वेक्षण करने के उपरान्त अध्ययन दल ने एक विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें इस बात का उल्लेख था कि विकास कार्य क्रमों के क्षेत्रों में इस जिले की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसमें सन्देह नहीं कि उसके उपरान्त कृषि, अल्प सिंचाई और व्यक्तिगत कार्यक्रमों के अतिरिक्त इस जिले के लिए पटेल आयोग की संस्तुति के आधार पर कुछ विशेष अनुदान और सुविधाए प्रदान की गयीं किन्तु यह सभी पर्याप्त नहीं थीं। उक्त अध्ययनदल ने इस जिले में कुल १०सड़क निर्माण कार्यों के लिए अपनी संस्तुति दिया था जिसमे से प्रायः सभी सड़कें योजनाकाल मेंसार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा अथवा जिला परिषद द्वारा निर्माणार्थ ली जा चुकी है और उनके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार जो सड़के बची थी वे सभी इस योजना में ले ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गयी है।

विकास कार्यक्रमों को तीव्र गति प्रदान करने और इस जिले की बेरोजगारी की समस्या को कम करने के लिए स्माल फार्मर्स और मार्जिनल तथा कृषि मजदूर योजनायें बनाकर विगत वर्षों में शासन को भेजी गयी किन्तु अभाग्यवश ये योजनायें स्वीकृत नहीं की जा सकीं। इसके अतिरिक्त कृषि पुर्नवित्त निगम की योजना भी बनाकर भेजी जा चुकी है जिस पर प्राविधिक स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है किन्तु अभी तक उसकी प्रशासकीय स्वीकृति शासन से प्रतीक्षित है।

ग्रामीण रोजगार त्वरित योजना—पूरा जनपद बेरोजगारी का शिकार है। मार्जिनल कृषकों एवं भूमिहीन मजदूरों की संख्या बहुत अधिक है। इस समस्या को कम करने तथा कृषकों के स्तर को थोड़ा ऊंचा उठाने के लिए इस योजना के क्रियान्यवन में पूरे जनपद को रखना आवश्यक है।

इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण सड़कोंके निर्माण कार्यक्रम को प्राथमिकता दी गयी है।'अच्छी और सुविधा जनक सड़कों की कमी के कारण कृषको को उनकी उत्पादक वस्तुओं को मण्डियों तथा बाजारों तक ले जाने में कठिनाई होती है। इसी से फीडर और एप्रोच सड़कों के निर्माण पर ही विशेष बल दिया गया है जो एक तरह से वास्तविक रुप में आवश्यकता रखने वाले व्यक्तियों को रोजगार की सुविधायें प्रदान करेगा।

कृषि का विकास—जिले की अधिकांश आबादी के आय का मुख्य साधन कृषि है। प्रति व्यक्ति अनुपात में बहुत कम सम्पत्ति होने के कारण इस जिले में वाह्य पूंजी का स्तर बहुत निम्न कोटि का है। बाढ़ और सूखा इस जनपद के सामान्य दैवी प्रकोप हैं।

इस जनपद का कुल क्षेत्रफल ३,३३,२०१ हेक्टर है जिसमें से २,६७,११२ हेक्टर क्षेत्रफल कृषि कार्य में आता है कृषि कार्य हेतु उपर्युक्त क्षेत्रफल का ७१,६७६ हेक्टर दो फसली क्षेत्र में आता है। इस जनपद की मुख्य फसलें धान, बाजरा, सांवा, गन्ना, मसूर, गेहूं, जौ, मटर; ज्वार, चना तथा अरहर हैं।

वर्ष १९६६–६७ तक यहाँ का कृषक वर्षाके ऊपर निर्भर था। ६७ के भीषण सूखे के बाद उनमें सिंचाई के प्रति एक क्रांति आयी और वे सिंचाई के प्रति विशेष जागरूक रहने लगे, जिससे खाद्य उत्पादन में वर्ष १९६८–६९ से उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही है।

इस जिले में ९ नदियाँ हैं। वर्षा ऋतु में गंगा के बाढ़ पर होने के कारण छोटी नदियों का पानी गंगा में जा नहीं पाता जिसके परिणामस्वरूप आस पास का क्षेत्र जल प्लावित रहता है। इन क्षेत्रों के लिए वर्ष १९६८–६९ में एक दियारा सुधार योजना बनायी गयी थी जिससे इस जनपद के जल प्लावित क्षेत्रों के कृषकों की आर्थिक स्थिति ठीक होने में सहायता मिलेगी लेकिन यह योजना कार्यान्वित नहीं हो सकी।

सिंचाई—इस जनपद में २,६७,११२ हेक्टर भूमि कृषि योग्य है। यहां सिंचाई मुख्यतः राजकीय नलकूप, नहर, लिफ्ट नहर, व्यक्तिगत नलकूप (लघु सिंचाई निजी साधनों) से की जाती है। समस्त साधनों से १७५७४८ हेक्टर सिंचित क्षमता का सृजन किया जा चुका है, जो कृषि भूमि का ६५ प्रतिशत है। अब भी १/३ से अधिक कृषि योग्य क्षेत्र सिंचाई के साधनों से वंचित है, इस जनपद में मुख्य सिंचाई का साधन अल्प सिंचाई योजना है जिसके अन्तर्गत पक्के कुएं, रहट, पम्पिंग सेट तथा व्यक्तिगत नलकूप हैं। सिंचाई के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने की दिशा में इस जनपद में लिफ्ट सिंचाई योजना तथा नहर का विस्तार एक नया कदम है। इस जनपद में गंगा, कर्मनाशा, गोमती बड़ी नदियाँ हैं। जिनमें सदैव पानी उपलब्ध रहता है। इन नदियों में निहित सिंचन क्षमता का उपयोग नहीं किया गया है किन्तु गत दशक में इस योजना को लागू करके स्थान-स्थान पर पम्प कैनाल तथा नहरें बनाई गई हैं जिनमें नदियों का पानी उठाकर जनपद की सूखी धरती को लहलहाते हुए खेतों में परिणित कर दिया है। जमानियां तथा सैदपुर पम्प कैनाल विशेष उल्लेखनीय है। अन्य पम्प कैनाल ततारपुर नुरुद्दीनपुर, हंसी व पुरैना आदि हैं। इस जनपद में एक बहुत बड़ी नहर देवकली पम्प नहर है जिसकी क्षमता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२०० क्यूसेक्स है इससे डेढ़ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होनी है।

इस जनपद का उत्तरी भाग एक शुष्क क्षेत्र के रुप में अब भी उपेक्षित बना हुआ है जिसमें सादात,जखनियां, मरदह, कासिमाबाद तथा भांवरकोल विकास खण्डों का अधिक भाग सम्मिलित है।

सहकारिता—इस समय जनपद के ग्रामीण अंचलों में साधन सहकारी समितियां कार्य कर रही हैं। इसके अतिरिक्त क्रय-विक्रय समितियां, सहकारी संघ तथा सहकारी बीज भण्डार कार्यरत हैं।

विद्युतीकरण—सिंचाई की सभी योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए विद्युत शक्ति का विकास आवश्यक है। नये स्टेशनों की स्थापना और लाइनोंके विस्तार की ओर कदम उठाये गये हैं जिससे दिन प्रतिदिन पम्पिंग सेट एवं लघु उद्योगों के विद्युतीकरण की बढ़ती हुई मांग को पूरा किया जा सके।

उद्योग--गाजीपुर जनपद की गरीबी और बेकारी को केवल कृषि का विकास करके ही दूर नहीं किया जा सकता। इस जनपद में ९० प्रतिशत से भी अधिक लोग कृषि पर आश्रित हैं। अतः यह आवश्यक है कि भूमि पर जनसंख्या के अत्यधिक भार को दूर किया जाय, उसके लिए यहां उद्योग धन्धे का विकास आवश्यक है। यह सत्य है कि गाजीपुर एक समस्या मूलक जनपद है। यातायात के साधनों का अभाव, कच्चे माल की आपूर्ति समस्या, धन विनियोग करने वालों और कुशल मजदूरों का अभाव औद्योगीकरण की दिशा में महान बाधक है। इसलिए इस जनपद के लिए लघु स्तरीय कुटीर उद्योगों की स्थापना ही एकमात्र विकल्प है।

वृहत उद्योग--वृहद स्तरीय क्षेत्र में केवल एक अफीम कारखाना है जिसमें विनियोजित धनराशि ५.३८ करोड़ तथा ५८६ व्यक्तियों को प्रतिदिन रोजगार प्राप्त हो रहा है। अफीम तथा विभिन्न क्षारोद का वार्षिक उत्पादन ६.५२ करोड़ रूपये का है।

सन् १९६४ में पटेल आयोग ने इस जनपद के विकास हेतु यह प्रस्ताव दिया था कि वृहदस्तरीय क्षेत्र में एक सूत बनाने की मिल और २ चीनी मिलों की स्थापना हो लेकिन अभी तक केवल एक चीनी मिल नन्दगंज में स्थापित की गई है। जिससे कृषकों को अपने गन्ने की खेती से थोड़ी आय बढ़ी है।

आधुनिक लघु उद्योग—लघु उद्योगों के विकासार्थ उद्योग कार्यालय द्वारा आयुक्त निधि के माध्यम से ऋण की व्यवस्था की गयी। इसके साथ ही साथ वेग वृद्धि एवं पिछड़ा क्षेत्र योजना के अन्तर्गत सुविधा प्रदान की गयी जिसका विवरण निम्नवत् है—

१—आयुक्त कोष ऋण	८,०२,००० रु०
२—बैकवर्ड एरिया ऋण	१,२२,००० रु०
३—वेगवृद्धि योजना ऋण	१,९२,५०० रु०

सन् १९७०-७१ में कृषकों को वित्तीय सुविधा अल्प ब्याज ३ प्रतिशत वार्षिक प्रदान कराने के लिए कई अन्य संस्थागत संस्थाओं का भी सहयोग प्राप्त होता है।

उपर्युक्त सुविधाओं के अतिरिक्त औद्योगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करके भी कारीगरों की निपुणता में वृद्धि की गयी। इन प्रमुख प्रशिक्षण में मैकेनिकल, विद्युत, चर्म, काष्ठ प्रमुख हैं। आज भी प्रशिक्षण कार्य क्रम चालू है। साथ ही साथ नियन्त्रित कच्चा माल, विद्युत एवं विद्युत छूट की सुविधाओं को प्रदान कर आधुनिक लघु उद्योगों की वृद्धि की गयी हैं। कुल ६४३ लघु एवं कुटीर स्तरीय ग्रामोद्योगों की स्थापना हुई है। जिसकेअन्तर्गत बुनकरोंके अतिरिक्त ३५००व्यक्तियोंको रोजगार, १०० लाख के लगभग उत्पादन और ४० लाख के लगभग धनराशि विनियोजित कर जनपद का औद्योगिक ढांचा बदल दिया गया है। केवल परम्परागत उद्योगों के कार्य हीं इस जनपद के अन्तर्गत नहीं पनप पाये हैं बल्कि लघु स्तरीय आधुनिक उद्योग भी प्रचुर मात्रा में पनपे हैं जिनमें अधोलिखित मुख्य हैं —

१—अल्युमिनियम के बर्तन मुहम्मदाबाद एवं दुल्लहपुर।
२—डाक्टरी बैण्डेज—नन्दगंज एवं गाजीपुर।
३—फल संरक्षण—गाजीपुर शहर।
४—रिविट उद्योग—सदर ब्लाक गाजीपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५–सिमेन्ट जाली तथा पाइप उद्योग–नन्दगंज ।

६–कृषि उपकरण–२२ ईकाइयां कार्यरत हैं। थ्रेसर, भूसा उठाने की मशीन ।

७–दाल मिल–३१ ईकाइयाँ कार्यरत हैं ।

८–तेल मिल–१५ ईकाइयां कार्यरत हैं ।

इस जनपद की सुगन्धिततेल उत्पादनके कार्यमेंह्रास हुआ है । इसका प्रमुख कारण कृषकों द्वारा फूल उत्पादन की उपेक्षा तथा कृत्रिम सुगन्धित पदार्थ का प्रचुर मात्रा में बाजार में सस्ते दर पर उपलब्ध होना है ।

हथकरघा उद्योग--गाजीपुर जनपद हथकरघा वस्त्र उत्पादन में अपना विशिष्ट स्थान रखता है । इस कार्य में विशेष बल प्रदान करने के उद्देश्य से ६८ सहकारी समितियों का गठन किया गया है । धुआर्जुन,कटैला और शेरपुर के हथकरघों के सर्वोत्तम वस्त्र नवीनतम परिकल्पों से तैयार किया जा रहा है । धुआर्जुन की समितियों द्वारा निर्मित दीवाल पर लटकाने वाले परदे अब विदेशों में भी लोकप्रिय होने लगे है ।

हस्तकला-कुम्हारगिरा,ब्रोकेट,लकड़ीके खिलौनेआदि।

गाजीपुर जनपद में कृषि उत्पादन व अन्य उद्योगों की क्षमता को ध्यान में रखते हुए निम्न उद्योगों की स्थाना की जा सकती है –

१– इस जनपद में गन्ना काफी मात्रा में उत्पन्न किया जाता है जो गुड़ व सांड़सारी बनाने में प्रयोग किया जाता है जिसका कृषकों को उचित मूल्य नहीं मिल पाता है । अतएव कुछ स्थानीय क्रसर लगाये जा सकते हैं ।

२–भारत सरकार द्वारा टेलीफोन के यन्त्र आदि बनाने के लिए एक कारखाना की स्थापना की जा सकती है ।

३–यहां बुनकर लोग काफी संख्या में हैं उनको उचित मूल्य पर सूत नहीं मिल पाता है इस कमी की आपूर्ति हेतु एक सूत मिल की स्थापना की जा सकती है । जिससे बुनकरों को उचित मूल्य पर सूत समय से मिल जाया करे । इससे बुनकरों को तथा खासकर हस्तकरघा सहकारी समितियों को काफी सहायता मिलेगी ।

४–प्लान्ट प्रोटेक्शन इक्वीपमेंट बनाने का कारखाना लगाया जा सकता है ।

५–यहाँ पर फर्नीचर तथा मकान बनानेका सामान बनाने की ईकाइयों की स्थापना का काफी स्कोप है । इस सम्बन्ध में शीशम तथा आम की लकड़ी जनपद में प्राप्त हो सकती है ।

६–यहां पर एक लोहे की सरिया बनाने का कारखाना स्थापित किया जा सकता है क्योंकि पूर्वांचल में वाराणसी जनपद को छोड़कर अन्य जनपदों में नहीं है ।

७–हड्डी के चूरा से खाद का कारखाना लगाया जा सकता है ।

८–यहां पर कोई भी ढलाई का कारखाना नहीं है इसलिए बोल्ट, नट तथा रिविट आदि बनाने का कारखाना भी स्थापित किया जा सकता है ।

९–कृषि उपकरण बनाने का कारखाना स्थापित किया जा सकता है ।

—:)०(:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधुनिक छात्र की

प्रार्थना

निर्मल कुमार श्रीवास्तव, बी० ए० द्वितीय वर्ष

हे प्रभो सुन लीजिए बिनती हमारी ध्यान से।
दो मुझे ऐसी कला कि पास होवें शान से॥
भय नहीं मुझको प्रलय, मौत या तूफान से।
रूह हमारी कांपती हैं हर समय इम्तहान से॥
पठन-पाठन याद करना और उसको समझना।
समझकर लिखना उसे फिर भी मुसीबत है बना॥
है पता मुझको नहीं यह कौन सा अभिशाप हैं।
रात भर रटता मगर वह भोर होते साफ है॥
नाश हो इतिहास का अंग्रेजी मुझे भाती नहीं।
याद है ईसा मगर ईसवी मुझे आती नहीं॥
कुर्सीनामा ख्याल है हर तख्त के सम्राट का।
है नहीं मालूम रिश्ता मात्र बेटा बाप का॥
गोल है पृथ्वी यही भूगोल का इतिहास है।
गोल है वह सब मिठाई जिसमें कुछ मिठास है॥
डांट कर कहते गुरुजी अक्ल तेरी गोल है।
आ गया इम्तहान तो नम्बर तुम्हारा गोल है॥
कह रहा हर रोज मच्छर हैं हमारे कान में।
बैठना इस बार बेटा सम्भल कर इम्तहान में॥
बस यही इच्छा प्रभो है जिन्दगी से हार कर।
पास करनी है परीक्षा चाकुओं की धार पर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं सोचता हूँ कि

ओमप्रकाश राय, बी० ए० भाग १

मैं कलम लेकर बैठ तो हूं मगर सोचता हूं कि आत्महत्या कर लूं क्यों कि भारत के इस विषाक्त माहौल में जहां हर व्यक्ति करीबन ३५० रु० के कर्ज में डूबा हुआ है हम अपने को अगर किसी छोटी सी उपलब्धि पर गौरवान्वित महसूस करे-जिस मां के दामन में यह विदेशियों का कर्ज रुपी खंजर जख्म बना रहा है। जहां हमारे राष्ट्रीयता का मजाक उड़ाते हुए विश्व बैंक और पी० एल०४८० के समझौते है। जहां हमारे बदन का जर्रा-जर्रा आज भी बिका हुआ है हम अपने को आजाद महसूस करते हैं, हम अपने को शांतिप्रिय कहते हैं, क्या हम इसके सिवा कुछ और कर भी सकते हैं। नहीं हमारे राष्ट्र नायक कहते हैं कि हम इतने वर्षो में अमुख चीज पर आत्म निर्भर हो जायेगे। क्या यह कभी सम्भव है। लोग कहते हैं कि हमने जब आजादी पाई तो उसके लिए किए गये संघर्ष अपने आप में अद्वितिय थे, काश आज हमारा राष्ट्रपिता कहा जाने वाला वह व्यक्ति जिसे लोग गान्धी के नाम से जानते हैं जिन्दा होता तो मैं उससे पूछता कि कहां है तुम्हारी आजादी जो तुमने हजारों वीरों भगत और चन्द्रशेखर के बलिदान के बाद पायी थी, सुभाष को विदेशियों के हाथ बेचने का सौदा करके पायी थी एक अंग्रेजियत की बू वाले व्यक्ति को प्रधानमंत्री का लालच दिखाकर पाया था। क्या यही है वह जो आज हमारे बदन का एक-एक हिस्सा बिका हुआ हैं और यही है तुम्हारा वह रामराज्य जहां एक तरफ हमारे ही प्रतिनिधि कहे जाने वाले लोग विदेशी साज सज्जा के बगलों पर रहते हैं विदेशी कारों में चलते हैं और जनता के राज्य कहे जाने वाले इस जनतंत्र में हम उनसे अपनी बेटी और रोटी की समस्मा को हल करने की भीख मागते हैं और बदले मेंमिलती उनके तथा उनकेकथित उत्तराधिकारियोंसे बलात्कार की बाते और हमारे द्वारा पैदा किए हुए गेहूं पर लेवी तथा अन्य टैक्सों की मरमार।

ये तो हुई आज की बाते अब आने वाले कल का यह भार हम नौजवानों पर ही आने वाला है इसके लिए प्रहरी के सामान सजग दृष्टिकोण अपनाना होगा और अगर वह बुढ्ढा व्यक्ति जो आजीवन लाठी टेकता रहा अपनी व्यवस्था हमें दे सके तो हमारे अन्दर अभी तरुणाई है क्या हम इस भीख मांगती हुई मां के बदन की लाज बचाने के लिए पर्दा और नही दे सकते है क्यों नहीं दे सकते आखिर है तो उसी वीर भगत और चन्द्रशेखर आजाद के वंशज जिन पर हमें गर्व हैं कि उन्हीं ने इस दासता में पल रही परतन्त्रता की जंजीर में जकड़ी भारत मां को अपने शौर्य और शोणित से सीचा है। तो आओ मेरे नौजवान दोस्तो हम इस मातृभूमि को जिसका हम रक्त रूपी अन्न, जो उसके वक्षस्थल को चीर कर पैदा किया जाता है खाया हैइस प्राणप्रिय मिट्टी की सौगन्ध खाये जब तक हम सही अर्थों में स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त कर लेते हम इस व्यवस्था को बदल नहीं देते तब तक चैन की सांस नहीं लेगे।

—: (०) :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कालेज स्टूडेन्ट

गनेश राय, बी० ए० प्रथम वर्ष

क्रीम पाउडर नित्य लगाते,
फैशन से हैं प्रीति बढ़ाते,
सर पर डाले सेन्ट,
ये हैं कालेज स्टूडेन्ट ।

कहां गया सर्वेन्ट,
ये हैं कालेज स्टूडेन्ट ।

फिर भी होते एबसेन्ट,
ये हैं कालेज स्टूडेन्ट ।

मास्टर साहब किये कड़ाई,
सहजानंदके छात्रोंनेठानी लड़ाई
कक्षा से जब बाहर आए,
पिस्टल चाकू खोल दिखलाए,

आठ बजे हैं सोकर उठते,
शौच के पूर्व बेड टी लेते,
देर हुआ तनिक चाय में,
पैर पटककर झुझलाकर कहते।

चलते हैं साइकिल पर,
पैडिल मारें खूब उछलकर,
बातें करते सबसे खुलकर,
घर से चलते घड़ी देखकर ।

गप-शप ही में साल कटाते,
कक्षा में बातें ही बातें
इम्तहान में जीरो पाते,
ये हैं कालेज स्टूडेन्ट ।

क्वार्टर पर हुए प्रेजेन्ट,
ये हैं कालेज स्टूडेन्ट ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंतरिक्ष विज्ञान-कृत्रिम उपग्रह

(कमलनारायण पाण्डेय, बी० ए० भाग २)

मानव जीवन समष्टि के प्रत्येक जीवन से अच्छा समझा जाता है, क्यों कि समस्त चेतना में मानव सोचने की अद्भुत क्षमता रखते हुए नित्य चमत्कारिक आविष्कार करता रहता है। आज का अन्तरिक्ष ज्ञान मानव के उस निराकार क्षमता का ही परिणाम है जो परमात्मा के तरफ से मनुष्य को विरासत के रूप में प्राप्त है। प्राकृतिक उपग्रहों का अध्ययन करके कृत्रिम उपग्रह बनाये गये। पहले हमें यह जानना आवश्यक है कि उपग्रह क्या है और कृत्रिम उपग्रह को कैसे कक्षा में स्थापित किया जाता है।

वह आकाशीय पिण्ड जो ग्रह के चारो तरफ परिक्रमा करता है उसे उपग्रह कहते हैं। जैसे चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है। कृत्रिम उपग्रह भी पृथ्वी की परिक्रमा करने के लिए पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किए जाते हैं। इनके लिए कुछ आवश्यक शर्तें है। जो निम्नलिखित हैं। (१)–उपग्रह को ऐसे उंचे स्थान पर रखा जाता जहां वायुमंडल बिल्कुल कम हो ताकी घर्षण बल काम न करे। (२)–उपग्रह को उसी वेग से फेका जाता है ताकि वह कक्षीय वेग के बराबर होकर उपग्रह को कक्षा में घुमाये। ये शर्तें राकेट द्वारा उपग्रह फेकने से पूरी होती हैं।

अन्तरिक्ष काल १९५७ से प्रारम्भ हुआ था पहले इससे कृत्रिम उपग्रह छोड़े गये। मनुष्य का अन्तरिक्ष में प्रथम पदार्पण १९६१ में हुआ। फिर तो जिज्ञासा बढ़ती ही गई और १९६९ का भी वह शुभ दिन आ गया जब कि मानव को चन्द्रमा की चढ़ाई में भी सफलता हासिल हुई।

सर्व प्रथम २१ जुलाई १९६९ को अमेरिका के दो अंतरिक्ष यात्री चन्द्रमा पर अपोलो ११ की योजना के अन्तर्गत उतरे। उनके नाम थे आर्मस्ट्रोंग तथा एल्ड्रिन। अमरीका को इस क्षेत्र में महान यश का अर्जन हुआ।

उन्नति के इस घुड़ दौड़ में सोवियत रूस भी कैसे पीछे रले। चन्द्रमा की खोज करने के लिए रुस ने लूना–९ चन्द्रमा पर जनवरी १९६६ में उतरा था। लूना–१० अगस्त १९६६ को छोड़ा गया था, चन्द्रमा के चारों ओर चक्कर लगाने लगा। लूना–१५ जो १३ जुलाई १९६७ को छोड़ा गया था, चन्द्रमा पर उतर गया किन्तु सफलता लूना–१६ को मिली। यह २१ सितम्बर १९७० को चन्द्रमा पर 'सी आफ फलीटी पर उतरा था और वहाँ से उसने चन्द्रमा मिट्टी एकत्रित करके वापस लौट आये। लूना १८ सितम्बर १९७१ में छोड़ा गया किन्तु दुर्भाग्य-पूर्ण स्थिति में चन्द्रमा के पहाड़ों से टकराकर नष्ट हो गया। लूना २२ यह मई १९७४ को चन्द्रमा पर भेजा गया। जो ३ जून से चन्द्रमा के कास्मिक रेडियेशन तथा मैगनेटिक फिल्ड का अध्ययन शुरु किया। लूना सिरीज २३ तक चलती रही किन्तु ये सभी यान मानव रहित थे।

अन्तरिक्ष क्षेत्र में अमरीका को वह सफलताएं नहीं मिली जो कि सोवियत रूस को मिली। अन्तरिक्ष में भेजे जाने वाला प्रथम यात्री भी रूस का था। अमरीका का नहीं। किन्तु ५ मई १९६१ से अमेरिका का अन्तरिक्ष अभियान सफल होता रहा। यहां तक कि चन्द्रमा पर मानव उतारने वाला प्रथम देश अमरीका ही बन गया। चन्द्रमा पर उतारने का श्रेय अपोलो ११ को है। यह जुलाई १९६९ को केप केनेडी से छोड़ा गया था।

स्काईलैब मिशन अमरीका द्वारा १४ मई १९७३ को प्रारम्भ किया गया। इसके अन्तर्गत परिक्रमा करती हुई अन्तरिक्ष प्रयोगशालाए स्थापित की गई। जुलाई १९७९ में अन्तरिक्ष प्रयोगशाला आस्ट्रेलिया के पास गिर कर ध्वस्त हो गया। ७७.५ टन की इस प्रयोगशाला के ५०० टुकड़े हो गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब अन्तरिक्ष उड़ाने अन्तरिक्ष अनुसन्धान के निमित्त ही रह गई है। रूस ने वीनस तथा मार्स की खोज के लिए अन्तरिक्ष यान भेजे हैं। साथ साथ उसकी प्रयोग-शालाएं तथा अन्तरिक्ष यान सेल्युत सिरीज तथा सोयुज सिरीज के नाम के अनुसन्धान कार्य में रत है। अमरीका भी जुपीटर मार्स वीनुस की खोज कर रहा है। साथ साथ उसकी प्रयोगशालाए स्काईलैब मिशन के नाम से काम कर रही है। भारत का भी आर्य भट्ट उपग्रह यही कार्य कर रहा है। तथा रोहिणी उपग्रह का S.L.V.-3 से प्रस्थापित करके विश्व का छठा देश बन गया है। जिसका यह S.L.V.-3 स्वनिर्मीत लान्चिग वेहिकिल है।

भारतीय वैज्ञानिकों ने पूरी तरह भारत में निर्मित उपग्रह प्रक्षेपण वाहन एस० एल० वी०-३ द्वारा रोहिणी उपग्रह आर० एस० डी० को ३१ मई १९८१ को प्रातः ९ बजकर ३ मिनट पर सफलता पूर्वक अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित किया औ[illegible]ह कक्षा में स्थापित हो गया। किन्तु ९ जून १९८१ को तकनीकी खराबी के कारण अन्तरिक्ष में ही जलकर स्वाहा हो गया। यह प्रक्षेपण श्री हरिकोटा से किया गया था। १७ टन के इस वाहन में २८ किलोग्राम वजन वाला रोहिणी उपग्रह रखा गया था। एस० एल० वी०-३ के सफल उड़ान के बाद भारत विश्व का छठा ऐसा देश हो गया है जिसके पास अन्तरिक्ष में उपग्रह पहुंचाने के लिए स्वनिर्मित प्रक्षेपण वाहन है।

एस० एल० वी०-३ प्रक्षेपण के कुछ मिनटों के बाद ही रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित कर दिया था। इस उपग्रह को ३०० दिन तक अन्तरिक्ष में रहना था और इसे प्रत्येक ७५ मिनट में पृथ्वी की एक परिक्रमा करना था। पृथ्वी से इसकी न्यूनतम दूरी २७६ किलोमीटर और अधिकतम दूरी ८३४ किलोमीटर की थी रोहिणी उपग्रह हलकी ऐल्युमिनियम मिश्र धातु की बनी है।

भारत के चार उपग्रह वर्तमान में कक्षा में चक्कर लगा रहे हैं। भारत का पहला उपग्रह, भारत के प्रसिद्ध खगोलविद और गणितज्ञ के नाम पर बनाया गया जिसका नाम 'आर्यभट्ट' हैं। ६०किलोग्रामके इस उपग्रह को६०० किलोमीटर की लगभग वृत्ताकार कक्षा में भूमध्य रेखा से ५१ अंश का कोण बनाते हुए सोवियत संघ के एक प्रक्षेपण केन्द्र से अप्रैल १९७५ में छोड़ा गया था। जो अब तक ६ माह की निर्धारित आयु पार करके सफलतापूर्वक काम कर रहा है।

दूसरा भारतीय उपग्रह भास्कर ७ जून १९७९ को छोड़ा गया इसका मुख्य कार्य भू पर्यवेक्षण कार्य करना है। इस उपग्रह में माइक्रोवेव रेडियोमीटर और टेलिवीजन कैमरे हैं। जो जल विज्ञान, वन विज्ञान, समुद्र विज्ञान और मौसम विज्ञान के सम्बन्ध से आंकड़ें एकत्र करने के लिए अन्तरिक्ष उपयोग केन्द्र द्वारा तैयार किये गये है।

तीसरा उपग्रह रोहिणी आर एम०-१, १९ जुलाई १९८० को छोड़ा गया जिसे भारत द्वारा स्वनिर्मित पक्षेपण वाहन एस० एल० वी०--३ से प्रक्षेपित किया गया। इस प्रक्षेपण ने भारत को उपग्रह प्रक्षेपण क्षमता से संपन्न विश्व के इने गिने राष्ट्रों की पंक्ति में प्रतिष्ठित कर दिया है। और भारत इस सामर्थ से सम्पन्न विश्व का छठा राष्ट्र हो गया। अन्य राष्ट्र है—अमरीका- रूस, फ्रांस, चीन और जापान।

चौथा उपग्रह ३१ मई १९८१ को छोड़ा गया था जो भस्म हो गया। और पांचवा उपग्रह एपिल १९ जून १९८१ को छोड़ा गया जो पृथ्वी से ३६ हजार कि०मी० ऊंचा जाकर उसकी परिक्रमा कर रहा है। एपिल ६७० किलो वजन का है। जो भारत का प्रथम संचार परीक्षण उपग्रह है। यह फ्रेंचगिनी से छोड़ा गया। 'एपिल' के बाद सोवियत भूमि से कई भारतीय उपग्रह छोड़े जायेगे।

विश्व का अन्तरिक्ष अभियान, आश्चर्यजनक और चमत्कारिक ढंग से आगे बढ़ रहा है। शांतिप्रिय मानव का यह अन्तरिक्ष अध्ययन मानव को मानव बनाने सुखी रखने, कर्त्तव्यशील और अग्रपथगामी बनाने का सारा दारोमदार विश्व वैज्ञानिक संगठन को हैं। और है कि आशा कर्त्तव्यनिष्ठा से अपने अभूतपूर्व अनुसंधानों से मानव वर्ग को अनुग्रहीत करेगे।

——

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो कवितायें

दिनेश कुमार राय, बी० ए० द्वितीय वर्ष

[१]

तुम्हारे बड़े फार्म के हम वरसीम हैं

सारे फसल कट गये–हम पड़े रह गये ।
नजर तुम्हारी गेहूं पर-हम पड़े दीन हैं ।।

लगातार काम आया कुछ तो लेने फुर्सत दो ।
लगती है तुम्हारी आदत-शोषण के शौकीन हैं ।।

तेरे दांत निकले चेहरे-मेरे खून से रंगीन हैं ।
तुम्हारे दिन बीत गये भविष्य तेरा गमगीन है ।।

हमें मिटना आता नहीं छा जायेंगे तुम्हारे फार्म में ।
विश्वास नहींहै तो देखो-तुम्हारे उत्तर में चीन है ।

तुम्हारे.....

[२]

कविता युग की नब्ज धरो ।

जन–मन के विशाल सागर में–
फैल प्रवल झंझा के स्वर में—
चरण–चरण विप्लव की गति दो-लय-लय प्रलय करो ।

श्रम की भट्ठी में गल—गल कर—
जग की मुक्ति अर्थ में ढल कर,
बन स्वच्छन्द सर्वहारा के ध्वज के संग लहरो ।

शोषण छल—छन्दों के गढ़ पर ।
टूट पड़ो नफरत सुलगा कर—
क्रुद्ध अमन के राग युद्ध के दन्तो से गुजरो ।

कविता.....

—:)०(:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबीर जनसंघी थे।

(जितेन्द्र कुमार सिंह, बी० ए० प्रथम वर्ष)

जनसंघ पार्टी का जनता पार्टी में विलय के बाद आज हमारे देश में नाजुक स्थिति हो गई है। लोग उसके पुराने चुनाव चिन्ह दीपक को भूल बैठे हैं। पर यह सही है कि कबीर जनसंघी थे। और आजीवन दीपक के प्रति निष्ठावान थे। कबीर जनसंघी थे यह बात किसी और ने नहीं खुद उन्होंने कही है।

मैं तो मागा जात था, लोक वेद के साथ।
आगे से सतगुरु मिला, दीपक दीना हाथ।

एक आदमी जो कि जाति का ब्राह्मण था। लोभ के कारण कांग्रेस में चला गया। कबीर ने उसे लताड़ते हुए कहा।

मूते लिंगी बाबे कान ये देखो ब्रह्मन का ज्ञान।

अर्थात बड़ा जनेऊ पहनता था कांग्रेस में चला गया वे मुनाफाखोरों के भी बहुत खिलाफ थे। मुनाफाखोर कांग्रेस पार्टी को चुनाव का चन्दा देते थे। इन्हीं की स्वार्थ परता एवं विधर्मीपन को लक्ष्य करते हुए उन्होंने कहा था।

सती को मिले चरगजी नाहीं, वेश्या पहिरे खासा है।
जा घर साधु भीख न पावे, भड़वा खात बतासा है॥

अर्थात ये पैसे वाले मुटमर्द इतने निर्लज हैं कि इनके दरबार में सती को चार गज कपड़ा नहीं मिलता जबकि कालगर्ल डी. सी. एम. की ऊंची साड़ियां पहनती है। साधु को एक मुट्ठी भीख नहीं मिलती जबकि हिजड़े बतासा खाते हैं।

मगर कोई शोध तब तक पूरा नहीं होगा, जब तक सम्बन्धित कवि के प्रेम प्रसंगों पर प्रकाश न डाला जाय। इस लिए मैं यह रिवाज भी निभाये देता हूं। ऐसा लगता है जैसे कबीर के जीवन में दो औरतें आयी थी। एक की चर्चा अभी मैं कर देता हूं। दूसरी का नाम बाद में बताऊंगा यह पहली औरत थी माया। शायद माया मास्टरनी। या मठों के भण्डारों में रोटी बनाने वाली माया बाई। खैर उसका नाम धाम चाहे जो हो। पर यह सही है कि कबीर उससे बड़े परेशान थे। कभी २ दोपहर में जब कबीर खाना खाकर आराम करते आ जाती और कुटिया का दरवाजा हिलाकर उन्हें बहुत बहुत तंग करती थी। दरवाजे के छेद में से वह नयना भी मटकाती इसी से खीझ कर उन्होंने कहा

"ठगिनी क्यों नैना मटकावे।

अर्थात माया देवी क्यों तू मुझ साधु को तंग करती है। मैं तो पहले से हीं दुखी हूं।

मगर दूसरी औरत जिसने कबीर को माया देवी से भी ज्यादा परेशान किया किसी साहब के चपरासी की बीबी थी। किस्सा इस तरह हैं।

कबीर की कुटिया के पास एक सरकारी अफसर रहते थे। उनका नाम रमैया नामक चपरासी था। उस चपरासी ने ढलती उम्र में शादी की थी। क्यों कि साहब कुवारे थे। और रमैया को पक्की नौकरी चाहिए थी। उसकी इसी नई बीवी को लहत कहा गया है। इस औरत के जलवे बड़े न्यारे थे। ठस्से से चलती थी। बाल खोलकर घुमती थी और साहब के कर्मचारियों पर हुकुम फरमाती थी। पूरा बाजार उसका दीवाना था। कबीर अपनी कुटिया में से एक दिन रमैया को आगाह किया।

"रमैया, तोरी दुलहन लूटे बाजार।

यानी रमैया अपने घर वाली को रोक अब तक तो यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहब पर लकड़ी घुमाती थी। पर अब सारे बाजार में घुमाने लगी हैं। इतना खुल्म-खुल्ला ठीक नहीं। मगर उस औरत ने कबीर को भी नहीं छोड़ा साहब से कह कर उनकी झोपड़ी उखड़वा दी। उनका शहर निकाला करा दिया। तब कबीर ने कहा।—

कबीरा खड़ा बजार में, लिए लुकाठी हाथ।
जो घर फूंके आपना, चले हमारे साथ ॥

तो यह था एक कवि की जीवन पुस्तक का एक दुख भरा अध्याय जो अन्धकार में पड़ा था। जिसे मैंने अन्तः साक्ष्य के आधार पर खोजा है। सोचता हूं कि उस समय पुलिस व्यवस्था कितनी कमजोर थी कि एक कवि के जान माल की रक्षा न कर सकी थी। क्या तब भी आज जैसी ही पुलिस होती थी। इन सब उपरोक्त बातों से हमें समझने में देर नहीं लगेगी कि कबीर किस पार्टी से सम्बन्धित थे। निःसन्देह ही पाठक अनुपात लगा लेगा कि कबीर असली जनसंघी थे। शायद उस समय जनसंघ का कहीं अस्तित्व भले ही न रहा हो। पर रहा क्यों नहीं कबीर तो उसके पहले प्रेसीडेन्ट थे। शायद इतिहास इसे माने या न माने हमारा हिन्दी साहित्य इसे कभी नकार नहीं सकता।

—: (०) :—

कहानी—

"एक अच्छा सबक"

दिनेश चौबे, बी० ए० भाग २

राम दौड़ता हुआ श्याम के घर पहुंचा। वह सच मुच डरा हुआ था। सारे साल उसे पढ़ाई में ध्यान नहीं दिया था, इसलिए वह प्रत्येक टेस्ट में फेल हो गया पहले उसने अपनी सालाना परीक्षा दूर दिखायी देती थी। अब मार्च ता आ ही गया था और परीक्षा में केवल एक माह बाकी बचा था। अब उसे पढ़ना चाहिए था, क्योंकि परीक्षा में अधिक दिन बाकी नहीं थे। श्याम एक अच्छा लड़का है, वह उसकी जरुर मदद करेगा, राम ने मन ही मन सोचा। पहले भी तो उसने उसकी मदद की है अपनी नोट्स देकर। इसीलिए वह दो बार पास हो सका है। आज भी वह नोट्स लेना चाहता था और जितना हो सके उन्हें याद भी करना चाहता था।

कुछ समय बाद राम उसके घर के निकट जाकर रूका। उसने लम्बी सांस ली। श्याम हर रविवार को खूब पढ़ता था। श्याम पढ़ रहा था उसी समय राम ने दरवाजा खटखटाया। पहली बार तो श्याम उसे देखकर खुश नहीं हुआ। 'क्या चाहते हो, तुम ?' श्याम ने अनमने ढंग से पूछा। 'तुम्हारे नोट्स' रामने धीरे से कहा। श्याम का चेहरा तमतमा गया। उन्होंने धीरे से कहा, तुम्हें यह आशा नहीं रखनी चाहिए कि मैं हमेशा तुम्हें हमेशा नोट्स देता रहूंगा। मुझे अफसोस हैं क्योंकि मुझे भी उनकी जरुरत है।' राम अनिश्चय की स्थिति में खड़ा सोचता रहा कि क्या कहें।

"ओह श्याम, दोस्तों से ऐसा व्यवहार नहीं करते मुझे इस तरह खाई में मत धकेलो। मैं वादा करता हूं, आज आखिरी बार नोट्स दे दो फिर कभी नहीं मांगूंगा" "यही बात तुमने पिछली बार भी कही थी, मगर वादा करके मुकर गये।" श्याम अपनी बात पर अडिग था। सारा साल तुमने व्यर्थ ही गंवा दिया है। तुम बच्चों की कहानी के मूर्ख झींगुर की तरह हो। बेहतर होगा तुम खुद को बदलो।"

श्याम ने दरवाजा बन्द किया और पढ़ने के लिए वापस चला गया। बन्द दरवाजे पर टकटकी लगा देखते हुए राम कुछ देर मूर्ति की तरह खड़ा रहा। फिर धीरे-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धीरे कदम उठाता राहुल के घर की तरफ चला। उसने पूरा दिन एक से दूसरे साथी के घर जाने में बिता दिया, मगर हर जगह एक ही बात थी। हर कोई पढ़ने में ही लगा हुआ था और उसे नोट्स नहीं दे सकता था। ऐसा लगता था जैसे सारी कक्षा ने उसके विरुद्ध षड़यन्त्र रचा था। हैरान, परेशान सा घुमता हुआ राम अपने घर वापस पहुंचा।

उसने चींटी और झींगुर को देखा था। चालाक लड़के जानते हैं कि कैसे जिन्दगी को खुशहाल बनाया जा सकता है। उसने सोचा, 'बेचारी चींटी जिसने आखिरी समय तक दुःख दर्द सहा और थोड़ी से देर के लिए भी खुश न रह सकी।' उसे कहानी के अन्त के बारे में कोई परेशानी न थी। चाहे बेचारा झींगुर ठण्ड और भूख के मारे परेशान हो रहा था। यह हंसने की बात नहीं है। उदास और मायूस सा वह अपने घर में परीक्षा के बारे में सोचने लगा, 'अब क्या करना चाहिए? अब उसके पास केवल एक ही रास्ता बचा था कि वह स्वय अपने नोट्स बनाये। एक बार उसने निश्चय किया और उसी समय वह अपने काम में जुट गया। अब समय भी थोड़ा ही रह गया था

वह रात में देर तक पढता और आवश्यक प्रश्नों को कापी पर लिख देता। इस तरह माह के अन्त तक उसके बहुत से नोट्स तैयार हो गये थे। राम को मेहनत करते देख कर उसके माता-पिता खुश होते थे। राम में यह परिवर्तन कैसे हुआ? उसके पिता हैरान हो रहे थे। उसकी माँ भी उसे बहुत प्यार करने लगी थी।

एक महीने की मेहनत ने राम को बदल दिया। वह सबसे अलग हो गया था। वह गम्भीर बन गया था। किसी भी कीमत पर सफलता प्राप्त करना ही एक मात्र उसका उद्देश्य रह गया था। वह अपने साथियों को बता देना चाहता था कि उनकी मदद के बिना भी नोट्स बना सकता है। और परीक्षा में पास हो सकता है। उसने परीक्षा में ७५ प्रतिशत नम्बर प्राप्त किए थे। और सब लोग हैरान थे। उसके अध्यापक बहुत खुश थे और श्याम भी खुश थः। श्याम राम को मुबारक देने आया। "मुझे दुख है, मैंने उस दिन जो कुछ भी तुम्हारे साथ व्यवहार किया, लेकिन तुम्हारी भलाई के लिए एक ही रास्ता था।

राम ने पूछा, "तुम्हारा मतलब है कि तुमने ऐसा जान-बूझ कर किया था? "हाँ यह मेरे माता जी की योजना थी, मेरी नहीं। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था मगर मेरी माता जी ने कहा, "अगर तुम उसके सच्चे मित्र हो तो तुम उसकी मदद करो, मगर दूसरे तरीके से।"

राम खुश था। "आज मैं बहुत खुश हू, वरना मैं हमेशा दूसरों पर ही निर्भर रहने वाला बन जाता। मैं नहीं जानता कि उन्हें कैसे धन्यवाद दूं, "उन्हें अपनी रिपोर्ट बुक दिखाकर, श्याम ने उत्तर दिया, " इसे देखकर वह जरुर खुश होगी। 'अच्छा' और दोनों खुशी-खुशी श्याम के घर की ओर चल पड़े।

—:)०(:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्यार्थी जीवन

(चन्द्रिका सिंह यादव, बी० ए० द्वितीय वर्ष)

प्राचीन भारतीय इतिहास को देखने से यह ज्ञात होता है कि हमारे पूर्व पूर्वजों ने जीवन को सुव्यवस्थित ढंग से बिताने के लिए निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया है। प्रथम ब्रह्मचर्य, द्वितीय गृहस्थ आश्रम तृतीय वानप्रस्थ तथा चतुर्थ सन्यास आश्रम बताया है। जिसमें से विद्यार्थी जीवन ब्रह्मचर्य का ही दूसरा नाम प्रस्तुत किया गया है। विद्यार्थी जीवन एक तपस्या का अंग है। हम अपने जीवन काल में विद्याध्ययन के लिए अनेक प्रकार की कठिनाइयों द्वारा तप करते हैं। तब इसके बाद मुझे सरस्वतीजी का ज्ञान अर्जित होता है।

विद्यार्थी जीवन मनुष्य का सर्वाधिक श्रेष्ठ काल हैं। इस समय का सदुपयोग कर मनुष्य अपने जीवन को सुखमय बनाने का प्रयत्न कर सकता है। विद्यार्थी जीवन के समय, विद्यार्थियों पर भोजन, वस्त्र तथा अन्य आदि वस्तुओं का भार नहीं होता है। और न उसे चिन्ता ही करना पड़ता है। वह केवल अपने अमूल्य समय में सम्पूर्ण प्रवृत्तियों तथा शक्तियों द्वारा विद्या अर्जन की ही चिन्ता रहती है।

विद्यार्थी जीवन एक सुखमय जीवन प्रदान करता है। उस जीवन में हमें विद्या के अलावा दूसरे कामों में कम लीन रहना पड़ता है। विद्यार्थी शब्द का अर्थ हम केवल विद्या प्राप्ति को ही नहीं सोचते, बल्कि उसका दूसरा अर्थ चरित्र निर्माण, शारीरिक तथा मानसिक और सद्गुणों का प्राप्ति का भी पूर्ण रूप से ध्यान देना उन्नति चाहिए।

हमारे ऋषि महर्षियों ने विद्यार्थी शब्द का अर्थ विद्या को चाहने की इच्छा से लगाया है तथा पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त करना होता है।

विद्या से तात्पर्य केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं होता है। विद्यार्थी को यह सोच समझ कर अपने जीवन के चारों ओर की प्रकृति की सुरम्य छटा को अपने नेत्रों द्वारा देखना चाहिए। जिससे उसके ज्ञान में विहरिता और अवलोकन में सुक्ष्म दर्शिता आ जाती है।

विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी को कभी भी आलस्य नहीं करना चाहिए। उसे ज्ञानार्जित करने के लिए बड़े से बड़े त्याग तथा कठिन से कठिन परिश्रम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। विद्यार्थी जीवन कष्टमय जीवन है। क्यों कि विद्यार्थी को अधिक से अधिक त्याग तथा परिश्रम करना पड़ता है। जो विद्यार्थी अपने जीवन को कष्ट तथा त्याग से बिताता है वह अवश्य ही सफल होता है वह अपने जीवन काल में भी सुख का अनुभव करता है।

विद्यार्थी के लिए चरित्र निर्माण का प्रावधान आवश्यक है। श्रेष्ठ चरित्र के अभाव में विद्या विभूषित मनुष्यको भी आदरकी दृष्टि से नहीं देखा जाता। विद्यार्थी को संयम के बिना विद्या की प्राप्ति करना बहुत ही कठिन कार्य हैं। चरित्र की श्रेष्ठता के लिए ब्रह्मचर्य का पालन तथा मादक पदार्थों के सेवन से दूर रहने की परम आवश्यकता हैं विद्यार्थी के लिए शील, विनय, सदाचार, अनुशासन, प्रियता तथा बड़ों का आदर आदि ऐसे गुण परम आवश्यक है। एक चरित्रवान विद्यार्थी "सादा जीवन उच्च विचार, के सिद्धान्त को ध्यान में रखकर अपने सम्पूर्ण आचरणों और उपकरणों को ध्यान में रखकर सदा वाह्य आडम्बरों से दूर रहता है।

विद्यार्थी अपने मस्तिष्क के विकास, शरीर के विकास के बिना असम्भव है। स्वस्थ मस्तिष्क स्वस्थ्य शरीर में ही रहता है। इसको ध्यान में रखकर विद्यार्थी को हमेशा अपने शरीर को स्वस्थ्य रखने का प्रयत्न करना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहिए ।

विद्यार्थी का जीवन बड़ा ही उत्तरदायित्वपूर्ण है। इस काल में विद्यार्थी को सदा सावधान तथा सचेष्ट रहना पड़ता है। विद्यार्थियों के लिए सुख तथा विद्या का वैर कहा गया है । यथा—

सुखार्थीनः कुतो विद्या, विद्यार्थीनः कुतो सुखम् ।
सुखार्थी वा त्यजेत् विद्या, विद्यार्थी वा त्यजेत सुखम् ।

विद्या धन सभी धनों में श्रेष्ठ माना जाता है । विद्या रुपी धन को न भ्राता ही बंटा सकता है और न इसे चोर ही चुरा सकता है। इसलिए मेरे प्रिय विद्यार्थीयों आप तन, मन, धन से विद्या की प्राप्ति कर अपने आने वाले भविष्य को सुखमय बनाने का प्रयत्न करें ।

——

—:) ० (:—

भूगोल का वर्तमान स्वरूप

(शशिकला राय)

पृथ्वी तथा उसके पर्यावरण का अध्ययन करना ही भूगोल का लक्ष्य है। भूगोल जिसका अंग्रेजी पर्याय (जाग्रफी) है, दो यूनानी शब्दों से मिलकर बना है। जिया=पृथ्वी, ग्राफी=वर्णन करना अर्थात पृथ्वी के बारे में वर्णन करना। प्रो० फिर्मेन और रांप के अनुसार-'पृथ्वी और उस पर पाये जाने वाली सभी बातों का वर्णन करना, या उसके बारे में लिखना।'

यह परिभाषा उस समय की है जब भूगोल का अपना कोई अस्तित्व नहीं था। वह एक आश्रित विज्ञान विज्ञान था। स्ट्रैबों के अनुसार उसका तात्पर्य केवल पृथ्वी और जल पर निवास करने वाली विभिन्न वस्तुओं के वर्णन से था।

पर भूगोल का वैज्ञानिक स्वरुप जर्मन भूगोल वेत्ताओं के प्रयत्नों के फलस्वरुप सन् १७५० से १८५० के मध्य निश्चित हुआ। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 'इम्यूनल कान्त' और 'बूटे' आदि वैज्ञानिकों ने इसके सैद्धान्तिक दृष्टिकोण में उन्नति करके स्वतन्त्र विज्ञान का स्वरुप प्रदान किया इम्यूनल कान्त के अनुसार, "भूगोल का क्षेत्र पृथ्वी का सम्पूर्ण धरातल ही है। भूगोल की प्रगति का सर्वोत्तम समय उन्नीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध था। क्योंकि इसी समय वर्तमान भूगोल के पिता एवम् जर्मन वैज्ञानिक एलेक्जेण्डर वांन हम्बोल्ट" और कार्ल-रिटर ने बर्लिन में एक साथ ३० साल तक काम करके भूगोल विज्ञान में कई मौलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किये। इन्होंने अपने दृष्टिकोण के अनुरुप अपने पूर्ववर्ती भूगोल-वेत्ताओं के आदर्शों का भी समावेश किया।

कार्लरिटर के अनुसार, भूगोल वह ज्ञान है, जिससे पृथ्वी के धरातल के स्वरूपों, उसकी घटनाओं, और सम्बन्धों का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि समस्त पृथ्वी एक स्वतन्त्र इकाई के रुप में प्रकट हो तथा सम्पूर्ण पृथ्वी का सम्बन्ध मानव तथा जगत पिता से दिखाया गया हो।

उसके अनुसार भूगोल का उद्देश्य सम्पूर्ण पृथ्वी इसकी प्राकृतिक एवं बोई गयी वस्तुओं इसकी भौतिक एवम् मानवीय दशाओं का एक सजीव चित्र प्रस्तुत करना है, जिससे मानव और प्रकृति के बीच के सम्बन्ध स्वतः ही स्पष्ट हो सके। इसका उद्देश्य मनुष्य को कार्य के दृश्यों से परिचित कराना है, और इसीलिये यह इस दृश्य का ऐसा वर्णन है जिसका सम्बन्ध मानव से है।

हम्टबोल्ट के अनुसार भूगोल प्राकृतिक दृश्यों से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्बन्धित है। ये ही दृश्य किसी क्षेत्र विशेष में एक दूसरे से सम्बन्धित होकर उपस्थित होते हैं।

हम्बोल्ट रोमन विचारों से प्रभावित होकर सबका सम्बन्ध क्षेत्र विशेष से मानकर चलता है। लेकिन रिटर की विचार धारा वस्तु विशेष के अध्ययन से विशेष मेल खाती दिखाई देती है। परिणाम स्वरूप फ्रांस के इलीसी-रेकलर्स आदि इनकी विचार धाराओं से प्रभावित होकर पृथ्वी के प्रत्येक क्षेत्र में प्रकृति और सभ्यता के घनिष्ट सम्बन्ध का अनुभव किया। साथ ही साथ जर्मनी में भी भौगोलिक विचार धाराओं में परिवर्तन हुआ है। इनकी स्वस्थ विचार धारा यह थी कि, भूगोल को भी अन्य विज्ञानों की सीमा तक पहुंचा दिया जाय।

रेटवुल ने रिटर की विचार धारा से प्रभावित होकर अपकी ऐन्थरोपोज्योग्राफी में भूगोल की प्राणियों की परिस्थति और जीवन के विज्ञान का अध्ययन बतलाया है। वह मानवीय परिस्थतयों को अमानवीय वस्तुओं का प्रभाव मानने वालों से भिन्न था। फलस्वरूप गरलैण्ड, वेगनर, हम्बोष्ट आदि भी भूगोल को एक शुद्ध विज्ञान प्रकृति मानने लगे। इस प्रकार भूगोल ने अपने विधा-घर जर्मनी में ही जन्म लिया और यहीं पर इसे वर्तमान विज्ञान का स्वरूप भी दिया गया अन्य देश केवल इसकी प्रगति से प्रभावित हुए रेटजेल के विचारों से प्रभावित होकर विडाल डी- कलाश ने भी लिखा है कि, भूगोल स्थानों का विज्ञान है, न कि मनुष्यों का। यह इतिहास की घटनाओं में वही तक रुचि लेता हैं,, जहां तक कि इसका सम्बन्ध उन देशों से होता है। जहाँ ये घटनाये घटतीं हैं। उनके गुण और सम्भावनाये जिनके बिना अमूर्त रह जाते हैं?

उपरोक्त विवेचनों के आधार पर भूगोल को विश्व का क्षेत्र सम्बन्धी विवेचनात्मक अध्ययन कहा जा सकता है। १९३० में फ्रोबेल ने भूगोल विज्ञान को प्रकृति विज्ञान के समानान्तर बनाने का प्रयत्न किया उसके अनुसार भूगोल के दो दृष्टिकोण थे। जिसमें से प्रथम दृष्टिकोण प्रकृत विज्ञान की तरह पृथ्वी को स्थिति का अध्यन कराता था तथा दूसरा दृष्टिकोण व्यावहारिक भूगोल था,।

इसके बाद गारलैण्ड बताया कि भू-भौतिकी पशुओं और वृक्षों के भूगोल तथा समाजशास्त्र के भिन्न तरीके पर तत्वहीन पृथ्वी का भूगोल है। तत्कालीन भूगोल वेत्ता इससे सहमत नहीं थे। उन्होंने बताया कि भूगोल का स्वरूप प्रकृति के और साम जिकविज्ञान के द्वारा अध्ययन किए जाने वाले कृत्रिम रूप से विभाजीत किये गये तत्त्वों के जोड़ने वाला है।

केरजेल के सिद्धान्त को मानने वाली कुमारी सेम्पल ने भूगोल का क्षेश केवल एक मात्र प्राकृतिक परिस्थितयों का अध्यन ही माना है। आजयही मत भी अनेक देशों मेंविशेषतः भारत में अपना प्रभाव जमाये हुए हैं। इस एकात्मक प्रवृत्ति ने वृक्षों और पशुओं के भौगोलिक वितरण की कल्पना को दूर रखकर भूगोल के लक्ष्य को दिशाहीन बना दिया है। इसी सिद्धान्त के समर्थक हार्टगटन और टेलर' ने भी भूगोल को मनुष्य पर परिस्थिति का ही प्रभाव बतलाया है। बाद में सन् १९०७ में, सन् १९२२ में बारोज में उक्त धारणा के दोष प्रदर्शित किये। फलस्वरूप अब यह मानव विज्ञान या प्राकृतिक परिस्थिति-जन्यता या केवल सम्बन्धों के समूह के रूप में रह कर देश का चित्र बनाने के लिए देश का वर्णन करने वाले विज्ञान के समीप ले लिया गया।

सुसंगठित अध्ययन भूगोल को विज्ञान की संज्ञा देना अत्युक्ति नहीं है। क्यों कि यह हमें उन वास्तविकताओं का अध्ययन कराता है, जो प्राकृतिक या सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र की वस्तु है। अन्तर केवल इतना ही है कि जहां प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान द्वारा उस वास्तविकता का एकाँगी निरीक्षण कर मानवीय और अमानवीय तत्वों का अध्ययन उसके विभाग और प्रकारों की जानकारी की जाती है, वहां भूगोल विज्ञान के द्वारा पृथ्वी के धरातल के आधार पर उस वास्तविकता का निरीक्षण भी किया जा सकता है।

हटशोर्न के अनुसार, विभिन्न व्यवस्थित विज्ञान जो पृथ्वी के धरातल पर पाये जाने वाले विभिन्न स्वरुपों का अध्ययन कराते हैं, वे किसी सीमा तक व्यवस्थित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूगोल के तत्सम्बन्धित शाखाओं के साथ मिल गये हैं। इन सब नियमित भूगोल की शाखाओं का एकीकरण जिस किरण बिन्दु के रूप में पृथ्वी के धरातल के एक विशेष सीमा में होता है उसे हम प्रादेशिक भूगोल कहते हैं। भूगोल की यह धारणा हेटनर से प्राप्त हुई।

उपरोक्त विवेचनों से स्पष्ट है कि भूगोल के प्राचीन और नवीन दृष्टिकोण में कितना अन्तर है। प्राचीन भूगोल का वर्णात्मक, विषय सम्बन्धी और स्थानीय भूगोल का परिचय कराता है। पर नवीन भूगोल प्रामाणिक तथा व्याख्यात्मक भूगोल को प्रधानता देता है जिसके लिए किसी देश की स्थिति, क्षेत्रफल भूमि के स्वरूप तथा जलवायु आदि का वर्णन जान लेना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि मानव के भौतिक वातावरण का जीवन और उसके क्रियाकलाप तथा सभ्यता पर जो प्रभाव पड़ता है,उसे भी दृष्टिकोण में रखा जाता है आधुनिक भूगोल के अन्तर्गत मनुष्य के आचार-विचार रहन-सहन उसके क्रियाकलाप सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक,औद्योगिक एवं व्यापारिक कार्यों के कारण और परिणाम का विस्तृत विवेचन किया जाता है।

इस कारण भूगोल वह विज्ञान है जो सभी क्रियाशील युक्तियों और उनके मुख्य भागों के स्थानीय सम्बन्धों के कारणों की खोज करता है।

सारांश यह है कि भूगोल एक जीता जागता विषय है, जो सब विज्ञानों का मूल है। इसका क्षेत्र व्यापक है जिस कारण इसे विज्ञानों की जननी भी कहा जाता है।

——

-: (०) :-

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के उद्गार

(सकलनकर्त्ता—ब्रह्मदेव राम, बी० ए० भाग २)

आजाद हिन्द फौज की शपथ पर-जून, १९४२

वीर सैनिकों ! आज आप ने एक शपथ ली है कि हम राष्ट्रीय तिरंगे के नीचे अपने जीवन के अन्तिम श्वांस तक दुश्मन से लड़ते रहेंगे। आज से आप स्वाधीन भारत की आजाद हिन्द फौज के सिपाही हो आप ने ४० करोड़ भारतीयों की मुक्ति की जिम्मेदारी उठाना स्वीकार किया है। आज से आप का तन, मन, धन सब भारतीय राष्ट्र का है।

मित्रों, आप को आजाद हिन्द फौज के हरावल के सैनिक होने का समय प्राप्त हुआ है। स्वाधीन भारत के इतिहास में आप का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। इस पवित्र युद्ध में जो भी सैनिक शहीद होगा उसका स्वाधीन भारत में एक स्मारक होगा। आने वाली पीढ़िया इन स्मारकों पर फूल चढ़ायेंगी। आप सौभाग्यशाली हैं। कि आप को अपनी मातृभूमि की सेवा करने का यह बहुमूल्य अवसर प्राप्त हुआ है।

आज हम राष्ट्रीय झंडे के नीचे स्वाधीनता का व्रत ले रहे हैं। एक समय आयेगा जब कि आप लाल किले में इस झंडे को सलामी देंगे। लेकिन यह याद रखिये कि हमें स्वाधीनता की कीमत चुकानी होगी। स्वाधीनता भीख मांग कर कभी भी प्राप्त नहीं की जा सकती। उसे शक्ति द्वारा प्राप्त करना होगा। इसकी कीमत रक्त है। हम किसी विदेशी राष्ट्र से स्वाधीनता की भीख नहीं मांगेंगे। हम इसकी कीमत चुका कर स्वाधीनता प्राप्त करेंगे। इस बात की परवाह नहीं है कि हमें इसके लिए कितनी कीमत चुकानी होगी। मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि जब हम मिलकर भारत की ओर बढ़ेंगे तो मैं स्वयं आप का नेतृत्व करूंगा। हम यहां जो उत्सव मना रहे हैं उसका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाचार भारत पहुंच गया है। इससे भारत के राष्ट्रभक्तों को प्रोत्साहन मिलेगा। जो अंग्रेजों के विरुद्ध निहत्थे होकर भी लड़ रहे हैं। आज मैं आपको बधाई देता हूं क्यों कि आपको एक ऐसी सेना का सैनिक होने का सम्मान प्राप्त हुआ हैं जो कि दुश्मन से स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये दृढ़ संकल्प लिए हैं। इन्कलाब — जिन्दाबाद।

दिल्ली चलो - ५ जुलाई, १९४३

सन् १९२९ में जब जर्मन ने फ्रांस पर आक्रमण करके अपना युद्ध अभियान शुरु किया, तो सबकी जबान पर एक ही नारा था, "पेरिस चलो, "पेरिस चलो। दिसम्बर १९४१ में जापानी सैनिकों ने अपना युद्ध अभियान जब शुरु किया तो उनका नारा था, "सिंगापुर चलो, "सिंगापुर चलो" मेरे साथियों, सिपाहियों ! आप का यह नारा होगा, "दिल्ली चलो," "दिल्ली चलो"। मैं यह नहीं कह सकता कि विजय का दिन देखने के लिए हममें से कितने जीवीत रहेंगे। किन्तु मैं इतना जरुर जानता हूं कि अन्त में विजय हमारी ही होगी और हमारा कार्य तब तक समाप्त नहीं होगा जब तक कि अपनी विजय परेड दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले के प्रांगण में न कर लेगे

अमीरों से अपील - २६ अक्टूबर, १९४३

जरा उन्हे भी देखिये जो आजाद हिन्द फौज में भर्ती हो गये हैं और जो अब सैनिक प्रशिक्षण ले रहे हैं। वे यह नहीं जानते कि उनमें से कितने भारत को स्वाधीन देखने को जीवित रहेंगे। वे तो मात्र अपने खून कीअन्तिम बूंद बहाने की भावना से तैयार हो रहे हैं। उनका प्रण है कि स्वाधीन भारत में पहुंचेगे अथवा मार्ग में शहीद हो जायेंगे।

आज जब आजाद हिन्द फौज के जवान विजय प्राप्ति के लिए आगे बढ़ने और स्वाधीनता की राह मेंअपने रक्त की अन्तिम बूंद बहाने के लिए उद्यत है, उस समय धनिक लोग मुझसे यह पूछ रहे हैं कि क्या वह अपनी सम्पत्ति का १० अथवा ५ प्रतिशत युद्ध में दें। प्रतिशत की बात करने वाले इन लोगों से मैं पूछता कि क्या हम अपने सिपाहियों से कह सकते हैं कि वे आजादी के लिए अपना १० या ५ प्रतिशत रक्त बहाये और बाकी बचा लें।

गरीब घर के लोग अपनी ईच्छा से आगे आ रहे हैं और उनमें अपना सर्वस्व निछावर कर देने की उमंग है। चौकीदार, धोबी, नाई छोटे-छोटे दुकानदार और गरीब ग्वाले जैसे गरीब तबके भारतीय तथा उनके बच्चे सर्वस्व देने के लिए सामने आये हैं। भारतवासी आत्म-त्याग को बड़ा अच्छा मानते हैं। हिन्दुओं में सन्यास और मुसलमानों में फकीरी बाना अपनाने की परम्परा है। क्या ४० करोड़ लोगों की स्वाधीनता से कोई बड़ा ऊचा और पवित्र ध्येय हो सकता है ?

मुझे खून दो, मै आपको आजादी दूंगा-४जुलाई,१९४४

आज तो हमारी केवल एक ही इच्छा होनी चाहिए और वह मरने की इच्छा है, ताकि भारत जीवित रह सके। हमारी इच्छा होनी चाहिए कि हम एक शहीद की मृत्यु पायें, ताकि स्वाधीनता का मार्ग शहीदों के रक्त से सींचा जा सके।

मित्रों, स्वाधीनता संग्राम के मेरे साथियों ! आज मैं सबसे बढ़ कर आप से एक चीज माँगता हूं। मैं आप से खून मांगता हूं। शत्रु ने जो खून बहाया है उसका बदला खून से ही लिया जा सकता है। खून से ही स्वाधीनता की कीमत चुकाई जा सकती है। मुझे अपना खून दीजिये, मैं आप को आजदी दूंगा।

मुझे अपना खून दीजिये, मैं आपको आजादी दूंगा

——

—:) ० (:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन का श्रृंगार न हो पाया

[नगेन्द्र प्रताप राय, बी० ए० प्रथम वर्ष]

तन को आभूषण मिले बहुत
मन का श्रृंगार न हो पाया
प्राणों का विनियम हुआ मगर
अनुबंधित प्यार न हो पाया
दस्तक दे मधुऋतु लौट गयी
आहट तक मुझको मिली नहीं
मेरे आंगन की सोन जुही
इसलिए अभी तक खिली नहीं
मनचाहे रेखा-चित्रों में
फूलों ने अपने रंग भरे
रह गयी कला चुप चाप खड़ी
सपना साकार न हो पाया
सहयात्री बनना सरल नहीं
कुछ साथ चले, कुछ पिछड़ गये
कहने को मीत अनेक मिले
कुछ बने रहे, कुछ बिछड़ गये
गलियां पड़ाव तक ले आयी
हर राजमार्ग ने भटकाया
वन फूल उपेक्षित रहे सदा
उनका सत्कार न हो पाया
रस-सिक्त मधुर संबंधों के
घन दिन–दिन होते गये घने
आनंद-घनों की वर्षा से
हम पूरक से पर्याय बने
तट के ओठों को चूम लहर
हो गयी विलय मझधारों में
मनचली लहरियों पर अब तक
तट का अधिकार न हो पाया

——

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"स्वर्ग - नरक"

(प्रमोद कुमार राय, बी० ए० द्वितीय वर्ष)

राजन और रमन दोनों ने एक ही साथ बी० ए० पास की दोनों प्रथम कक्षा से ही एक साथ पढ़ते आ रहे थे। राजन ग़रीब घर का होने के बावजूद भी पढ़ाई में कुशल था। हर वर्ष की भांति अब बी० ए० भी उसने अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण की थी। रमन एक सेठ का बेटा होकर भी पढ़ाई में निल था। हेडमास्टर पर अपनी दौलत का रोब डालकर हर वर्ष पास होता। बी० ए० करने के पश्चात राजन को अब नौकरी की तलाश थी। उसने कई जगह नौकरी हेतु फार्म भर रखे थे।

राजन, जिसके पास लाखों रूपये की जायदाद थी अपने पिता के व्यापार में हाथ बटाने लगा।

नौकरी न मिलने से राजन के धैर्य का बांध टूट गया। गरीबी से तंग आकर एक दिन उसने चलती गाड़ी के आगे छलांग लगा दी। जब तक वह गाड़ी के आगे कुचला जाता, कुछ हाथों ने उसे पकड़ लिया उनी पकड़ने वालों ने जब आत्महत्या का कारण पूछा तो राजन ने अक्षरशः अपनी गरीबी की गाथा कह सुनाई।

उन पकड़ने वालों में एक मोटे आदमी ने राजन को बताया, "यह मेरे सग जितने आदमी देख रहे हो न, सब शिक्षित है। कोई एम० ए० है कोई बी० ए०। यह सभी भी तुम्हारी तरह गरीबो से, जिन्दगी की नफरत भरी दृष्टि से उब चुके थे लेकिन इनसे पूछो नौजवान की जिन्दगी क्या हैं ? आज जिन्दगी इनके जीने का वर-दान है तो संसार सुनहरा है। अगर तुम भी अपनी जिन्दगी को खुशियों से भरा देखना चाहते हो तो हमारे शिक्षित 'डाकू गिरोह' में शामिल हो जाओ।" अमीरों को लूटो, ग़रीबों को बसाओ।"

राजन न ना कर सका। वह राजन से राजा डाकू बन गया। अमीरों का दुश्मन, गरीबों के हमदर्द राजा ने चंद दिनों में ही वह कारनामें दिखाये कि सरदार भी उससे प्रभावित हुए बिन न रह सका।

राजा देश द्रोही, किसी मजबूर से अनुचित लाभ उठाने, अन्यायियों को पहले वार्निग देता फिर देखते ही देखते मांस ले उड़ता। आज उसने नगर के प्रख्यात रमन दास को वार्निग दो। सेठ दास की कोठी में चारों ओर पुलिस का पहरा था। मगर राजा के लिए यह पुलिस कुछ न थी। वह अपनी कुशलता से सेठ रमनदास के कमरे में जा पहुंचा। वहीं उसकी मुठभेड़ रमनदास से हो गयी। राजा के रिवाल्वर से गोली निकली और सीधे सेठ रमन के सीने में उतर गयी। उधर पुलिस की एक गोली से राजा की मृत्यु हो गयी। चूंकि उन दोनों की मृत्यु का बहाना तो मात्र गोली लगने से था मगर असलियत यह थी कि उन दोनों का इस धरती पर समय पूर्ण हो चुका था। यमदूत उनके प्राण निकाल यमनगरी ले गये थे जहां उनके धर्म कर्म के फलों का भुगतान होना था। धर्मराज ने उन दोनों के खातों को देखा तो बोले, सेठ रमन के लिए नरक के द्वार खुले हैं और राजा के लिए स्वर्ग की नगर स्वागत करती है।

"दुहाई है ..... दुहाई है ..... !!

धर्मराज के न्याय में खोट है। मैं प्रतिदिन भगवान की पूजा करने वाला, दान पुण्य में प्रसिद्ध, एक सेठ जिसने आज तक एक चींटी को नहीं मारा, मेरे लिए नरक। राजा जिसने कभी भगवान का नाम तक नहीं लिया उसके लिए स्वर्ग। यह क्या न्याय है ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्मराज धीमी मुस्कराहट से बोले, 'यही तो तुम चूक गये सेठ। यह मैं मानता हूं कि तुमने भगवान की पूजा की है। स्कूलों, अस्पतालों के लिए करोड़ों रू० दान दिये हैं। यह सब तुमने अपनी प्रतिष्ठा के लिए किया है।

याद है तुम्हारी घरेलू नौकरानी का बच्चा बिना दवाईयों के तड़प-तड़प कर मर गया था। नौकरानी तुमसे दान मांगने तो नहीं आयी थी। कुछ उधार मांगने ही आयी थी, और तुमने किस कदर दुत्कार दिया था। तुम मानवता का पाठ भूल कर दानवता की ओर अग्रसर हो गये थे। बेचारी का बेटा मर गया जिसका पाप तुम्हारे सिर पर है। सेठ रमन लड़-खड़ा गया। "इधर देखो, यह डाकू के रूप में भी एक महात्मा है। धनी, व्यभिचारियों, पापियों को लूटा है तो गरीबों, महात्माओं की जिन्दगी को सवांरा है। जहां इसके पाप है वहाँ पुण्य भी है। खाता बराबर है। इतना कहने के साथ ही धर्मराज ने यमदूतों को आज्ञा दी कि रमन को नरक में भेज दिया जाये। और राजन को स्वर्ग में।

जब यमदूत पकड़ कर ले जा रहे थे तो वह सोच रहा था, "मानवता के समक्ष लाखों दान पुण्य तो कुछ भी नहीं। फिर पैसे ने मुझे 'मानव से दानव' बना दिया था। दौलत के घमंड में मुझमें मद, लोभ, क्रोध, मोह, अहंकार जैसे तत्व विद्यमान हो गये। काश! कि मैं भी गरीब होता और मानवता की राह पर चल कर अच्छे कार्य करता तो सम्मतः आज मैं भी स्वर्ग का अधिकारी होता।

"किन्तु अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

—:)०(:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सच्चा समाजवाद लाना है !

[नागेन्द्र राय, पुस्तकालयाध्यक्ष]

जून की तमतमाती धूप
नंगे बदन-सिर्फ भगवा लपेटे
जर्जर ठठरी वाला-रिक्शा वाला
जिसकी जवानी में बुढ़ापे का आभास
दरिद्रता की साक्षात मूर्ति-सा
पसीने से लथपथ
कुत्ते की तरह जीभ निकाले—
हाँफते हुए
रिक्शा खींचते चला जा रहा था
गुनगुताते—अपने भाग्य को कोसते !
अपनी डबडबाई आंखों से
देख रहा था—कुछ सोच रहा था—
आज तीसरा दिन व्यतीत हो चला
चूल्हे से धुंआं तक न निकला होगा
बच्चे रोते कलपते छटपटा रहे होंगे
भूखों मर रहे होंगे
गरीबन की मां बाहरी दरवाजे के चौखटे पर
मेरी प्रतीक्षा में आस लगाये बैठी होगी
बच्चों पर हाथ फेरती
प्रेम बरसाती
आंचल से आंसू पोछती
सान्त्वना देती होगी-
बेटे कुछ देर और सब्र करो
आज तीसरा दिन है
बाबा जरूर आयेंगे
ढेरों पैसा लायेंगे
भर पेट वाटी मिलेगी
नमक-मिरचा से क्षुधा की प्यास बुझा लेना !
तभी अग्नि बरसाती तीव्र हवा के झोकों से
रिक्शा बीच सड़क खड़ा हो गया
उसने पूरी ताकत से पैडल दबाया
फिर भी वह अड़ियल भैंसे की तरह अड़ा रहा
अपनी जगह पर खड़ा रहा
वह हाथों से ठेलते हुए धीरे-धीरे
पैदल ही चल पड़ा !
सवार का पारा गरम हो गया
खून खौलने लगा
अन्त में गरज पड़ा-
अबे कम्बख्त
बहुत अर्जेन्ट काम है
मुझे राजधानी जाना है
गरीबों के हितार्थ कानून बनाना है
सच्चा समाजवाद लाना है
पैदल कब तक पहुंचाओगे ?
कहीं गाड़ी छूट न जाये ?
वह रिक्शा वाला
अपने अन्नदाता को—
भाग्य विधाता को
खुश रखने के लिये
अपने पेट को पीठ में सटाये
पूरी शक्ति से दौड़ पड़ा
सिर्फ पाँच मिनट में पहुंचा दिया !
वह भलमानुस उसकी हथेली पर
सिर्फ पचीस पैसे रख भाग चला
कुछ और अधिक पाने की आशा से
उसने हाथ फैलाये कुछ दूर तक पीछा किया
अन्त में निराश हो खड़ा हो गया
हांफते
करुण-दृष्टि से
उसे अपलक देखता रहा
आंसू बहाता रहा ।

——

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आक्रोश !

—सुरेन्द्र नाथ राय, बी० ए० भाग १

भारत देश महापुरुषों की जननी है । यह वह देश है जहां पर रामकृष्ण, बुद्ध और विवेकानन्द जैसे महा-पुरुष पैदा हुए हैं । यह वह देश है जहाँ आजाद, सुभाष और भगत सिंह जैसे देशभक्तों ने जन्म लिया। यह वह देश है जो कभी अपने अतुलनीय, धनराशि के लिए सोने की चिड़िया कहलाता था । और आज ? आज वही देश है जहां पर बेकारी गरीबी भ्रष्टाचार तथा अन्याय की ज्वाला धू-धू कर जल रही है । जहां पर रक्षक ही भक्षक बनते जा रहे हैं ।

राष्ट्र का भावी कर्णधार कहलाने वाला व्यक्ति भावी राष्ट्रनायक आज करुण क्रन्दनकरताहुआ समस्याओं के महासागरों में विलीन हो गया है। शोषण महगाई तथा अन्याय की हा हा करती हुई भयानक तूफानमें समस्त राष्ट्र का यौवन कुंठित हो गया हैं। बेकारी के जंजीर में जकड़ा युवा वर्ग क्या कभी मुक्त हो सकेगा ? जब एक एक रिक्त स्थानों के लिए हजारों युवा व्यक्ति प्यासे मृग की तरह दौड़ते हैं उस समय समस्त राष्ट्र की तरुणाई द्रवित हो जाती है ।

ये क्रियाएं आज की नहीं बल्कि अतीत से चली आ रही है । जिस समय देश की आजादी अंग्रेजों के कैदखाने में सिसक रही थी । देश के राष्ट्रपिता कहलाने वाले गांधी जी ने देश की तरुणाई का आह्वान किया था, गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के आवाहन पर राष्ट्र के समस्त युवा व्यक्तियों ने आजादी के बलि वेदी पर स्वयं को समर्पित कर दिया चाहे वह छात्र हो या सरकारी नौकर । परिणामतः देश आजाद हुआ विजय का सेहरा बापू के सिर पर बांधा गया । ठीक उसी प्रकार आजादी के पश्चात कांग्रेस के नेता तानाशाही शासन ने जब श्री जयप्रकाश नारायण जी तथा अन्य नेतागण त्रस्त हो चुके थे, तो उस समय उन्होंने युग परिवर्तन के लिए छात्र शक्ति राष्ट्र शक्ति का नारा बुलन्द किया । परि-णामतः युग परिवर्तन तो नहीं किन्तु सत्ता परिवर्तन अवश्य हुआ । कांग्रेस के स्थान पर शासन सत्ता में जनता पार्टी का शासन हुआ । नेताओं के गले में लम्बे लम्बे फूलों के हार पड़े । लोगों ने खूब जम कर जश्न मनाया । किन्तु छात्रों को क्या मिला ? यही न, गरीबी, महगाई भ्रष्टा-चार, अत्याचार, शोषण तथा अन्याय की जलती बाजार जिससे व्यथित होकर युवा छात्र, जो एक आदर्श नागरिक बनने का स्वप्न संजोए था आज समाज का अवांछनीय कहलाने लगा है ।

मेरे राष्ट्र के युवा साथियो ! राष्ट्र के इन श्वेत वस्त्रधारी नेताओं के छलावे से दूर रहो । इनके विषय में महाकवि किनकर जी ने कहा है —

आनन सरल वचन मधुमय है ।
तन पर शुभ्र वसन है ।
बचो युधिष्ठिर इस नागिन का ।
विष से भरा दशन है ।।

वर्तमान राष्ट्र नायकों से युवा छात्र शक्ति की अपील है कि यदि देश में सुख, शान्ति देखना चाहते हैं तो युवा छात्रों जी समस्या को समझने का प्रयत्न करें । भावी राष्ट्र नायकों को समझने का प्रयास करें ।

—:)०(:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती
का
जीवन दर्शन - किसान समस्या

उद्घाटन-श्री सुबोधनाथ झा, जिलाधिकारी-गाजीपुर
सभापति-दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती

स्वामी जी की पुण्य स्मृति में स्थापित इस महा-विद्यालय के छात्रों एवं जनपद के लोगों को स्वामी जी के प्रमुख कार्य किसान आन्दोलन से अवगत कराने तथा किसानों के शोषण के वर्तमान सन्दर्भ में स्वामी जी की प्रासंगिकता पर विचार विमर्श हेतु स्वामी जी के शिष्यों, शुभचिन्तकों एवं विद्वानों को महा विद्यालय में आयोजित विचार गोष्ठी 'स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जीवनदर्शन किसान समस्या' में आमन्त्रित किया गया।

१४ मार्च को अपरान्ह दो बजे से आयोजित विचार गोष्ठी के उदघाटन भाषण में विद्वान जिलाधिकारी श्री सुबोधनाथ झा ने स्वामी जी के आन्दोलन के बाद किसानों के समक्ष उत्पन्न नवीन समस्याओं पर प्रकाश डाला, आपने कहा कि वैज्ञानिक खेती आज की पहली आवश्यकता है क्योंकि जनसंख्या का दवाव इतना अधिक बढ़ रहा है कि उत्पादन बढ़ाये बिना किसान और देश का भला नहीं हो सकता। बिजली की कमी रहती है तथा दफ्तरों में ग़लत पैसा लेने के लिए किसानों को परेशान किया जाता है। इन बातों की ओर ध्यान दिया जाना अनिवार्य है। इसके लिए किसानों में भी सहयोग एवं संगठन की भावना विकसित की जानी चाहिये। मेंहनत के साथ-साथ किसानों को भी बदली परिस्थिति में बनियों की तरह अपने आय-व्यय का लेखा जोखा रखना होगा।

गोष्ठी के संयोजक डा० मान्धाता राय ने कहा कि किसान संगठन और उनके हित के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष स्वामी जी के जीवन दर्शन के व्यावहारिक रूप का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। सर्वथा असंगठित, हिंसात्मक एवं आत्मविश्वास की कमी के कारण बिखरे किसान आन्दोलन को स्वामी जी ने संगठित किया और किसान सभा को सुव्यवस्थित, सुसंगठित और शालीन बनाया। उन्होंने किसानों के आर्थिक शोषण को बन्द कराया और कहा कि बिना आर्थिक स्वतन्त्रता के स्वराज्य धोखे की टट्टी है। जमींदारी उन्मूलन उनके अभियान की बड़ी देन है। आवश्यकता है आज भी किसानों के संगठित होकर एकता बनाये रखने की। स्वामी जी के जीवन में अध्यात्म और भौतिकता तथा हृदय और बुद्धि का पूर्ण समन्वय था। वे एक अनासक्त कर्मयोगी थे। उनका विचार था कि सरल स्वभाव, निष्कपट मन से शुद्ध और प्रेम पूर्वक जो कर्म किया जाता है वहीं सभी पूजा है।

बलिया से आये विद्वान डा० कुलदीप नारायण राय 'झड़प' ने अपने लिखित निबन्ध में स्वामी जी की पुस्तक 'मेरा जीवन संघर्ष' से व्यापक अंशों को उद्धत कर बताया कि स्वामी जी किसान आन्दोलन के जनक थे। उसके संचालन, संगठन एवं मजदूर किसानों के हित में उन्होंने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया।

भूतपूर्व विधायक एवं स्वामी जी के कर्मस्थल सिमरी (बिहार) के पाण्डेय सूर्यनारायण शर्मा ने कहा कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी ने सारे पाण्डित्य और विद्वता को समाज के लिए आहूत कर दिया। वे एक जलती मशाल थे। सरदार पटेल ने १९२९ में अपनी हर सभा में कहा कि एक स्वामी जी ही हैं जो किसानों की नींद सोते हैं एवं उनके लिए जीते हैं। किसान किसी एक वर्ग या जाति में न होकर हर वर्ग-जाति में है। आज संगठन न होने में ईमान की कमी है। भृतहरि ने मन, वाणी और कर्म की एकता को ईमान कहा है। स्वामी जी ने किसानों को संगठित होकर संघर्ष करने का मन्त्र दिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कहा कि स्वामी जी के नाम पर कुछ रचनात्मक कार्य होना चाहिये। देश और किसान के उद्धार करने पर ही सबका उद्धार हो सकता है। जनपद के वयोवृद्ध पत्रकार एवं साहित्य सेवी श्री कृष्ण राय 'हृदयेश' ने कहाकि स्वामी जी ने लोक-मानव कल्याण के लिए साधना के ऐकान्तिक स्वरूप को छोड़ा। भारत गांव में बसा है और किसान गांव से जुड़ा है। अतः किसान सेवा ही सच्ची सेवा है जिसे केवल स्वामी जी ने किया। किन्तु आज सभी लोग गांव छोड़ रहे है।

प्रसिद्ध लेखक डा० विवेकी राय का विचार था कि उससमय के आन्दोलन को आधार बनाकर आज के किसान आन्दोलन नहीं कर सकते क्योंकि आज की समस्या और उस समय की समस्या भिन्न है। आज किसान गरीब नहीं है। आज सरकार की सारी योजनाएं किसान की गरीबी दूर करने के लिए की जा रही है जैसे-बिजली, बीज, खाद, सड़क, अस्पताल। असली समस्या भ्रष्टाचार और व्यवस्था की है। नेताओं की असफलता को किसान समस्या कैसे कहेंगे? आज स्वामी जी होते तो अपने रूप में व्यवस्था के भ्रष्टाचार पर प्रहार करते। आचार्य डा० कपिलदेव राय ने कहा कि नगर में मजदूर संगठित हैं जबकि आज भी किसान असंगठित हैं उन्हे भूमिधर, भूमिहीन, हिन्दू-मुसलमान रूप में लड़ाकर विभाजित किया जाता है। आज के किसानों की समस्या का कारण उनमें कायरता एवं कापुरूषता है। अपने लिए उन्हें स्वयं दीपक बनना होगा।

समापति पद से स्वामी जी के अनुयायी दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी ने कहा स्वामी जी एक आध्यात्मिक पुरुष थे। उन्होंने वेदान्त के निचोड़ स्व से पर की ओर होना को स्वीकार कर उसके निष्क्रिय रूप को असली रूप दिया। उन्होंने अद्वैत के असली ब्रह्म को किसानों में देखा। उनकी समस्या को अर्थनीति के हिसाब से रखा राजनीति से नहीं। आज कृषि विभाग का मन्त्री वही बनाया जाता है जिसे खेती की बिल्कुल जानकारी नहीं फिर कैसे भला होगा। किसानों का सही नेतृत्व गांव में जाकर हो सकता है जहां जाने के लिए कोई तैयार नहीं है जबतक चरित्र नहीं उठता किसी समस्या का समाधान नहीं होगा। चरित्र मन, कर्म एवं वाणी की एकता है और यही महात्मा का लक्षण है। स्वामी जी महाभारत से अनेक अंशों को उद्धत कर बताया कि खण्डित मन से किया गया कार्य सफल नहीं हो सकता। स्वामी जी ने भगवान को ढूंढ़ते-ढूंढते किसान भगवान को ढूंढ़ निकाला। साहित्य और संस्कृति मनुष्यों को जोड़ते हैं, जबकि राजनीति खण्डित करती है।

महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति के सचिव श्री कृष्ण चन्द्र राय ने गोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वानों एवं उपस्थित समुदाय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इस अवसर पर महा विद्यालय में स्वामी सहजानन्द सरस्वती शोध संस्थान के स्थापना की घोषणा की जिसके माध्यम से स्वामी जी अप्रकाशित हस्तलेखों एवं उनमे सम्बन्धित अन्य कृतियों को प्रकाश में लाने एवं शोधन के कार्य होगे।

दीक्षान्त समारोह

मुख्य अतिथि-पद्मभूषण डा० रामकुमार वर्मा

१५ मार्च १९८१ को आयोजित महाविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में हिन्दी जगत के सुपरिचित नाटककार कवि एवं शिक्षाविद् डा० रामकुमार वर्मा ने उपाधि धारण करने वाले स्नातकों एवं उपस्थित समुदाय को सम्बोधित किया। अपने दीक्षान्त भाषण में डा० वर्मा ने कहा विद्यार्थी राष्ट्र की मेरुदण्ड है। जबतक इस मेरुदन्ड में दृढ़ता नहीं आयेगी कोई भी राष्ट्र सुदृढ़ नही हो सकता। विदेशों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में शिक्षा संस्थाओं में ऐसे प्रावधान प्रस्तुत किये जाते हैं कि निराशा उनसे दूर रहे। हमारे देश की दुःखद स्थिति यह है कि विद्यार्थी भविष्य के प्रति निराश है। वह किं-कर्त्तव्यविमूढ़ होकर दिग्भ्रमित हैं। शिक्षा जीवन के लिए किस सीमा तक उपयोगी होगी इस पर अनेक प्रयोग हुए हैं, किन्तु उसमें हमने बराबर असफलता ही अनुभव किया है। डा० राधाकृष्णन, आचार्य नरेन्द्रदेव, कोठारी आदि कमीशन शिक्षा के नवीनीकरण के लिए संयोजित किये गये किन्तु सबकी संस्तुतियां रख दी गई और आज भी शिक्षा ५० वर्ष पूर्व की तरह दी जा रही है। इस शिक्षा के तीन दुष्परिणाम हैं — १-जीवन कृत्रिम और अस्वभाविक हो रहा है। २-यह देश की जलवायु और परिस्थिति के विपरीत है। ३-इससे मन में अहंकार हो जाता है और अपना काम स्वयं करने में अपमान महसूस करते हैं। फलतः जीवन में नौकरी के अभाव में हम कृषि एवं व्यवसाय में असफल होते हैं क्योंकि इनकी शिक्षा नहीं होती। इसके विपरीत विदेशों में शिक्षा के पूर्व मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है और रुचि एवं क्षमता के अनुसार शिक्षा दी जाती है। वहां की सरकारें सोचती है कि शिक्षित युवकों का बेकार रहना राष्ट्रीय सम्पत्ति का दुरुपयोग है। वहाँ युवकों में जीवन यापन की विधि का विकास किया जाता हैं ताकि युवक बेकारी के शिकार न हों। यही कारण है है कि वहां युवक हर दिशा में नई चीज देता है। जबकि यहां वही बबाई शिक्षा है जिससे बेकारी बढ़ रही है। इसके स्थान पर यदि वैज्ञानिक रुप से शिक्षित किया जाय तो न जीवन में निराशा होगी और न बेकारी उत्पन्न होगी। यह राष्ट्रीय सरकार का कर्त्तव्य है कि वह इस प्रकार की योजना का विनियोग करें।

दूसरी ओर मान लें कि सरकार ऐसा नहीं करती फिर विद्यार्थी क्या करे ? ऐसी स्थिति में विद्यार्थी स्वयं को अन्तर्मुखी करके सोचें कि उनकी प्रवृत्ति क्या है। वे आत्म विश्लेषण करें कि अन्तर्मन क्या होना चाहता है। उसी दिशा में प्रयत्नशील होने पर वह सफल होगा। प्रयत्न के साथ-साथ अनुशासित होना अनिवार्य है। विश्वविद्यालयों में अनुशासनहीनता बहुत बड़ी समस्या है। आपने गीता के अंश को उद्धृत किया कि सच्चा कर्म करने पर फल मिलता है। हम कर्त्तव्य नहीं करते फल चाहते हैं। समय की कीमत हम मुट्ठी की धूल की तरह आँकते हैं। विद्यार्थी अगर समय का मूल्य नहीं सोचता तो देश का भविष्य उज्ज्वल नहीं है। प्रवृत्ति, रुचि और पूरी साधना से निर्धारित दिशा में अग्रसर होना चाहिए तभी जीवन की सफलता सम्भव है। जीवन में निराशा विष है हमें इस विष से सदा दूर रहना चाहिए।

छात्र संघ उद्घाटन समारोह

[१९८१—८२]

मुख्य अतिथि-माननीय श्री सुरेन्द्र सिंह
उप मंत्री वन विभाग, उ० प्र० सरकार

महाविद्यालय के वर्ष १९८१—८२ के लिए निर्वाचित छात्र संघ का उद्घाटन ५ मार्च १९८२ को प्रदेश सरकार के उपमंत्री माननीय श्री सुरेन्द्र सिंह द्वारा सम्पन्न हुआ। स्वागत गान के अनन्तर छात्र संघ के अध्यक्ष श्री अवधेशराय ने माननीय मंत्रीजी सहित, उपस्थित अधिकारियों, पत्रकारों, कांग्रेस के नेताओं कार्यकर्त्ताओं, जनपद के नागरिकों एवं छात्रों का स्वागत किया। छात्रसंघ के महामंत्री श्री जीतनारायण राय ने मंत्री जी का ध्यान जनपद में कानून और वाणिज्यकी शिक्षाके अभाव की ओर खींचा और दोनों संकायों को शिक्षा की मान्यता दिलाने हेतु प्रयास करने को कहा। अपने उद्घाटन भाषण में मंत्री जी ने कहा कि स्वामी सहजानन्द जी की महान स्मृति में स्थापित इस महाविद्यालय में आकर मुझे अपनत्व एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। आपने कहा आज विश्वविद्यालयोंऔर महाविद्यालयोंमेंघुसे असामाजिकतत्त्वों को निकाल बाहर करने के लिए छात्रों का सक्रिय राजनीति में भाग लेना देश हित में अनिवार्य हो गया है क्योंकि ये तत्व प्राचार्य प्रबन्ध तंत्र और कुलपति से अभेद्र व्यवहार करके तनाव पैदा करते हैं और छात्र संघ को बदनाम करते हैं। जब कि छात्र संघ को महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के प्रशासन के हर कार्य का विरोध न कर सहयोग करना चाहिए। छात्र संघों पर लगे प्रतिबन्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को हटाकर इसी उद्देश्य से कांग्रेस शासन ने उन्हें मान्यता दिया ताकि छात्रों को समस्याओं का समाधान किया जा सके।

इस महाविद्यालय का प्रशासन और छात्र संघ मिलकर समस्या का समाधान कर रहा है यह बहुत शुभ है महाविद्यालयके प्रभारी प्राचार्य डा०मान्धाता राय ने अपने धन्यवाद में मंत्रीजी से इस शिक्षण संस्थामें विधिसंकाय की मान्यतादिलाने हेतु अपने स्तरसे प्रयास करनेको कहा मंत्री जी ने मच पर इसके लिए अपने स्तर पर पूर्ण प्रयास करने का आश्वासन दिया।

राष्ट्रीय सेवा योजना (१९८१-८२)

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की ईकाई में इस वर्ष १०० छात्रों को सम्मिलित किया गया था। कार्यक्रम संयोजक श्री अजित बहादुर सिंह के प्रयास से इस वर्ष का विशेष शिविर महाविद्यालय प्रांगण में ही निदेशक की अनुमति से आयोजित किया गया था। विशेष शिविर १२ मार्च से आरंभ हुआ जिसका उद्घाटन महाविद्यालय के संस्थापक श्री केशव प्रसाद शर्मा ने किया शिविर में ५० छात्रों ने भाग लिया। छात्रों ने महा-विद्यालय प्राँगण में ४०० मीटर सड़क का निर्माण किया तथा ६०'×६०'×३' खण्ड हर के मलवे की सफाई किया इसका समापन २१ मार्च को जिलाधिकारी श्री राधे-श्याम ने किया। स्वयं सेवकों को अपनी अपनी शुभ कामना देने के साथ साथ मुख्य अतिथि ने राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य एवं महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा इस योजना का उद्देश्य स्वयं सेवकों से केवल शारीरीक काम कराना होकर उनमें समाज सेवा की भावना जगाना है ताकि वे यहां से जाने के बाद अपने गांव के रचनात्मक कार्यों में लगे और उपेक्षित एवं पिछड़े लोगों की सेवा कर सकें।

खेल के मैदान से

महाविद्यालय में छात्रों को वालीबाल, फुटवाल, हाकी क्रिकेट और बैडमिन्टन खेलने की सुविधा दी जाती है। इसके साथ ही गोला, हैमर, डिस्कस, जैवलिन आदि की भी व्यवस्था है प्रत्येकवर्ष महाविद्यालयका वार्षिक खेल कूद आयोजित होता है। महाविद्यालय की ओर से स्वामी सहजानन्द सरस्वती हस्तकन्दुक प्रतियोगिता का भी आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। खेलकूद में वर्ष १९८०-८१ में मयंक मोहन राय और १९८१ ८२ में विजयशंकर राय ने चैम्पियन शिप प्राप्त किया।

शैक्षणिक

बी०ए०द्वितीय वर्ष १९८१ की परीक्षा में श्रीमती मधु सिंह ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर महाविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। बी०ए० प्रथमवर्ष के छात्रोंमें कु० सुधा सिंह और सन्तोष कुमार तिवारी प्रथम श्रेणी का अंक प्राप्त कर क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर रहे।

-:) ० (:-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाविद्यालय परिवार

प्रबन्ध समिति

१ श्री विजय शंकर सिंह(विधायक) अध्यक्ष
२ ,, महेन्द्र प्रसाद राय उपाध्यक्ष
३ ,, वीरबल राय ,,
४ ,, कृष्ण चन्द्र राय एडवोकेट सचिव मंत्री
५ ,, कैलाशनाथ राय संयुक्त मंत्री
६ ,, चमन लाल गर्ग ,,
७ ,, वशिष्ठ नारायण शर्मा कोषाध्यक्ष
८ ,, केशव प्रसाद शर्मा सदस्य
९ ,, व्रजविहारी राय ,,
१० ,, रामनगीना राय ,,
११ ,, रामजनम राय ,,
१२ डा० परमानन्द राय ,,
१३ श्री विजय नारायण राय एडवोकेट ,,
१४ ,, इन्द्रपाल सिंह(प्रधानाचार्य आदर्श इन्टर कालेज),,
१५ ,, वीरेन्द्र कुमार सिंह (प्रधानाचार्य इन्टर कालेज मोहनपुरा) सदस्य
१६ ,, राधेश्याम केडिया ,,
१७ ,, उमाशंकर राय ,,
१८ ,, राजेन्द्र प्रसाद सिंह ,,
१९ ,, रमाकान्त सिंह ,,
२० डा० मान्धाता राय (प्रभारी प्राचार्य पदेन) ,,
२१ डा० जगदीश प्रसाद राय (प्रवक्ता भूगोल)
२२ श्री अजित बहादुर सिंह (प्रवक्ता इतिहास)
२३ ,, तेज बहादुर सिंह (प्रवक्ता समाजशास्त्र)
२४ श्री जितेन्द्र राय (प्रवक्ता राजनीति शास्त्र)
२५ ,, विद्या शंकर मिश्र (प्रवक्ता अंग्रेजी)

शिक्षा परिषद्

१ श्री राजेन्द्र नारायण राय एडवोकेट अध्यक्ष
२ ,, रामअधार राय एडवोकेट मंत्री
३ डा० देवेन्द्र कुमार राय सदस्य
४ ,, परमानन्द राय ,,
५ श्री रामनगीना राय ,,
६ ,, वीरेन्द्र कुमार सिंह ,,
७ ,, पारस नाथ राय एडवोकेट ,,

प्राध्यापक मंडल

१ डा० कपिल देव राम प्राचार्य (नि०)
२ डा० मान्धाता राय, प्रभारी प्राचार्य प्रवक्ता हिन्दी
३ डा० राम नारायण राय प्रवक्ता अर्थशास्त्र
४ श्री राम चन्द्र शर्मा ,, संस्कृत
५ डा० जगदीश्वर प्रसाद राय ,, भूगोल
६ श्री अजीत बहादुर सिंह ,, इतिहास
७ ,, तेजबहादुर सिंह ,, समाज शास्त्र
८ ,, जितेन्द्र राय ,, राजनीति शा०
९ ,, विद्याशंकर मिश्र ,, अंग्रेजी
१० ,, ज्ञान सिंह प्रवक्ता मनोविज्ञान
११ ,, राम विनय राय ,, शिक्षाशास्त्र
१२ डा० उबैदा बेगम ,, उर्दू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३ डा० अशोक राय	प्रवक्ता प्राचीन इतिहास
१४ श्री शशिकान्त राय	,, दर्शन शास्त्र
१५ श्री ओंकार नाथ राय	,, भूगोल
१६ ,, सुरेन्द्र नाथ राय	,, सैन्य विज्ञान

कर्मचारी गण

तृतीय श्रेणी

१ श्री नागेन्द्र राय	पुस्तकालयाध्यक्ष
२ ,, सुभाष चन्द्र राय	प्रधान लिपिक एवं लेखाकार
३ ,, ओम प्रकाश राय	सहायक लिपिक (लेखा)

चतुर्थ श्रेणी

१ श्री सादीक खां	दरबान
२ ,, गोरखनाथ	परिचारक
३ ,, अवध विहारी पाण्डेय	चौकीदार
४ ,, सुखराम	माली
५ ,, बेचन राम	मेंहतर
६ ,, हरेराम राम	लैब बियरर भूगोल
७ श्री गिरधारी राय	परिचारक
८ श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता	लैब बियरर मनोविज्ञान
९ श्रीमती दुलारी देवी	परिचारक

छात्र संघ

(१९८१-८२)

श्री अवधेश राय	अध्यक्ष
,, जीत नारायण राय	महामंत्री
,, कमलनारायण राय पाण्डेय	संयुक्त मंत्री
,, रमेश चन्द्र राय	वित्त मंत्री
,, सुरेश सिंह यादव	क्रीड़ा मंत्री
,, सुरेन्द्र नाथ राय	समाज कल्याण मंत्री
,, शुएब खां	सांस्कृतिक मंत्री
अक्षय लाल भारती	छात्र प्रतिनिधि
गर्जन राम	,,
रामदरस सिंह यादव	,,
चन्द्र प्रकाश शर्मा	,,

—:) ० (:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

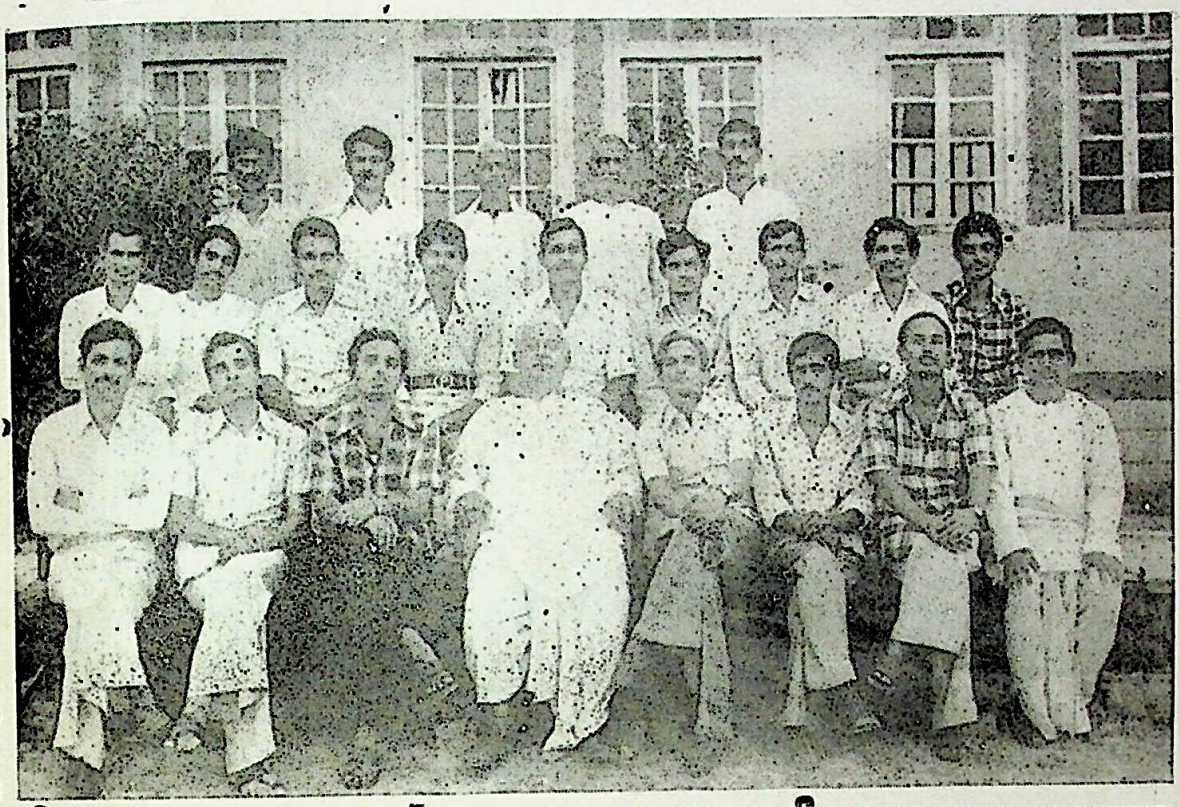

स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ महाविद्यालय, गाजीपुर

प्राध्यापक मंडल एवं कर्मचारीगण

१९८०-८१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ महाविद्यालय, गाजीपुर

छात्र संघ (१९८१-८२)

उद्घाटन समारोह के अवसर पर

मुख्य अतिथि माननीय श्री सुरेन्द्र सिंह उप वन मंत्री उ० प्र० सरकार

के साथ

संरक्षक/प्रभारी प्राचार्य डा० मान्धाता राय एवं छात्र संघ के पदाधिकारीगण बैठे हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं कवि हूँ

मनोज कुमार सिन्हा, बी० ए० भाग २

मैं कवि हूं तुम मेरी कविता,
फिर भी तुमसे प्रीति नहीं।
कोरे कागज कोरे रहते,
लिखती कोई गीत नहीं ॥

भाव जभी कुछ बन जाता है,
शब्द नहीं मिलता कोई ।
मानस भटक रहा है कब से,
भाव नहीं बनता कोई।
लिखने वाले फिर भी लिखते,
लेकिन कोई रीति नहीं ।
कोरे कागज कोरे.....

कवि तुम्हारी रचना कैसी ?
जिसमें रचनाकार नहीं ।
प्रियतम बनकर भी कविता का,
पाता उसका प्यार नहीं ।
दुनिया के इस रंगमंच पर,
मेरी कोई जीत नहीं ।
कोरे कागज कोरे.....

गीत लिखे हैं बहुत मगर,
रीति नहीं मैंने सीखा ।
मैं क्या तेरे संग में गाऊं,
संगीत नहीं मैंने सीखा ।
तुम जीते हो मैं प्रभु हारा,
मेरी कोई जीत नहीं।
कोरे कागज कोरे.....

मैं कवि बनकर क्या पाऊंगा ?
तुमसे ओ कविता रानी ।
दर्द भरे कुछ गीत मिले हैं,
बस थोड़ी सी प्रेम कहानी।
प्यार कहीं मुझको मिल जाये,
मैं चाहूंगा गीत नहीं।
कोरे कागज कोरे... ....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो हमारे बीच
नहीं रहे

डा० तिलेश्वर राय–सुप्रसिद्ध गणितज्ञ एवं जे० पी० मेहता इन्टर कालेज वाराणसी के प्रधानाचार्य पद को सुसोभित करनेवाले डा० तिलेश्वर महा विद्यालय की शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष एवं साधारण सभा के माननीय सदस्य थे। आपके निधन से जनपद एवं महा-विद्यालय ने एक तेजस्वी व्यक्तित्व की छाया खो दिया।

श्री सिहासन राय सिद्धेश-आदर्श पुस्तक भण्डार कल-कत्ता के संचालन एवं अनेक महत्वपूर्ण साहित्यिक पुस्तकोंके लेखक सिद्धेशजी महाविद्या लय प्रबन्ध समिति के माननीय सदस्य थे। आपने१०००० रु० की महती धनराशि महाविद्यालय को दिया था।

प्रो० विश्वनाथ राय शर्मा–सुहवल निवासी डी० ए० वी० डिग्री कालेज वाराणसी के भूतपूर्व प्राचार्य शर्मा जी स्वयं में एक संस्था थे आरम्भिक अवस्था में महाविद्यालय को आपका मार्ग-दर्शन मिला था। आपके निधन से जनपद एवं महाविद्यालय ने एक जिन्दा दिल व्यक्तित्व एवं शिक्षाविद् खो दिया है।

रामकृत राम शर्मा–स्व० रामकृत राम शर्मा महाविद्यालय के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी थे अपने सरल, मृदु व्यवहार एवं सतत् क्रियाशीलता के कारण वे सबको समान रूप से प्रिय थे। इनका तीस वर्ष की अल्पावस्था में १-१०-८० को ट्रक से कुचल जाने के कारण दुःखद निधन हो गया।

—:)०(:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Macbeth : A Historical Study

By-Sudhir Kumar Singh, B. A. II

Shakespeare derived the s ory of Ma: tbeth mainly from Holinshed's chronicles of England, Scotland and Iraland There were many semi historical chronicles and Holinshed too was indebted to some of them. EvenKing Edward I made use of a great mass of extracts from chronicles, some of whioh were fictitions, all of which were doubtful, collected by learned men of his kingdom, as ordered by him, to produce evidence showing Scotland as a vassal kingdom of England It would be interesting to study the story of Macbeth in historical perspective, In this context let us 'delve deep' into the ancient history of Scotland and find out in what way did the dramatis personal figaring in Shakspeare s play strut and fret their 'hour upon the stage' of Scottish history, and there after rol d by in the abyss of enternal Time.

Ancient Scotland Comprised of the land of Pi ts, the kingdom of the Scots calfed Strathclyde and Lothian. The process of union continued but actually it began in 844. In 1018 Malcolm II completely defeated the Angles at Carham with the aid of strathclyde Briton! and annexed the country between the Forth and the Tweed. In the same year Duncan, a grandson of Malcolm, became the king of Strathclyde. when Malcolm, died in 1034 Duncan became the first ruler of the kingdom of all Scotland.

In 1040 Macbeth, the chief of Moray slew king Duncan and took the kingdom. His reign lasted for 17 years (C 1040-57) and was by no means without glory. He had a claim to the throns through his wife, who was a grand daughter of a former king. He gained the support of his people, beat off a Northumbrian invasi n, was generous to the church, and perhaps, even made a pilgrimage to Rome. But he was at last overcome by Malcolm son of Duncan who defeeted and slew him at Lumphanan in Aberdeenshire in 1057 Eminent historians G. T Warner and C H K. Marten in their book. " The Ground-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

work of British History" have thus observed, " In its history indeed Shakspeare's play is quite misleading. The Macbethe of his story is a relentless, cruel monster, who meets with a speedy death as a fit retribution gor his crimes",

" The Macbeth depicted by Shakespeare was an invention of later Scottish historians, who inan eflort to trace an unbroken line of scottish kings to the Garden of Eden, treated the interloper with malignant spite '

Malcolm III (conmore) spent 14 years in England and reigned from 1057 to 1093 and saw England fall befor the ouset of Normans. As a relative of the old kings of England, Malcolm become an enemy of William the Conqurer He was slain while invoding England. His brother Donald Bane succeeded him. He was deposed by Malcolm's son Duncan in 1094. A few months later that Duncan too was slain and Donald restored. Edgar, a son of Malcolm Canmore overcame Donald Bane. On Edgar's death his brother Alexander I become king. His brother David I succeeded to the throue in 1124 Thus the Canmore dynasty continued.

There is no indication of the reigns of Macbeth's desdendants. Macduff, brother to the then Earl of Fife, appealed to Edward I of England against one John Balliol's decisons who was placed on the Throne of Scotland by him (Edwurd) in 1292. The Macduff of Macbeth's time might have been his ancestor.

King Robert Bruce of Scotland (1306-29) a descendants of David I, had a son David Bruce who married Joan sister of Edward II, and a daughter margaret or Marjory who was married to Walter stewart so walter the steward. Their son came to throne ar Robert II after David II who died in 1370. and with his accession the line of the unlucky house of Stuarts commenced There were a series of disasters unparalleled in history even in Scotland at a time when Life was short and death was violent" Dames Fate and Death both appeared to be unkind to the Stuart kings and also the country during their periods of reign. Except a few, all of them met with Violent deaths like Banquo who is believed to be their mythical acnestor. The show of eight kings in Act IV Scene I of Macbeth the last with a glass in hand; Banquo's ghost following, were supposed to be Robert II & III and James I to VI that last of whom become James I of England uniting England with Scotland. It befits well to remark that " uneasy lies

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

the head that wears the crown.'

It is note worthy that Shakespeare deviated from the chroniclos as well as the history' evedently, to serve his dramatic purposes in the best way. But adverting to delineation of characters, events, scense and a wide variety of human nature in Macbeth or else where. the literary performance of Shakespear may ever be regarded as flawless and meticulous. Literateures, philosophers marolists, theologists, psychologists, psychiatrists doctors, occulists, magicians, actors etc and the general reader would read Macbeth and other works of Shakespeare with interest and admire him from their angles of vision. Much has been said by many critics about Shakespeare and researches are continuing A few of them may be quoted. William Horzlitt said " His characters are real beings of flesh and blood'who speak like men, not like outhors" John Keats remarked, " He has left nothing to say about nothing or anything " S. T. Coleridge respected him as " our myriad minded Shakespeare."

——

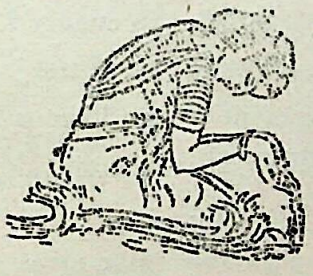

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

HOW TO PREPARE FOR RETIREMENT

Pramod Kumar, B. A. I

On attaining fifty, people generally become age conscious, particularly those who are in service and would be superannuated within a decade. We should remember that modern medicine has added years. to life and we must try to add life to years. Retirement from service is definitely not retirement from the years of life one has been living. It needs a preparation.

A man must learn the art of retirement. He must develop the philosophy of life to adjust to the society he lives in, otherwise he will react adversely. The preparation for retirement is primarily an educational activity. He needs guidance about dietetics mechanism of aging, social activities, philosophy of the aged, developing a hobby outside of his professional skill, mental health, disease prevention, economic aspects like pension, gratuity, investment etc.

After retirement must Continue to use his faculties. He must not stop working abruptly, rather slow down gradually. The first rule for growing old wisely is to keep physically active and mentally alert and to maintain one's normal place in group and society. Strenuous efforts are of course to be avoided.

The retired person should devote part of his life to some social or charitable service, regular,paid or honourary work is one of the useful ways to remain engaged. The psychological stimulus of the job keeps him going strong and keeps him in regular contact with the outside world.

Aman has to take timely preventive measures against infectious diseases reduce hard manual labour, avoid over eating and regulate diet and exercise, avoid worries and tension, cultivate habits of poise, regularily and get adequate amount of sleep, rest and relexation. A

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

through medical check-up is a must eve ry year.

One should not take the retired life as the end of his ambition. On the contrary, one is to realise that the best years may still be ahead. Let the reiired man be occupied by useful activities so that he is " to busy to become ill and too healthy to be ill '

Old wood's best to burn, old wine to drink, old friends to trust and old au thors to read."

PUZZLE

Nirmal Kumar Srivastava, B. A. I

(1) I am in the pistol
But not in the gun
Twice in the moon
But not in the sun.

(2) There are six tea cups on a table
One cup is given to some one.
How many remain.

(3) Construct a sentence containing all the Alpha bets— —

Answer— —

1- O
2- Five cups.
3- A quick brown fox ju- mps over thelozy dog..

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

چھوٹے الفاظ اور مترنم جملے ہیں۔ ان میں نہ کہیں بناوٹ ہے اور نہ مصنوعیت۔ یہ نظر سے گزر کر ذہن پر نقش ہو جاتے ہیں۔

باغ و بہار کی سلاست اور سادگی کا سب سے بڑا وصف یہ ہے کہ یہ کہیں بے روح اور بے جان نہیں ہے۔ اس میں ابتذال بھی نہیں ہے۔ میر امن نے سادگی میں ایک خاص سطح کی پاسداری کی ہے۔ باغ و بہار کے اسلوب کا یہ وصف صرف باغ و بہار کا ہی نہیں بلکہ اس میر امن کے مزاج اور ان کی شخصیت کا پرتو بھی نمایاں ہے۔

میر امن کی زبان دلی کے محاورے کی نمائندہ زبان ہے۔ اس کے کتنے محاورے آج بھی اسی شکل و صورت میں رائج ہیں۔ میر امن نے فارسی اور عربی الفاظ کے بجائے ہندی کے نرم اور شیریں الفاظ کا بڑا مناسب اور برمحل استعمال کیا ہے۔

میر امن نے نہ تو تشبیہات و استعارات کے دریا بہائے ہیں اور نہ انوکھی مثالیں تلاش کر کے لائے ہیں۔ بلکہ انھوں نے تو آس پاس کے ماحول سے ہی جو کچھ اخذ کرنا تھا کر لیا۔ اور پھر بڑی دیانت داری سے اپنے قارئین تک پہنچا دیا۔ یہاں نہ تو ذہنی کاوشیں ہیں۔ اور نہ مغز پاشیاں۔ باغ و بہار میں بول چال کی زبان اپنے نقطۂ عروج کو پہنچ گئی ہے۔

میر امن کے اسلوب میں بڑی مناسب اور متوازن روانی ہے۔ وہ نہ تو جلدی جلدی کسی بات کو کہہ کر ختم کرتے ہیں۔ اور نہ ٹھہر ٹھہر کر سست رفتاری سے۔ اسلوب کے اس توازن نے قصے کی جاذبیت میں اضافہ کر دیا ہے۔ وہ ہر مقام پر ہر کردار اور ہر ماحول کی عکاسی ایک ماہر داستان گو کی طرح کرتے ہیں۔ ان کو فضا اور واقعے کی تخلیق کا سلیقہ ہے۔ انھوں نے سراپا نگاری، منظر نگاری اور جزئیات نگاری بہت ہی سادہ انداز میں کی ہے۔

باغ و بہار میں میر امن نے دہلوی معاشرت کی بڑی زندہ تصویر پیش کی ہے یہ تصویریں میر امن کے علاوہ اور کون پیش کر سکتا تھا۔ جس نے شاہی عہد کو برتا تھا۔ اور اس کے ایک ایک رمز کو سمجھا تھا۔ دہلوی معاشرت کے مرقع کو میر امن نے اپنی جزئیات نگاری سے حسین تر بنا دیا ہے۔ سامانوں کا بیان ہو کہ کھانوں کا۔ عہدوں کا ذکر ہو کہ دیگر تفصیلات کا میر امن کا قلم نام گنانے نہیں تھکتا۔ (بقیہ صفحہ پر)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

خالص نثر لکھی ہے۔ انھوں نے باغ و بہار میں جو زبان استعمال کی حالانکہ اس پر اس عہد میں شدید نکتہ چینیاں کی گئیں۔ لیکن یہ وہی زبان ہے جس پر آج کی نثر کا ایوان تعمیر ہوا۔

باغ و بہار کی زبان پر مولوی عبدالحق نے یوں رائے زنی کی ہے:۔

"یہ کتاب اپنے وقت کی نہایت فصیح و سلیس زبان میں لکھی گئی۔ ..... اور اردو کی پرانی کتابوں میں کوئی کتاب زبان کی فصاحت اور سلاست کے لحاظ سے اس سے لگا نہیں کھاتی۔"

کلیم الدین احمد لکھتے ہیں:۔

"یہ سادگی سپاٹ نہیں۔ یہاں ناگوار نیرنگی نہیں۔ یہاں سادگی اور پرکاری ایک جگہ جمع ہیں ....."

ان مختلف آراء کے علاوہ میر امّن نے باغ و بہار کے دیباچے میں خود بھی اپنی زبان کے بارے میں دعویٰ کیا ہے:۔

"..... اور جو شخص سب آفتیں سہہ کر دلی کا روڑہ ہو کر رہا اور دس پانچ پشتیں اس شہر میں گزریں اور اس نے دربار امراؤں کے اور میلے ٹھیلے، عرس چھڑیاں سیر تماشا اور کوچہ گردی اس شہر کی مدت تک کی ہو گی اور وہاں سے نکلنے کے بعد اپنی زبان کو لحاظ میں رکھا ہو گا۔ اس کا بولنا البتہ ٹھیک ہے ....."

میر امّن کی زبان سادگی اور سہل ممتنع کسی خاص مقام یا کسی خاص "سیر" میں جلوہ گر نہیں ہے۔ بلکہ وہ شروع سے اخیر تک جاری و ساری ہے۔ ان کے دسترس میں سہل اور عام فہم الفاظ اور روزمرہ کا ایک وسیع ذخیرہ ہے اور اس ذخیرہ کے سہارے وہ واقعات بیان کرتے چلے جاتے ہیں۔ اور ہر واقعے کی بھرپور اور مکمل تصویریں پیش کرتے چلے جاتے ہیں۔ اور ہر واقعے کی بھرپور اور مکمل تصویریں پیش کرتے ہیں۔ چھوٹے

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

اول تو داستانوں کی روایت ہی یہی ہے۔ دوم باغ و بہار امّن کی طبع زاد داستان نہیں ہے اس لئے وہ اس داستان کے دروبست سے بری ہیں۔

باغ و بہار کے کردار اتنے بھرپور ہیں کہ میر امّن نے گویا زندہ تصویریں پیش کر دی ہیں۔ وہ کردار نگاری میں جزئیات اور واقعات کو اس طرح بیان کرتے ہیں کہ بڑی واضح تصویر سامنے آجاتی ہے۔ چاروں درویشوں کی حیات اور کردار میں بہت سی باتیں مشترک ہیں۔ چاروں امیر و کبیر۔ دولت و حشمت کے مالک، عشق کے ستائے اور زندگی سے عاجز ہیں۔ ان چاروں نے خود کسی کی کوشش کی ہے۔ لیکن عین وقت پر غیبی امداد سے بچتے ہیں۔ اور بارہ برس بعد ملک شہپال کی مدد سے ان سب کی محبوباؤں کی بازیابی ہوتی ہے۔

مردانہ کرداروں کے برعکس باغ و بہار کے چند ایک نسوانی کرداروں میں انفرادیت بھی ہے اور حسن بھی۔ میر امّن نے ان کرداروں کا ایک ایک نقش نمایاں کرنے میں فنی چابکدستی اور باریک بینی کا ثبوت دیا ہے۔ اس داستان کے کل تین نسوانی کردار ایسے ہیں جو کچھ دیر تک ہماری نظروں کے سامنے رہتے ہیں۔ اول پہلے درویش کی سیر میں دمشق کی شہزادی۔ دوم بادشاہ آزاد بخت کی داستان والی وزیر زادی اور سوم خواجہ سگ پرست کی داستان میں سراندیپ کی شہزادی کا کردار یہ تینوں کردار اپنے ماحول اور معاشرت کی مکمل ترجمانی کرتے ہیں۔ اور بہت تیز اور باعمل نظر آتے ہیں۔

ضمنی کرداروں میں سب سے زیادہ جیتا جاگتا کردار پہلے درویش کی بہن کا ہے۔ وہ اپنی رفتار و گفتار اور حرکت و عمل سے ایک مثالی بہن کو داستان کے صفحات پر زندہ کر گئی ہے۔ اس کے علاوہ تیسرے درویش کی سیر کی کٹنی۔ جو شہزادی کی تلاش میں نکلی اور مر کر ایک ایک جملے سے ذہن پر اپنا نقش چھوڑ گئی۔

باغ و بہار کا سب سے بڑا حسن اس کی زبان ہے۔ یہ زبان میر امّن نے اس عہد میں لکھی جب فارسی انداز بیان اور عبارت آرائی کا کمال دکھانا علمیت اور قابلیت کا معیار سمجھا جاتا تھا۔ میر امّن نے باغ و بہار میں

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"گنج خوبی" تالیف کیں۔ یہ دونوں تالیفات طبع زاد نہیں ہیں۔ لیکن انھوں نے میر امن کو مشہور و معروف مؤلفین کی صف میں لا کھڑا کیا۔

"باغ و بہار" کا ماخذ عطا حسین خاں تحسین کی "نوطرز مرصع" ہے۔ لیکن باغ و بہار کے سارے واقعات نوطرز مرصع سے مماثلت نہیں رکھتے۔ بعض جگہ باغ و بہار نوطرز مرصع سے اختلاف کرتی ہے۔ دیگر شواہد کی نایابی کے باعث قیاس غالب ہے کہ جہاں اختلاف ہے وہاں میر امن نے چند واقعات اختراع کر لئے ہیں۔

میر امن نے باغ و بہار ۱۲۰۲ھ میں تالیف کی اور یہ ۱۸۰۱ء میں ہندوستانی پریس کلکتہ سے شائع ہوئی۔

باغ و بہار اپنی ہیئت کے اعتبار سے ایک داستان ہے۔ چنانچہ اس میں کسی نہ کسی شکل میں داستانوی عناصر کی کارفرمائی بھی موجود ہے۔ ہاں یہ ضرور ہے کہ یہ داستانوی عناصر دیگر داستانوں سے مختلف شکل میں سامنے آتے ہیں۔ یہاں بھی داستان کا آغاز دیگر داستانوں کی بادشاہ (آزاد بخت) کی لاولدی سے ہوتا ہے۔ یہ اور بات ہے کہ اسی ایک مسئلے پر بادشاہ ہفت خواں نہیں طے کرتا۔ باغ و بہار میں داستان در داستان کا انداز بھی نمایاں ہے۔ فوق الفطرت عناصر پر حالانکہ زور نہیں دیا گیا ہے۔ تاہم ان کی ہلکی سی جھلک مل جاتی ہے۔ مہم جوئی سے اگرچہ درویشوں کا کوئی واسطہ نہیں۔ لیکن دو جگہ مہم جوئی کا انداز بھی ملتا ہے۔

عام داستانوں کی طرح باغ و بہار کے پلاٹ میں وحدت مفقود ہے۔ اس میں چار درویشوں کا قصہ بیان کیا گیا ہے۔ باغ و بہار کا آغاز خالص داستانوی انداز میں بادشاہ آزاد بخت کی لاولدی سے ہوتا ہے۔ درمیان میں چار درویشوں کا قصہ مذکور ہے۔ سو درویشوں کے قصے کے بعد بادشاہ آزاد بخت ایک پانچواں قصہ خواجہ سگ پرست کا سناتا ہے۔ باغ و بہار کا داستانوی رنگ دیگر داستانوں سے یوں بھی مختلف ہے۔ کہ بادشاہ آزاد بخت قصہ کے اختتام پر صاحب اولاد ہوتا ہے۔ اور اس میں کسی فقیر کسی عامل کی دعا کا کوئی دخل نہیں۔ آزاد بخت قصے کا ہیرو بھی نہیں ہے۔ باغ و بہار کا نہ تو بنیادی قصہ ہی عشق پر مبنی ہے اور نہ ہی آزاد بخت کی زندگی میں عشق کا گزر ہے۔ آزاد بخت کے قصہ کو ابتدا اور انتہا سے لا دیا گیا ہے۔ باغ و بہار کے اس انتشار کا ذمہ دار [illegible] کو نہیں قرار دے سکتے۔

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"باغ و بہار" پر ایک نظر

ڈاکٹر عبیدہ بیگم

فورٹ ولیم کالج کے ادیبوں میں میر امن کا نام سر فہرست ہے۔ وہ دہلی کے باشندہ تھے۔ ان کے آباء و اجداد ہمایوں بادشاہ کے عہد سے لیکر دیگر تمام بادشاہوں کے دربار سے وابستہ رہے۔ انھیں ان بادشاہوں کی سرپرستی اور عنایات خاص حاصل تھیں۔ یہ جاگیر و وظائف سے بھی سرفراز تھے۔ لیکن میر امن کے آباء و اجداد کا حاصل کردہ عزت و اقبال جاوداں نہ ہو سکا۔ احمد شاہ درانی کے حملوں نے گھر بار تاراج کر ڈالا۔ اور سورج مل جاٹ نے جاگیر ضبط کر لی۔ اس تباہی اور بربادی سے تنگ آکر میر امن نے ترک وطن کیا۔ اور عظیم آباد (پٹنہ) چلے آئے۔ مگر ان کو سکون نصیب نہ ہوا۔ آخر کار تن تنہا کلکتہ آئے۔ کچھ دنوں نواب دلاور جنگ کے چھوٹے بھائی محمد کاظم خاں کی معلمی کی۔ لیکن یہاں بھی خود کو مطمئن نہ محسوس کر سکے۔ چنانچہ یہ سلسلہ ترک کیا اور میر بہادر علی حسینی کے توسط سے فورٹ ولیم کالج شعبۂ ہندوستانی (اردو) کے صدر ڈاکٹر جان بارتھوک گل کرسٹ تک رسائی حاصل کی۔

گل کرسٹ کی نگاہوں سے میر امن کا جوہر پوشیدہ نہ رہ سکا۔ اور انھوں نے میر امن کو شعبہ ہندوستانی سے منسلک کر لیا۔

۴ مئی ۱۸۰۱ء کو میر امن کا تقرر بحیثیت ماتحت منشی عمل میں آیا۔ ان کا مشاہرہ چالیس روپے قرار پایا۔ میر امن فورٹ ولیم کالج سے کل پانچ سال وابستہ رہے۔ ان ایام میں ان پر ضعف اور ناتوانی کا غلبہ تھا۔ چنانچہ ان کی درخواست پر ۱۸۰۶ء میں ان کو ۴ ماہ کی تنخواہ دے شعبے سے الگ کر دیا گیا۔

میر امن نے فورٹ ولیم کالج میں اپنی ملازمت کے دوران "باغ و بہار" اور

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

اب گھر چلیں۔ ان کے کہنے سے حشمت میاں چونک پڑے جیسے کوئی خواب سے چونک پڑتا ہے۔ ایک سرد آہ بھری اور سبھی لوگ گھر کے لئے چل دیئے۔ گھر آکر سبھی لوگ اپنے اپنے کام میں مصروف ہو گئے لیکن حشمت میاں کا دھیان ان ہی بچوں میں لگا ہوا تھا۔ رات کو بھی وہ ان بچوں کے ہی بارے میں سوچتے رہے۔ صبح ہوئی دونوں بھائی حسب معمول آفس گئے لیکن حشمت میاں کا دل کام میں نہیں لگ رہا تھا۔ وہ ہر وقت یہی سوچ رہے تھے۔ کہ ان بچوں کا کیا ہوگا۔ شام کو جب دونوں بھائی آفس سے لوٹنے لگے تو حشمت میاں نے اپنے بھائی سلامت سے کہا چلو اس پارک کی طرف سے چلیں۔ سلامت میاں نے پوچھا کیوں؟ جواب ملا بس یوں ہی۔ کل جب ہم لوگ پارک میں بیٹھے تھے تو ایک چڑیا اپنے بچوں کو بڑے پیار سے دانا کھلا رہی تھی۔ اتنے میں کیا دیکھا کہ ایک چیل اڑتی ہوئی آئی اور چڑیا کو اپنے پنجوں میں دبا کر چلی گئی۔ تبھی سے میں یہ سوچ رہا ہوں کہ ان بچوں کا کیا ہوگا۔ یہ سب باتیں سوچتے سوچتے وہ دونوں اسی پارک میں پہونچے۔ اور دیکھا کہ بچوں کو ایک دوسری چڑیا دانہ کھلا رہی ہے۔ یہ ماجرا دیکھ کر حشمت میاں کی آنکھیں اشکبار ہو اٹھیں۔ سلامت میاں نے ان کو تسلی دی کہ گھبراؤ نہیں جس کا کوئی نہیں اس کا خدا ہوتا ہے ——!!

(بقیہ صفحہ)

میر امن نے شعوری طور پر انشاء نگاری نہیں کی ہے۔ بلکہ انھوں نے نفس مضمون کو ہمیشہ پیش نظر رکھا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ وہ اپنے اسلوب اور داستان دونوں سطح پر کامیاب رہے۔ نثر میں میر امن کے مقام کو متعین کرنے میں یہ رائے بڑی جامع ہے۔

"میر امن کا نثر میں وہی مرتبہ ہے جو میر کا غزل گوئی میں۔

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

جاوید کی آنکھوں میں اشک بھر آیا۔ کاش اس نے پڑھ لیا ہوتا۔ سال بھر کے گذرے ہوئے سارے خیالات اس کے دماغ میں تصویر کی طرح گھوم گئے۔

کتنا گرا ہوا ہوں میں۔ اپنے ماں باپ کو دھوکہ دیا۔ خود اپنے کو دھوکہ دیا۔ استاد کو نہ پڑھنے کی وجہ سے اسکول نہ آنے کے نہ جانے کتنے بہانے بنائے۔ نتیجہ کیا نکلا صرف بربادی۔

ٹن ..... ٹن ..... پوری کی پوری کاپی سنا دی تھی۔ ہائے کیا ہوگا۔ ماں پوچھے گی کیسا پرچہ ہوا تب کیا جواب دوں گا۔ یہی کہ بہت اچھا ہوا۔ ماں باپ استاد کا کہنا مان لیا ہوتا۔ تو آج یہ حالت نہ ہوتی اب اس کا ذہن بھول کا احساس کر رہا تھا۔ ان ہی خیالات میں کھویا ہوا تھا کہ اچانک اس کے دل میں امید اور روشنی کی کرن پھوٹی۔ "اب میں پڑھوں گا۔ محنت کروں گا۔ ماں باپ اور بھائیوں کا بوجھ اٹھاؤں گا"

وہ اٹھا۔ تیسرا گھنٹہ ختم ہونے سے قبل ہی وہ کاپی جمع کر کے چلا گیا۔ سب لوگ اسے جاتے ہوئے حیرت سے دیکھ رہے تھے۔ کالج گیٹ سے نکلتے ہی تیسرا گھنٹہ بھی بج گیا۔ اس گھنٹے نے اسے نہ چوٹ پہنچائی اور نہ وہ کانپا۔ کیونکہ اس کو احساس ہو گیا تھا۔ ایک بھول کا احساس۔ بھول کا احساس۔ وہ ایک نئی منزل کی جانب چل دیا۔

اس امتحان میں تو اس کا برا نتیجہ نکلا۔ لیکن۔ لیکن اگلے امتحان میں بہت محنت سے پڑھنے کے بعد وہ فرسٹ ڈویژن پاس ہوا۔

اب ان کا کیا ہوگا؟

اعجاز احمد خاں بی۔ اے سال اول

سلامت میاں اور حشمت میاں دو بھائی تھے۔ ان کے والدین ان دونوں بھائیوں کو ایک ہی طرح کے کپڑے پہناتے تھے۔ اور ایک ہی اسکول میں یہاں تک کہ وہ دونوں ایک ہی درجہ میں پڑھتے تھے۔ دھیرے دھیرے وقت گزرتا گیا۔ اور ان دونوں کی شادیاں بھی ایک ہی دن ہوئیں۔ اور بچے بھی ہوئے۔ ایک دن سلامت میاں آفس سے چھوٹنے کے بعد جب گھر واپس آئے تو ان کے بچوں نے کہا ہم سیر کرنے چلیں گے۔ سلامت میاں نے کہا کہ آج آفس میں کچھ زیادہ ہی کام تھا۔ میں تھک گیا ہوں۔ لیکن بچے بضد ہوئے اور کہنے لگے۔ جی نہیں آج ہم لوگ ضرور سیر کرنے جائیں گے۔ اور چچا جان کے یہاں بھی جائیں گے۔ اب سلامت میاں کو تیار ہونا پڑا۔ وہ لوگ حشمت میاں کے گھر گئے۔ اور ان لوگوں کو بھی تیار کر کے سیر کرنے چلے۔ راستہ میں ایک پارک میں سب لوگ ٹھہرے۔ بچے اپنے اپنے کھیل میں مشغول ہو گئے۔ اسی پارک میں ایک بنچ پر دونوں بھائی بیٹھے گپ شپ کر ہی رہے تھے کہ حشمت میاں کی نظر ایک پیڑ پر پڑی جس پر ایک خوبصورت چڑیا کا گھونسلہ تھا۔ دیکھا کہ چڑیا اپنے بچوں کو بڑے پیار سے دانے کھلا رہی ہے۔ اتنے میں ایک چیل آئی اور اس چڑیا کو اپنے پنجوں میں دبوچ کر اڑ گئی۔ حشمت میاں ان بچوں کو دیکھتے ہی رہ گئے۔ دیکھتے دیکھتے وہ کسی خیال میں گم تھے۔ کہ سلامت میاں نے ان سے کہا کہ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

بھول کا احساس

حسنز خاں
بی۔ اے۔ I

ٹن ٹن .....

جنگ کے طبل کی طرح پہلا گھنٹہ بجا۔

امتحان کے کمرے میں سبھی لڑکے اپنی اپنی جگہ پر بیٹھے ہیں۔ کاپیاں بٹ گئیں۔ کیا آئے گا اور کیا نہ آئے گا۔ امید اور ناامیدی کے درمیان سب خاموش بیٹھے ہیں اور پرچہ بٹ گیا۔

جاوید کے چہرے پر مسکراہٹ کھیل گئی۔ کیونکہ سبھی سوالات آئے تھے جن کی پرچیاں اس کے پاس تھیں۔ ان کو اس نے بڑی محنت سے رات بھر جاگ کر بنایا تھا۔ موزوں اور قمیض میں چھپا ہوا میٹر بہت ہی احتیاط سے رکھا ہوا تھا یک بیک ایک آواز امتحان کے کمرے میں تھراتی ہوئی آئی۔ یہ پرنسپل صاحب کی.....

"دیکھو جس کے پاس کاپیاں پرچیاں کتاب وغیرہ ہو۔ ایمان داری سے ہم کو دیدیں۔ ابھی میں کوئی ایکشن نہ لوں گا بعد میں اگر کسی لڑکے کے پاس سے کچھ نکلا تو کڑی سے کڑی سزا دی جائے گی۔" جاوید کا دل کانپ گیا۔ دماغ میں ایک طوفان سا معلوم ہوا کیا کروں، کیا نہ کروں۔

کھٹ کھٹ ..... کھٹ

پرنسپل صاحب ہر لڑکے کے پاس جا کر تسلی دے رہے تھے۔ سبھی لڑکے سہم سہم کر سب کچھ دیتے جا رہے تھے۔ جاوید کھو سا گیا۔ اس کے ابا جان کہا کرتے تھے بیٹا محنت سے پڑھ کر جلد سے جلد امتحان پاس کر لو۔ تمہارے ہی کندھوں پر چھوٹے بھائی بہنوں کا بوجھ ہے۔ ماں اس کے کھانے پینے کا خیال رکھتی۔ یہ سوچ کر کہ جاوید پڑھتا ہے دوسرے بچوں کی کھانے کی چیزیں بچا کر اس کو کھلاتی تھیں۔ اس کے ابا جان اپنے لئے کپڑے نہ بنوا کر جاوید کے لئے کپڑے بنواتے۔ کیونکہ جاوید پڑھتا تھا۔

کھٹ کھٹ ..... جاوید چونکا — پرنسپل اس کے پاس آئے۔

"کیا تین سال کے لئے زندگی خراب کرنی ہے؟"

جاوید کے سامنے آنے والے زمانے کی ایک تصویر سی گھوم گئی۔ اس نے اپنے ہاتھوں سے وہ سب پرچیاں پرنسپل صاحب کو سونپ دیں اور سر جھکا کر بیٹھ گیا۔

تھوڑی دیر بعد سر اٹھا کر ہال میں چاروں طرف دیکھا جو لڑکے پڑھ کر آئے تھے لکھنے میں مشغول تھے۔ جاوید کی طرح کے کئی لڑکے دیوار، دروازے اور اپنے آس پاس دیکھ رہے تھے۔

ٹن ..... ٹن ..... دوسرا گھنٹہ شروع ہوا جاوید کے دل پر جیسے دو ہتھوڑے پڑ گئے۔ ایک خیال آیا کچھ کرنا چاہیے ..... اس نے آگے میز پر دیکھنا شروع کیا۔ "اے سر!" پیچھے سے آواز آئی کوئی غرایا۔ کانپ کر جاوید نے سر کو جھکا لیا۔ دوسرا گھنٹہ بھی ختم ہو گیا۔

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी की पुण्य-स्मृति में

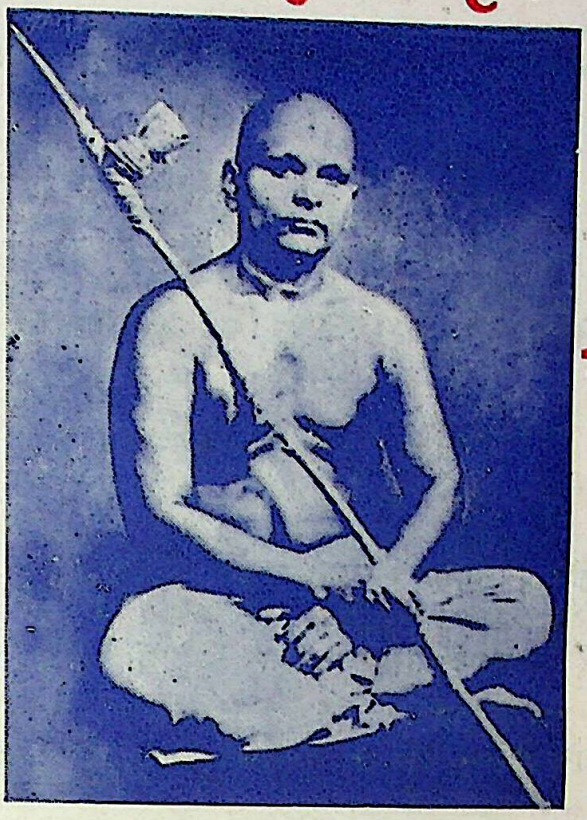

स्वामी सहजानन्द योग प्रशिक्षण संस्थान

पुष्पाञ्जलि

वर्ष १९८१

निज़से विरत, सकल मानवता के हित में अनुरत वह,
निज़ कदमों से ठुकराता मणि-मुक्ता, स्वर्ण-रजत वह,
वह आया, जैसे ज़ल ऊपर आये फूल कमल का,
वह आया, भूपर आये ज्यों सौरभ नभ मंडल का।
लोक-भाव अंजलि में सबके लिए, लिए कल्याण
आया है वह तेज़ गति से धीर, वीर, गुणवान,
आया है जैसे सावन के आते मेघ गगन में,
आया है, जैसे आता कभी संन्यासी मधुवन में।
हवन पूत कर में सुदण्ड ले मुण्डित भाल विरागी,
आया है नव पथ दिखलाने दलितों का संन्यासी,
आया है शर-चाप उठाये राग क्रान्ति का गाते,
मानवता पर पड़े हुए पर्वत की धूल उड़ाते।

दिनकर

संस्थापकः स्वामी शिवानन्द सरस्वती

सम्पादकः कुणाल कुमार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

The Bihar State Co-operative Marketing Union Ltd.
PATNA

बिस्कोमान

राज्य के किसानों की समृद्धि के लिए बिस्कोमान के पाँच बड़े कदम

१. रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशक दवा की बिक्री ।

२. धान, गेहूँ एवं मकई आदि हर प्रकार के बीजों की आपूर्ति ।

३. मिश्रित दानेदार खाद हराबहार (१८ : १८ : ६) की आपूर्ति ।

४. पशुओं के लिए संतुलित आहार कामधेनु की आपूर्ति ।

५. पटसन, मसूर, खेसारी, आलू आदि कृषि पदार्थों की खरीद के द्वारा कृषकों का संरक्षण ।

कृपया बिस्कोमान के डिपो से संम्पर्क कर सुलभ दर पर उपर्युक्त वस्तु क्रय करें और हरित क्रान्ति को सफल बनावें ।

एन० सी० नारायण, भा० प्र० से०
प्रबन्ध निदेशक ।

तपेश्वर सिंह
संसद सदस्य, अध्यक्ष ।

बिहार राज्य सहयोग क्रय विक्रय संघ सीमित,
पटना-800001.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुभाषित

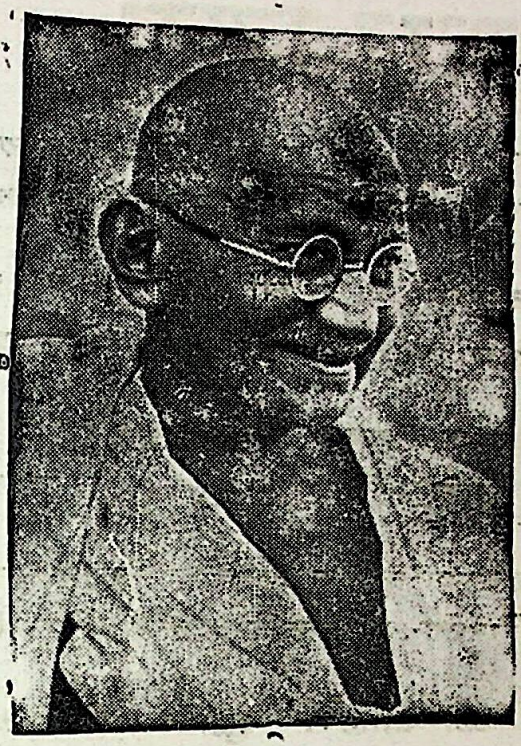

मैं उस महान शक्ति को 'अल्ला', खुदा, गौड ईश्वर के नाम से नहीं पुकारता। मै उसे सत्य के नाम से पुकारता हूं। क्यों कि ईश्वर सत्य में ही है और सत्य उसके सभी अन्य नामों का अतिक्रमण कर जाता है।

अहिंसा हमारी मानव-जाति का कानून है, जबकि हिंसा पशु का कानून है। पशु में आत्मा सुप्त पडी रहती है और उसे भौतिक शक्ति (पशु-बल) से भिन्न और किसी कानून का ज्ञान नहीं होता। मनुष्य की गरिमा उससे किसी उच्चतर विधान का आत्म-शक्ति का पालन करने की अपेक्षा रखती है।

मैं यह नहीं चाहता कि मेरा मकान चारों ओर से दीवालों से घेर दिया जाय और मेरी खिड़कियां बन्द कर दी जाएं। मैं चाहता हूं कि सब देशों की संस्कृतियां मेरे मकान के चारों ओर वायु की तरह उन्मुक्त बहती रहें। किन्तु मै इनमें से किसी के भी झोंके खाकर उखड़ जाने को तैयार नहीं हूं। मेरा धर्म कैद-खाने का धर्म नहीं है। परमात्मा की सृष्टि की छोटी से छोटी वस्तु के लिए भी इसमें स्थान है, किंतु यह जाति धर्म, और संस्कृति पर आधारित किसी भी तरह के उद्धत गर्व के विरुद्ध कवच के समान है।

—महात्मा गांधी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमराह उजाला

तारीक फजाओं में हमराह उजाला—सा
मीनारे-समद्दुन पर एक परचमे—आला-सा

गुमनाम गुलशनों के गुंचों, गुलों की खुशबू
प्यासों के लिए पानी, भूखों का निवाला—सा

देती भरम खुदा का सीरत तुम्हारी, गویا
इन्सान के सांचे में भगवान हो ढाला-सा

संगम—सा फलसफा-ओ—मजहब का मुजस्सम तुम
गुरुद्वारा-सा, गिरजा—सा, मस्जिद-सा, शिवाला-सा

दर्दों अलम का आलम तुमने गले लगाया
मनसूर की सूली—सा, सुकरात का प्याला-सा

ताजा तरीनियों से लबरेज तरन्नुम तुम,
कोने में कलेजे के तुम मेरे केवाला—सा

-रामाश्रय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धार्पण

स्वामी सहजानन्द सरस्वती भारतीय किसान आन्दोलन के जनक एवं जननेता थे। उन्होंने देश के अन्तर्गत जो भूमि-सुधार आन्दोलन का शुभारम्भ किये थे, उसे हमलोगों को पूरा करना चाहिए।

—प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्मृति

मुझे स्वामीजी के निकट सम्पर्क में रहकर काम करने का और बहुत कुछ सीखने-समझने का अवसर प्राप्त हुआ था। वास्तव में किसान आन्दोलन के मोर्चे पर मैंने उनकी ही अगुवाई में काम करना शुरू किया था। स्वामीजी बिहार में किसान आन्दोलन के जन्मदाता थे। वे स्वयं एक किसान परिवार के थे। और किसानों के दुःख-दर्द को अच्छी तरह समझते थे। किसानों के निःस्वार्थ सेवा का जो उदाहरण उन्होंने पेश किया था, वह आज कहीं नहीं दिखाई देता। किसान सभाएं आज भी चलती हैं, परन्तु वे सब प्रायः दलीय राजनीति की हथियार बन गयी हैं। राजनीति ने किसान आंदोलन को छिन्न-भिन्न कर दिया है। आज भी इस देश में एक ऐसे आंदोलन की जरूरत है जो दलीय राजनीति से दूर रहकर किसानों के हित-रक्षण के लिए संघर्ष करे। इस देश में अगर भी समाजवाद या ग्रामीण समाजवाद की कोई तसवीर खड़ी होगी तो वह मुख्य रूप से कृषक समाजवाद या ग्रामीण समाजवाद की ही तसवीर होगी। स्वामी सहजानन्द ने ऐसे ही समाजवाद का सपना देखा था। उनके इस सपने को साकार करने का संकल्प ही उनका स्मारक होगा।

—जयप्रकाश नारायण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंगलैषा

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि "स्वामी सहजानन्द योग प्रशिक्षण संस्थान" की ओर से एक "योग स्मारिका" प्रकाशित होने जा रही है। ऐसा विश्वास है कि इसमें योग के सभी अंगों पर समुचित रूप से प्रकाश डाला जायेगा ताकि दैनिक जीवन में योग की उपयोगिता को वैज्ञानिक दृष्टि से पुष्ट किया जाय एवं मानव जीवन में इसके महत्त्व को व्यावहारिक रूप से समझा जा सके। ऐसे तो यह प्रयास स्वयं ही स्तुत्य है, फिर भी मैं हृदय से इसकी सराहना करता हूं। इसकी सफलता की मैं पूर्ण शुभकामना करता हूं।

डा० जगन्नाथ मिश्र

मुख्यमन्त्री, बिहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिवाकांक्षा

यह जानकर मैं अतिशय प्रसन्न हूं कि ब्रह्मलीन स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी की स्मृति में स्वामी सहजानन्द योग प्रशिक्षण संस्थान एक योग स्मारिका प्रकाशित करने जा रहा है।

योग का अधिकाधिक प्रचार—प्रसार आज के युग की एक अपरिहार्य अनिवार्यता है। आपका संस्थान योग-शिक्षा को लम्बे समय से समर्पित रहा है और इस दिशा में आपने उल्लेखनीय सफलता भी अर्जित की है। आपकी स्मारिका से राष्ट्रवासियों को योग सम्बन्धी प्रामाणिक जानकारियां मिलें, इस विश्वास के साथ- मैं आपकी स्मारिका तथा संस्थान के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूं।

-ललितेश्वर प्रसाद शाही

मन्त्री

खनन, भूतत्व, साहाय्य पुनर्वास एवं ईख

बिहार सरकार, पटना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभाभिलाषा

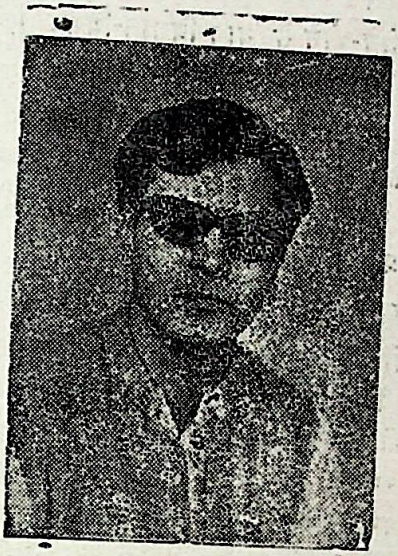

आपका दिनांक ७-८-८१ का पत्र मिला। पत्र पढ़कर प्रसन्नता हुई कि स्वामीजी की स्मृति में आप योग स्मारिका प्रकाशित करने जा रहे हैं। ऐसे महान् व्यक्ति की स्मृति में स्मारिका का प्रकाशन होना ही चाहिए। मेरी तीव्र अभिलाषा है कि योग प्रशिक्षण संस्थान का उत्तरोत्तर प्रचार, प्रसार एवं विकास हो।

—रामाश्रय प्रसाद सिंह

मन्त्री,
उद्योग एवं संसदीय कार्य
बिहार सरकार, पटना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्म-निवेदन

योग स्मारिका आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हमें अतीव प्रसन्नता हो रही है। यह सच है कि कतिपय अपरिहार्य कारणों से यह स्मारिका अपेक्षित आकार-प्रकार नहीं पा सकी है और इसके प्रकाशन में भी अप्रत्याशित बिलम्ब हुआ, जिसके लिए हमें खेद है। राज्य और देश के कोने-कोने से योग-विज्ञान-विशेषज्ञों, योगाचार्यों और योग-प्रशंसकों के एक-से-एक अच्छे लेख आए लेकिन उनके विलम्ब से पहुंचने एवं स्मारिका में स्थानाभाव के कारण हम उन्हें प्रकाशित करने का सौभाग्य नहीं सम्भाल सके। स्मारिका की अगली कड़ी में हम इन्हें आपके सामने प्रस्तुत करने के लिए कृतसंकल्प हैं। फिर भी, यथायोग्य स्मारिका आपके सेवार्थ सम्मुख है। हम आशा करेंगे कि संकलित रचनाओं के शब्द-शब्द में सभरित योगामृत संदेश आपके जीवन में अनवरत क्रियान्वित हो। आपका यह कर्त्तव्य-पालन देश, विश्व और मानव की सेवा का अंग होगा।

यह स्मारिका प्रातः स्मरणीय विश्वविश्रुत क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी सहजानन्द सरस्वतीजी का स्मरणाशीष प्राप्त कर जीवन-क्रांति की मशाल के रूप में समुपस्थित है। भारतीय आर्ष-परम्परा के अप्रतिम ज्योतिवाह स्वामीजी मानवीय सभ्यता की अगली समस्त सदियों के लिए अभ्युदय और निःश्रेयस के शाश्वत प्रेरणास्रोत थे, हैं और रहेंगे। यह स्मारिका इसी विश्व-मानव की पुण्य-स्मृति को सभक्ति समर्पित है। स्मारिका प्रकाशक स्वामी सहजानन्द योग प्रशिक्षण संस्थान अपने संस्थापक-संचालक स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी के सतत सक्रिय सशक्त-एवं सर्वप्रिय आप्त नेतृत्व में योग के प्रचार-प्रसार को प्रतिपल प्रतिबद्ध है। संस्थान द्वारा आयोजित निःशुल्क योग-शिविरों में हजारों नर-नारियों ने अपने शरीर और जीवन का कायाकल्प किया है। समाज-सेवा के लिए यह योग-यज्ञ जारी रहेगा। हां, संस्थान के निःस्वार्थ महद्देश्य की पूर्ति में सहायता हेतु सरकारी पक्ष की उपेक्षा अथवा उदासीनता शोचनीय है। इस सब के बावजूद संस्थान अपना जन-कल्याण-अभियान स्वामी शिवानन्दजी के नेतृत्व में जारी रखेगा और इस उम्मीद को तिलांजलि भी नहीं देगा कि सरकार इस सत्कर्म में समय-समय पर वांछित सहायता प्रदान कर अपने लोक—हितैषी स्वरूप की सार्थकता चरितार्थ करती रहेगी।

इन स्मारिका के कष्ट-साध्य संपादन कार्य में जिन विद्वद्जनों ने हमें अपने सार्थक सारस्वत सहयोग दिये हैं, उनमें संस्कृत साहित्य के पांक्तेय पण्डित आचार्य श्रुतिदेवजी शास्त्री, संस्कृत, पाली एवं हिन्दी के उद्भट उन्नेता प्रो० श्री रंजन सूरिदेव जी और नई पीढ़ी के उर्जस्वी कवि सुविशिष्ट जनवादी आलोचक, विचक्षण भाषाशास्त्री एवं नैष्ठिक हिन्दी प्रचारक भाई श्री रामाश्रय जी के नाम विशेषतः उल्लेखनीय है। लाख चौकसी के बावजूद अन्ततः मुद्रा-राक्षसकी वक्र दृष्टि से यह स्मारिका भी नहीं बच पाई है। इस सदर्भ में हम नितांत निर्दोष हैं, फिर भी क्षमा चाहते हैं।

स्मारिका की प्रकाशित सामग्रियों के सम्बन्ध में आपके रचनात्मक सुझाव हमें आगे सुधार में मदद मुहैया करेंगे। सर्वमङ्गलम्।

—कणाद कुमार

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभकामना

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विशेषतः १८५७ की राष्ट्रीय क्रांति के बाद कुछ ऐसी दिव्य विभूतियां भारत में अवतरित हुई हैं जिनके आविर्भाव से युगान्तर उपस्थित हुआ है और राष्ट्र की सोयी आत्मा जाग उठी है, मानवता ने नई करवटें ली हैं और नई दिशा पाकर जनता नवयुग के प्रशस्त पथ पर आगे बढ़ी है। हमारे यतिराज स्वनामधन्य महर्षिप्रवर श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी ऐसी ही दिव्य विभूतियों में थे। आप ज्ञानियों में मूर्द्धन्य शुकदेव, व्यास याज्ञवल्क्य, गौड़पाद, गोविन्दमुनि एवं भगवान आद्य शंकराचार्य की परम्परा के वीतराग संन्यासी थे। हमारे स्वर्गीय स्वामी जी ने अपनी विलक्षण दिव्यवाणी एवं लेखनी के सहारे दासता की लौह जंजीरों को तोड़कर भारत जननी को मुक्त करने, राष्ट्र के मेरुदण्ड किसानों में नयी चेतना फूंकने तथा समाज के सर्वांगीण विकास में अभूतपूर्व चमत्कार दिखलाकर राष्ट्रीय स्वातंत्र्य संग्राम के इतिहास में एक सुनहला पृष्ठ जोड़ दिया है, जो गौरवपूर्ण और अपनी मौलिकता के कारण चिर शाश्वत बना रहेगा।

स्वामी जी महान क्रांतिकारी थे। उन्होंने अपने मौलिक चिन्तन एवं दिव्य आत्मानुभूति के सहारे उपनिषद, गीता तथा षड्दर्शनों को उनके वास्तविक अर्थ में समझा और लोक संग्रह की दृष्टि से ज्ञानपूर्वक कर्म किया। वे कहते हैं कि ज्ञानपूर्वक किये गए कर्म, साधारण कर्मों की श्रेणी में नहीं आते। वे तो भगवान् की पूजा—आराधना हैं।

ऐसे दिव्य महापुरुष की स्मृति में आप योग स्मारिका प्रकाशित करने जा रहे हैं, यह जानकर मुझे अतीव हर्ष हुआ है। मैं स्मारिका की सर्वमुखी संपन्नता की मंगलकामना करता हूं।

भवदीय

दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती

राजगुरु मठ, शिवाला, काशी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभकामना

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि स्वामी सहजानन्द योग प्रशिक्षण संस्थान निकट भविष्य में योग-स्मारिका प्रकाशित करने जा रहा है ।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि वर्तमान युग जिस टेढ़े-मेढ़े रास्ते से भटक रहा है, वहां आत्मा, मन एव शरीर का उचित संतुलन बनाये रखने के लिए योग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यह बड़ी अच्छी बात है कि आज देश-विदेश, चारों तरफ योगासनों के प्रति लोगों की आस्था बढ़ रही है। कई संस्थाएं इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं । किन्तु मेरी दृष्टि में योग के अन्य सात अंग यम-नियम आदि भी उपेक्षणीय नहीं हैं । आसनों के साथ-साथ यम, नियम, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि में भी सरल प्रशिक्षण एवं अभ्यास की वैज्ञानिक व्यवस्था कराई जा सकती है। कुछ सस्थाएं ऐसा कर भी रही हैं ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती जैसे सिद्ध महापुरुष की स्मृति में स्थापित यह संस्थान अवश्य ही योग के सर्वांगीण प्रशिक्षण की व्यवस्था कर रहा होगा । स्वामी भी ने जिस समरसता को व्यापक रूप में समाज में पुनः प्रतिष्ठापित करने के अथक प्रयास किये थे उसे इस संस्थान के माध्यम से यदि हम फिर से पनपा सकें तो यह हमारी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी ।

कृपया मेरी यह विनम्र पुष्पांजलि स्वीकार करें ।

शुभकामनाओं सहित,

डॉ० रामकरण शर्मा
निदेशक
राष्ट्रीय सस्कृत संस्थान
२—ए, रामकिशोर रोड,
सिविल लाइन्स, दिल्ली—११००५४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभकामना

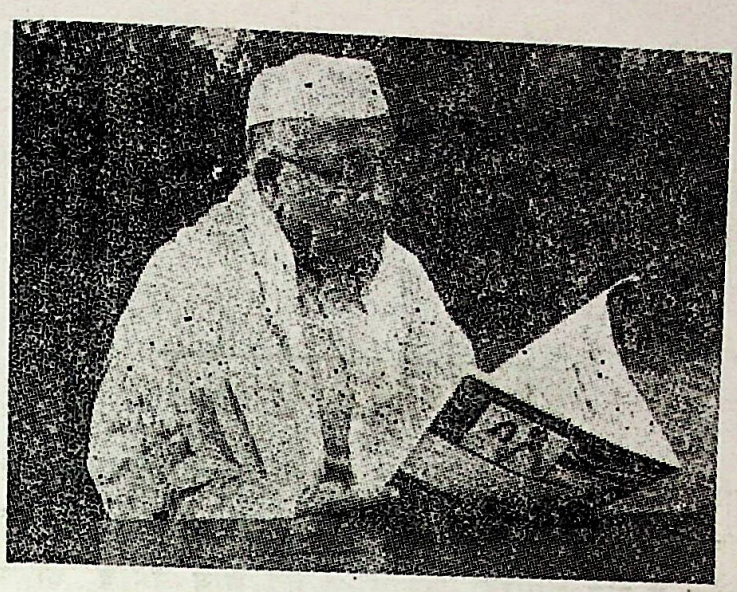

स्वामी सहजानन्द सरस्वती योग प्रशिक्षण संस्थान की स्मारिका के प्रकाशन की सूचना मिली। स्वामी जी की स्मृति को बनाये रखने का जो भी प्रयत्न किया जाय वह स्तुत्य है। स्वामी जी बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। अधिकांश लोग उनके सार्वजनिक क्षेत्र के कामों के द्वारा ही उनको जानते हैं। लेकिन स्वामी जी का दूसरा पक्ष भी उतना ही महान और व्यापक है। संस्कृत वाङ्मय के प्रायः सभी अंगों के वे ज्ञाता, विचारक एवं विद्वान थे। योग के भी वे अधिकारी व्यक्ति और अच्छे मार्गदर्शक थे। उनकी स्मृति में योग शिक्षण का काम चलाना सोने में सुगन्ध है। योग के सम्बन्ध में अज्ञानतावश जो गलतफहमियां फैली हुई हैं उन्हें दूर कर योग को साधारण नागरिक के जीवन का एक आवश्यक और उपयोगी अंग बनाने का प्रयत्न कर योग से समाज और व्यक्ति को लाभ पहुंचाने की चेष्टा की जानी चाहिए। योग का मनुष्य के दैनिक जीवन से गहरा सम्बन्ध है। इसे अनुभव कराकर योग का ध्यान दिलाना और आकर्षण बढ़ाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। इस दिशा में जो भी प्रयत्न किया जाय उसको पूर्ण समर्थन प्राप्त होना चाहिए।

आशा है आप इसी दृष्टिकोण को रखकर स्वामी सहजानन्द योग प्रशिक्षण संस्थान का संचालन करेंगे। योग की शिक्षा के साथ-साथ लोगों को योग के संबंध में उसकी उपयोगिता, उसकी आवश्यकता, उसकी व्यावहारिकता और उसकी अनिवार्यता के सम्बन्ध में भी शिक्षित किया जाना चाहिए। आपके इस प्रयास के लिए मैं आपको बधाई देता हूं।

सद्भावना के साथ
गंगाशरण सिंह
अध्यक्ष
अखिल भारतीय हिन्दी सस्था संघ
७५, जवाहरलाल नेहरू मार्ग,
नयी दिल्ली—११०००२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभकामना

स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती विगत कई वर्षों से स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मारक भवन में योग प्रशिक्षण संस्थान चला रहे हैं। मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष स्वामी जी की स्मृति में योग स्मारिका निकाल रहे हैं। आज समाज को इस शिक्षा की बहुत आवश्यकता है। सारी दुनिया योग—शिक्षा की ओर आकर्षित है और इस दिशा में अनुसंधान कर रही है।

स्वामी जी यहां योग शिक्षा का लाभ जन—साधारण को दे रहे हैं मेरी शुभकामना इनके साथ है। मैं हृदय से चाहता हूं कि उनके सम्पर्क से देश के अधिकाधिक नर-नारी कायिक एवं आत्मिक स्वास्थ्य संप्राप्त कर सके।

राम रत्न सिंह
अवकाश प्राप्त न्यायाधीश
उच्च न्यायालय, पटना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द योग प्रशिक्षण संस्थान समिति

के

सदस्यगण

अध्यक्ष

कुणाल कुमार

उपाध्यक्ष

डा० राम शरण सिंह

डा० छेदी चौधरी

बाल्मीकि शर्मा

रामाश्रय

मंत्री

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

कोषपाल

डा० सी० पी० ठाकुर

कार्यालय मंत्री

ब्रज किशोर नारायण सिंह

विधि परामर्शी

राम नगीना सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडित-लक्षण

अपने स्वरूप का ज्ञान, सत्कार्यों के लिए उद्योग, सहनशीलता, धर्माचरण में तत्परता—इन गुणों के कारण जो कभी अपने जीवन लक्ष्य से च्युत नहीं होता .....

सरदी,-गरमी, भय, अनुराग, समृद्धि अथवा दरिद्रता ये जिसके कार्य में विघ्न नहीं डालते ....

जो निश्चयपूर्वक कार्य को आरम्भ करता है, बीच में नहीं रुकता, समय व्यर्थ नहीं गंवाता और अपने को वश में रखता .....

जो सम्मान मिलने पर फूल नहीं जाता, अनादर होने पर दुःख से संतप्त नहीं होता और विभिन्न परिस्थितियों में गंगा के कुंड-सदृश्य गम्भीर रहता है .....

जो महान् सम्पत्ति, विद्या, ऐश्वर्य पाकर भी नम्रतापूर्ण व्यवहार करता है .....

उसी को पंडित कहते हैं।

पंडित बुद्धि रखने वाले मनुष्य न तो अप्राप्य वस्तु की कामना करते हैं, न नष्ट हुई वस्तु के लिए शोक करते हैं और न विपत्तियों के आने पर मोहग्रस्त होते हैं। —विदुर नीति से

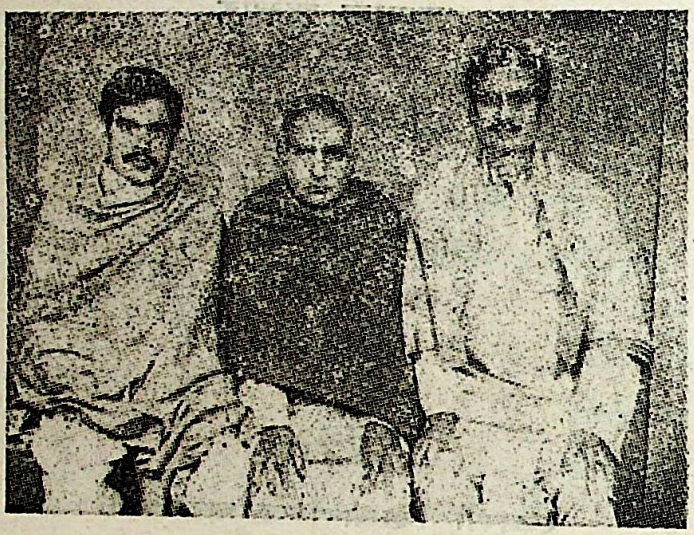

बाएं से —कुणाल कुमार, आचार्य श्रुतिदेव शास्त्री एवं श्री रामाश्रय

स्मारिका
के
प्रस्तुतीकरण
में
इन दोनों प्रतिभा—पुरुषों के अविश्रांत रूपसे तत्पर सार—
सवाही समुष्ण सहयोग मुझ पर एक कर्ज हैं —कुणाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

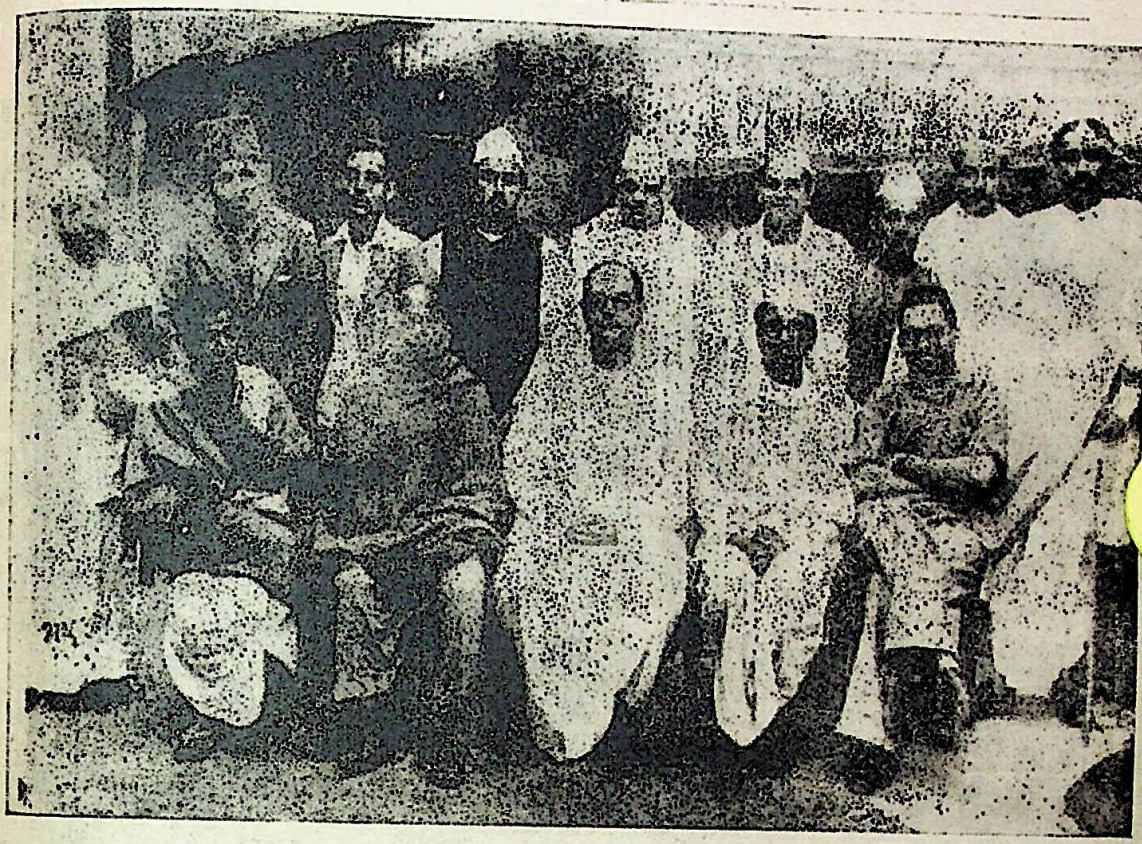

यह चित्र उपलब्ध कराने के लिए योग प्रशिक्षण संस्थान तथा स्मारिका के पाठकगण स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी के निकटतम सहयोगी विद्वद्वर श्री त्रिवेणी शर्मा 'सुधाकर' जी के अनुगृहीत हैं।

बायें से बैठे—श्री किशोरी प्रसन्न सिंह, जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, आचार्य एन० जी रंगा, सोलाबाटली वाला।

बायें से खड़े—असर्फुदीन अहमद चौधरी, कुसमली मियाँ अकबर शाह, सोमनाथ लाहिड़ी, रामकृष्ण खत्री, लाला शंकर लाल, अन्नपूर्णाजी, श्री शीलभद्रयाजी, पंडित पद्मकान्त मालवीय, हरिविष्णु कामथ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्थान की एक विशेष गोष्ठी के अवसर पर लिया गया चित्र !

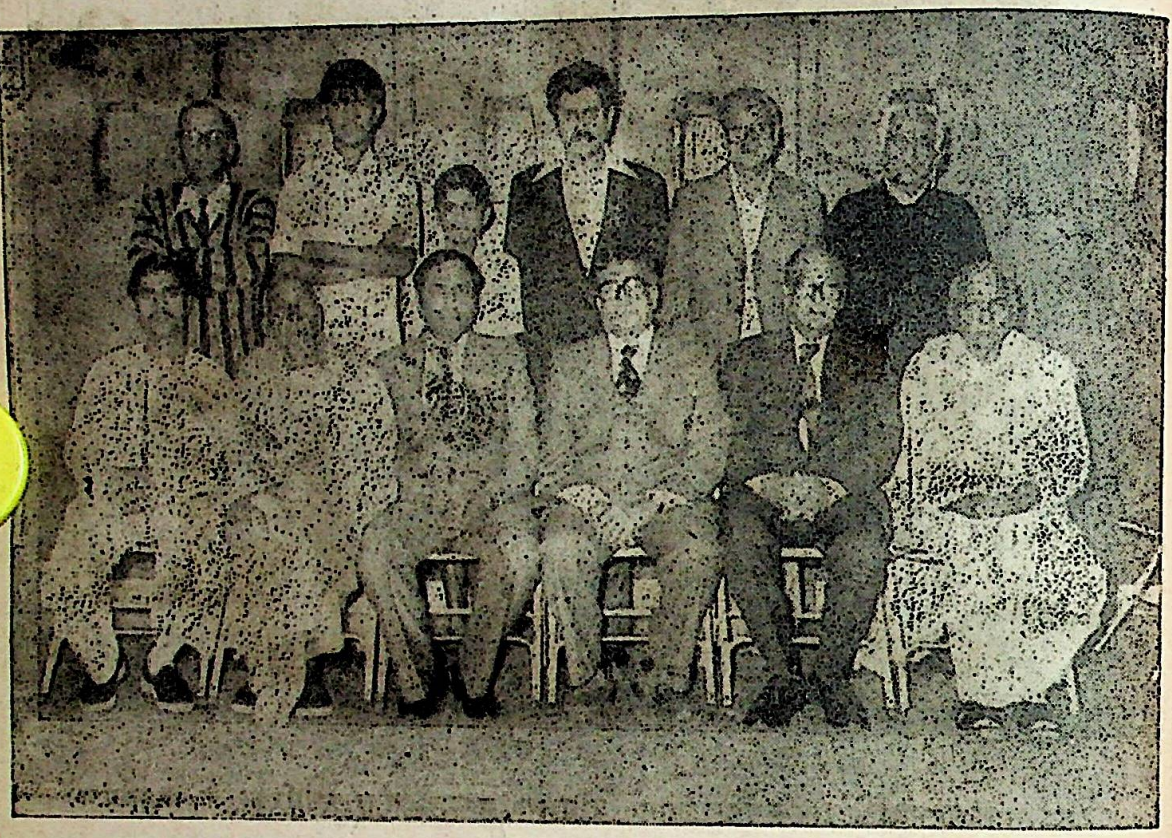

बायें से बैठे :—कुणाल कुमार, स्वामी शिवानन्द सरस्वती, डा० सी० पी० ठाकुर, डा० रामशरण सिंह, डा० छेदी चौधरी, पं० श्रुतिदेव शास्त्री ।

बायें से खड़े :—रामचन्द्र प्रसाद सिंह, राजकुमार, टुनटुन, डा० प्रभात कुमार, रामजनम शर्मा, बृज किशोर नारायण सिंह ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्थापक की कलम से

योग ही जीवन है !

० स्वामी शिवानन्द सरस्वती

योग मेरे जीवन का सर्वस्व है और विगत पांच दशकों से मैं अपनी संपूर्णता में इससे संबद्ध हूं। योग की साधना-आराधना और प्रसार-प्रचार में मुझे अनिर्वचनीय सुखोपलब्धि होती है। यदि यह कहूं कि योग मेरे जीवन का एकांत लक्ष्य है तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

लेखक

स्कूली शिक्षा की परिसमाप्ति के उपरान्त मैंने जाति, देश और समाज की हर संभव सेवा में अपना तुच्छ जीवन समर्पित करने का अडिग निर्णय स्थिर किया। और समष्टि सेवा के महत् कार्य का निष्पादन करने की सम्यक पद्धति एवं प्रभावी प्रेरणा प्राप्त करने के लिए मैं पर्याप्त उत्कटता से किसी सद्गुरु के सान्निध्य—सम्पर्क के लिए आकुल—अशांत रहने लगा। मैंने तुर्श बालपन में ही यह निर्णय भी ले लिया था कि याव जीवन अविवाहित रहूंगा।

उन दिनों जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वतीजी की अतीव सुख्याति थी और लोग बहुत ही श्रद्धापूर्वक यह कहते सुने जाते थे कि बिहटा में स्वामी सहजानन्द सरस्वती नाम के एक अत्यंत दिव्य महापुरुष अनन्तश्रीविभूषित लोकनिष्ठसंन्यासी रहते हैं, जिन्होंने अपने आश्रम में एक गुरुकुल संस्थापित कर रखा है, जहां दुःख दाह दंशित मेधावी छात्रों को आदर्श शैक्षिक संपोषण संप्राप्त है। बिहटा आश्रम पुरातन गुरुकुल पद्धति का एकांत आदर्श था। इस प्रकार जन-जन के कंठ से स्वामीजी की प्रशस्ति सुनकर मैं स्वामीजी के दर्शन के लिए व्यग्र हो उठा। मैंने स्वामीजी को एक पत्र लिखा और उनसे मिलने की इच्छा व्यक्त की: एक सप्ताह के भीतर ही स्वामीजी का बुलावा आया और मैं बिहटा आश्रम पहुंच गया।

तेज, ओज और पौरुष की प्रकाश-प्रतिमा स्वामी जी को देखते ही मेरे मन-प्राण में एक नया शक्ति-स्त्रोत फूट पड़ा और मैंने मन-ही-मन स्वामी जी को अपना तुच्छ जीवन दे दिया। स्वामीजी के दर्शन भाग से उस समय मुझे जो आनन्द मिला, उसे वर्णित करना मेरे लिए 'गूंगे का गुड़' है। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि जिन्हें पाने के लिए युगों से मेरा मन प्यासा था, वह आज प्रत्यक्ष हुए हैं। दर्शन करते ही अपने आप उन पावन चरणों में मेरा मस्तक नत हो पड़ा। उन्होंने बड़े स्नेह से मेरे संबंध में पूछताछ की। उससे मुझे बड़ी सांत्वना मिली। उनकी प्रेम-भरी दृष्टि जैसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaigaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे हृदय के केन्द्र में प्रवेश करती चली जा रही थी। छरहरी देह, गौर वर्ण, प्रसन्न मुखमुद्रा, आगे-आगे अपने—आप बढ़े जाते-से पैर,-दूर-देखती-सी पैनी आँखें और चिन्ता—चिन्तनों में लीन ललाट, यह उनकी दिव्य देह-सम्पदा थी।

वहाँ स्वामीजी के सामीप्य में मुझे तन-मन के तापों से ही मुक्ति नहीं मिली, आत्मा की परम उपलब्धि भगवदानुग्रह भी मिल गया। फिर मैंने प्रफुल्लित मन-प्राण से बिहटा आश्रम की गतिविधियों का अवलोकन किया। आश्रम का पूरा वातावरण स्वामी जी की पावनता तथा आशीर्वाद से लबरेज था। स्वामीजी की उपस्थिति से मुझे ऐसा लगता था, मानो किसी ईश्वरीय शक्ति के सम्मुख खड़ा हूं। जब वे मुस्कराते थे, तो लगता था कि, जैसे स्वर्ग का द्वार खुल गया हो। मैंने आज तक ऐसी ज्योतिर्मयी आंखें नहीं देखीं। स्वामीजी ने जिस अतन-असीम निष्ठा, अमित-अनन्त अन्तरंगता, निश्छल निर्मल अनुराग और सुरभित-समुज्ज्वल समर्पण से इस गिरा-गेह को दर क्षितिजांचलों तक गर्वोन्नत किया था, वह अपने आप में एकाकी, अभूतपूर्व और अनुपम था। मनुष्य मन, वचन और कर्म की एकता करके चलने के लिए विकसित किया गया है। जो मन में है वही वचन में है और जो वचन में है वही कर्म में है—यही उसका स्वरूप है। भीतर कुछ है और बाहर कुछ है—इसे भारत मनुष्य का रूप नहीं मानता। इसीलिए उसके समस्त वाङ्मय इसी साधना में लगे हैं। यही कारण था कि बिहटा आश्रम स्थित गुरुकुल में स्वामी जी छात्रों को संयम की शिक्षा देने के प्रति विशेष सजग थे। वहां मैंने देखा कि प्रवृत्ति का निषेध नहीं था, पर 'प्रवृत्ति ही सर्वस्व है' यह भी नहीं माना जाता था। स्वामी जी वैसी शिक्षा के पक्षधर थे, जिसका लक्ष्य निवृत्ति हो। वहां आचार को सर्वोपरि महत्व प्राप्त था। थोड़े में कहा जा सकता है कि, यहां प्राचीन ऋषि-आश्रम की-सी सब व्यवस्था थी, जिससे छात्रों में निष्ठा, संयम प्रभृति सद्गुणों के प्रकाश की चेतना उत्पन्न होती थी, उनमें उत्साह उमड़ता था और वे चिन्मय-स्थिति तक उठने की प्यास और पात्रता प्राप्त करते थे।

इस विलक्षण शिक्षा संस्था ने ऐसे कार्यक्रम निर्धारित किये थे जिनसे विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो सके। इस शिक्षा-केन्द्र का उद्देश्य था विद्यार्थियों को एक नवीन सुन्दर एवं उज्ज्वल भविष्य के प्रति तैयार करना। सम्यतः विद्या और कला के भण्डार हमारे भारत वर्ष में प्राचीन काल के गुरुकुलों में दी जाने वाली शिक्षा संसार भर में अतुल आदर्श थी। गुरुकुलों की शिक्षा सम्पूर्णतः जीवन को समर्पित थी। हमारे ये गुरुकुल शिक्षा और संस्कार के ज्योति-स्रोत थे। इन गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का ज्ञान पूर्णतः स्फुटित होता था, उनको जीवन जीने की दिशा और आदर्श मिलते थे और उनका जीवन सादा रहते हुए सभी दृष्टियों से वरेण्य होता था। गुरुकुलों में ही आरण्यक और उपनिषदों की रचना हुई तथा पुराण और उप-पुराण प्रस्तुत हुए।

स्वामी जी ने किसानों का एक संगठन भी बना रखा था। स्वामी जी मानते थे कि भारत कृषि-प्रधान देश है और इसका सुख-सौभाग्य कृषि व्यवस्था की सुदृढ़ता पर ही अवलम्बित है। स्वामी जी किसानों के अनेकमुखी उत्थान की दिशा में सतत प्रयत्नशील रहा करते थे और जमींदारों तथा उनके अमलों के अत्याचारों से निरीह कृषकों की सुरक्षा के लिए स्वयं को सदैव तत्पर-तैयार रखते थे। स्वामीजी के किसान-संगठन से पीड़ित—प्रताड़ित किसानों के जीवन में अकल्प्य रीति से नयी ऊर्जा-ऊष्मा का आलोक फैला था और स्वामी जी किसानों के सर्वमान्य नेता के रूप में अथोर यश अर्जित कर चुके थे। कहा जा सकता है कि इस धरती पर स्वामी जी का अवतरण किसानों को उत्तम जीवन देने के लिए ही नहीं बल्कि देश की कृषि-व्यवस्था की तासीर बदलने के लिए भी हुआ था।

मैंने भी उन दिनों 'ग्राम संघ' नामक एक संगठन खड़ा किया था, जिसमें ग्राम्यवासियों की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नियति पर छाये और निरन्तर सघन होते जा रहे कुंठा कुहासे को विदीर्ण कर उस विकुंठ चित्त की स्थापना के प्रयत्न निहित थे जो मानव-मूल्यों से दीप्त और दीनता, हीनता तथा दासत्व भाव से पूर्णतः रिक्त हो। मेरा वह 'संघ' ग्रामीणों को अपेक्षित परिणाम में भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा और शांति उपलब्ध कराने को समर्पित था।

लेकिन कर्ममूर्त्ति स्वामी जी के उज्ज्वल व्यक्तित्व और कल्याणकारी कृतित्व से परिचय के बाद मैंने फैसला किया कि अपने जीवन के अन्तिम मुहूर्त तक स्वामी जी के ही नेतृत्व में कार्य करूंगा।

मैंने अपने इस सुविचारित निर्णय से स्वामी जी को अवगत कराया और उन्नत मना स्वामीजी मेरे इस निर्णय से अतीव प्रसन्न हुए।

इस प्रकार मैं स्वामीजी के साथ रहने लगा। वे प्रेरणा के ज्योति-स्तंभ थे। वे 'प्रोग्राम' के बहुत पक्के थे। प्राण की कीमत पर अपने 'प्रोग्राम' का सम्मान करते थे। उनका कहना था, "जहां प्रोग्राम बना है, वहां मैं अवश्य जाऊंगा। यदि मैं वहां तक जीवित नहीं जा सका, तो मेरी लाश जाएगी।" स्वामीजी जीवन की अन्तिम घड़ी तक अपने इस कथन का अक्षरशः पालन करते रहे।

एक बार नौवतपुर थाने की एक मीटिंग में सम्मिलित होने हेतु स्वामीजी टमटम से जा रहे थे। अकस्मात् रास्ते में टमटम उलट गई और स्वामी जी गम्भीरतः क्षत-विक्षत हो गए। उन्हें टमटम पर बैठा तक नहीं जा रहा था। फिर भी उसी टमटम से जैसे तैसे सभा-स्थल तक गए और मंच पर लेटे-लेटे ही सभा को सम्बोधित किया।

इस प्रकार के सकट-काल में भी अपने प्रोग्राम को पूरा करके ही दम लेना स्वामीजी जैसे सघर्ष शूर, दृढ़-व्रती नर-रत्न के लिए ही सम्भव था। उनमें शारीरिक कष्ट सहने का असीम क्षमता थी। मानसिक नियंत्रण और संयम की बड़ी शक्ति उनमें थी।

मुझे भलीभांति स्मरण है, जहानाबाद सब-डिवीजन की किसी मीटिंग को स्वामीजी सम्बोधित कर रहे थे कि एकाएक भयानक तूफान उठ आया। प्रलय का सा दृश्य उपस्थित हो गया और लगा कि अब सभा निश्चित ही बिखर जायेगी। तभी स्वामी जी की सिंह-गर्जना गूंजी "बैठे रहो, किसकी हिम्मत है जो मीटिंग भंग करेगा।" देखते-देखते तूफान ठहर गया और मुझे ऐसा लगा कि प्रकृति पर भी कर्मवीर स्वामीजी का अदम्य आतंक है। सभा आश्चर्य-स्तब्ध थी और बरबस सबके मुंह से निकल पड़ा—जादू हो गया।

इस प्रकार स्वामीजी के साथ मैं उनके जीवन की अन्तिम घड़ी तक रहा। मुजफ्फरपुर प्राकृतिक चिकित्सालय में अस्वस्थ स्वामीजी की अहर्निश देख-भाल का पुनीत दायित्व मुझ पर ही था। मेरी ही गोद में स्वामीजी ने २६-६-५० को मुजफ्फरपुर में प० मुचकुन्द शर्मा वकील के निवास स्थान पर जीवन की अन्तिम सांसें लीं। उनके निधन की सूचना बिजली की तरह तुरन्त राज्य भर में फैल गई और राज्य के कोने-कोने से लोग उनके अन्तिम दर्शन के लिए पटना आ पहुंचे। बिहार के मुख्यमन्त्री डा० श्री कृष्ण सिंह और श्री कृष्ण वल्लभ सहाय उस समय रांची में थे। स्वामीजी की मृत्यु की खबर सुनते ही उन दोनों ने सवाद भेजे कि जबतक वे लोग पहुंच नहीं जाते तबतक स्वामीजी को समाधिस्थ नहीं किया जाए. मौसम की विकराल प्रतिकूलता के बावजूद दोनों रांची से अन्तिम दर्शन के लिए आए। श्री बाबू इतने दुःखी थे कि कुछ बोल तक न सके और अश्रु की श्रद्धांजलि अर्पित की। अर्थी का जलूस स्वामीजी के आश्रम में बिहटा पहुंचाया गया, जहां उन्हें समाधि दी गई। ऐसी मृत्यु मैंने कभी नहीं देखी। मेरी गोद में लेटे-लेटे स्वामीजी ने एक गहरी सांस ली और ब्रह्मरन्ध्र सहसूसार फाड़कर प्राणवायु निकल गए। स्वामीजी का शव पटना लाया गया।

स्वामीजी जीवन और मृत्यु दोनों ही में अदम्य और आदर्श रहे थे। कई हजार की भीड़ थी। सबलोगों ने खण्डित सर देखा, स्तंभित हुए और स्वामीजी के तेज की सराहना करने लगे। इस प्रकार स्वामी की जीवन-यात्रा पूरी

Rashtriya Maha Mumukshu Mandal Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jaipur.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by IKS. E-Grant-

हुई। स्वामीजी निःसन्देह मानव भविष्य के दार्शनिक थे। उनकी अद्भुत प्रतिभा के बारे में सोचने पर आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। वे एक साथ ही एक महान राजनीतिक क्रांतिकारी, समाज-सुधारक, सांस्कृतिक अग्रदूत, दुर्लभ दार्शनिक तथा अभूतपूर्व योगी और साधक हुए हैं। एक ही व्यक्ति में इतने बहुमुखी आयामों का संतुलन मिलना अपने ही में एक विराट् विस्मय है। उनका बाह्य स्वरूप भी अत्यंत मोहक तथा दर्शनीय था। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव वैसा ही पड़ता था जैसे हिमालय प्रशान्त शुभ्र शिखर का। उनकी बोटी-बोटी से चमक फूटती थी। दर्शक की आंखों में नहीं अंटने वाला उनका शारीरिक ओजस उनके आत्मतेजसे बहुगुणित निखार पाता था।

स्वामीजी की मान्यता थी कि प्रत्येक देश जाति या मनुष्य अपने ही भीतरी स्वभाव तथा अन्तश्चेतना की दिशा में विकास पाकर उन्नत हो सकता है। वे भारतवर्ष को सर्वप्रथम अन्न-वस्त्र से भरा-पुरा प्रसन्न तथा जीवन-मांसल देखना चाहते थे, जिससे यह और भी मनोयोगपूर्वक सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर हो सके। स्वामी कहा करते थे कि पश्चिम की जो समाजवादी आर्थिक तथा राजनीतिक मान्यताएं हमारे द्वार पर दस्तक दे रही हैं, उनका अभिनन्दन—उपयोग हमें अपनी परिस्थितियों की आवश्यकताओं के अनुरूप ही अवश्य करना चाहिए लेकिन अपना रचनाकर्म, अपनी विद्या, अपना स्वभाव, अपना आत्मगौरव पश्चिमी सोच-समझ के हाथ में सौंपकर अपने ही जीवन मूल्यों के प्रति चिंता-चेष्टा अपने हृदय से परे कर देना स्वामी जी को कतई गवारा नहीं था।

स्वामीजी दासता और शोषण के घोर विरोधी थे। जीवन के अन्तिम मुहूर्त तक दुर्नीतियों के विरुद्ध उनकी युयुत्सुमुद्रा अकुण्ठ रही। नैतिक मूल्यों से विभासित आदर्श की वह राह उन्हें प्रिय थी जो सिद्धान्त रक्षा के निमित्त मर मिटने की प्रेरणा और शक्ति देती हैं। स्वामी जी महान सरलता और पावनता की ईश्वरीय विभूति थे। उनसे मुझे जो मिला उसका शतांश भी जीवन में उतार सका तो अपने को अत्यंत बड़भागी समझूंगा।

स्वामीजी के देहावसान के बाद मैंने दो प्रण किए-प्रथम यह कि पूज्य स्वामी जी की स्मृति में एक भव्य स्मारक भवन खड़ा करूंगा और द्वितीय यह कि मैं अपने पूरे बल से योग के प्रचार-प्रसार को जीवन की अंतिम घड़ी तक समर्पित रहूंगा।

फिर मैं पूरी निष्ठा से इन दोनों संकल्पों को मूर्तरूप देने की दिशा में नियोजित हो गया।

यह ठीक है कि पटना स्थित स्वामी सहजानन्द स्मारक भवन के दर्शन मुझको सुख देते हैं लेकिन मैं उसकी वर्तमान गतिविधियों से बहुत संतुष्ट नहीं हूं। मैं यह कहने को विवश हूं कि कुछ लोगों की महत्वाकांक्षा इस स्मारक भवन की पवित्रता पर चोट कर रही है। लेकिन मेरा विश्वास है कि स्मारक समिति के अध्यक्ष श्री रामाश्रय प्रसाद सिंह, मंत्री, बिहार सरकार की निसर्ग जागरुकता एवं न्याय निष्ठा किसी की भी स्थिति में स्मारक भवन की धवलता पर किसी भी कोटि की मलिनता का आधिपत्य उभरने नहीं देगी। रामाश्रय बाबू जिस मनोयोग से स्मारक भवन की भव्यता उत्तरोत्तर उन्नत करते जा रहे हैं उससे मुझे अथोर आशाएं हैं। इनके सुयोग्य नेतृत्व में ब्रह्मलीन स्वामी जी का यह स्मारक मानव मात्र के लिए दिव्य प्रेरणा का अक्षय स्रोत बने, मेरी यही कांक्षा है। भगवान रामाश्रय बाबू को लम्बी उम्र दें।

जहां तक 'योग' का प्रश्न है, मैंने पहले भी कहा है कि यह मेरी सांस है। जब तक मेरी सांस है तबतक मैं 'योग' के प्रचार-प्रसार को अडिग निष्ठा से समर्पित रहूंगा। 'योग' बहुत बचपन से ही मेरे जीवन का प्रधान अंग रहा है और आज ८५ वर्ष की अवस्था में भी मैं इसी के पुण्य प्रताप से सर्वतः स्वस्थ और संतुलित हूं।

स्वामी सहजानन्द योग प्रशिक्षण संस्थान की विधिवत स्थापना स्वामी सहजानन्द सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मारक समिति के साथ ही १२ जनवरी १९६४ ई० में हुई । यही कारण है कि स्मारक समिति के विधान में भी योग शिक्षा के प्रचार-प्रसार की योजना प्रमुख रूप से सन्निहित है । समय-समय पर बिहार सरकार ने संस्थान को अनुदान भी दिया है पर संस्थान के प्रति सरकार का सहयोग-क्रम रह-रहकर अकारण भंग भी होता रहा और अंत में मैंने सरकारी अनुदान की चिंता ही छोड़ दी और संपूर्ण शक्ति से योग शिक्षा की कार्य—गति तीव्रतर कर दी। हां, यह दुःखद बात है कि जहां सारी दुनिया योग-शिक्षा के वैज्ञानिक अनुसंधान की दिशा में पर्याप्त उत्कटता से व्यस्त है, वहीं बिहार सरकार इसका महत्व समझने से कतराती चल रही है ।

योग के द्वारा कायिक और मानसिकी उन्नयन के साथ-साथ आध्यात्मिक उत्कर्ष भी साधित होते हैं । योग-विद्या विश्व में अनुपम है जिसका सम्यक ज्ञान भारत के अतिरिक्त और किसी देश को पहले उपलब्ध न था। पर खेद है कि, भारतवर्ष में, जो इस विद्या का जनक देश है, इसका प्रचार और अपेक्षित गति से नहीं हो रहा हैं । हमारे विद्यालयों में जो पाश्चमीय पद्धति के ड्रील और कवायद कराए जाते हैं उनके स्थान पर यौगिक क्रियाओं का अभ्यास कराना अतीव लाभप्रद होगा। बालपन से ही यदि यौगिक क्रियाओं का अभ्यास किया जाए तो दिव्य काया का निर्माण होने लगता है। योग के अभ्यास से स्त्री पुरुष दोनों ही जितेन्द्रिय होकर इन्द्रियों पर इच्छानुसार विजय पा सकते हैं और अहर्निश आत्मा की एक-सी, आनन्दमयी स्थिति में रह सकते हैं। निर्विवाद रूप से यौगिक क्रियाएं आबाल-वृद्ध-युवा नर-नारी मात्रा के लिए दिव्य देन हैं । इन क्रियाओं का शिक्षण प्राप्त कर हजारों आबाल युवा वृद्ध नर-नारी अनेक असाध्य रोगों तथा हीनताओं से मुक्त होकर दिव्य सुख लूट रहे है, आध्यत्मिक प्रसाद से तृप्त हो रहे हैं। योग के सहारे मनुष्य इसी जीवन में ईश्वरीय आशीष से अपने असली स्वरूप में स्थित हो सकता है

मैं उन महानुभावों को हृदय से धन्यवाद देता हूं जिनके आर्थिक सहयोग मुझे यथावसर संस्थान को उन्नत-प्रगत रखने में पर्याप्त उदारतापूर्वक-उपलब्ध रहे हैं । सर्वश्री रामाश्रय प्रसाद सिंह, मंत्री, बिहार सरकार, मथुरा प्रसाद सिंह अध्यक्ष, बिहार को-आपरेटिव बैंक, पटना, डा० वाई० के सिन्हा, अध्यक्ष बिहार फर्मास्टयूकल कारपोरेशन, पटना, बाल्मीकि प्रसाद सिंह भू०पू० जज पटना हाईकोर्ट, राम रत्न सिंह भूतपूर्व जज, पटना हाई कोर्ट, डा० रामशरण सिंह जी (राजेन्द्रनगर पटना) डा० सी० पी० ठाकुर (एक्जीविसन रोड, पटना) डा० छेदी चौधरी [सिन्हा लाइब्रेरी रोड, पटना], कैलाश राय [एडवोकेट, नाला रोड पटना] बाल्मीकी शर्मा [रेलवे पुलिस अधीक्षक, पटना] एवं शिवनारायण सिंह [प्राचार्य कदमकुंआं] के नाम मैं कभी भूलना नहीं चाहूंगा। वे सारे महानुभाव योगः-पूजन में सतत मेरे साथ हैं ।

वे अनेक सज्जन भी समान रूप से धन्यवाद के पात्र हैं, जिनके सहयोग से संस्थान इस स्मारिका का प्रकाशन सम्भव कर सका है । राज्य तथा देश के अनेक हिस्सों में सैकड़ों बार निःशुल्क योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर सकने में संस्थान की समर्थता के मूल में इन्हीं सज्जनों की उदारता रही है ।

संस्थान उन मनीषी लेखकों के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करता है जिनके लेखकीय सहयोग से स्मारिका सार्थक हुई है।

संस्थान के अध्यक्ष युवा साहित्यकार, पत्रकार एवं यशस्वी कवि श्री कुणाल कुमार की कल्याणमयी कर्मण्यता को मैं किन शब्दों में सराहूं, नहीं जानता।

इनके उन्नत विचार और प्रभावी प्रयत्नों से संस्थान ने आशातीत प्रगति की है। भगवान इन्हें स्वस्थ-सानन्द रखें, मेरी यही मंगल-कामना है ।

और, अन्त में मैं आप सुधी सज्जनों से अनुरोध करता हूं कि स्मारिका का अध्ययन कर और योग को अपने जीवन में उतार कर बहुमुखी सुख-शांति का उपभोग करें।

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समन्वित राजयोग और एकोलोजिकल बैलेंस

० नवल किशोर सिंह

योग उस कला या तकनीक को कहते हैं, जिससे व्यक्ति स्वेच्छा से विश्व की समष्टि से अपने को मिला सके, युक्त कर सके। अपने व्यक्तित्व की भौतिक सीमाओं से सीमित रहते हुए भी वह मुक्त हो सके।

योग उस प्रणाली को कहते हैं जिससे मनुष्य अपने चतुर्दिक के वातावरण (एनवाइरणमेंट) से अपने को एक कर सके।

अपने चारों ओर दीवारों के रहते हुए भी मनुष्य योग के सहयोग से निर्बन्ध होजाता है। इसी को आज वैज्ञानिक भाषा में एकोलोजिकल संतुलन कहते हैं।

पर यह सर्वांगीन योग बिना अपने शरीर और मन के संतुलन को प्राप्त किये नहीं हो सकता।

इसीलिये योग का पहला कदम है, अपने शरीर और मन को वश में लाना—यम और नियम द्वारा।

यम से हमारा शरीर अपने काबू में आ जाता है और नियम से मन की धारा नियन्त्रित हो जाती है।

पर यह केवल सोचने से ही सम्भव नहीं। इसके लिये नित्य प्रति अभ्यास की आवश्यकता है इसीलिए योग का दूसरा कदम है—आसन-प्राणायाम।

वैज्ञानिक कल्पना का एकोलोजिकल योग यहीं समाप्त हो जाता है, वह इससे आगे नहीं जाता। इन्हीं दो कदमों से मनुष्य का नैतिक, शारीरिक और मानसिक संतुलन हो जाता है।

पर धार्मिक योग इस वैज्ञानिक योग से बहुत आगे जाता है चूंकि उसका ध्येय है मनुष्य को पशुता के स्तर से उठाकर देवता की गरिमा देना।

इसीलिए जब कोई शारीरिक और मानसिक नियन्त्रण और संतुलन प्राप्त कर लेता है तब तीसरा कदम आता है। उस तीसरे कदम को प्रत्याहार धारणा की संज्ञा दी गई है। प्रत्याहार नकारात्मक (नीगेटिव) है। धारणा सकारात्मक (पोजीटिव है।) प्रत्याहार से अपने बहिर्गामी मन को अन्तर्गामी बनाया जाता है ताकि वह एकाग्र हो सके। जब मन एकाग्र हो जाता है अपने नियन्त्रण में आ जाता है तब उसे किसी एक बिन्दु पर केन्द्रीभूत करना आवश्यक हो जाता है क्योंकि उसका केन्द्रीकरण की शक्ति बढ़ने के मन की संकल्प शक्ति उसी तरह बढ़ जाती है जैसे प्रकाश किरणों की शक्ति केन्द्रीकरण से तीव्र हो जाती है। तब आता है चौथा और आखिरी कदम ध्यान और समाधि का

इस तरह प्रत्याहार के द्वारा बाहरी विषयों से लौटकर मन धारणा की प्रक्रिया द्वारा किसी एक बिन्दु पर केन्द्रीभूत हो जाता है। वह बिन्दु चाहे भगवान की कोई प्रिय मूर्त्ति हो अथवा किसी महापुरुष का रूप अथवा कोई महान विचार या प्राकृतिक ससार का कोई अवयव—जैसे सूर्य, चांद, तारा, हरी-भरी पृथ्वी, हिमाच्छादित पर्वत या बहती हुई नदी या कमल से भरा सरोवर या केवल सामनेकी सफेद दीवार। जिस बिन्दु पर मन एकाग्र हो सके एक ही क्षण के लिये सही उसी पर मन को केन्द्रित करना धारणा है।

जब अनेकानेक विषयों में विकेन्द्रित मन धारणा से एक विषय पर केन्द्रित हो जाता है तब उसी बिन्दु पर मन को थोड़ी देर तक स्थित रखने की प्रक्रिया को ध्यान कहते हैं। वायुहीन स्थान में जैसे दीपक की शिखा बिना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation Kolkata.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिला-डुले ज्योति की ऊर्ध्वगामी धारा बनकर जलती रहती है उसी तरह ध्यान में मन की दीपशिखा जलती रहती है। और इस तरह मन उस बिन्दु में जब प्रवेश कर जाता है तब उसे समाधि की संज्ञा दी जाती है। तब जैसे घोर निद्रा में मनुष्य दिक्कालातीत हो जाता है वैसे ही वह समाधिस्थ पुरुष आकाश और सीमा को पार कर वहां पहुंच जाता है। जहां न दिन है, न रात है, केवल शिव ही शिव हैं। इस स्थिति में हाड़—मांस में बंधा मनुष्य बहुत देर तक नहीं रह सकता पर यदि थोड़ी देर तक भी इस स्थिति में रहने का अभ्यास हो जाय तो वह उसी तरह अपने दैनिक जद्दोजहद के लिये नयी स्फूर्ति लेकर तैयार हो जाता है जिस तरह गाढ़ी निद्रा के बाद। निद्रा और समाधि की स्थिति यद्यपि एक-सी है तथापि उनमें यह एक बड़ा अन्तर है कि निद्रा विस्मृति की अवस्था में होती है पर समाधि जागृति की अवस्था में। निद्रा में मनुष्य चेतना के अपरा स्तर पर चला जाता है, समाधि में चेतना के स्तर पर। निद्रा सब-कनसस सब-मेन्टल है। समाधि सुपर-कनसस है सुपरा-मेन्टल है। दोनों में यही मुख्य भेद है।

संक्षेप में मैंने यहां राजयोग की चर्चा की। इसका विशद निरूपण पातंजल योग सूत्र है। आधुनिक युग में स्वामी विवेकानन्द ने इसका श्रेष्ठतम विश्लेषण किया है। राजयोग को सांख्ययोग अथवा संन्यास योग अथवा अष्टांगयोग भी कहते हैं। यह सचमुच राजयोग है चूंकि इसमें सभी योगों का समन्वय है। सांख्ययोग इसे इसलिए कहा गया है चूंकि यह कपिल के सांख्य दर्शन पर आधारित है। इसे सन्यासयोग इसलिए कहा गया है चूंकि यह संन्यास-परक है और इस योग की सिद्धि के लिये घर-द्वार और गृहस्थ जीवन का परित्याग कर देने का आदेश है। इसीलिए यह निवृत्तमार्गी है जैसाकि बौद्ध धर्म का अष्टांग मार्ग। इसे अष्टांग योग इस लिए कहा गया है चूंकि इसके आठ अंग है चार भागों में विभाजित जैसा मैंने ऊपर बतलाया है।

राजयोग अथवा सांख्ययोग का आधार है उपनिषदों की उपासना प्रणाली जो वैदिक याज्ञिक जीवन प्रणाली का विकास है। पर उपनिषदों में वह व्यवस्थित रूप से क्रमबद्ध नहीं है। उसी को महर्षि पातंजलि ने अपने जीवनके विचार आचार और अनुभूति के आधार पर अष्टांगी योग की कड़ियों में बांध दिया। पर संन्यास-मार्गी होने के कारण इससे लोक-संग्रह में बाधा होने लगी। देश के अच्छे लोग, मेधावी लोग, अधिक से अधिक संख्या में घर-द्वार छोड़कर संन्यासी होने लगे और समाज में दुष्ट जनों का आधिपत्य होने लगा जिसके फलस्वरूप महाभारत युद्ध हुआ और भगवान कृष्ण की सहायता से पाण्डवों ने कौरवों और कौरवों के सहायकों का विनाश करके फिर एक बार भारतीय समाज को परिष्कृत कर दिय और नव निर्माण का अवसर उन्मुक्त किया। भगवान कृष्ण का जीवन के युद्ध क्षेत्र में दिया गया हमें सन्देश मिला।

उसी सन्देश को व्यास ने श्रीमद्भगवद्गीता में विस्तृत रूप दिया जो आज गीता योग अथवा निष्काम कर्मयोग अथवा केवल कर्मयोग के नाम से विख्यात है। यह योग भी राजयोग पर ही आधृत है चूंकि गीता का आध्यात्मिक आधार उपनिषद ही है। केवल इस गीता योग में कर्मयोग से भक्तियोग पर अधिक बल है। पर इस भक्तियोग का आरम्भ है कर्म से और अन्त है ज्ञानयोग में। वह दोनों योगों को एक कर देती है। वास्तव में यह भी राजयोग से ऊंचे स्तर का समन्वित योग है जिसका सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक निरूपण श्री अरविन्द ने एन्टेगरल योग के नाम से किया है और सर्वश्रेष्ठ व्यावहारिक प्रयोग महात्मा गांधी ने किया। यह गीता योग प्रवृत्ति-मार्गी है, लोक-संग्रही है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Contributed by Sri Gurukul Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तारतम्य

तपस्वी बोधिसत्व पद्मसरोवर के सौन्दर्य पर मुग्ध हो उठे। वे सरोवर में उत्तर कमल-सुगंध से तृप्तिलाभ करने लगे। तभी तट पर स्थित एक दिव्यवर्णा देवकन्या ने उन्हें संबोधित किया—"भिक्षु, तू बिना कुछ दिये कमल पुष्प सूंघता है, यह चोरी है। तू गंध—चोर है।" बोधिसत्व गंभीर हो गये—"देवी, न मैं कमल तोड़ता हूं, न उसका अपहरण करता हूं। मैं चोर कैसे हूं?"

देवकन्या के उत्तर देने से पहले एक अन्य व्यक्ति निर्भय हो सरोवर में घुसा और कमल तोड़ने लगा। बोधिसत्व ने देवकन्या की ओर निहारा, फिर बोले—"यह व्यक्ति निर्दयता-पूर्वक कमल तोड़ रहा है, और सरोवर को अपवित्र कर रहा है। देवी, तुम इसे क्यों नहीं रोकती? देवकन्या ने गंभीरता से कहा—"तपस्वी, लोभ में डूबे संसारी जीव पर धर्मरक्षा का भार नहीं है। मेरे वचन उसके लिए नहीं हैं, किन्तु जो धर्मरत है, नित्य पवित्रता हेतु प्रयत्नशील है, उसका अणु-मात्र पातक महामेघ-सम प्रतीत होता है।"

बोधिसत्व को धर्म बोध हुआ। उन्होंने पश्चात्ताप से सिर झुका लिया।

—सुरेश पाण्डेय

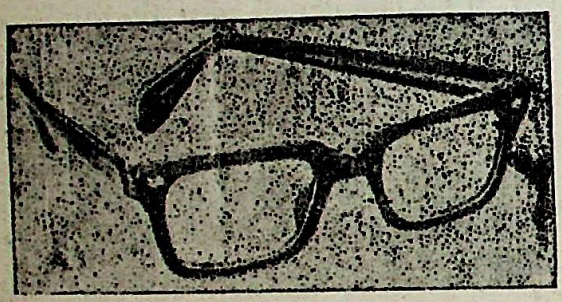

क्या आपको कम दिखाई पड़ता है?

आँख में दर्द होता है?

आँख से पानी आता है?

आँख में सुर्खी छा गयी है?

आधे या समुचे सर में दर्द रहता है?

तो

हमारे ५५ वर्ष के अनुभवी नेत्र-ज्योति विशेषज्ञ से निःशुल्क परीक्षण करा कर अविलम्ब चश्मा लेकर लाभ उठावें।

क्राउन स्पेक्टेकल्स एण्ड कम्पनी (रजि०)

सुराजपुर : : पटना—८००००८

टेलीफोन—५०९९१

अमेरिकन आफ्टी ऑटिकल बहुरापन ध्वनि यंत्र के एकमात्र अधिकृत विक्रेता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योग : शान्ति का मूलमन्त्र

पं० रामपदार्थ शर्मा

[प्रस्तुत लेख स्वनामधन्य विद्वन्मूर्धन्य पं० रामपदार्थ शर्माजी की अन्तिम रचना है। स्मारिका के माध्यम से हिन्दी-जगत् के लिए यह उनका अन्तिम सारस्वत सन्देश है। विगत दिनांक २ फरवरी (सन् १९८२ ई०) को ७२ वर्ष की अवस्था में उनका दुःखद देहावसान हो गया! स्वामी सहजानन्द स्मारक-समिति के वे सदस्य थे और संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित। वे बिहार में चिरकाल तक संस्कृत-शिक्षा के कर्णधार रहे। उनकी संस्कृत-सेवा चिरस्मरणीय रहेगी। हार्दिक खेद है कि उनके जीवनकाल में यह लेख प्रकाशित नहीं हो सका। इस लेख को हम उनकी पुण्यस्मृति-स्वरूप स्मारिका में प्रकाशित कर रहे हैं। —स०]

पातंजल योगसूत्र में योग की परिभाषा के क्रम में कहा गया है कि 'योगश्चित्तवृत्ति-निरोधः', अर्थात् मानव-चित्त की जो अनेक वृत्तियाँ हैं, उनके निरोध को—रोकने को—ही 'योग' कहते हैं। इसी को 'अष्टांग योग' भी कहते हैं; क्योंकि पतंजलि मुनि के अनुसार, योग के आठ अंग कहे गये हैं। 'योगः कर्मसु कौशलम्', यह भी योग की परिभाषा है। अपने-अपने भिन्न-भिन्न कर्मों में कुशलता—निपुणता को योग कहते हैं। यों तो, योग एक दर्शन का विभेद है और इसे आस्तिक दर्शन माना जाता है। हालाँकि, कहा तो जाता है कि 'एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।' गीता में अनेक प्रकार के योगों का उल्लेख प्रत्येक अध्याय के अन्त में पाया जाता है। जैसे प्रथमाध्याय के अन्त में 'अर्जुन-विषादयोग', द्वितीयाध्याय के अन्त में 'सांख्य-योग', तृतीयाध्याय के अन्त में 'ज्ञानकर्मसंन्यास-योग' इत्यादि।

इस प्रकार योग की अनेक परिभाषाएँ शास्त्रों में पाई जाती हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जिस योग का उपदेश दिया है, वह योग योगदर्शन के पतंजलि मुनि के द्वारा वर्णित और प्रतिपादित योग से भिन्न है, किन्तु योग का वास्तविक रूप और व्यावहारिक रूप वही है। गीता में योगी का वर्णन करते हुए भगवान् ने योगी और संन्यासी में कोई अन्तर नहीं माना है। भगवान् ने कहा है :

'अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः॥'

वस्तुतः, फल की कामना का त्यागपूर्वक अपने कर्त्तव्य को करनेवाला ही योगी है और वही संन्यासी भी है। जो सारे संकल्पों को त्याग दे और कर्मफल की आसक्ति से दूर रहकर अपने विहित कर्त्तव्य का पालन करे, वही योगी है और वही संन्यासी है। संन्यास शब्द का अर्थ ही है अच्छी तरह त्याग और वह त्याग होना चाहिए कर्मफल का। भगवान् ने स्पष्ट कहा है :

'यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव।

योग के नाम से आज जिस क्रिया-कलाप का सामान्यतः बोध होता है, वह तो योग के आठ अंगों में एक है। वस्तुतः, योग तो चित्तवृत्तियों के निरोध के द्वारा समदर्शिता की प्राप्ति ही है। भगवान् ने गीता में कहा भी है :

'सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥'

फलतः, योग का दूसरे शब्दों में अर्थ हुआ समदर्शिता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे फिर गीता में भगवान् इसी विषय को दुहराते हैं और कहते हैं कि—

'आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः॥'

अतः, समदर्शिता ही योग का लक्षण माना जा सकता है और वही योगी सर्वश्रेष्ठ माना गया है, जो समदर्शी हो।

वर्त्तमान काल में, देशों और राष्ट्रों में, जो पारस्परिक वैमनस्य और वैमत्य का वातावरण व्याप्त हो रहा है, उसमें तो इस योग की उपयोगिता सर्वाधिक सिद्ध होती है। यदि भगवान् कृष्ण के बताये हुए योग और योगी के गुणों का प्रचार और प्रसार किया जाय और विश्व के राष्ट्रनेता उसको कार्यरूप में परिणत करने की चेष्टा करें, तो निश्चय ही शान्ति और सौहार्द का वातावरण अनायास व्याप्त हो जायगा और आणविक युद्ध तथा प्रलयकारी अस्त्रों की जरूरत ही नहीं रह जायगी। क्योंकि, जब समता या समदर्शिता का बोध हो जायगा, तब कौन किसका और क्यों विरोध करेगा?

इस प्रकार, यद्यपि योग की पारलौकिक उपयोगिता न भी मानी जाय, तथापि ऐहलौकिक उपयोगिता तो सिद्ध हो ही जाती है। योग की शिक्षा की आवश्यकता इसी कारण से सिद्ध होती है; क्योंकि आज का शिक्षित-समाज भी योग के सिद्धान्तों की अनभिज्ञता के कारण शिक्षा का उपयोग विकास के लिए नहीं करके अपने विनाश के लिए करने पर तुला हुआ है। यही कारण प्रतीत होता है कि भगवान् ने महाभारत के युद्ध से विमुख हो रहे अर्जुन को योगी बनने का उपदेश दिया है और योगी को सर्वोपरि बताया है:

'तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन॥'

इस प्रकार, विद्या-विनय-सम्पन्न अर्जुन को भी योगी बनने के लिए भगवान् का प्रेरित करना यह सिद्ध करता है कि योगविद्या सभी विद्याओं और गुणों से ऊपर है और इस योग की शिक्षा और अभ्यास के अभाव में अन्य विद्याएँ और गुण सार्थक सिद्ध नहीं हो सकते।

यह बात निश्चय ही सर्वसम्मत है कि उपर्युक्त योग का अभ्यास और उसकी संसिद्धि आसान नहीं है। बड़ी कठिनाई और साधना के बाद ही उसकी प्राप्ति हो सकती है। किन्तु, इस कठिनाई के भय से उसे त्यागना भी उचित नहीं है; क्योंकि बिना योग के तो सारे ज्ञान अकिंचित्कर हो जाते हैं। यह शंका अर्जुन के मन में भी उठी थी और उनके पूछने पर भगवान् ने स्पष्ट कहा है कि:

'पार्थ नैवेह चामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
न हि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति।'

इसलिए, जहाँतक और जितना भी योग का अभ्यास किया जा सके, वह कल्याणकारी ही होगा। 'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।' इसी योग को ज्ञानयोग और कर्मयोग के रूप में दो भागों में भी बाँटा गया है। सबका सारभूत सिद्धान्त तो 'सर्व-कर्मफल-त्याग' और 'सर्वभूत-समदर्शिता' ही माना जा सकता है: निष्काम कर्म और सभी जीवों को अपने समान समझना ये दो ही ऐसे गुण हैं, जिनसे आज की विनाशोन्मुख दुनिया की रक्षा की जा सकती है।

त्रिकालदर्शी मुनियों ने योगविद्या के जिस रूप का वर्णन किया है, वह जैसे प्राचीन काल में उपयोगी था, वैसे ही वह आज भी उपयोगी है और भविष्य में भी उपयोगी रहेगा।

विश्व में शान्ति और सौहार्दपूर्ण वातावरण के सर्जन के लिए योग की शिक्षा और योग के सिद्धान्त का प्रचार ही एकमात्र मार्ग है; क्योंकि जबतक समदर्शिता और कर्मफल-त्याग की भावना मानव में नहीं जगेगी, तबतक स्थायी शान्ति स्थापित हो ही नहीं सकती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्र जागरण के अग्रदूत स्वामी सहजानंद

डा० आनन्द नारायण शर्मा

नए भारत के निर्माताओं में महान् वर्चस्वी नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती का नाम अग्रगण्य है। स्वामीजी आधुनिक युग में भगवान परशुराम के अवतार थे। परशुराम की विशेषता थी—अग्रतः सकलं शास्त्रं पृष्ठतः सशरं धनुः" यानी शास्त्र और शस्त्र दोनों पर उनका समानाधिकार था। स्वामी सहजानद जी भी संस्कृत भाषा के उद्भट विद्वान थे। उनके द्वारा प्रणीत गीता का भाष्य "गीता हृदय" उनके असाधारण पांडित्य का प्रमाण है। इसके अतिरिक्त "ब्रह्मर्षिवंश विस्तर" उनके अनुसंधित्सु व्यक्तित्व को रेखांकित करता है। लेकिन जैसे परशुराम शास्त्रज्ञ होने के साथ शस्त्र-विद्या के अनुपम आचार्य थे, वैसे ही स्वामी जी एक विलक्षण वाग्मी होने के अतिरिक्त संघर्षशील योद्धा भी थे। उनके जीवन का प्रत्येक पल कठोर कर्म से दीप्त था। उन्होंने अपनी अद्भुत रणनीति से स्वाधीनता—संग्राम को एक नया आयाम दिया।

भगवान परशुराम और स्वामी सहजानंद सरस्वती में एक और बहुत बड़ी समानता है। परशुराम के संबंध में कथा है कि उन्होंने समुद्र को पीछे धकेल कर उससे सह्याद्रि की भूमि छीन ली थी। वहां उन्होंने कृषि संबंधी अनेक प्रयोग किए। एक प्रकार से वे कृषि-क्रांति के जनक थे। स्वामी जी ने भी यह अनुभव किया था कि जब तक किसानों की स्थिति में सुधार नहीं होता, तब तक न तो राष्ट्र का कल्याण संभव है और न स्वाधीनता-प्राप्ति का ही कोई अर्थ होगा। इसलिए वे पूरी शक्ति और तत्परता से किसानों के संगठन में लग गए। उन्होंने लाखों-लाख किसानों को अपनी विपन्नावस्था का बोध कराकर आर्थिक शोषण की जड़ तो खोद ही दी, आजादी की लड़ाई को भी नई गति और प्रेरणा प्रदान की।

स्वामी जी की दूरगामी दृष्टि ने बहुत पहले देख लिया था कि इस कृषि-प्रधान देश का भविष्य कृषकों के साथ जुड़ा हुआ है। अतः जब तक उनकी स्थिति में परिवर्तन नहीं होता उन्हें जमींदारों की दासता और शोषण से मुक्ति नहीं मिलती, तब तक विकास की समस्त संभावनाएं कागजी रहेंगी। वे अक्सर कहा करते थे कि "किसान हमारा भगवान है और मैं इसे हर्गिज नहीं बरदाश्त कर सकता कि कोई उसका अपमान करे"। यह भी कहना अनुचित न होगा कि जिस निष्ठा से भक्त भगवान की उपासना करता है, उसी निष्ठा और उत्साह से उन्होंने किसानों की सेवा की और उनको सुखी-संपन्न बनाने के लिए अनवरत संघर्ष किया।

स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा "मेरा जीवन संघर्ष" में ऐसी तीन घटनाओं की चर्चा की है, जिन से उन्हें किसानों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान हुआ और उनकी दशा सुधारने का उन्होंने संकल्प लिया। पहली घटना १९१७ ई० की है, जब वे गाजीपुर जिले के विशभरपुर गांव में थे। वहां के अधिकतर जमींदार खुशहाल थे। स्वामी जी ने एक दिन उनके मौजे मौरांमें में जो विशंभरपुर से तीन-चार मील दूर हैं, एक हलवाई को शीत से ठिठुर कर मरा हुआ देखा। वह पैंसठ-सत्तर साल का बूढ़ा था। उसकी मौत बड़ी दर्दनाक हालत में हुई थी। उसके शरीर पर सिर्फ एक लंगोटी थी। एक फटे टाट में उसने सिर छिपा कर हड्डियों को

Rajju Mahesh Vala Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE-Govt-2

छेदने वाली ठंढक से अपनी रक्षा करनी चाही थी। मगर इसमें विफल रहकर उसने दम तोड़ दिया था। दूसरी घटना सन "२३ के आस-पास की मुंगेर जिले के चकाय थाना की थी, जहां उन्होंने संथालों को एक आना रोज पर खटते देखा था। फिर भी कुछ ही दिनों में वे अपनी जमीन से बेदखल कर दिए जाते थे। न उन्हें एक जून भी पेट भर अन्न मिल पाता था और न तन ढकने को वस्त्र। यहाँ तक कि उनकी स्त्रियां भी अर्द्ध नग्न रहती और भूस्वामियों की अमानुषिक भूख का शिकार बनती थीं। तीसरी घटना १९३७ ई० की बेगुसराय की है, जब उन्होंने एक शव को दाहकर्म के लिए ले जाने के लिए पर्याप्त लकड़ियों का अभाव देखा इन घटनाओं ने स्वामी जी को जमींदारी-प्रथा का प्रबल विरोधी बना दिया और वे उसे उखाड़ फेंकने में जी-जान से जुट गए। स्मरणीय है कि बिहार में देश में सबसे पहले जमींदारी-प्रथा का उन्मूलन हुआ। निस्संदेह इसके पीछे स्वामी जी का तप और संघर्ष वर्त्तमान है। यदि उन्होंने घूम-घूम कर इसकी बुराइयों का पर्दाफाश न किया होता और इसके विरुद्ध प्रबल जनमत न तैयार कर दिया होता तो कांग्रेस सरकार को इसके वैधानिक उन्मूलन का साहस कभी न हो पाता।

स्वामी जी को कभी-कभी जातिवाद का प्रचारक और भूमिहारों का नेता कहकर उनकी सेवाओं का अवमूल्यन किया जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि स्वामी जी की पुस्तक 'ब्रह्मर्षिवंश-विस्तर' भूमिहार जाति का एक प्रामाणिक विश्वकोश है, जिसके द्वारा उन्होंने भूमिहारों के संगठन का प्रयास किया है। लेकिन इसका उद्देश्य जातिवाद का प्रसार नहीं, एक आत्म विस्मृत जाति को ऊपर उठाना, उसे उसके पूर्व—गौरव से परिचित कराना मात्र है। उन्होंने स्वयं लिखा है—'आजादी की लड़ाई का आखिर मतलब ही क्या, अगर मुल्क को उठाना नहीं है। जिसका हक छीना जाय या छीना गया हो, उसे तैयार करके उसका हक वापस दिलाना यही तो मेरे जानते आजादी की लड़ाई और असली समाज-सेवा का रहस्य है। समष्टि रूप से समस्त समाज को ऊंचा उठाने को ही मैं समाज सेवा और सामाजिक कार्य मानता हूं और यही मैंने शुरू से किया है। इसीलिए मैं पीछे छोटे-से समाज को छोड़ समस्त देश के काम में खिंच गया या कूद गया। '(मेरा जीवन संघर्ष) भूमिहारों को जगाने, उनमें आत्म गौरव का संचार करने के पीछे स्वामी जी का यही व्यापक उद्देश्य निहित था। इसीलिए तो उनकी पुस्तक 'ब्रह्मर्षि-वंश विस्तर' की आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी, जो स्वयं भूमिहार नहीं थे, १९१६ ई० की 'सरस्वती' में समुचित सराहना की थी।

सच पूछा जाय तो भूमिहार जाति को गौरव देने और उन्हें अन्य ब्राह्मणों के समकक्ष मानने का जो प्रस्ताव स्वामी जी ने किया, वह उनके किसान-आन्दोलन की ही भूमिका थी। उन्हें यह बात बेहद खलती थी कि कृषि कार्य में लगे हुए ब्राह्मण अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा हीन माने जायें। स्वामीजी ने दृढ़ प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध करना चाहा कि भूमिहार, जिन्हें भू-सेवा के कारण यह उपाधि प्राप्त हुई, दरअसल, ब्राह्मण ही हैं और उन्हें पूजा-पाठ या पौरोहित्य का अधिकार है, जैसे अन्य ब्राह्मणों को है। कहते हैं, स्वामी जी के इस दृष्टिकोण का विरोध सर गणेशदत्त जैसे व्यक्ति ने भी किया था। फिर भी स्वामी जी नहीं झुके और भूमिहारों को उसी प्रकार ब्राह्मणत्व प्रदान किया, जैसे सिखों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह ने अनेक इतर वर्णों को सिंहत्व प्रदान किया था। यह जीर्ण जाति-व्यवस्था पर एक करारी चोट और उसे युगानुरूप नवीन मोड़ देने का आयोजन था।

इस तरह स्वामी सहजानन्द सरस्वती राजनीतिक जागरण के पुरोधा, आर्थिक शोषण के शत्रु और सामाजिक क्रांति के सूत्रधार थे। उनके व्यक्तित्व के ये सभी पक्ष अंतःसंपृक्त और परस्पर बलान्वित करने वाले थे। उनके व्यक्तित्व की महिमा तब और बढ़ जाती है, जब हम देखते हैं कि उन्होंने एक सच्चे कर्मयोगी के भांति अनासक्त रहकर अपना कार्य किया और कभी अपनी सेवा को सुविधा के सिक्कों में बदलने की कोशिश नहीं की। ऐसे तपोनिष्ठ मनस्वी मानवता के इतिहास में एक जलती मशाल बनकर आते हैं और अपनी साधना के तेज से वर्त्तमान के साथ भविष्य को भी आलोकित कर जाते हैं। *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यम-नियम

प्रो० डा० रामखेलावन राय, पटना विश्वविद्यालय

योग के आठ अंगों का उल्लेख महर्षि पतंजलि ने इस प्रकार किया है—

यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि (योगसूत्र २।२९)। अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि-ये ही योग के आठ अंग हैं। इनमें से यम और नियम को, उनके महत्व की दृष्टि से प्रथम और द्वितीय स्थान दिया गया है। यम के अन्तर्गत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह है। यमों की साधना योग की पृष्ठभूमि या भूमि है। यमों का अभ्यास किये बिना योगाभ्यास हास्यास्पद अथच व्यर्थ है। यमों का अभ्यास हो जाने को उपरान्त नियमों के द्वारा उस भूमि का सिंचन किया जाता है नियमों के अन्तर्गत शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान का समावेश है। इन नियमों में से एक-एक की साधना ही क्रमशः महतो सम्प्राप्ति का कारण बनती जाती है। योग के ये दो प्रथमांग साधक को योगाभ्यास के सर्वथा योग्य बना देते हैं। कुछ साधक तो इन दोनों (यम और नियम) से प्राप्त उपलब्धियों से ही इतना संतुष्ट और आप्तकाम हो जाते हैं कि अन्यान्य योगांगों की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता। प्रस्तुत निबंध में हम इन्हीं दोनों योगांगों का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

यमः—

(१) अहिंसा-यमों के अन्तर्गत सर्वप्रथम अहिंसा का स्थान है। अहिंसा सब प्रकार के धर्माचरणों का मूलाधार तो है ही, योगाभ्यास का केन्द्रबिन्दु भी यही है। शास्त्रों में इसकी महिमा का विराट् विवेचन हुआ है। 'अहिंसा परमो धर्मः' कहकर इसे धर्म का शीर्ष स्थानीय माना गया है।

प्रश्न यह है कि यह अहिंसा है क्या? केवल प्राणि-पीड़ा या प्राणि-हिंसा को त्यागना ही अहिंसा नहीं है।

वस्तुतः प्राणिपीड़ा त्याग के साथ ही प्राणियों के प्रति मैत्री आदि सद्भाव का पोषण ही अहिंसा है। बाह्य विषयक स्वार्थपरता का त्याग किये बिना अहिंसा का आचरण संभव नहीं होता। सर्वदा एवं सर्वथा सर्वभूतो के प्रति अनभिद्रोह ही वास्तविक अहिंसा है। सत्य आदि अन्यान्य यमनियम भी अहिंसामूलक ही हैं। अहिंसा सिद्धि के हेतु होने के कारण ही वे (अन्यान्य यम नियम) शास्त्रों में प्रतिपादित हुए हैं। अहिंसा को निर्मल करने के लिए ही सत्यादि की उपादेयता है।

हिंसा में तारतम्य भी होता है। एक हिंसा से दूसरी हिंसा न्यून अथवा गुरु हो सकती है। यथा पिता-माता या संतान की हिंसा करना तथा शत्रु का वध करना एक ही कोटि की हिंसा नहीं है। इसी प्रकार मनुष्य का वध करना तथा वृक्ष के पत्ते तोड़ना समान कोटि की हिंसा नहीं है। आततायियों का वध तथा वृक्षादि उन्मूलन साधारण लोगों के लिए हिंसा नहीं मानी जाती क्योंकि साधारण व्यक्ति जिस अवस्था में जीवन यापन करते हैं, उसमें उनके लिए वैसा करना प्रायः अनिवार्य हो जाता है। वैसा नहीं करने पर उनका जीना दूभर हो जायगा। इसीलिए मनु भगवान का आदेश है कि—

न मांस भक्षणे दोषे, न मद्ये न च मैथुने।
प्रवृत्ति रेषा भूतानाम् निवृतिस्तु महाफलः॥

अर्थात् मांसादि भक्षण में कोई दोष नहीं है क्योंकि वह प्राणियों की प्रवृत्ति है, पर उससे निवृत्ति होने से महाफल होता है।

किन्तु मनु भगवान का उपर्युक्त विधान सामान्य लोगों के लिए है, योगियों या परमार्थ

Rajiv Gandhi Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधकों के लिए नहीं। योगियों के लिए तो अहिंसा का सार्वभौम महाव्रत सर्वथा आचरणीय है। इनके लिए कोई विकल्प नहीं।

अहिंसा-साधना का फल-निर्देश करते हुए पतंजलि कहते हैं—'अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्संनिधौ वैरत्यागः अर्थात् अहिंसा की दृढ़ स्थिति हो जाने पर उस अहिंसक योगी के निकट सब प्राणियों का वैर छूट जाता है। ऐसे योगियों के सम्पर्क में आने पर हिंस्र जन्तुओं का वैरभाव भी नष्ट हो जाता है। अहिंसा की साधना करने पर उस साधक के अन्तःकरण से अहिंसा की सात्विक धारा इतने तीव्र वेग से प्रवाहित होने लगती है कि तमस भाव से ग्रस्त हिंसक से हिंसक जीव भी उससे प्रभावित होकर अपनी हिंसा वृत्ति त्यागने के लिए बाध्य हो जाता है। अहिंसा के दिव्य साधक भगवान बुद्ध के सामने आते ही अंगुलिमाल जैसा विश्वविश्रुत हिंसक भी अपनी हिंसावृत्ति त्याग कर किस प्रकार उनका शिष्य हो गया था, इस बात का साक्षी हमारा इतिहास है।

(२) **सत्य**—यमों में द्वितीय स्थानीय है सत्य का आचरण। इसके सम्बन्ध में महर्षि पतंजलि कहते हैं—

सत्य प्रतिष्ठायां क्रिया फलाश्रयत्वम्

योगसूत्र : २।३६

अर्थात् सत्य में दृढ़ स्थिति हो जाने पर साधक की वाणी क्रियाफल का आश्रय बनती है। सत्य की साधना करने से साधक का अन्तःकरण इतना निर्मल, पवित्र और दिव्य हो जाता है कि उसकी वाणी से वही बात निकलती है जो क्रियारूप में होने वाली है। तात्पर्य यह कि उसकी वाणी अमोघ हो जाती है। उसकी वाणी केवल स्थूल शब्दमात्र नहीं होती, वरन् अर्थवान होकर क्रियारूप में परिणत हो जाती है। उदाहरण के लिए यदि कोई सत्य साधक योगी किसी तमसभावापन्न व्यक्ति को कह दे कि 'तू धार्मिक हो जा' तो वह धार्मिक हो जाता है, क्योंकि सत्य साधक की वाणी अमोघ जो होती हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके 'घड़ी घोड़ा' हो जाय कहने से घड़ी घोड़ा हो जायगी। सत्य साधक योगी के मुख से ऐसी वाणी निकल ही नहीं सकती।

(३) **अस्तेय**—यमों में तीसरा अस्तेय है। अस्तेय की परिभाषा इस प्रकार है—

अस्तेय प्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्

योगसूत्र २।३७

अर्थात् अस्तेय की प्रतिष्ठा होने पर सभी रत्नों की प्राप्ति होती है। इसका तात्पर्य यह है कि जिसने राग का त्याग कर दिया, जिसे दूसरे की किसी वस्तु में कोई राग नहीं, उसे भला कमी किस चीज की? ऐसा रागहीन व्यक्ति तो स्वतः सभी ऐश्वर्यों का स्वामी हो जाता है। बैरागी कबीर की घोषणा देखिए-

मन मस्त हुआ तब क्या बोले!
हीरा पायो गांठ गठियायो, बार-बार
वाको क्यों खोले।

(४) **ब्रह्मचर्य**-अस्तेय के उपरान्त यमों में चौथा स्थान ब्रह्मचर्य का है। ब्रह्मचर्य की दृढ़ स्थिति से वीर्य लाभ होता है-

ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्यलाभः (योग २।३८)

योगाभ्यास करना अत्यन्त तीक्ष्ण किये हुए छूरे की धार पर चलने के समान कठिन और दुर्गम है। इसके लिये महान् प्रयत्न तथा महती शक्ति की आवश्यकता है। शरीर और मन से दुर्बल व्यक्ति योग के पथ पर एक पग भी आगे नहीं बढ़ा सकता-'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः। योग शास्त्र में तथा उपनिषदों में बार-बार इस बात की घोषणा की गयी है कि दुर्बल व्यक्ति के द्वारा यह कठिन साधना नहीं हो सकती। इस लिये ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित होकर साधक अपने को अत्यन्त शक्तिशाली तथा वीर्यवान बनाकर साधन-समर के योग्य होने का प्रयास करता है।

(५) **अपरिग्रह**-यमों में अन्यतम है-- अपरिग्रह। इसके सम्बन्ध में महर्षि पतंजलि कहते हैं--

अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्ता सम्बोधः

योगसूत्र २।३९

अर्थात् अपरिग्रह की साधना से जन्मकथन्ता का ज्ञान होता है। जन्मकथन्ता कहते हैं इस प्रकार की चिन्तना को— मैं कौन था, क्या था, यह

Kailguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Dallas.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरीर क्या है, यह कैसे हुआ, मैं कहां से आया, पुनः शरीर त्याग कर कहां जाऊंगा, भविष्यत् काल में न जाने क्या-क्या होना है, इत्यादि इत्यादि। अपरिग्रह की साधना से साधक के इन सारे प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है। उसे अपने सम्बन्ध में भूत-भविष्यत सबका ज्ञान हो जाता है।

शरीर के भोग्य विषय का त्याग ही अपरिग्रह है। शरीर के भोग्य विषय में अपरिग्रह द्वारा तुच्छता का ज्ञान होने से साधक को अपना शरीर भी परिग्रह स्वरूप ही (त्यागने के योग्य ही) दिखाई पड़ने लगता है। इस प्रकार विषय और शरीर से मन का अलगाव होते ही अपने ध्यानाकाश में वह अपने पूर्वजन्मों के कृत्यों को स्पष्ट देखने लगता है। इस मानसिकता की स्थिति में वह अपने आगे आने वाले जन्मों तथा कर्मों को भी देखने लग जाता हैं। वस्तुतः वर्तमान में शरीर तथा विषय के साथ घनिष्ठता जनित मोह ही पूर्वापर ज्ञान का प्रतिबन्धक है। शरीर को सम्यक् स्थिर और निश्चेष्ट करने पर जिस प्रकार शरीरनिरपेक्ष दूरदर्शनादिज्ञान होते हैं, उसी प्रकार भोग्य विषय के साथ 'शरीर भी परिग्रहमात्र है'—ऐसा होने पर शरीर से आत्मा की पृथकता स्पष्ट हो जाती है। इस पार्थक्य-बोध की स्थिति में आते ही साधक को अपना भूत और भविष्य आर-पार दिखाई देने लगता है।

यहां यह ध्यातव्य है कि अपरिग्रह के पूर्ववर्ती अन्यान्य चार यमों—अहिंसा, सत्य, अस्तेय और ब्रह्मचर्य की साधना के परिणाम स्वरूप ही अपरिग्रह की स्थिति सम्भव है। उपर्युक्त चारों से विरहित होकर अपरिग्रह की साधना इस प्रकार का महान् फल नहीं दे सकती। योग एक व्यवस्थित विज्ञान है। इसमें पूर्व के बिना पर का ज्ञान संभव नहीं है। अपरिग्रह की स्थिति तक आने के लिए अहिंसादि चार पगनिक्षेप के समान हैं। इन पांचों यमों में एक के बिना दूसरा अपूर्ण ही रहेगा। यथा अहिंसा का आश्रय लिए बिना सत्य का सन्धान नहीं किया जा सकता। सत्यान्वेषी के लिए 'स्तेय' अकल्पनीय हो जाता है, [illegible] साधक स्वभावतः अस्तेय का साधक हो जाता है। पुनः इन तीनों ही साधनाओं को ब्रह्मचर्य (चतुर्थ यम) के द्वारा पुष्ट और बलवान बनाकर अपरिग्रह की भूमि पर आरोहण किया जाता है। इस प्रकार यमों की साधना के पूर्ण होते ही साधक 'नियमों' की साधना के लिए उपनीत हो जाता है।

नियम (१) शौच—यमों के उपरान्त दूसरा योगांग है— नियम। नियमों में सर्वप्रथम शौच की, पवित्रतापूर्वक रहने की साधना की जाती है। शौच दो प्रकार का होता है—बाह्य और आभ्यन्तर। मृतिका, जल आदि से पात्र, वस्त्र, स्थान तथा अपने अंगों को शुद्ध रखना, सात्विक नियमित आहार से शरीर को सात्विक, नीरोग और स्वस्थ रखना तथा वस्ती, धौती, नेती तथा औषधि से शरीर-शोधन करना बाह्य शौच है। पुनः ईर्ष्या, अभिमान, घृणा, असूया आदि मलों को मैत्री, करुणा, मुदिता आदि के द्वारा दूर करना, बुरे विचारों को शुद्ध विचारों की सहायता से दूर करना, दुर्व्यवहार के स्थान पर शुद्ध व्यवहार को उपस्थित करना मानसिक (आभ्यन्तर) शौच है। शौच के निरन्तर अभ्यास से योगी का हृदय शुद्ध हो जाता है और वह इस नश्वर शरीर को मलमूत्रादि के भण्डार के रूप में देखने लगता है। फलतः इस शरीर के प्रति उसका राग और ममत्व दूर हो जाता है। जब उसे अपना ही शरीर अपवित्रता का भण्डार जैसा दिखने लगता है तो फिर दूसरों की तो बात ही क्या? ऐसी परिस्थिति में दूसरों से भी उसका सम्पर्क छूट जाता है। सारांश यह कि वह इस शरीर से परे, सबसे अलग रहते हुए केवली होने का यत्न करता है। महर्षि-पतंजलि की भाषा में—शौचात्स्वांगजुगुप्सा परैरसंसर्गः— अर्थात् शरीर में जुगुप्सा अथवा घृणा होने से शौचाचरणशील योगी कायदोषदर्शी और शरीर के प्रति प्रीतिशून्य होते हैं। स्त्री-पुत्रादि के आसंग की लिप्सा भी शौच प्रतिष्ठा के द्वारा दूर हो जाती है।

(२) सन्तोष:—नियमों में द्वितीय स्थानीय सन्तोष के सम्बन्ध में पतंजलि का कहना है कि इससे अनुत्तम सुख (अर्थात् जिससे बढ़कर कोई

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha. Courtesy: Sri Vasishtha Tripathi, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरा सुख न हो) की प्राप्ति होती है—सन्तोषा- दनुत्तम सुख लाभः (योग सूत्र २/४२)। किसी इष्ट पदार्थ के प्राप्त होने से जो तुष्ट निश्चित भाव होता है, उसकी भावना कर सन्तोष की साधना की जाती है। उसके उपरान्त—'जो प्राप्त किया है वही पर्याप्त है'—इस प्रकार की भावना से उक्त तुष्ट भाव की सम्पुष्टि करनी पड़ती है। यही सामान्यतः सन्तोष की साधना है। संतोष के सम्बन्ध में शास्त्रोक्ति है कि जैसे 'अपने पैर के तलवे को कांटे से बचाने के लिए समस्त भूतल को चमड़े से नहीं ढंका जा सकता, किन्तु जूते पहने जा सकते हैं, वैसे ही 'समस्त काम्य विषय पाकर सुखी होऊं, ऐसी इच्छा से सुख नहीं हो सकता, परन्तु सन्तोष के द्वारा हो सकता है:—

सर्वत्र सम्पदस्तस्य सन्तुष्टं यस्य मानसम्।
उपानद्गूढपादस्य ननु चमास्तृतैव भूः॥

राजा ययाति जब अपनी युवावस्था के सुखोपभोग से तृप्त न हुए तो उन्होंने अपने पुत्र से युवावस्था मांग ली। अपने पुत्र से प्राप्त दूसरी युवावस्था का उपभोग करने बाद भी उन्होंने देखा कि तृष्णा पूर्ववत ज्यों की त्यों प्रज्वलित है, उसमें रंचमात्र भी न्यूनता नहीं आयी है। फलतः उन्हें बाध्य होकर इस निष्कर्ष पर आना पड़ा—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविशा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते॥

कामनाओं के उपभोग से उनकी शान्ति नहीं होती। जैसे अग्नि में हविष देने रहने पर वह अधिकाधिक प्रज्वलित ही होती जाती है तथैव विषयोपभोग के द्वारा कामनाओं की लपटें भी बढ़ती ही जाती हैं।

(३) **तपः**—महर्षि पतंजलि अनुसार तप के द्वारा अशुद्धि का क्षय होने से इन्द्रियों की शुद्धि होती है—

कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपसः योग सूत्र-२/४३] जिस प्रकार लोहे को आग में तपाकर उसके मल को दूर किया जाता है, उसी प्रकार तप के निरन्तर अनुष्ठान से अशुद्धि जन्य मल के दूर होने पर शरीर स्वस्थ, पवित्र एवं लघु [illegible] विनाश से शरीर सत्व के तेज से दीप्त हो जाता है तथा रजस और तमस जलकर क्षार हो जाते हैं। इन्द्रियों का मलावरण दूर होते ही दिव्य-दर्शन, दिव्य-श्रवण तथा दूर-दर्शन आदि सिद्धियां आयत्त हो जाती हैं।

किन्तु यह स्मरणीय है कि केवल काम्य विषय के लिए तपस्या करना योगांग नहीं होता। साथ ही जो अल्पमात्र दुःख मे घबड़ाते है उनके लिए योगाभ्यास स्वप्न की ही वस्तु हैं। शरीर के कष्ट-सहिष्णु होने तथा शारीरिक सुख के अभाव में मन विकृत न होने पर ही योग साधन का अधिकार होता है। प्राणायाम आदि तपस्या द्वारा शरीर की वशवर्तित रूप अशुद्धि प्रधानतः दूर हो जाती है। विनिद्रता, निश्चल स्थिति, निराहार, प्राणरोध इत्यादि तपस्या मानुष प्रकृति के विरुद्ध और दैवसिद्ध प्रकृति के अनुकूल हैं अतः उनसे कायसिद्धि की उपलब्धि हो जाती है।

स्वाध्यायः—मोक्षशास्त्राध्ययन अथवा प्रणव जप ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय द्वारा इष्ट देवता का साक्षात् होता है—स्वाध्यायादिष्ट देवता सम्प्रयोगः (योगसूत्र २।४४) स्वाध्यायशील को देवता, ऋषियों और सिद्धों के दर्शन होते हैं और वे साधक की साधना में सहायक होते हैं। भोजवृत्ति के अनुसार इष्ट मंत्र के जप रूप स्वाध्याय के सिद्ध होने पर योगी को इष्टदेवता का प्रत्यक्ष दर्शन होता है।

स्वाध्याय द्वारा वाक्य में एकतानता आती है। उससे एकतान भाव सहित अर्थस्मरण में अनुकूलता होती है। मोक्ष शास्त्रों का अध्ययन करने से विषयचिन्ता क्षीण होती है तथा परमार्थ में दृढ़ निष्ठा होती है। साधारण अवस्था में (अर्थात् स्वाध्याय विरहित अवस्था में) जप करने से अर्थभावना ठीक नहीं रहती, उसमें एकतानता नहीं आती। ऐसी अवस्था में जापक कभी-कभी निरर्थक वाक्यों का उच्चारण करता रहता है और उसका मन विषयान्तर में भ्रमण करता रहता है। किन्तु स्वाध्यायशील होने पर दीर्घकाल तक मंत्र तथा मंत्रार्थ भावना अविच्छिन्न रहती है। ऐसी तीव्र भावना के साथ ज[illegible]

CC-0. Guru Mahadev Shivala Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(स्वाध्याय) करने से इष्ट के दर्शन होते ही हैं, इसमें सन्देह नहीं।

(५) **ईश्वर प्रणिधान**—महर्षि पतंजलि इस बात की स्पष्ट घोषणा करते हैं कि ईश्वर प्रणिधान से भी समाधि की सिद्धि होती है—

समाधि सिद्धिरीश्वर प्रणिधानात् (योग सूत्र २।४५) नियमों में ईश्वर-प्रणिधान को पांचवां अर्थात् अन्यतम स्थान देकर पतंजलि एक ओर ईश्वर की सत्ता की घोषणा करते हैं और दूसरी ओर अन्यान्य योगांगों की अपेक्षा इसकी श्रेष्ठता भी सिद्ध करते हैं। प्राणायाम, धारणादि योगांगों से समाधि की सिद्धि दिखलाना योगशास्त्र का मुख्य लक्ष्य माना जाता है। ईश्वर प्रणिधान से सिद्धि लाभ करना भक्तियोग का लक्ष्य है। किन्तु जब पतंजलि भी ईश्वर प्रणिधान को समाधि का हेतु मान रहे हैं तो इसका अर्थ यही है कि पतंजलि का योग शास्त्र भक्ति-शास्त्र का विरोधी न होकर सहयोगी है। यह साधक विशेष पर निर्भर करता है कि वह योग के द्वारा समाधि तक जाना चाहता है अथवा भक्ति के द्वारा। जिस साधक को योग मार्ग अत्यन्त कठिन और दुर्गम दिखाई पड़े, वह भक्ति मार्ग के द्वारा भी उसी लक्ष्य (समाधि) को प्राप्त कर सकता है।

यह शंका करना व्यर्थ है कि जब ईश्वर प्रणिधान से ही समाधि की सिद्धि हो जाती है तो फिर योग के अन्यान्य सात योगांगों के अनुष्ठान का क्या प्रयोजन है? भक्तिमार्ग और योगमार्ग अलग-अलग हैं। यदि हमने योगमार्ग का आश्रय लिया है तो फिर भक्तिमार्ग की क्या आवश्यकता है? इसका उत्तर यह है कि योगाभ्यास ईश्वर प्रणिधान या ईश्वर भक्ति का भी उपयोगी साधन है। ईश्वर प्रणिधान रहित सातों अंगों के अनुष्ठान से नाना प्रकार के विघ्न होते रहने से दीर्घकाल में समाधि का लाभ होता है। किन्तु ईश्वर भक्तिपूर्वक योगाभ्यास करने के फलस्वरूप साधक तीव्र वेग से निकट पहुंचकर उसमें लीन हो जाता है। तात्पर्य यह कि निर्विघ्नतापूर्वक योग साधन के लिए ईश्वर प्रणिधान आवश्यक है। किसी भी कार्य में ईश्वरभाव रखने पर कर्तापन का बोध नहीं होने से साधक कर्त्तव्यमात्र के प्रति निर्लिप्त बना रहता है, फलतः उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में विलम्ब नहीं होता। ईश्वर को विस्मृत कर कोई कर्म करने से उस समय ईश्वर में कर्म का समर्पण नहीं होता। वह कर्म सम्पूर्ण अभिमानपूर्वक ही होता है। 'मैं अकर्ता हूं' ऐसी भावना तथा हृदय में ईश्वर का स्मरण करते हुए कोई भी कर्म करना तथा उस कर्म का फल योग या निवृत्ति की ओर जाय'—इस प्रकार के चिन्तन द्वारा समस्त कर्म और कर्मफल ईश्वर को समर्पित होते हैं।

उपर्युक्त यम-नियमों में से प्रत्येक का विधिवत अनुष्ठान साधक के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है; कारण इनमें से किसी एक के नष्ट होने से ही सभीवत नष्ट हो जाते हैं। इस सम्बन्ध में मनु भगवान की स्पष्ट घोषणा है—

ब्रह्मचर्यमहिंसा च क्षमा शौचं तपो दमः
सन्तोषः सत्यमास्तिक्य व्रत गानि विशेषतः
एकेनाप्यथ हीनेन व्रतमस्य तु लुप्यते।

यही है समासतः यम-नियम का परिचय। इन दोनों की सम्यक् साधना के उपरान्त ही योग साधक अन्यान्य योगांगों के लिए उपनीत होता है। तथास्तु।

———

यह देहरूपी मन्दिर जो जन्म के साथ हमें मिला है, उसमें एक शिवलिंग स्थापित है। दिन रात, आठों पहर बहने वाली हमारी कर्म गंगा के जल से इसका अभिषेक होता है। गंगा का दूसरा नाम पुण्यतोया है-भगीरथ के पावन कर्मों की पुण्यवाहिनी। अतः हमारे दैनिक जीवन का कर्म-प्रवाह पुण्यतोया होकर महाशिव का अभिषेक बने। तभी उनकी ज्योतिर्मयता हमारे भीतर जागेगी।

—अनन्तराम दास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योग-वियोग

० रामनन्दन मिश्र

सीमित वाणी असीम को व्यक्त कर ही नहीं सकती । इसीलिये विरोधी इंगितों से ही सत्य को बताना पड़ता है । सत्—असत्, नजदीक-दूर, साकार-निराकार, काल-अकाल, दुःख-सुख, रूप अरूप—द्वन्द्वों में अन्तर्निहित और उनसे परे सत्य की झांकी मिलती है ।

जो साकार हैं वही निराकार है । उसे साकार और निराकार किसी से बांधा नहीं जा सकता । रूप के सागर में ही डूबकी लगाकर रूप की झांकी मिलती है और नहीं, इन दोनों को जो एक साथ नहीं समझ सकता वह सृष्टि के रहस्य को नहीं जान सकता । लेकिन, वह वाणी कहां ? जो है, और नहीं है—को एक साथ समझा पाये ।

इसी तरह योग और वियोग में जो अन्तर्निहित है और उसके परे है उसे इंगित करना ही योग शास्त्र का लक्ष्य है । युज् धातु का अर्थ जोड़ना-पकड़ कर योग की व्याख्या करना योग-शास्त्र को शब्द-कोश का एक शब्द मात्र बना देना है । यदि यही होता तो महर्षि पतंजलि योग की व्याख्या—

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः नहीं करते

योग और वियोग में जो अन्तर्निहित है और जो उसके परे है उसी महान सत्य को इंगित करने के लिये महर्षि पतंजलि ने योग-दर्शन की रचना की । आकर्षण और विकर्षण एक ही महान् का परिचय देते हैं । जिसे संसार का विकर्षण नहीं हुआ वह भगवान का आकर्षण भी नहीं समझ सकता । जिसके अन्तर में भगवान का आकर्षण नहीं वह संसार से विकर्षित नहीं हो सकता । इसीलिए श्रीकृष्ण ने कहा :—

यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ।।

इन द्वन्द्वों से परे उठने पर ही उसका परिचय मिलता है—जहां रूप—अरूप काल—अकाल एक साथ एक समय में शासित होते रहते हैं । जो प्रभु की चिर—विरह-मिलन—लीला की झांकी दे वही चरम सत्य है और योग की पूर्णाहुति है ।

"जीवन और ईश्वर, दोनों अखंड-अभेद्य हैं, क्योंकि जीवन अपने प्रत्यक्ष रूप में ईश्वर का ही बाह्य प्रदर्शन है । अतः जीवन का विभाजन आत्मविनाश है । तुम अपने-अपने ईश्वर बनाते हो, तो एक तरह से मिटते ही हो—सो उठो और खेमे उखाड़ दो ! फिर देखो, यहां-से-वहां तक सारी धरती तुम्हारी, सारा आकाश तुम्हारा ! "

—स्वामी विवेकानन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योग के रहस्य

० भूपाल सिंह

योग जीवन का एक पावन मार्ग है, जिससे मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक शक्तियां पूर्ण विकसित होती हैं। यहां तक कि व्यक्ति में जो भी दुर्बलताएं हैं वे अच्छाइयों में परिवर्तित हो जाती है।

१- आयु, लिंग या जाति आसन या यौगिक व्यायाम करने में बाधक नहीं है। उनका सर्वोत्तम अभ्यास पुरुष या महिला के १० से लेकर ६० वर्ष तक की उम्र में होता है ?

२- अन्तिम भोजन के चार घन्टा बाद किसी समय अभ्यास हो सकता है। वैसे प्रातः-काल सर्वोत्तम समय है। चूंकि इस समय जीवनशक्ति शिखर पर रहती है।

३- इसका अभ्यास दरी, कालीन, कम्बल पर सफेद चादर बिछाकर एकान्त तथा शुद्ध वायु से पूर्ण एवं जलकण रहित कमरे में करना चाहिये। स्थान भींगा न हो तथा चादर को नित्य धो देना चाहिये।

[४] मोटापा कम करने के लिए, पाचन शक्ति में सुधार के लिए तथा कोष्ठबद्धता को दूर करने के लिए यह सर्वोत्तम व्यायाम है।

[५] इससे रक्त चाप नहीं बढ़ता, प्रत्युत यह बढ़े हुए रक्त चाप को कम करता है।

[६] ये रोगों की चिकित्सा तथा उसकी रोकथाम में सहायक है।

[७] इनसे रीढ़ की हड्डी तथा शरीर लचीला होते है। यह समय के पहले बुढ़ापा को रोकता है।

[८] इनसे सहन शक्ति बढ़ती है।

[९] सबसे बड़ी बात यह है कि योग से मस्तिष्क तथा मन एकाग्र होता है। आत्मबल बढ़ता है। अस्तु इससे स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क धारण करने की क्षमता बढ़ती है।

स्मरण रहे

[१] यौगिक व्यायाम दूसरे के बताने पर सहायक होता है, स्वतः करने पर भी लाभदायक है। और जब स्वभावत आर्कषण होता है तो सर्वाधिक सहायक होता है।

[२] यौगिक व्यायाम के संयम —यह इतना कम नहीं होना चाहिए कि प्रभावशाली ही न हो और यह इतना अधिक भी होना चाहिए कि स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक हो जाए।

[३] संतुलित भोजन —किसी खास प्रकार के खाद्य पदार्थ का विशिष्ट भोजन आवश्यक नही है। आहार भूख मिटाने के लिए होना चाहिए, न कि पेट पर गुरुतर बोझ डालने के लिए।

[४] यौगिक आसन कुश्ती के लिए कसरत नहीं है, अपितु इसकी विभिन्न मुद्राओं से खास लाभ तब होता है जब किसी मुद्रामें निश्चित अवधि तक बिना कष्ट उठाये ठहरा जाए। जितनी ही देर तक मुद्रा में रहा जाएगा, उतना ही अधिक इससे लाभ होगा।

[५) शरीर का वस्त्र कम तथा ढीला होना चाहिए।

(६) मुंह बन्द रहना चाहिए तथा सांस केवल नाक से लेनी चाहिए। प्रत्येक सांस क्रिया गहरी तथा पूर्ण होनी चाहिए।

(७) आराम -- जब भी थकावट महसूस हो तुरन्त ही शवासन करके शक्ति पूर्ण कर लेनी चाहिए।

योगासन के अभ्यास की क्रमबद्ध तालिका

[१] उत्तानपाद आसन [२] हलासन [६] सर्वांगासन [४] मत्स्यासन [५] पश्चिमोत्तान आसन [६] भुजंगासन [७] मयूरासन [८] अर्धमत्स्येन्द्रासन [९] पद्मासन [१०] योगमुद्रा [११] शवासन [१२] शीर्षासन [१३] पद्मासन पूजापाठ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्यान आदि के लिए [१४] बज्रासन भोजन के बाद।

शीर्षासन, सर्वांगासन, विपरीत किसी भी प्रकार की उल्टी मुद्रायें दिल के भार को कम करती है, क्योंकि नसों रंगो का रक्त गुरुत्वाकर्षण शक्ति से नीचे की ओर खींच जात है। इसमे नसों की शक्ति पुनर्जीवित होती है और यकृत और गुर्दे की कोष्ठबद्धता समाप्त होती है। इन मुद्राओं से निम्न-लिखित रोग ठीक हो सकते हैं [१] नया हर्नियां [२] गर्भाशय च्यूति, रक्त-माववासीर, प्रोस्टेट की कोष्टबद्धता विपरीत कर्णी मुद्रा विशेषकर महिलाओं के लिये उप योगी है। गर्भाशय क गड़बड़ी को यह ठीक करता है। मासिक धर्म को नियमित बनाता है तथा तत्संबंधी रोग भी दूर करता है। यह मुद्रा पुरुषों के रात के स्वप्नदोष को दूर करता हैं। शीर्षासन सम्पूर्ण शरीर को फुर्ति प्रदान करता है तथा स्वस्थ जाभा पैदा करता है। बुद्धि को प्रखर मस्तिष्क को क्रियाशील करता है तथा नेत्ररोग आदि रोगों से दूर रखता है। वांझ महिलाओं को संतान योग्य बनाता है।

पश्चिमोत्तान आसन के अभ्यास से सियाटिका रोग नहीं होता।

हलासन भुजगासन एवं अर्ध पश्चिमोत्तान आसन से पीठ के दर्द का निदान होता है। शीर्षासन एवं मत्स्यासन मस्तिष्क की बीमारी का उपचार है। नियमित शवासन से तुनुकमिजाजी, थकावट, एवं अनिद्रा का नाश होता है।

यौगिक आसन आजीवन वाल्यावस्था, यौवनावस्था, एवं वृद्धावस्था में पूर्ण स्वास्थ्य एवं आनन्द की कन्जी है।

दिवं च रोह पृथिवीं च रोह
राष्ट्रं च रोह द्रविणं च रोह।
प्रजाँच रोहाऽमृतं च रोह,
रोहितेन तन्वं सं स्पृशस्व॥
[अथर्व, १३.१-३४]

—तू इतना उन्नत हो कि आसमान में जा चढ़। पृथ्वी पर सबसे उन्नत हो; राष्ट्र में सबसे उन्नत हो; धन-दौलत में सबसे उन्नत हो; प्रजा में सबसे प्रिय हो; अमृत-प्राप्ति में सबसे उन्नत हो। उन्नति में तू सूर्य को छू ले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूर्य नमस्कार

० स्वामी शिवानन्द सरस्वती

ऊपर के चित्र में बालक-बालिकायें सूर्य नमस्कार का अभ्यास करते हुए दाएं से—प्रथम और द्वादश स्थिति [सुधा], द्वितीय और एकादश स्थिति [सीमा], तृतीय और दशम स्थिति [टुनटुन], चतुर्थ और नवम स्थिति [पकज], पंचम और अष्टम स्थिति [मल्लुराय], षष्ट स्थिति [देवेन्द्र], सप्तम स्थिति [राजकुमार]

सूर्य नमस्कार एक ऐसा आदर्श अभ्यास है जिसे दिवा रात्रि किसी भी समय अपनी क्लांत हो चुकी शारीरिक एवं मानसिक शक्ति को पुनर्जीवित करने के लिए अंगीकारा जा सकता है। पर इसे भोजन के चार घंटे पूर्व या बाद ही करना चाहिए। हाँ, इसे प्रातः काल के उपरान्त अन्य योग क्रियाओं से सम्बद्धता के पूर्व करना श्रेष्ठतम माना गया है। ऐसा करने से शरीर लचीला होता है और उसमें एक नई स्फूर्ति उबलने लगती है।

शरीर की समस्त प्रणालियों पर इसका अकल्पनीय प्रभाव पड़ता है और इसके नियमित अभ्यास से ये प्रणालियां संतुलित और सस्पन्द होती है।

आधुनिक मानव प्रायः कायिक श्रम नगण्य परिमाण में साधता है। ऐसेमें मांसपेशियों को अपेक्षित उल्लास देने के लिए सूर्य नमस्कार का अभ्यासी शीघ्र ही अनुभव करने लगता है कि उसकी विचारशक्ति विराट और पैनी हो रही हैं। घायलतूफान की गति से भागते आज के ज्वर-जड़ एव जर्जर अग जग में स्नायविक अकर्मण्यताओं से उद्धार के लिए सूर्य नमस्कार से बड़ा कोई औषध उपाय नहीं है। सक्षेप में, जो सार्थक एवं स्वस्थ जीवन के आग्रही हैं, उन्हें सूर्य नमस्कार [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतः सभी उम की नर-नारियों से मेरा आत्मिक आग्रह है कि वे सूर्य नमस्कार का नियमित अभ्यास करके अपने जीवन को जीवंत और उज्ज्वल बनाएं। हां, मासिक धर्म के दिनों में अथवा गर्भ के चौथे महीने के बाद नारियों को सूर्य नमस्कार का अभ्यास नहीं करना चाहिए।

सूर्य नमस्कार के अभ्यास के शीघ्र बाद कुछ मिनटों के लिए शवासन पर अवश्य हो जाना चाहिए। शवासन हृदय की धड़कन एव श्वास की गति सहज-स्वाभाविक कर देगा।

अराजकता, अस्थिरता, अमर्यादा, अधैर्य और अंधाकांक्षा के उत्तरोतर उग्र आज के झंझावाती युग में यह सूर्य नमस्कार संहिता-बद्ध रखते हुए पथराये जा रहे आपके कायिक और मानसिक पक्षों के पोर-पोर पर अदम्य प्राणों के सुवासित सौन्दर्य अंकित कर देगा।

सूर्य नमस्कार बारह स्थितियों से मिलकर बना है, जिनमें से प्रत्येक का राशिचक्र के बारह चिन्हों से लगाव है। सूर्य नमस्कार के एक पूर्ण चक्र में इन्हीं बारह स्थितियों की क्रमशः दो बार आवृत्ति होती है। बारह स्थितियों में से प्रत्येक के साथ एक मंत्र सम्बद्ध है। इस अभ्यास का अधिकाधिक लाभ उठाने के लिए इन मन्त्रों का मानसिक या मौखिक उच्चारण सर्वथा अनिवार्य है। मन्त्रों का चमत्कारी प्रभाव देखा-सुना गया है। मन्त्र-शक्तियों के विश्वासी लोगों का तो कहना है कि मन्त्रों से दैवी शक्तियों की सहायता संप्राप्त होती है। राजस्थान सरकार के आयुर्वेद विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष, यशस्वी कविराज श्री प्रताप सिंह ने 'कल्याण' के जून, १९५० के अंक में अपना एक अनुभव छपवाया था। वे कुछ समय पूर्व किसी असाध्य व्याधि से आक्रांत होकर अतीव क्षीण-दीन हो गए थे और उनकी जिजीविषा प्रायः नष्ट हो चुकी थी। कोई भी औषध असर नहीं कर रही थी। तब जीवन से निराश-हताश उन्होंने एक रात इस महामृत्युंजय मन्त्र का जाप किया—'ॐ सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते, अस्तु तत्पुरुषाय विद्महे धियो रूद्रः प्रचोदयात्।" थोड़ी ही देर में उनकी वेदना विध्वस्त हो गई और वह सुखद नींद में डूब गए। दूसरे दिन से उनका स्वास्थ्य संवरने-सुधरने लगा।

वे भी जो मन्त्रों में विश्वास नहीं करते, यह मानने को विवश हैं कि अन्तःकरण-चिकित्सा में मन्त्र अहम् भूमिका का निर्वाह करते हैं। मंत्रों से भावनाएं सुसंस्कृत और उद्भासित होती हैं। मन्त्रों और भजनों के भाव अन्तस् को स्वस्थ, शुद्ध और सतेज बनाते हैं। हिन्दू धर्म (और योग का भी) का सबसे अधिक यशस्वी मन्त्र 'ॐ' है। यह ईसाई धर्म के 'आमेन' तथा इस्लाम के 'आमीन का मूल है। इस प्रकार आइए मंत्र-जाप करते हुए निम्नांकित स्थितियां अपनाइए; इस विश्वास के साथ कि यह सूर्य नमस्कार आपको सूर्यमान करने जा रहा है।

प्रथम स्थितिः—प्रार्थना की मुद्रा में पंजों को मिलाकर सीधे खड़े होकर शरीर को सर्वतः शिथिल छोड़ दें और आज्ञा चक्र पर ध्यान केन्द्रित करते हुए सहज साँस-गति में ॐ मित्राय नमः का मौखिक या मानसिक उच्चारण करें। यह स्थिति प्रार्थना की मुद्रा है।

द्वितीय स्थितिः—कंधों की चौड़ाई के बराबर दोनों भुजाओं में अन्तर रखते हुए दोनों भुजाओं का सिर के ऊपर उठाइए। फिर सिर और ऊपरी धड़ को थोड़ा-सा पीछे ले जाइए। और ॐ रवये नमः का उच्चारण करते हुए ध्यान को विशुद्धिचक्र पर केन्द्रित कीजिए। भुजाओं को उठाते समय श्वास लें। यह स्थिति हस्त उत्तानासन कहलाती है।

तृतीय स्थिति—इस स्थिति को पादहस्तासन कहते हैं। तबतक सामने की ओर झुकते जाइए जबतक कि अंगुलियां या हाथ जमीन को पंजों के सामने तथा बगल में छू न लें। कोशिश

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधिक जोर मत लगाइए। पैरों को सीधा रखिए। सामने की ओर झुकते समय श्वास छोड़िये। अधिकाधिक सांस बाहर निकालने के लिए अन्तिम स्थिति में अमाशय को सिकोड़िये। मणिपुर चक्र पर ध्यान रखते हुए ॐ सूर्याय नमः का उच्चारण कीजिए।

चतुर्थ स्थिति—यह स्थिति अश्व संचालनासन के नाम से जानी जाती है। इसमें बाएं पांव को जितना संभव हो, पीछे फैलाइए। इसी के साथ दाएं पैर को मोड़िए लेकिन पंजा अडोल रहे। भुजाएं अपनी जगह पर सीधी रहें। शरीर का भार दोनों हाथों, बाएं पांव के पंजे, बाएं घटने एवं दाएं पैर की अंगुलियों पर रहेगा। अन्तिम स्थिति में सिर पीछे उठाइए, कमर को धनुष का आकार देते हुए दृष्टि को आकाशोन्मुख कीजिए तथा स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान केन्द्रित करते हुए ॐ भानवेनमः का उच्चारण कीजिए। बाएं पांव को पीछे ले जाते समय श्वास लीजिए।

पंचम स्थिति—यह पर्वतासन है। दाएं पैर को सीधा करके बाएं पंजे के निकट रखिए। नितम्बों को ऊपर ऊठाइए और सिर को भुजाओं के मध्य में लाइए। अंतिम स्थिति में पैर और भुजाओं को सीधा रखते हुए एड़ियों से जमीन के स्पर्श का प्रयत्न कीजिए। ध्यान सहस्रार चक्र पर केन्द्रित करते हुए ॐ खगाय नमः का उच्चारण कीजिए। दाएं पांव को सीधा करते एवं धड़ को उठाते हुए श्वास लीजिए।

षष्ठ स्थिति—यह अष्टांग नमस्कार है। शरीर को जमीन की ओर इस तरह झुकाइए कि अंतिम स्थिति में दोनों पैरों की अंगुलियां दोनों घुटने, सीना, दोनों हाथ तथा ठुड्डी जमीन का स्पर्श करें।

नितम्ब तथा अमाशय जमीन से थोड़ा ऊपर उठे रहें। पंचम स्थिति में छोड़ी गई सांस को बाहर ही रोके रखिए तथा अपने सम्पूर्ण तन के प्रति सजग रहते हुए ॐ पूष्णे नमः का उच्चारण कीजिए।

सप्तम स्थितिः—यह पूर्ण भुजंगासन है। हाथों को सीधा रखते हुए शरीर को कमर से ऊपर उठाइए तथा सिर को पीछे की ओर कीजिए। कमर को धनुषाकार बनाकर उठते हुए श्वास लीजिए तथा स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान केन्द्रित कर ॐ हिरण्यगर्भाय नमः का उच्चारण कीजिए।

अष्टम स्थिति—यह पंचम स्थिति की आवृत्ति है। इस स्थिति में ॐ मरीचये नमः का उच्चारण कीजिए।

नवम स्थिति—यह चतुर्थ स्थिति की आवृत्ति है। इस स्थिति में ॐ आदित्याय नमः का उच्चारण कीजिए।

दशम स्थिति—यह तृतीय स्थिति की आवृत्ति है और इसमें ॐ सवित्रे नमः का उच्चारण कीजिए।

एकादश स्थिति— यह द्वितीय स्थिति की आवृत्ति है। इस स्थिति में ॐ अर्काय नमः का उच्चारण करें।

द्वादश स्थिति—यह प्रथम स्थिति की आवृत्ति है, जिसमें ॐ भास्कराय नमः का उच्चारण करें।

नए अभ्यासियों को प्रारंभ में अधिक चक्रों का अभ्यास नहीं करना चाहिए। उन्हें दो यातीन से शुरू करके प्रतिदिन एक एक चक्र बढ़ाते जाना चाहिए। पुराने अभ्यासी सूर्य नमस्कार के चक्र को मनचाही संख्या में साध सकते हैं।

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुमेह और योगोपचार

० रामाश्रय

योग सार्वभौम, सर्वकालीन एवं सर्वजनोपादेय स्वास्थ्य-रक्षक रोगनिवारक और दीर्घायुष्यदायिनी विद्या अर्थात् विज्ञान है। लेकिन आज के व्यस्तजीवन में बुद्धिजीवियों के लिए तो यह एकमात्र अमृत विकल्प है। मजदूर किसान तथा अन्य श्रमजीवी किसी न किसी तरह से श्रमके जरिए व्यायाम का लाभ प्राप्त कर ही लेते हैं। कुर्सियों पर बैठे रहकर केवल मानसिक मिहनत करनेवाले लोग आवश्यक शारीरिक श्रम नहीं कर पाते जिसके फलस्वरूप उन्हें रोग घर दबोचते हैं। श्रम से अप्रतिष्ठा महसूस करने वाले और व्यायाम या योगासनों के लिए किंचित समय नहीं निकाल सकनेवाले लोगों को गांठ बांध लेनी चाहिए कि वे रोगों को खासकर मधुमेह या डाइबिटीज के स्वागत अथवा पुनर्वास की तैयारी कर रहे हैं। श्रम के माध्यम से जन्म और जीवन पानेवालों को यह भी याद रखना चाहिए कि जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन का अबाध अनवरत रस प्राप्त करते रहने के लिए वे श्रम को सांस की तरह महत्वपूर्ण मानें। शरीर के विशेष अंगावयव के लिए वांछित प्रभाव मुहैया करने की दृष्टि से समनुरूप सुनियोजित वैज्ञानिक व्यायाम—विधान ही योग है।

डाइबिटीज यानी बहुमूत्र रोग बुद्धिजीवियों का रोग है। दिमागी काम करने के साथ साथ शारीरिक परिश्रम नहीं करने के अलावा शारीरिक आलस्य, कोष्ठबद्धता, यौन असंयम आदि कारण हैं इसके। घड़ी-घड़ी मूत्र त्याग की इच्छा मूत्रनली एवं अंग प्रत्यंग में जलन, पेशाब पर मक्खी तथा चींटी का बैठना, सिर में भारीपन, सिर में चक्कर, चमड़े का रूक्ष और कठोर होना आदि इसके लक्षण हैं। इस रोग को नियंत्रित नहीं करने से आंखों से हाथ धोने का दुर्भाग्य भी झेलना पड़ सकता है। बहुमूत्ररोग में मूत्र में चीनी (शर्करा) रहेगा ही ऐसी कोई बात नहीं। शर्करायुक्त बहुमूत्र रोग को मधुमेह कहा जाता है। शर्कराविहीन बहुमूत्र रोग को उदकमेह कहा जाता है। अग्न्याशय से निकलनेवाली रसधारा खाद्य पदार्थ को पचाने में मदद करती है। एक दूसरी धारा आमिष तथा श्वेतसार जातीय खाद्य पदार्थों से शर्करा अंश को अलग करती है। यह शर्करा यकृत के अंश विशेष में संचित रहती है। श्रम के अभाव, मद्यसेवन, अत्यधिक शुक्र क्षय आदि के कारण यकृत कमजोर हो जाता है, तब वह शर्करा का आधान नहीं कर पाता और यह क्रमशः रक्त में जाकर जमता रहता है जिसके परिणाम स्वरूप रक्त दूषित हो जाता है। प्रकृति उस रक्त को साफ करने के लिए रक्त से शर्करा को अलग कर देना चाहती है जिससे यह शर्करा मूत्र के साथ देह से निकलने लगती है। मूत्र के साथ लगातार शर्करा के निस्सरण से रोगी की जीवनी शक्ति क्षीण होती जाती है।

योग बहुमूत्र अथवा मधुमेह के नियंत्रण अथवा निवारण में अचूक साबित हो सकता है, बशर्ते सिद्ध योग-शिक्षक के निर्देशन में अपेक्षित योगाभ्यास सीख कर उसे नियमित किया जा सके।

मधुमेह के रोगी को सुबह और शाम नियमपूर्वक योगाभ्यास करना चाहिए। सुबह में जानु शिरासन, आग्नेयी मुद्रा या आग्नेयी प्राणायाम उत्क्षेपमुद्रा, कूर्मासन, अग्निसार, उपविष्ट, औरम उड्डयन आसनों का अभ्यास किया जाये तथा शाम में भुजंगासन पश्चिमोत्तानासन, भस्त्रिकासन योगमुद्रा, दीर्घ प्रणाम और अग्निसार आसनों का प्रयोग जारी रखा जाये तो मधुमेह रोग को दफन किया जा सकता है और फिर से नयी जन्दगी हासिल की जा सकती है।

मधुमेह जिन-जिन कारणों से होते हैं उपर्युक्त आसन उनके खिलाफ अचूक प्रहार का काम करेंगे एव बिगड़ी हुई आन्तरिक शारीर प्रक्रिया को निश्चित रूप से दुरुस्त कर देंगे। योगासन सर्वथा अहानिकर और सर्वाधिक ठोस फलदायी दवा हैं। पद्मश्री डा० सी. पी. ठाकुर ने एक बार एक भेंट वार्ता में ठीक ही कहा था कि योग फिजिकल मेडिसिन (दैहिक दवा) है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखण्ड योग

० वाल्मीकि शर्मा

भक्ति शब्द संस्कृत के 'भज्' धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ होता है 'भज सेवाम्'। जो भक्ति के स्वरूप को और भी स्पष्ट करता है। ईश्वर भक्त को यही करना होता है। देव-प्रतिमा के सम्मुख वह अपनी भाव संवेदनाओं की विस्तृति का ही अभ्यास करता है। भक्त की सफलता का निकष भी यही है कि उसने अपने आप का किस हद तक आस्फालन किया।

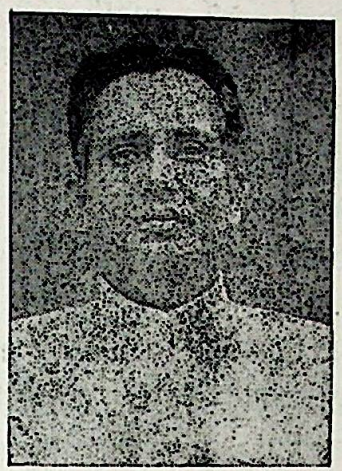

लेखक

बोधिचित्त की उपलब्धि के उपरान्त बोधिसत्व ने सर्वस्व-त्याग की घोषणा करते हुए प्रार्थना की—

"व्याधिग्रस्त के लिए मैं चिकित्सक, औषध और परिचारक बनूं। क्षुधार्त और पिपासु जनों के लिए मैं अन्न और जल का वर्षण करूं। अक्षय रत्न-भंडार के रूप में मैं निर्धन को उपलब्ध रहूं। अनाथों का नाथ, यात्रिगण का सार्थवाह, पारार्थी की नौका, दीपार्थी का दीप, शरणार्थी की शैय्या एवं दासार्थी का दास हो सकूं। जबतक निखिल विश्वदुःख के कुहासे की भित्तियों को छिन्न-भिन्न कर हर्ष के उत्फुल्ल स्पर्श से ऊर्जस्वित न हो जाए, तबतक मैं सबका सम्पूर्ण सेवक होकर संसार में विराजता रहूं।'

भवभूति का कथन है—"रसों में करुण रस प्रधान है।" परम पुरुष की अनुग्रह-ऊर्जा ही करुणा है, जो किसी भाग्यवंत के अन्तस्-क्षेत्र में बीज रूप में आरोपित हो महाकरुणा के विशाल तरू की काया धारण करती है और इसी महा- करुणा के आवेश से ऋषि एक ऐसी स्थिति की कांक्षा करते हैं जिसमें प्रेम, ज्ञान, सौन्दर्य तथा आनन्द की परिपूर्णता के नवीन अरुणोदय के गीत गा सकें और कोई दुःख-दाह-दग्ध न हो।

सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वेसंतु निरामयाः
सर्वे भद्रानि पश्यन्तु.... .....

'आत्मवत् सर्वभूतेषु', सर्वं खिल्विदं ब्रह्म' वेदान्त में वर्णित अद्वैत की यही स्थिति है, जिसमें सर्वत्र अपनी ही सत्ता-कल्लोल करती दिखाई देती है।

महर्षि व्यास अपने महाकाव्य के एक प्रमुख पात्र के मुख से कहते हैं—"मेरी कामना है कि प्राणिमात्र की आर्ति ध्वस्त हो।" तत्व-दर्शन के इस सीमातीत विस्तार को मानो केन्द्र बिंदु पर स्थिर करते हुए हमारे आरण्यकों ने घोषित किया है—"जो प्राणिमात्र को अपने भीतर देखता है, वह फिर माया के द्वारा छला नहीं जा सकता।" परमात्मा विश्वात्माका पर्याय है। भक्ति का अर्थ है, अपनी भाव-संवेदनाओं को विश्वात्मा अर्थात् समस्त जड़-चेतन में घुला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिला देना समस्त संसार को परमात्मा का स्वरूप मानकर उसकी आराधना करना।

महाभारत काल के बाद भी भारतीय चिंतन की यह धारा सहज गति से प्रवहमान रही। यहां के यौगिक, तांत्रिक, भक्ति साहित्य में इसे सहस्रधार बहते देखा गया।

योगीराज अरविन्द ने इसी भावना के वशीभूत हो 'अतिमानस अवतरण की महान चेष्टा की। बंगाल के वामाक्षेपा और प्रभु जगद्वंधु भी ऐसे अवतरण को संकेतिकक र गए हैं।

जिन्होंने अपनी मुक्ति और अपनी शांति का भी परित्याग कर दिया है और पर दुःख ही जिनका अपना दुःख हैं, वे ही महा-मानव इस महास्वप्न को सहेज संभाल सकते हैं।

महाकरुणा के स्वप्न देखे तो अवश्य गये, पर इन्हें साकार करने की जो चेष्टाएं हुईं, वे असफल रहीं। जिन्होंने यह स्वप्न देखा, वे काल सीमा का अतिक्रमण कर एक ऐसी स्थिति से एकरूप हो गए, जहां से पुनः लौटना नहीं होता—

'यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमंमम'

महाकरुणा के अवतरणार्थ आवश्यक है कि योगी पहले तो उस महाशक्ति का पर्याय बनकर परमधाम में जाए, फिर उससे युक्त होकर सांसारिक आयाम में वापस लौट आए। प्राचीनकाल में बुद्धदेव ने महाबोधि प्राप्तकर निर्वाण की स्थिति स्वीकारना अस्वीकारते हुए, बुद्धत्व को स्वीकार किया था।

संसार से असम्बद्ध होकर परमधाम में स्थिति प्राप्त कर लेना निश्चय ही उच्च स्थिति है पर वह खण्ड योग है। इससे उच्चतर स्थिति वह है, जहां योगी परमधाम में प्रवेश करके भी प्राणिमात्र के दुःख से दग्ध होकर परमधाम की सम्पूर्ण तेजस्विता के साथ सांसारिक आयाम से संयुक्त हो जाता है, यही अखण्ड योग है।

———

ओऽम् इडा सरस्वती मही
तिस्रो देवीर्मयोभुवः
बर्हिः सदन्त्वस्रिधः ॥

ऋ० १—१३—९

मातृभाषा, मातृसभ्यता, मातृभूमि तीनों सुखकारिणी स्थिर रूप देवियां हमारे हृदयासन पर विराजती रहें।

———

———

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विज्ञानः वरदो भवेत्

० कुणाल कुमार

विज्ञान की नई-नई उपपत्तियों-उपलब्धियों से सम्पन्न होकर आज हम बाह्य जगत् को पूर्वापेक्षा अधिक बुद्धिपूर्वक समझने में समर्थ हैं। लेकिन जबतक हम अन्तर्जगत और बाह्य जगत् को एक-दूसरे से पृथक् करके विश्लेषित करते रहेंगे और दोनों के अन्तर्जात सामंजस्य को हृदयंगम नहीं करेंगे, हमारा दृष्टिकोण एकांगी और अनर्थक ही रहेगा। हमारे इसी अपूर्ण दृष्टिकोण का परिणाम है कि मानव चेतना के भौतिक, कायिक, और मानसिक स्तर इस युग में जिस त्वरा से उन्नत-प्रगत हो सके हैं; उसी त्वरा से मनुष्य की अन्तश्चेतना का उन्नयन नहीं हो सका है।

जबतक भौतिक शास्त्रियों ने पदार्थ की ही दृष्टि से जीवन-जगत् की संरचना का अध्ययन किया, तबतक यह प्रश्न खड़ा करना बहुत अनिवार्य नहीं हुआ कि मनुष्य होने के नाते उनकी क्या मनोकांक्षाएं हैं और वे कैसे जीवित रहते हैं। यह सर्वथा उचित ही था कि, जीवन के बारे में उनके विचारों को, उनके अध्ययन को छोड़कर, उनकी किताबी छानबीन से परे रखा जाए। किंतु जिस क्षण से आणविक भौतिक-शास्त्र अणुशक्ति का क्रियात्मक उपयोग संपन्न करने में समर्थ हो गया है, तभी से वैज्ञानिक के रूप में इनके रहन-सहन एवं विचार के तरीकों से पृथक् करके उनपर गौर करना असम्भव हो गया।

यह कहना कठिन हो गया कि, अणुशक्ति किसी भी रूप में प्रयुक्त हो, वैज्ञानिकों को उसमें हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है। अणुवैज्ञानिकों का मामला एक सर्वाधिक उल्लेखनीय दृष्टांत है, पर अनेक मामलों में आचार शास्त्र का प्रश्न हमारी विचार-कोटि में तभी आया है, जब विज्ञान की उपादेयता असंदिग्ध हुई है। अब तक वैज्ञानिक प्रगति का यही चरित्र रहा है कि मनुष्य के आकार को, मानव समाज के विविध आयामों को सम्बद्ध और समृद्ध करनेवाले के बजाय, उसे अस्त-व्यस्त करनेवाला चित्रित किया जाए।

अनेक शाखाओं में विज्ञान के बंट जाने का फल यह हुआ कि, विश्वसनीय सूक्ष्म ज्ञान तथा प्रक्रियाओंवाले बहुत-से विशेषज्ञ हो गए। ज्यो-ज्यों मनुष्य-निर्मित मशीनों की विविधता बढ़ी, त्यों-त्यों उनमें से हरेक अधिक पेचीदा होती गयी। जो व्यक्ति किसी मशीन का नियन्त्रक-नियामक था वह उसके कारबार को पूरी तरह पहचानने की दिक्कतें उठाने से कतराता रहा और उसका उपयोग करने-मात्र से संतुष्ट रहा। जहां पहले मनुष्य अपने को मशीनों का संचालक मानता था, वहां अब वह उनकी सहायता का मोहताज बना बैठा है। यह अच्छी बात है कि, मशीनों के कारण बहुत से कामों में मनुष्य की ज़रूरत नहीं रही और उन्होंने मनुष्य के कार्यों में योग दिया है पर हमें इस दिशा में सचेत रहना होगा कि यदि हमने मशीनों से वे सारे कार्य लेने आरम्भ कर दिये जो मानवीय मस्तिष्क से किये जाते हैं, तो एक दिन दशा क्या हो जायेगी।

कोई यह नहीं कह सकता कि, इन सब विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों के एकत्र हो जाने से इसका खतरा नहीं कि, मानवता के विभिन्न आभोगों की एकता ध्वस्त हो जायेगी और अंततः समस्त मानव-समाज भस्मासुर की तरह अपनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वरदायिनी अजेय शक्ति से स्वय ही भस्म हो जायेगा ।

आजकल अक्सर यह प्रश्न उभरता है कि, विज्ञान से मनुष्य-जाति को सुख देने वाले मानव-सभ्यता तथा संस्कृति का एक अभूतपूर्व सौन्दर्य-सम्पन्न, आनन्दप्रद ज्ञानगरिमा पूर्ण एवं सृजन ऐश्वर्य प्रभूत नवीन युग का विश्वजीवन में आविर्भाव हो सकेगा या नहीं। इसका एक निश्चित उत्तर देना आसान नहीं है। हम २० वीं शताब्दी के लोग भी निश्चयपूर्वक यह नहीं कह सकते कि विज्ञान से मनुष्य हर स्थिति में सुखी ही बनेगा।

इस बात का कोई भरोसा नहीं कि. विज्ञान की प्रगति से मनुष्य सदा उल्लसित ही रहेगा। मुख्यतः यथार्थोन्मुखी विज्ञान तो बहिर्जगत के उन रहस्यों से लाभ उठाने की मानवीय चेष्टा का प्रकाशनमात्र है जिनके बारे में हम छानबीन कर सकते हैं और मानवजाति के लिए नई सम्भावनाओं के क्षितिज उद्घाटित कर सकते हैं। उस रहस्यमय संसार में क्या है । यह आवश्यक नहीं कि, नयी संभावनाओं की खोज से मनुष्य सुखी ही होगा। संभव है, इस खोज से सुख की किरणें फूट पड़ें और यह भी संभव है कि इससे समस्त मानव-समाज ही महानाश के मुंह में चला जाए।

प्रश्न हो सकता है कि इस भूतल पर मानवीय सुख किसे समझा जाये । इसका सटीक उत्तर देना अत्यंत कठिन है। क्या विज्ञान की कोई ऐसी शाखा हो सकती है, जो इसका सीधा उत्तर दे । लगता है कि, मानवीय सौख्य को अध्ययन का विषय भी नहीं बनाया जा सकता । हर्ष, क्रोध, भय और शोक जैसे मानवीय भाव हमारे मन से उत्पन्न होते हैं। और अनेक दशाओं में यह मानवीय चेतना या अन्तर्दृष्टि से भी परे की बात होती है। मनुष्य में बहुत-सी बातें ऐसी हैं जो आदि-मानव की निर्मिति से भी पहले से इसमें विद्यमान हैं। वह उन्हें समझे या न समझे, वे कायम हैं और मानवीय भावना उनसे घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध हैं । इसलिए जब मानवीय सुख के सबंध में प्रश्न किया जाता है, तो उसे सिर्फ विज्ञान के सहारे हल करना बड़ा कठिन होता है। मानवीय भावना और इसी तरह मानवीय सुख की बात इन असाध्य वस्तुओं से अविच्छिन्न रूप में जुड़ी हुई है।

फिर प्रश्न यह है, ऐसा क्यों होता है कि मानवीय संसार में जो वस्तुएं अभीष्ट और सिद्धांत रूप में उचित स्पष्ट होती हैं, उन्हें हम सरलता से उपलब्ध नहीं कर पाते और विवादास्पद चीजें बहुधा हमें प्राप्त हो जाती हैं। इसका कारण यह है कि मनुष्य महज तर्कसंगत विचारों से ही प्रेरित नहीं होता है । तथापि इसका यह अर्थ नहीं कि हम मनुष्य अपनी विचार-शक्ति या बुद्धि का विशेष उपयोग ही नही कर सकते। इसके विपरीत हम अन्तःसक्रिय होकर अपने अन्तःस्थित चैतन्य की गूढ़ बातों को उभारकर मानवता के व्यापक स्वरूपों को बुद्धि-संगत विचार-चिंतन के क्षेत्र में ला सकते हैं । इस प्रकार के प्रयत्न करके हम मानव समाज को भावी विनाश के मार्ग पर आगे बढ़ने से रोक सकते हैं। वैज्ञानिक युग में रहने वालों के लिए क्या यह एक अपूर्व बुद्धिमता की बात न होगी ?

सत्यमेव जयते नानृतम । मुक्ति का दिव्य पथ सत्य द्वारा निर्मित है। इस पर वे मनीषी ही चल सकते हैं, जिन्होंने अपनी इच्छाओं को जीत लिया है। सत्य ही वह सर्वोच्च सम्पदा है, जो हमारा परम प्राप्तव्य है।

—मुण्डकोपनिषद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaigaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्य का क्षण

डा. राधाकृष्णन् ने भारतीय संस्कृति की व्याख्या करते हुए, उसके मौलिक तत्वों में अभय और असंग के साथ ही साथ अहिंसा को भी प्रमुख स्थान दिया है। महावीर की अहिंसा जीव-मात्र पर दयाभाव से प्रेरित थी। हमारे युग में जब गांधी ने अहिंसा को मानव और उसकी आर्थिक-सामाजिक-राजनैतिक व्यवस्था के सुधार का सर्वोपरि साधन घोषित किया, तो आइन्स्टाइन ने गांधी के विषय में कहा कि आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से ही यकीन कर पायेंगी कि इस जमीन पर कभी कोई ऐसा आदमी भी जनमा था, जिया था।

परंतु एच. जी. वेल्स ने लिखा कि अहिंसा वनस्पति-जगत का ही नियम हो सकता है। वेल्स ने यह विचार शायद अहिंसा की व्यावहारिकता पर अविश्वास और शंका के वशीभूत होकर व्यक्त किया था। मगर सचमुच गांधी की अहिंसा में 'वनस्पति ही' नहीं 'वनस्पति भी' पूरी तरह शामिल थी।

बात उन दिनों की है, जब राजाजी बंगाल के गवर्नर थे। और गांधीजी कलकत्ता आये हुए थे। जिस कमरे में गांधीजी राजाजी और गवर्नर के सैनिक सचिव बैठे चर्चा कर रहे थे, उसी कमरे के एक कोने में बैठी एक युवती मटर छील रही थी—अपने में बेखबर और काम में मग्न।

तभी गांधी जी ने उस युवती की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा—देखिये, इस लड़की का काम करने का तरीका कितना आक्रामक है।' मगर लड़की तो खामोश बैठी थी; वह आक्रामक कहां से हो गया?

गांधीजी ने मटर के कुछ दानों की ओर इशारा किया, जो कटोरे के बाहर जमीन पर बिखरे पड़े थे और किसी के पांवों से कुचले जाकर बेहाल हो गये थे। गांधीजी की निगाह में यह लापरवाही 'आक्रामक' थी और हिंसा थी। सो अहिंसा की व्यापक व्याख्या करते हुए वे बोले:

'जो सुन्दर है, वह सत्य भी है। यदि किसी खाद्य पदार्थ को लापरवाही से नष्ट होने दिया जाता है, तब यह भी सत्य के प्रति एक प्रकार की हिंसा ही होगी। समय अथवा काल एक चिरंतन सत्य है, समय के प्रति पाबन्दी का अभाव भी सत्य के प्रति हिंसा नहीं तो और क्या है? स्वच्छता एक सर्वमान्य सत्य है तब कोई सच्चा अहिंसक अस्वच्छ कैसे रह सकता है। व्यक्ति नहीं, प्रकृति जीवन के मानक निर्धारित करती है। अतः जो कुछ प्राकृतिक है वही मानव के लिए मानक है। हमारे विचार, अभिव्यक्ति और कर्म के मानकों का आधार भी प्रकृति ही तो है। जब इन मानकों में किसी प्रकार का "अभाव' अथवा "अतिरेक" हो, तो आप निश्चित समझिये कि यह सत्य के प्रति हिंसा के अलावा कुछ नहीं है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महानता की ओर

जीवन को यदि मोटी दृष्टि से देखा जाय तो वह एक ऐसा खिलवाड़ जान पड़ता जिसे ज्यों-त्यों करके काटा जाता हैं। निर्वाह की व्यवस्थाएं जुटाने एव प्रतिकलताओं से मोर्चा लेने में ही माथापच्ची करते-करते समय पूरा हो जाता, है। चारों आर अभाव एवं संकट ही नजर आते हैं। नीरस-निरर्थक जीवन जीते हुए--अपने दुर्भाग्य का रोना रोते हुए—व्यक्ति अपना समय समाप्त कर मौत के मुंह में चला जाता है। साधारण जीवन की यही एक छोटी-सी झांकी है जो विपरीत परिस्थितियों में तो अन्य प्राणियों से भी इसे गया-बीता बना देती है।

इससे ऊपर की स्थिति वह है जिसे असामान्य जीवन कहते हैं। सफल, समर्थ और समुन्नत स्तर को प्राप्त व्यक्ति साधारण मनुष्यों को सौभाग्यशाली प्रतीत होते हैं, वैसी स्थिति प्राप्त करने को उनका मन भी ललचता है। पिछड़े और समुन्नत मनुष्य समूहों के मध्य यह अन्तर देखने से आश्चर्य होता है कि एक जैसी काया मे रहने वाले मनुष्य प्राणियों की स्थिति का इतना ऊंचा नीचा होने का इस असमानता का क्या कारण हो सकता है। सृष्टा का पक्ष पात अविवेकपूर्ण व्यवहार भी इसे नहीं कह सकते यदि वहां व्यतिक्रम रहा होता तो यह अव्यवस्था प्रकृति के हर घटक में उच्छृंखलता के रूप में दृष्टिगोचर होती।

मानव-मानव के बीच पाये जाने वाले इस अन्तर का जब कारण ढूढ़ते हैं तो एक यह तथ्य हाथ लगता है कि जीवन की उथली परतों तक ही जिनका वास्ता रहा है, उन्हें हमेशा छिलका ही हाथ लगा है। जिन्होंने गहराई में प्रवेश किया है, वे बहुमूल्य रत्न पा सकने में समर्थ हुए हैं। गहराई में उतरने को ही अध्यात्म की भाषा में साधना कहते हैं। साधना किसकी? इसक उत्तर है उस देवता की जो मानव जीवन के रूप में हर व्यक्ति को सहज रूप में मिला है। इस कल्पवृक्ष की जो जितनी साधना कर लेता है, वह उतना ही समर्थ सफल एव ऊंच स्तर का बनता चला जाता है। इसकी गरिमा न समझ पाना 'स्व' का बोध न होने से पशु-वलम्बी स्वभाव का होना ही वस्तुतः वह अभिशाप है जो कई व्यक्तियों को गई-बीती नर पशु जैसी स्थिति में रहने को विवश कर देता है। सृष्टा ने बीज रूप में वैभव का भाण्डारागार अपनी इसी मानवी काया में संजोकर रख हैं। भूल इतनी ही होती है कि न इसे खोजा जाता है न काम में लाने की बात ही बनती है। जब इस भूल के परिमार्जन के प्रयास चल पडते हैं तो इसे आत्म-ज्ञान कहते है। यही जागृति जब सक्रिय होकर महानता की दिशा में मोड़ लेने लगती है तो इसे आत्मोत्कर्ष की साधना कहा जाता है।

जीवन प्रत्यक्ष देवता है। उसकी साधना कर सकने वाले सुनिश्चित रूप से भौतिक सिद्धियां और आत्मिक ऋद्धियां उपलब्ध करते हैं। दूसरे भ्रमग्रस्त तो कल्पित देवी देवताओं के सामने नाक रगड़ते,, मनुहार करते, दांत निपोरते औ अन्ततः निराश होकर खीजते अनास्था व्यक्त करते देखे जाते हैं। विवेकवानों को वास्तविकता ही वरण करनी चाहिये भले ही वह कठोर या कष्टसाध्य ही क्यों न हो। नियति की व्यवस्था एक सुसंचालित सत्ता के हाथ में है। उसे किसी आतुर लालची की इच्छानुसार नहीं बदला जा सकता। प्रतिभा अर्जित किये बिना बहुमूल्य सफलताएं यदि ऐसे ही पूजा-पाठ जैसे 'शार्ट कटों' से मिल जाया करें तो फिर संसार में एक भी मनुष्य व्यक्तित्व उभारने-उत्कृष्टता अपनाने का साहस न करेगा। अपना आपा ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब कुछ है। यदि इसे साध लिया, इसकी उपासना कर ली तो सब कुछ पाया जा सकता है— इस तथ्य को जितनी गहराई से समझा जा सके- उत्तम है। जो इस सनातन सत्य को जितनी जल्दी अंगीकार कर सके, उन्हें उतना ही बड़भागी माना जायगा। मनुष्य जन्म से जुड़े हुये अनेकानेक उपहारों से लाभान्वित हो सकने का अवसर मात्र ऐसे ही लोगों को मिलता रहा है। भविष्य में भी उन्हीं के लिये सुनिश्चित रहेगा।

देवता भीतर से उगते है। सामने तो वे खड़े भर दीखते हैं। मनःस्थिति अदृश्य है, आंतरिक है। परिस्थिति उसकी दृष्यमान परिणति है। विषाक्तता रक्त में रहती है। व्रण-अर्बुद के रूप में वह फूटती भर है। पेड़ के पल्लव, फल-फूल ऊपर आसमान से नहीं टपकते, वे दृष्टि से ओझल रहने वाली जड़ों द्वारा भूमि से रस रूप में खींचे जाते हैं। विभूतियां अन्तर में से निकलती हैं। आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी दैवी ने किसी के साथ पक्षपात किया हो और योग्यता से अधिक अनुपात में अनुग्रह उंड़ेल दिया हो।

मनुष्य की सरचना कुछ ऐसी विशिष्ट है कि वह आत्मसम्पदा के सहारे सजातीय परिस्थितियों एवं व्यक्तित्वों को अनायास ही अपने निकट जमा कर लेता हैं। पेड़ अपनी आकर्षण शक्ति से बादलों को खींचते है और बरसने के लिये विवश कर देते हैं। खदानें अपने सजातीय कणों को दूर-दूर तक आमंत्रण भेजती हैं और उन्हें अपने निकट खींच बुलाती है। यह चुम्बकत्व है जो जहां जितना अधिक होगा, सजातीय को उसी स्तर का आह्वान-निमन्त्रण मिलेगा व फलतः वे तेज गति से दौड़-कर उससे आ मिलते हैं. खिलते फूल का चुम्बकत्व मधुमक्खियों तितलियों और भौरों को आमंत्रण देता है। खिलते—उभार की ओर अग्रसर यौवन से अनेकों आंखें आकर्षित होती हैं। प्रतिभा अनेकों को प्रशंसक एवं अनुयायी बनाती है। यह चुम्बकत्व दैवी शक्तियों को अदृश्य रूप में आमंत्रित करता है और उन्हें अनुग्रह बरसाने के लिये सहमत

जीव का छोटा अन्तराल लगभग उतना ही समर्थ है जितना ब्रह्मांड का विराट विस्तार। जानकारों को पता होता है कि पेड़ तो मात्र कलेवर है उसकी शोभा-समर्थता का स्रोत तो अदृश्य जड़ों में ही पूर्णतया सन्निहित है। सौर मण्डल की समस्त प्रक्रिया सूक्ष्म रूप में नन्हें से परमाणु में यथावत् गतिशील रहती है। वृक्ष का विशालकाय ढांचा छोटे से बीज में सुनिश्चित रूप में विद्यमान रहता है। ठीक इसी प्रकार मानवी काया के जर्रे-जर्रे में विराट विश्वात्मा की झांकी मिलती है। हर कण कितना सामर्थ्यवान हैं, असीम सम्भावनाओं से भर पूर है— यह जानकर आश्चर्य होता है। पर विडम्बना यह है कि इसी आत्म गरिमा से—असंख्य व्यक्ति अनभिज्ञ होते हैं। इसी कारण गयी-बीती जिन्दगी जीते हुये इस अनमोल रत्न को कौड़ी के मोल तक में बेचने को तैयार रहते हैं।

इस स्थिति से मुक्ति पाकर—मानवी गरिमा का बोधकर- -- एवं इसकी समुचित सुनियोजित व्यवस्था बनाकर चलने वाला व्यक्ति सामान्य से असामान्य की स्थिति में जा पहुंचता है। परावलम्बन से आत्मावलम्बन की ओर चिंतन का चलने लगना इसी प्रगति का चिन्ह है। हर काम में बाहर से सहारा. दैवी अनुकम्पा चाहने व्यक्ति जब 'स्व' परायण होकर अपने 'सुपर चतन' को जगाने का पुरुषार्थ आरम्भ करता है तो उसका महामानव बनने का पथ-प्रशस्त होता चला जाता है। सिद्धान्त सब मिलाकर एक ही है कि व्यक्ति स्वयं को जाने अपनी प्रस्तुत क्षमता को जगाये एव आत्म परिष्कार की व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया से अपनी जीवन साधना आरम्भ करे। हर दृष्टि से फलितार्थ इसी तथ्य के रूप में निकल कर आता है कि जिसने व्यक्तित्व के विकास की—अन्तः की सामर्थ्यों को जगाने—विकसित करने की साधना कर ली, वही सिद्ध पुरुष बन गया।

अभी मानवी मस्तिष्क की जितनी भी जानकारी वैज्ञानिकों को है—वह मात्र उसका १० प्रतिशत भाग है।

इसी सक्रिय भाग की विद्युत का मापन कर मस्तिष्क रूपी कम्प्यूटर को विलक्षण माना जा चुका है। प्रसुप्त जो है वह कितना सामर्थ्यवान

Adhyatmik Vishwavidyalaya Mathi Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होगा, उसकी तो भी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। गुणसूत्रों की बनावट व क्रिया-कलापों के विषय मे जो भी कुछ जाना जा सका है विलक्षण है। जीव-कोष— उसकी संरचना, प्रक्रियाएं डी० एन० ए आर० एन० ए इनकी जय गौरव गाथा पढ़ते हैं तो आश्चर्यचकित रह जाते हैं। परमाणु के नाभिक की असीम सम्भावनाओं की तरह शरीर का हर जर्रा अपरिमित विशेषताओ से भरा हुआ है। इन्हीं काय-घटकों के माध्यम से व्यक्तियों ने ऐसे असम्भव काम कर दिखाये हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य से दातों तले अंगुली दबानी पड़ती है। ऐसे व्यक्ति जो प्रारम्भ में घटिया स्तर के थे स्व की गरिमा का बोध होने से..... आगे कुछ बन गये। यह दुस्साहस असम्भव को कर दिखाने की ललक जहां से उठता है..... वह मूल स्रोत अपना अन्तःकरण ही है। जहां से वे हिलोरें सतत् उठती रहती है जो जीवात्मा को उठने, जागने और ध्येय तक पहुंचने के लिये गतिशील होने को प्रेरित करती है। इसे ही अन्तरात्मा की पुकार, भगवान की आवाज, 'कन्सान्स' या 'जमीर' नाम से अलंकृत किया जाता है। इसे सुनकर जो अपने पराक्रम को सही मोड़ दे देता है, वही महानता का पथ पा लेता है।

शरीर की दृष्टि से बली दुस्साहसियों की यहां चर्चा नहीं हो रही हैं। जीवन के धनी मनः स्थिति से परिस्थिति को बदलने वाले अपने अन्तः की साधना से अपना नया ससार बनाने वाले ऐसे नर पुंगव इतिहास में अनेकों हुए हैं। महात्मा गांधी शरीर की दृष्टि से तो क्षीण दुर्बल थे। मात्र १६ पौंड की काया पर प्रचण्ड मनोबल के धनी इस महामानव ने अपनी जीवन साधना से भारत का नव निर्माण कर दिखाया। अब्राहम लिंकन, मार्टिन लथर एवं जार्ज वाशिंगटन भी ऐसे ही सामान्य व्यक्तियों में से थे। जीवनोद्देश्य को पहचान कर जब उन्होंने अपनी दिशा को मोड़ा तो ऐसे चले कि फिर पलटकर नहीं देखा। सारी प्रतिकूलताओं से अकेले ही मोर्चा लेने की यह सामर्थ्य उनके भीतर ही तो उपजी।

वैज्ञानिकों, अर्थशास्त्रियों, समाज सेवियों को यश-सम्मान मिलता हैं- वह उनकी प्रतिभा साधना--मनोयोग पूर्वक श्रम से अर्जित उपलब्धियों के कारण। इसके लिए उन्हें दैवी मनुहार नहीं करनी पड़ी। अपने अन्दर उन्होंने स्वयं को टटोला-एक विपुल रत्नराशि का भण्डार पाया तथा स्वयंको उसके सदुपयोग की ओर नियोजित कर दिया। हम्फी, डैवी, एलेक्जेण्डर फ्लेमिंग, मेडम क्यूरी एडीसन, आइन्स्टीन, कार्ल मार्क्स, सी० वी० रमन, जगदीश चन्द्र बसु बाबा साहब आमरे, बाबा राघवदास जैसे कुछ उदाहरण ऐसे व्यक्तियों के हैं जिन्होंने वास्तविक अर्थों में जीवन देवता की साधना की।

इस प्रकार प्रसुप्त शक्तियों के जगने-उभरने उफनने पर उसी तरह की प्रवाहधारा बहने लगती है जैसी कि यमुना, नर्मदा जैसी नदियां कुण्डों से निकलकर भूतल पर प्रवाहित होती हैं। इतना होने पर ब्रह्मा की दिव्य शक्तियां साधक पर अन्तरिक्ष से घटाओं की तरह बरसती हैं। यह दोनों ही सौभाग्य हर किसी के लिये सहज सुलभ हैं। स्वयं को इस योग्य बनाकर इस संसार में कुछ भी पाया जा सकता है। जीवन देव की साधना अन्तरंग और बहिरंग दोनों पक्ष को स्वस्थ समुन्नत बनाती है। झाड़ियों के स्थान पर उद्यान लगाना--वन्य पशुओं को पालतू बनाना--अनगढ़ को सुगढ़ में बदल डालना ही संस्कृति हैं इसी का चमत्कार इस दृश्य जगत में सर्वत्र बिखरा पड़ा है अपने आप को सद्गुणों की सम्पदा से लदा कल्पवृक्ष बना लेना-यही साधना का उद्देश्य है। यही वह तत्वदर्शन है जो एक नितान्त सामान्य जीवन जीने वाले का, मात्र एक मोड़ मिलते ही असामान्य बना देता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्यार और घृणा बच्चों में

ए० एस० नील के लेख के अंश

प्यार और घृणा एक दूसरे के विरोधी भाव नहीं है। प्यार का विरोधी भाव है विरक्ति प्यार का दूसरा रूप है घृणा। घृणा में हमेशा डर का अंश होता है। इसे हम उस बच्चे में देखते हैं, जो अपने छोटे भाई से घृणा करता है। उसकी घृणा के पीछे यह डर होता है कि वह कहीं माँ के प्यार से वंचित न रह जाये। साथ ही उसे अपने भाई -संबंधी प्रतिहिंसात्मक विचार का डर भी होता है।

अन्सी नाम की चौदह साल की एक विद्रोही लड़की जब हमारे स्कूल में पढ़ने के लिए आयी वह मुझे गुस्सा दिलाने के लिए मारने लगी। वह मुझे अपने पिता का प्रतिरूप समझने लगी थी। पिता के लिए उसके मन में घृणा थी और डर था। पिता ने उसे कभी गोद में बैठने की इजाजत नहीं दी थी। न उसे किसी दूसरे ढंग से प्यार दिया था सो अपने पिता के प्रति अन्सी का प्यार घृणा में बदल गया था। हमारे स्कूल में आने पर उसे अचानक पिता के रूप में एक ऐसा व्यक्ति मिला गया, जो उसके साथ सख्ती से पेश नहीं आता था और जिससे उसे डर नहीं लगता था। सो उसकी दबी हुई घृणा बाहर निकली। अगले दिन वह मुझसे बड़ी मृदुता से पेश आयी, जो इस बात का सबूत था कि उसकी घृणा वास्तव में प्यार का रूपांतर थी।

बहुत कम माता पिता यह महसूस करते हैं कि वे सजा द्वारा अपने प्रति बच्चे के प्यार को घृणा में बदल देते हैं। बच्चे में उपजी घृणा को देख सकना बहुत मुश्किल है। माताएं बच्चे को मारने के बाद देखती हैं कि बच्चे का रवैया नरम पड़ गया है। पर वे यह नहीं जानती कि बच्चे में जो घृणा पैदा हुई थी, वह मारने से अचानक उसके अचेतन मन में दब गयी। पर दबी हुई भावनाएं मरती नहीं है। वे सिर्फ सो रही होती हैं।

एक दिन सुबह मैंने अपने प्रत्येक विद्यार्थी को अलग से बुलाकर उसे अपनी मौत की कहानी सुनायी। सुनते ही हर विद्यार्थी का चेहरा चमक उठा। उस दिन सभी विद्यार्थी बहुत खुश नजर आये। राक्षसों को मारने की कहानियां बच्चों को हमेशा पसंद आती हैं; क्योंकि वे उन राक्षसों में किसी हद तक अपने पिता को देख रहे होते हैं।

माता पिता के प्रति बच्चे की घृणा को देखकर घबराने की जरूरत नहीं। यह घृणा हमेशा उस समय शुरू होती है, जब बच्चा अहंमवादी था। बच्चा प्यार और शक्ति चाहता है। हर गुस्सा भरा शब्द, हर गाली, हर थप्पड़ बच्चे को उस प्यार और शक्ति से वंचित करता है। मां की डांट सुनकर बच्चा सोचता है—मां मुझे प्यार नहीं करती' और जब पिता कहता है कि खबरदार, इसे हाथ न लगाना तो बच्चा सोचता है—'ये मेरे रास्ते में आड़े आ रहे हैं। काश! मैं भी इतना बड़ा होता!

हां, बच्चे में माता पिता के प्रति घृणा होती है; पर वह इतनी खतरनाक नहीं होती, जितनी कि बच्चे के प्रति माता -पिता में पाई जाने जाने वाली घृणा माता-पिताका बच्चों को यह न करो वह न करो कहते रहना, डांटना-फटकारना, मारना -पीटना, गुस्से में लाल पीले होना, उनकी घृणा की प्रतिक्रियाएं हैं। जिन दम्पति की आपस में बनती नहीं और जो हमेशा आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं उनके बच्चों के सही विकास की बहुत कम संभावना रहती है। ऐसे माता पिता अपना गुस्सा बच्चों को हल्का करते हैं।

जब बच्चा प्यार नहीं पा सकता, तो उसके एवज में वह घृणा पाना चाहता है। वह सोचता है —मां मुझ पर ध्यान नहीं देती। वह मुझे प्यार नहीं करती। वह मेरी छोटी बहन को प्यार करती है। मैं उसका ध्यान अपनी ओर खींचकर दिखाऊंगा! और वह चीजें तोड़ने-फोड़ने लगता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बच्चे के आचरण की सभी समस्याओं के मूल में होता है उसे प्यार न मिलना। सजाएं और नैतिक उपदेश इस समस्या को हल नहीं करते, बल्कि वे घृणा को बढ़ाते हैं।

जब माता-पिता बच्चे को जरूरत से ज्यादा लाड़-प्यार करते हैं तब भी उसमें घृणा पैदा होती है। बच्चा जहां एक ओर माता-पिता के इन बंधनों से घृणा करता है, वहीं वह माता-पिता को चाहता भी है। यह अन्तर्-विरोध कोई बार निर्दयता के रूप में प्रकट होता है। बच्चे के मन में अपनी मां के प्रति घृणा तो दब जाती है, पर चूंकि इस घृणा को कोई न कोई निकास चाहिये इस लिए बच्चा बिल्ली को या अपनी छोटी बहन को मारने लगता है, क्योंकि ऐसा करना मां से विद्रोह करने की अपेक्षा उसे आसान नजर आता है।

हम अपने भीतर जिन चीजों से घृणा करते है, उन्ही को दूसरों में देखकर घृणा करते हैं। जो घृणा हमें अपने बचपन में मिली होती है, उसी को हम अपने बच्चों पर प्रकट करते हैं

कहा जाता है कि अगर आप घृणा नहीं कर सकते, तो प्यार भी नहीं कर सकते। शायद यह ठीक ही हो। परन्तु घृणा करना मुझे बहुत कठिन लगता है। और न मैं बच्चों को कभी निजी प्यार ही दे पाया हूं। कोरा भावुकता भरा प्यार तो कभी भी नहीं दे पाया।

हर बच्चा महसूस करता है कि दंड वास्तव में घृणा हैं। और प्रत्येक दंड बच्चे को और अधिक घृणा करने के लिए मजबूर करता है घृणा घृणा को जन्म जन्म देती है और प्यार में से प्यार पैदा होता है। किसी भी बच्चे की घृणा का प्यार के सिवा कोई और इलाज नहीं है।

शुभकामनाओं के साथ :-

रामनारायण बद्रीदास

कदमकुआं पटना-३

फोन नं० ५२३७५

RajGuru Vani, Chhala, Varanasi, Cell

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योग

डॉ० परमानन्द पाण्डेय

"कर्म" शब्द कृत धातु से बना है— जिसका अर्थ है—"करना"। अतः जो कुछ किया जाता है वह कर्म है। पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, सोचना आदि जो भी क्रिया हम करते हैं वही कर्म है। "योग" शब्द "युज्" धातु से बना है। इसका अर्थ होता है- जोड़, मेल। दो पृथक् वस्तुओं का जुड़ना या मिलना ही जोड़ या मेल है। अतः दो वस्तुओं में जहां पार्थक्य है वहीं योग भी होगा। योग का अर्थ— युक्ति, उपाय और साधना भी है जैसा कि अमरकोश में भी है — योग संगहननोपापुध्यान संगति युतिषु ३. ४. २६। गीता में भगवान कृष्ण ने "योग" को कर्म की कुशलता [योगः कर्मसु कौशलम् - २/५०] कहा।-पहले ही कहा गया कि "योग" का अर्थ जुड़ना, है। उपर्युक्त तथ्यों के सामंजस्य से कर्मयोग" का तात्पर्य हुआ- "कर्म के साथ उत्तम युक्ति से जुड़ना मुख्यतः कर्म के तीन पक्ष हमारे सामने आते हैं संकल्प, क्रिया और फल। अतः कर्म के तीनों पक्षों- संकल्प, क्रिया और फल से सम्यक् युक्त होना ही कर्मयोग हुआ। कर्मयोगी वही है जो इन से कुशलतापूर्वक अति उत्तम रीति से अपने को युक्त करता है। अब यहां तीनों पक्षों पर विचार करना समीचीन होगा।

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा—

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्य-कर्मकृत्
३-५।

अर्थात् कोई विना कर्म किये एक क्षण भी नहीं रहता है। निरन्तर कर्म का चक्र चलता रहता है। जीवन का प्रत्येक क्षण कर्ममय है- चलना, बोलना, खाना, पीना, सोचना, सोना आदि कोई-न-कोई कर्म हमसे होता ही रहता है। तब प्रश्न यह उठता है— इस कर्मधारा को हम किधर और किस प्रकार लगावें? यही समस्या अर्जुन के सामने थी और भगवान कृष्ण ने निर्देश किया—

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योःसमो भूत्वा सकत्वं योग उच्यते॥
२/४८।

अर्थात् सिद्धि और असिद्धि में समत्व भाव रखकर—आसक्ति त्याग कर कर्म में युक्त हो— लगो, यही योग है,—यही कर्म कुशलता भी है। ऐसा ही कर्मयोगी कर्म के पाप-पुण्य से अलिप्त रहता है और जन्म-बन्धन से मुक्त होकर परम-पद प्राप्त करता है।

कर्म के प्रति आसक्ति तभी छूट सकती है जब कर्म और फल दोनों को भगवान में अर्पित कर दे। इसीलिए गीता के पांचवें अध्याय (१०,१२) में भगवान ने कहा कि जो पुरुष सभी कर्मों को परमात्मा को अर्पित कर देते हैं वे कमल-पत्र के सदृश पाप रूपी जल से निर्लिप्त रहते हैं और जो कर्म फल को भी परमात्मा को अर्पित कर देते हैं वे परमशान्ति को प्राप्त करते हैं। परन्तु, कर्म से ऐसी अनासक्ति कैसे हो? तो बराबर भगवान के वचन को स्मरण रखना होगा, उनका आदेश है—

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोसि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥
(गीता ९-२७)

भगवान के इस आदेश को निरन्तर याद करने से—इसका अभ्यास करने से यह अनुभव होगा कि ईश्वर सूत्रधार है और हम कठपुतली की तरह उसके संकेतों पर कार्य कर रहे हैं। यही बात भगवान शंकर ने पार्वती से कही—

उमा दारुजोषित की नाई।
सबहिं नचावत राम गुसाईं॥
(मानस, किष्किन्धा काण्ड ११-७)

सर्वात्म समर्पण से अहंकार दूर होने पर अर्थ, धर्म, काम-मोक्ष सभी पुरुषार्थ भी तुच्छ हो जाते हैं। यही स्थिति भक्तशिरोमणि भरत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी की हो गयी थी। उन्होंने त्रिवेणी से बरदान मांगा—

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहऊं निरवान।
जनम जनम रति रामपद यह वरदान न आन॥

(मानस, अयो० काण्ड दो० २०४)

भरत महान कर्मयोगी थे, उन्होंने निष्काम कर्मयोग की साधना की थी। वे कभी कर्म-विमुख भी नहीं हुए। चौदह वर्षों तक अवध-राज्य का संचालन किया, लेकिन निर्लिप्त भाव से भगवान रामचन्द्र की खड़ाऊं लेकर। जीवन का परम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति है और यह कर्मयोग के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। अतः कर्मयोग और भक्तियोग पृथक नहीं है। इसमें ईश्वर के प्रति समर्पण का भाव भी निहित है जो भक्तियोग में है।

——:०:——

With Best Compliments From

EXPRESS CABLES PRIVATE LIMITED

UDAY BHAWAN
FRASER ROAD PATNA—800001

MANUFACTURERS OF ACSR AND AA CONDUCTORS

Tel. NO. 24027

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार राज्य वित्तीय निगम

फ्रेजर रोड, पटना-१

उद्यमियों के लिए सुखद समाचार

बिहार सरकार की नई औद्योगिक नीति के अन्तर्गत अब पहले से भी ज्यादा औद्योगिक विकास में सहायता के लिए बिहार राज्य वित्तीय निगम निम्न सुविधाएं प्रदान करता है :-

१. उद्योग की स्थापना हेतु ३० लाख तक का ऋण
२. मशीनों के आयात के लिए विदेशी मुद्रा का ऋण
६. पिछड़े जिलों में उद्योग स्थापना के लिए विशेष छूट
४. स्वयं रोजगार योजना के अन्तर्गत विशेष सुविधाएं
५. आदिवासी उद्यमियों को विशेष सहायता
६. १५ प्रतिशत केन्द्रीय एवं राज्य पूंजीगत अनुदान
७. स्थायी सम्पत्ति एवं कार्यशील पूंजी के लिए २५,००० रुपये तक का मिश्रित ऋण
८. मार्जिन मनी की कमी दूर करने के लिए 'विशेष पूंजी' की सुविधा।

पूर्ण जानकारी के लिए लिखें

बिहार राज्य वित्तीय निगम, फ्रेंजर रोड, पटना—१

प्रशाखाएं :-

पटना, रांची, आदित्यपुर, बोकारो, भागलपुर, देवघर, पूर्णियाँ, दरभंगा एवं मुजफ्फरपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Compliments from

MUZAFFARPUR HOSIERY INDUSTRIES & AGENCIES PRIVATE LIMITED

(Manufacturers of AAC & ACSR Conductors)

Exhibition Road, Patna 800001

Phone : 23185/86 **Gram KRAFT**

—: WORKS :—

Old Hazaribagh Road

Ranchi

PATNA REGIONAL DEVELOPMENT AUTHORITY

PROVIDES

MAURYA—LOK

SHOPPING-CUM-OFFICE COMPLEX

AT

DAK BUNGALOW ROAD PATNA

WHY THIS SCHEME ?

To provide the long neglected Capital, a face-lift so urgently needed;
To generate employment for at least five thousand families;
To bring in the latest architectural touches and glamour of arcades;
To induce sizeable tourist traffic and revenue for the State;
To boost up the Authority's resources necessary for planned development of the City;
To attract flow of capital from outside the State for investment for growth;
To locate important commercial, Governmentand Semi-Government offices, together for public convenience.

LAST, BUT NOT THE LEAST,
because we all love Patna and want to live here with decency & joy of life, for details, please contact the undersigned.

Shri Krishna
Secretary
Patna Regional Development Authority
Patna

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

बिहार राज्य पथपरिवहन निगम

पीड़ित मानवता की सेवा में समर्पित

- निगम की बसें जनता की सम्पत्ति है। इनकी सुरक्षा करना आपका कर्त्तव्य है।
- बिना टिकट यात्रा करना एक दंडनीय अपराध हैं। पकड़े जाने पर सजा हो सकती है।
- बसों के अबाध परिचालन हेतु आपका सहयोग अपेक्षित हैं।

रमाकान्त झा
अध्यक्ष

बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक सीमित, पटना — १

किसानों के लिए, किसानों द्वारा संचालित एवं किसानों का अपना बैंक भूमि विकास बैंक।

समुन्नत कृषि के लिए एवं देश की खुशहाली लिए बिहार राज्य की एकमात्र शीर्षस्थ सहकारी संस्था जो राज्य के किसानों को सबसे आसान शर्तों पर, न्यूनतम सद की दरों पर निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए दीर्घकालीन ऋण घर के दरवाजों पर मुहैया करता है:—

(१) ट्रैक्टर, पम्पसेट, पावर-टीलर, थ्रेसर तथा अन्य कृषि-उपकरणों की खरीद हेतु।
(३) कूप निर्माण, नलकूप, बोरिंग, बांस बोरिंग, नाला-निर्माण, तालाब खुदवाने तथा अन्य विविध रूपी उद्देश्यों यथा गोबर गैस संयंत्र की स्थापना, गोदाम निर्माण आदि के लिए।
(३) भूमि-कर्षण, समतलीकरण तथा सूदभरना छुड़ाने के लिए।
(४) बैंक के द्वारा कार्यान्वित विशेष योजनाओं के अन्तर्गत गव्य विकास, सूअर पालन, मत्स्यपालन, कुक्कुटपालन, तथा बागवानी आदि विविध रूपी उद्देश्यों के लिए।

लघु कृषकों के लिए सद की दरों में विशेष छूट का लाभ उठावें। इसके साथ ही लघु कृषक विकास एजेंसी के द्वारा प्रदत्त अनुदान का लाभ भी प्राप्त करें।

अब तक की प्रगति एवं कार्यक्रम, मार्च १९८१ ई० तक

शाखाओं की संख्या	१३१	वितरित पम्पसेटों की संख्या	१२७३१२
वितरित ऋण की राशि	१३५.८३ करोड़	वितरित ट्रैक्टरों की संख्या	८.२६२
सदस्यों की संख्या	२.९५ लाख	वितरित ऋण	१०२८.६१ लाख
गाड़े गये नलकूपों की संख्या	८१९५३		

सम्पूर्ण बिहार राज्य में बैंक की १३१ शाखाओं में से अपने क्षेत्र के निकटतम शाखा से सम्पर्क स्थापित करें।

भवनाथ मिश्र
प्रबन्ध निदेशक

श्रीनारायण सिंह
अध्यक्ष

RajGhu Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaigaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

बिहार पुलिस भवन निर्माण निगम प्रा. लि.

मोकामा हाउस, बोरिंग केनाल रोड पटना—१

राज्य में आरक्षी बल से सम्बद्ध आवासीय एवं गैर-आवासीय भवनों के निर्माण के लिए अग्रणी प्रतिष्ठान ।

उचित दर पर वास्तुविद् एवं अभियंत्रण शाखा में परामर्श सेवा उपलब्ध ।

सही सूत्रीकरण,
आकर्षक रूपांकण,
उचित परामर्श,
कालबद्ध निर्माण ।

के लिए कृपया लिखें या सम्पर्क बनायें:—

[श्री नित्यानन्द सिंह]
अध्यक्ष—सह—प्रबन्ध—निदेशक ।

WITH
BEST
COMPLIMENTS
FROM

NATIONAL PAPER HOUSE

(Wholesale Dealers)
BALLARPUR INDUSTRIES LTD
(Ballarpur & Shree Gopal unit)
KADAMKUAN PATNA—800003
(BIHAR)

Gram : " PAPER HOUSE "
Phone 50304

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युगपुरुष स्वामीजी

डा० श्रीनिवास

गृहस्थाश्रमी नवरंगराय से सन्यासी नाम-रूप में परिणत स्वामी सहजानंद सरस्वती सही मानी में एक क्रांतिकारी एवं क्रान्तद्रष्टा युग-पुरुष थे। उन्होंने संन्यास को सांसारिक समस्याओं से भागने का सुरंग नहीं, बल्कि जूझने को अखाड़ा और आयुध के रूप में इस्तेमाल किया।

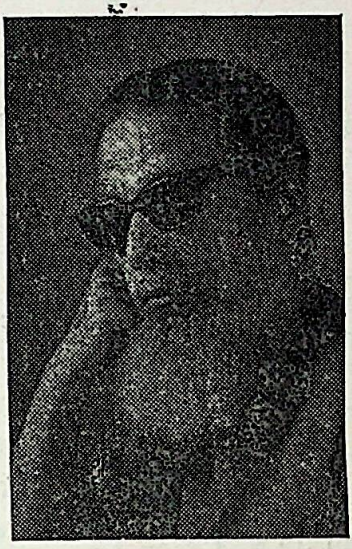

लेखक

शोषण और अन्याय के खिलाफ स्वामीजी जीवन पर्यन्त लड़ते रहे। शोषित, पीड़ित प्रताड़ित किसानों और मजबूर मजदूरों को ही असली भगवान जानकर उन्होंने उन्हीं की सेवा में अपनी जिन्दगी समर्पित कर दी।

स्वामी जी एक सच्चे राष्ट्र-भक्त के रूप में भी इतिहास के पांक्तेय पुरुष हैं। उनकी दृष्टि में राष्ट्र सर्वोपरि है—कोई व्यक्ति-विशेष नहीं।

वह किसान-मजदूर-राज्य की स्थापना करना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने किसान सभा का गठन किया। इस दिशा में भी स्वामी जी विश्व के प्रथम और अग्रणी प्रकाशस्तम्भ माने जायेंगे।

किसान सभा के सोलहवें अधिवेशन (ढकाइच) में १२-१३ मार्च १९४९ को स्वामीजी ने एक अध्यक्षीय भाषण में कहा था—

.....एक ओर तो चिल्लाते हैं कि किसान मजदूर राज्य स्थापित करेंगे। दूसरी ओर वही लीडर साम्यवाद से इतने भयभीत हैं कि सोते जागते उसी के डरावने सपने देखते हैं उससे बचने की तरकीब सोचते हैं। साम्यवाद कोई दूसरी चीज नहीं है सिवाय विशुद्ध किसान-मजदूर राज्य के।.....

स्वामी जी द्वारा लिखित गीता हृदय' गीता के समाजोपादेय तथा सकारात्मक निर्माण का सूत्रसंधानी विवेचन है। योग को वह देह और स्वास्थ्य एवं व्यक्ति से व्यक्ति और समाज एवं समष्टि से जोड़ने का जरिया कहते थे।

आज मानव ने अपने वे मूल्य भी खो दिये हैं, जिनका वह नाम भी लेता था। आज 'गरीब-से गरीब' आदमी भी अपने से अधिक गरीब उपजाऊ का शोषण करने से यथाशक्ति बाज नहीं नहीं आता। मौके की ताक में रहता है। शोषण के तरीकों में महोन्नति हुई है। अब 'अकिंचन' भी हाथ मारने में किञ्चित नहीं घबड़ाता। बड़ी मछली छोटी मछली को खा रही है, पूर्ववत्! लेकिन आश्चर्य यह है कि 'छोटी मछली की वाध्यता बढ़ती जा रही है और 'बडी मछली की परिभाषा और पहचान, पता और पकड़, अधिकाधिक निगूढ़ और रहस्यमय बनते जा रहे हैं। तशखीस की तबाही देखने लायक है!?! दुख को दर्द का एहसास भी न रहा। अवसान और अभ्युदय के बीच उलझन की घनघोर घटायें घिर रही हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुद्धि तत्त्व या बुद्धियोग का महत्त्व

पं० महेश शर्मा

जीवन रथ को लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए बलवान्, ओजस्वी और मनस्वी सारथि चाहिये। शरीर एक रथ के समान है, जिसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियों को पांच घोड़े बतलाया गया हैं।

यदि सूर्य के रथ में सात घोड़े जुते हुए हैं तो मानव के शरीर-रथ में पांच जुते हैं। सूर्य को यदि हम सप्ताश्व कहते हैं तो मानव को पंचाश्व कह सकते हैं। इन्द्रियों का स्वामी मन ही उन घोड़ों की लगाम है, जो बुद्धि-सारथि के द्वारा नियन्त्रित है। ऐसे रथ पर रथी रूप में आत्मा विराजित है और परमात्मा उसकी गति-विधि का असंग द्रष्टा वहां सर्वदा वर्तमान है।

महाकवि महात्मा तुलसी ने तो अपने रामचरित मानस में इस शरीर-रथ को धर्म-रथ के रूप में चित्रित कर अभिनव रूप की उद्भावना की है, जिसमें बुद्धि की जगह ईशभजन को सारथि के रूप में चित्रित किया है।

अर्थात् ईश्वर-भजन के द्वारा ही जीवन में ज्ञानरूप प्रकाश मिलता है और जीवन-रथ सन्मार्ग की ओर अग्रसर होता है। यद्यपि गोस्वामी तुलसीदास जी की रामायण नाना पुराण निगमागम सम्मत है, परन्तु भगवान राम के द्वारा विभीषण के प्रति लंकाकाण्ड में जो धर्ममय जीवनरथ की उद्भावना करायी गई है, वह रूपक कवि की मौलिक कल्पना की देन प्रतीत हो रही है।

गीता में आत्मा के उत्थान-पतन का अव्यवहित कारण बुद्धि को ही बतलाया गया है।

जब मानव-मन विषयों का चिन्तन मनन करता है तब उन विषयों के प्रति आसक्ति उत्पन्न होती है। उसके बाद उसकी प्राप्ति की कामना होती है। प्राप्ति के अभाव में क्रोध होता है। क्रोध से संमोह यानी अविवेक का कुहासा छा जाता है। फलतः पूर्वसंस्कारजन्य ज्ञान समाप्त हो जाता है। बुद्धि कुछ निश्चय नहीं कर पाती, किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाती है। ज्ञान का दीप बुझ जाता है, अन्त में आदमी का पतन हो जाता है। 'बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।'

जब तक व्यवसायात्मिका या निश्चयात्मिका बुद्धि विवेकपूर्ण रहती है, स्थिर रहती है; कर्तव्याकर्तव्य का निश्चय करती रहती है तब तक शरीरी आत्मा का पतन नहीं होता। बच्चे अक्षरारम्भ के प्रसंग में भगवान् राम से विद्या में प्रगति और उसकी साधिका सुमति की प्रार्थना करते हैं। दाण्ड्यायन ने महान् सिकन्दर को सुमति प्राप्ति का ही आशीर्वाद दिया था।

इससे पता चलता है कि अन्तःकरणों में मन-बुद्धि-चित्तअहंकारों में बुद्धि का ही प्रमुख स्थान है। सांख्य में चौबीस तत्वों के सृष्टिक्रम में सर्व प्रथम "महत् तत्व" अर्थात् बुद्धि की ही सृष्टि वर्णित है।

मरण काल में अन्तिम चिन्तन या मनन के अनुसार ही गति होती है। 'अन्ते या मतिःसा गतिः' यह आर्य संस्कृति का उद्घोष है। 'तादृशी जायते बुद्धिः यादृशी भवितव्यता' यह आर्ष वाक्य है। भगवान राम को वन जाना था, तो कैकेयी और मन्थरा की विचार-धारा ही बदल गयी। "गई गिरा मति फेरि।"

गायत्री को वेदमाता कहा गया है। परम शैव पुष्पदन्त ने 'महिम्न स्तोत्र' में 'नास्ति गायत्र्याः परोमन्त्रः' का उद्घोष करते हुए गायत्री और अघोर मन्त्र को सर्वश्रेष्ठ बतलाया है।

स्वविभूति-वर्णन के प्रसंग में गीता में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान श्री कृष्ण ने "गायत्री छन्दसामहम्" कहकर अपने को गायत्री स्वरूप बतलाया है। अब देखना है कि गायत्रीमन्त्र में कौन ऐसी विशेषता है जिसके आधार पर उसकी ऐसी महत्ता बतलायी गयी है। उस मन्त्र में राज-पाट धन-ऐश्वर्य की मांग सूर्य से नहीं की गयी है। किन्तु बुद्धि के लिए प्रकाश, सत्कर्म में उसकी प्रवृत्ति की मांग की गयी है, धियो यो नः प्रचोदयात्।'

फलतः, गायत्री को वेदमाता, सर्वश्रेष्ठ मन्त्र और ब्रह्म का प्रतीक बतलाया गया है। चूंकि सर्वश्रेष्ठ वस्तु की मांग की गयी हैं, उसके द्वारा, अतः उसे सर्वश्रेष्ठ मन्त्र कहा गया है।

ऐसी सर्वश्रेष्ठ वस्तु बुद्धि में यदि विकृति आ गयी, उसमें कुहासा छा गया तो आत्म-विस्मृति आ जाती है, मस्तिष्क में विकार आ जाने से सारा शरीर बेकार हो जाता है, गाड़ी जाम हो जाती है। अतः व्यवसायात्मिका बुद्धि की व्यवस्था सर्वप्रथम आवश्यक है।

अतएव महान् तेजस्वी मनस्वी चाणक्य ने कहा था कि—'एका केवल मर्थ-साधन-विधौ सेना शतेभ्योऽधिका। नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्य-महिमा बुद्धिस्तु मागान्मम।'

मुद्राराक्षस में नीति विशारद चाणक्य ने कहा कि सब कुछ चली जाय, पर उसकी प्रतिभा, मेधा, दूर-दर्शिनी बुद्धि आबाद रहे। जो काम असंख्य सेना नहीं कर सकती वह इसकी अकेली कुशाग्र बुद्धि क्षण मात्र में कर देती है। जिसकी प्रतिभा-प्रत्युत्पन्नमतिता का पता नन्दवंश के उन्मूलन से लग चुका हैं, ऐसी बुद्धि ही वरणीय है।"

दुर्गा सप्तशती में दुर्गति नाशिनी भगवती दुर्गा को बुद्धि का प्रतीक माना गया है। "कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः" बुद्धिमानों में वह देवी बुद्धिस्वरूपा है और मनीषियों की मनीषा भी वही है।

राजा सत्यव्रत ने सत्य की रक्षा के लिए सारे ऐश्वर्यों का त्याग किया और राजनीतिदक्ष कौटिल्य ने अपनी पारदर्शी बुद्धि को ही सर्वस्व समझा। जिस बुद्धि के विनष्ट हो जाने से आत्मा का पतन गीता बतलाती है, उसी मेधा और प्रतिभा की उपासना—देवर्षिपितृवर्ग ने और वैदिक काल के ब्रह्मचारियों ने की थी—

यां मेधां देवगणाः पितराश्चोपासते
तया मामद्य मेधयाऽग्ने, मेधाचितं कुरु।"

सायं प्रातः हवन काल में गुरुकुल के अन्तेवासी छात्र प्रतिदिन अग्नि देवता से ऐसी प्रार्थना करते थे। वे कुछ लौकिक ऐश्वर्य, हाथी-घोड़ों, राजपाट की मांग अग्नि देवता से नहीं करते थे। मेधा की मांग करते थे। उसी मेधा या प्रतिभा को सदसद् विवेचिनी, व्यवसायात्मिका या निश्चयात्मिका बुद्धि कहा गया है। पण्डितों में वह पण्डा के रूप मे रहती है; मनीषा या धिषणा भी उसी का नाम है।

नयी सृष्टि की रचना की क्षमता रखनेवाले और त्रिशंकु को सदेह स्वर्ग भेजकर उसके लिये नया स्वर्ग बनानेवाले मन्त्रद्रष्टा विश्वामित्र ने गायत्री मन्त्र में उसी नव-नव उन्मेषशालिनी बुद्धि-प्रतिभा की कामना की थी और उसी बुद्धि बल की कामना महान् अपरिग्रही अप्रतिग्रही चाणक्य ने की थी जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

नीति शास्त्र में "बुद्धिर्यस्य बलं तस्य
निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्।"

ऐसा नारा दिया गया है। आहार-निद्रा आदि की ओर रुचि-प्रवृत्ति तो पशुओं में भी देखी जाती है, पर मानव की महत्ता और विशेषता तो बुद्धि और श्रद्धा, विश्वास तथा धर्माचरण पर ही आधारित है। अतः कहीं "धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।" कहा गया है तो कहीं "ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः" कहा गया है।

श्रीमद्भागवत में महाराज पृथु ने यज्ञ में आमने-सामने विराजित भगवान विष्णु से वर-याचना के प्रसंग में कहा था कि जीवन में सत्सग ही अधिक कल्याणपूर्ण और श्रेयः—साधक है। उन महत्वपूर्ण महात्माओं के सत्संग में आपके गुणानुवादों नाम-रूप-लीला-धामों के माहात्म्य सुनने के लिए दो कान पर्याप्त नहीं लगते। अतः अयुत (दश-हजार) संख्यक कान मुझे दें, ताकि भगवद्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुणानुवाद-श्रवण में मुझे सौविध्य और सौकर्य हो। उस सत्संग में पूर्वा-चरित-पूर्वानुसृत-पूर्वाभ्यस्त धर्म-मार्ग एव तत्ववर्त्म की स्मृति हो आती है- जैसी कि महर्षि बाल्मीकि, नारद, अगस्त्य, जड भरत, काक एवं रमादेवी—को हुई थी।

स उत्तमश्लोक—महन्-मुखच्युत
भवत् पदाम्भोज सुधाकणानिलः।
स्मृति पुनर्विस्मृत-तत्वः--वर्त्मनां,
कुयोगितां नो वितरत्यलं वरैः।"

बुद्धि का क्षेत्र अति विस्तृत है। बुद्धि, उपलब्धि और ज्ञान एक ही वस्तु है। अनुभव और संस्कारजन्य स्मृति दोनों ज्ञान ही हैं। भवात्वी में जो मार्ग से भटक गया है, उसे भगवत् कृपा और सत्संग से पूर्व मार्ग की स्मृति होती है जिस पर चल कर वह प्रियतम परमात्मा अनादि मित्र, सनातन सखा को प्राप्त करता है।

गीता में उसी बुद्धि या स्मृति का गुणानुवाद बार-बार किया गया है। योग भ्रष्ट साधक श्रीमानों और योगियों के कुल में जन्म लेकर पुनः पूर्व स्मृति को प्राप्त कर पूर्वानुसृत मार्ग का अनुसरण करता है। गीता का यही बुद्धि योग है जो भगवत् कृपा से प्राप्त होता है।

"तंत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन!
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।"
(गीता ६।४३)

श्रीमद् भागवत में जड भरत, जिनके नाम से यह देश भारत के नाम से विश्व में विश्रुत हुआ, भगवत्कृपाजनित या सत्संग जनित उसी स्मृति का गुणानुवाद करते थकते नहीं।

"सा में स्मृतिः मृगदेहेऽपि वीर।
कृष्णार्चनप्रभवा नो जहाति।
अथो अह जनसंगादसगो
विशंकमानो विवृतश्चरामि।"

यों तो भगवत्कृपा की अनुकूल हवा सबों के लिए दयावश चल रही है; पर भक्तों के प्रति उस अनादि मित्रा, सनातन सखा का पक्षपात विश्रुत है— तभी तो योग युक्तों, भगवद् भक्तों को ही बुद्धि-योग का प्रसाद मिलता है, सबों को नहीं। सुख-दुःख तो कर्म-सापेक्ष हैं; पर— बुद्धि-योग भगवत्कृपा—सापेक्ष है, जैसा कि भगवान् ने गीता में स्वयं घोषित किया है—

(क) "तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।"
[१०।१०]

(ख) तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानज तमः॥
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता॥
[१०।११]

उस सात्विक ज्ञान का जब उदय होता है जीवन प्रकाशमय हो जाता है, दिव्य दृष्टि मिल जाती है। लक्ष्य सामने दिखाई पड़ता, मार्ग सुगम हो जाता हैं।

"सर्वद्वारेषु देहऽस्मिन् प्रकाश उपजायते।
ज्ञान यदा तदा विद्याद् विवृद्धं सर्वमित्युत।

विवेक में सूर्य का प्रकाश होता है, जैसा कि भागवत में सत्सग-माहात्म्य के प्रसंग में कहा गया है—

"अज्ञान-हेतु--कृतमोह-मदान्धकार-
नाशं विधाय तदोदयते विवेकः।"

इस सात्विक ज्ञान उदय में महायात्रा करने पर सालोक्य मोक्ष की प्राप्ति होती हैं, पुरुषोतम का सान्निध्य प्राप्त होता है।

"ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्वस्थाः।"

अद्वैत बुद्धि, समत्वदर्शन ही सात्विक बुद्धि है। सात्विक बुद्धि-सम्पन्न पण्डित सर्वत्र-समब्रह्मका दर्शन करता है, सर्वत्र दण्डवत् प्रणाम करता हैं, सियाराममय अग-जग को देखता है। ऐसी बुद्धि या दृष्टि महात्मा एकनाथ की थी, जिन्होंने प्यासे गदहे में भी सत्य-शिव-सुन्दर को प्रियतम-रामेश्वर को देखा था और गंगोत्तरी का जो जल भगवान् रामेश्वर के लिए सुरक्षित था, उसे प्यासे गदहे के खुले मुख में उड़ेल दिया था। अस्तु।

गीता के अन्त में कर्मयोगी अर्जुन ने भी इसी बुद्धि-स्मृति का गुणगान किया है जिस ज्ञानामृत को प्राप्त कर वह बुद्धियोगी कृतार्थ हो गया था।

"नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा।"

हमलोग भी उस महत्वपूर्ण बुद्धियोग को भगवत्कृपा और सत्संग से प्राप्त कर अपने को कृतार्थ कर जीवन-लाभ प्राप्त कर लें, जिसे भाग्यवान् रामानुज लक्ष्मण ने भी प्राप्त किया था। "कृष्ण स्मर! कृष्ण स्मर।" *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शवासन

० राम सकल सिंह

अब आप पूर्णतया विश्राम (शिथिलीकरण) करने जा रहे हैं। जो कुछ भी थकान, तनाव या परिश्रम शरीर में हो, वह इस आसन द्वारा हटाना है जिसको शवासन कहते हैं।

शवासन में ध्यान का आसन सम्मिलित है। यह केवल शरीर को ही नहीं वरन् मन को भी विश्राम प्रदान करता है। यह उपशम आराम और सुख प्रदाता है। मांसपेशियों के व्यायाम में विश्राम एक अत्यधिक महत्वपूर्ण तत्व है। आइए, शवासन शुरू कीजिए।

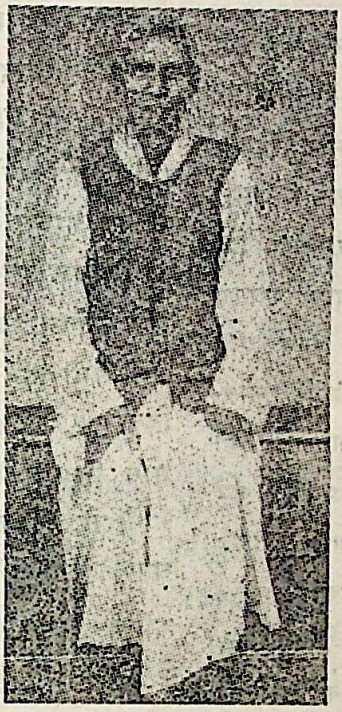

लेखक

पीठ के बल लेट जायें। हथेलियों का रूख ऊपर (आकाश) की ओर करते हुए हाथों को अपनी जङ्घाओं के बगल में रखिए। पैरों को इस प्रकार अलग-अलग रखें कि वे एक दूसरे का स्पर्श न करें। अपने नेत्रों को बन्द कर लें।

अपने दोनों पैरों की उँगलियों पर चित्त एकाग्र करें। धीरे से उनको झुका दें और तब शिथिल हो जायें। अब अपने आपको शरीर के उस उपांग (उँगलियों) से मानसिक विच्छेद करें अर्थात् आत्म-सुझाव दें: 'मेरा मन पैर की उँगलियों के विचार से रहित हो जाये।' अनुभव करें कि पैर की उँगलियाँ शीतल और पूर्णतया शिथिल होती जा रही हैं। फिर एड़ियों पर मन एकाग्र करें। पैरों का भारी भार उन पर टिका है। एड़ियों को ढीला छोड़ दें और उनको भार से मुक्त करें तथा अनुभव करें कि वे शीतल और शिथिल हो रही हैं। पिण्डली की मांसपेशियों पर चित्त एकाग्र करें। उन्हें शिथिल करें। अनुभव करें कि पिण्डली से ऊपर तक दोनों पैर पूर्णतया शिथिल हैं। फिर घुटनों पर ध्यान केन्द्रित करें जो केवल भारी अस्थियाँ हैं और कुछ नहीं। पैरों का भार उन पर टिका हुआ है। घुटनों को शिथिल कर दें। अब अनुभूति करें कि घुटनों तक दोनों पैरों आराम में है और शीतल हो गये हैं। जंघाओं, मांसपेशियों पर चित्त एकाग्र करें। शरीर का सम्पूर्ण भार उन पर आधारित होगा। कूल्हों का शिथिल कर (विश्राम) दें। अनुभव करें कि कूल्हे तक पूरे शरीर के निम्नांग पूर्णतया विश्राम में हैं। एक बार किसी विशेष अंग को विश्राम दें तो शरीर के उस अंग पर आपको कोई नियन्त्रण नहीं रखना चाहिए। अब मेरुदण्ड पर चित्त एकाग्र करें। शरीर का सम्पूर्ण भार इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक-एक करके शिथिल कर दें। शनैः शनैः ग्रीवा तक शिथिल कर दें। उदर पर चित्त एकाग्र करें और उदर-मांसपेशियों को पूर्णतया शिथिल छोड़ दें। धीमी श्वसन-क्रिया के कारण पेट में धीमी चाल अनुभव करें। वक्षस्थल पर चित्त एकाग्र करें। अनुभव करें कि वक्षस्थल का सम्पूर्ण भार पसली की हड्डियों पर आधारित है। पसली की हड्डियों और वक्षस्थल को ढीला छोड़ दें। धीमी श्वास लें और फेफड़ों की सुव्यवस्थित गति की अनुभूति करें। अनुभव करें कि पूर्ण शिथिलीकरण के कारण सम्पूर्ण वक्षस्थल-प्रदेश बहुत हलका हो रहा है। कन्धों पर चित्त एकाग्र करें। शरीर का भारी भार कन्धों के पश्च भाग पर आश्रित होगा। कन्धों, द्विशिर-पेशियों, कोहनियों, प्रबाहुओं, कलाइयों और उँगलियों को शिथिल (विश्राममय) कर दें। अनुभव करें कि दोनों हाथ पूर्ण विश्राम में हैं और शीतल हो गये हैं। अब ग्रीवा पर ध्यान एकाग्र करें। ग्रीवा पर शिर का भारी भार है। ग्रीवा को शिथिल कर दें। धीरे से अपने शिर को दाहिनी ओर घुमायें। धीरे से पुनः इसे घुमायें और वापस केन्द्र पर लायें। अपना शिर बायीं ओर घुमायें और धीरे से लुढ़का कर वापस केन्द्र पर लायें। अपनी ग्रीवा को पूर्णतया शिथिल कर दें। अपने शिर पर मन एकाग्र करें। शिर को शिथिल कर दें। अपने चेहरे पर ध्यान दें और मुख की मांसपेशियों को शिथिल कर दें। अधरों पर ध्यान दें। अधर-पुटों को धीरे से अलग करें और उनको शिथिल करें। अपनी दोनों दन्तावलियों को अलग करें और उनको शिथिल करें। अपनी जिह्वा को तनिक ढीला करें फिर इसको शिथिल करें। हलके से मुस्करायें और कपोलों को ढीला छोड़ दें। नासारन्ध्रों पर ध्यान दे। धीरे-धीरे श्वास लें और नासारन्ध्रों से वायु की धीमी गति की अनुभूति करें। नासारन्ध्रों को शिथिल करे। नेत्र भाग पर ध्यान दें और शनैः-शनैः और हलके से नेत्रों को आंशिक रूप से उन्मीलित करे। आकाश (या छत) को देखे और फिर धीरे से अपने नेत्र बन्द कर दें। पलकों के पीछे स्थित चक्षु-गोलकों को भीतर ही धीरे से नीचे की ओर करें। चक्षु—गोलकों को शिथिल कर दें। नेत्रों को पूर्ण शान्ति में विश्राम लेने दें। नेत्रभ्रूओं को शिथिल करें। अनुभव करें कि सम्पूर्ण नेत्र भाग पूर्णतया विश्राम में है। मस्तक पर ध्यान दें अन्य सभी कार्यक्रम विस्मरण करें। मन में कोई विचार न रहे। अनुभव करें कि सम्पूर्ण मस्तक-भाग विश्राम में है और शीतल हो गया है। कानों पर ध्यान दें। अप्रतिरुद्ध ध्वनियों का श्रवण करें। श्रवण ध्वनियों के प्रकृति, कारण आदि पर विचार न करें। ध्वनियों के साक्षी मात्र रहें। अपने शिर के शीर्ष भाग पर मन एकाग्र करें। शीर्ष पर तनिक गरमाहट की अनुभूति करें। शिर को पूर्णतया शिथिल करे। अनुभव करें कि शरीर का भारी भार भूमण्डल पर विश्राम कर रहा है। शरीर को पूर्णतया ढीला छोड़ दे। श्वास शनैः-शनैः ले और निकालें। उरः प्राचीर को विश्राम दें। अनुभव करें शरीर उत्तरोत्तर हलका हो रहा है और यह वायु में या स्वच्छ आकाश में तैर या उतरा रहा है यह भी अनुभव करें कि यह आकाश में गतिशील चेतन केन्द्र के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। यही हमारा सत्स्वरूप है। इस आकृति में कुछ क्षणों तक विश्राम करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Digitized by Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब धीरे से श्वास लें और अनुभव करें कि स्वच्छ प्राण-वायु शरीर के समस्त अंगों को नवजीवन प्रदान करती हुई प्रवेश कर रही है। श्वास निकालें और अनुभव करें कि समस्त विकार शरीर के बाहर जा रहे हैं। एक बार पुनः श्वास लें और अनुभव करें कि स्वच्छ प्राण-वायु प्रवेश कर रही है और शरीर के समस्त रूधिर कोषों को पुनर्यौवन प्रदान कर रही है और तब श्वास निकाले और अनुभव करें कि समस्त विकार बाहर निकल रहे हैं।

गहरी श्वास लेने के साथ दोनों हाथों को उठायें और उन्हें शिर से ऊपर भूमि पर रखे। अपने शरीर को पादांगुलियों से लेकर हाथों के छोर तक फैला दें। पादाङ्गुलियों से ले कर हाथों तक सम्पूर्ण शरीर को दाहिनी ओर घुमायें। शरीर को फैलायें ओर हाथों को देखें। शरीर को पुनः पूर्व स्थिति पर वापस लायें। यही प्रक्रिया बायीं ओर दोहरायें। धीरे से हाथों को जंघाओं के पार्श्व में लायें धीरे से उठे और कुछ सेकन्ड बैठे रहे। फिर अपनी पादाङ्गुलियों पर खड़े हो जाये और हाथों को शिर के ऊपर पूर्णतया फैलायें। हाथों को धीरे -धीरे नीचे लायें और विश्राम करें। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया से शवासन बनता है।

इस परम लाभकारी शवासन के लिए दो-चार मिनट तो नितांत ही अपर्याप्त होंगे। कम-से-कम ८-१० मिनट तो करें ही। कभी-कभी जब भी अवकाश अथवा वातावरण की अनुकूलता हो तो लम्बे समय (एकाध घंटे) तक प्रयोग करके देखें कि आपका स्वयं का अनुभव क्या रहता है? हो सकता है कि आप भारीपन या हल्केपन का अनुभव करें। हो सकता है है कि आप अपने अस्तित्व और समय का भी भास खो दें। वातावरण का भी भास न रह रह जाये। बस एक बार भी आप स्वयं ऐसा अनुभव कर पायें तो उसके बाद भविष्य में ५-१० मिनट का किया गया अभ्यास भी कई गुना फलदायी होगा।

सम्भावित लाभ :—सामान्य स्वस्थ व्यक्तियों को ज्यादा गहरी नींद, फलतः नींद के घटों में कमी लेकिन अपेक्षाकृत अधिक स्फूर्ति, शक्ति व क्षमता का अनुभव। [२] अन्तः स्रावी ग्रंथियों पर अनुकूल प्रभाव अच्छा विधेयक स्वास्थ्य। [३] एकाग्रता व जागरूकता में वृद्धि, स्पष्ट चिंतन, निर्णयक्षमता में प्रगति। [४] मानसिक शांति व प्रफुल्लता।

अस्वस्थ व्यक्ति को—अनिद्रा, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, दमा, मधुमेह, पाचन व उत्सर्जन सस्थान से सम्बधित समस्त व्याधियों में लाभ होगा। आधाशीशी, साइनोसाइटिस, सिरदर्द आदि के शमन में विशेष सहायता मिलती है।

वैज्ञानिक परीक्षणों के परिणाम स्पष्ट करते हैं कि इस अभ्यास का साधक के विचार—तरगों पर प्रत्यक्ष प्रभाव होता है।

लक्ष्योन्मुखी सुखी, सफल, सृजनात्मक जीवन के लिए अखण्ड जागरुकता, सुनियोजित क्रमबद्ध विचार प्रक्रिया, विधेयक व सकारात्मक भावनाएं शांत एवं सतुष्ट मन अपरिहार्य आवश्यकताएं हैं। इस दिशा में हमारा पहला कदम हो सकता है—'शवासन का निरंतर अभ्यास।

★

यावत् भ्रियते उदरं तावत् स्वत्वं हि देहिनाम।
अधिकं योभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति ॥—भागवत्

किसी भी आदमी का जितने से पेट भरे उसके अधिक पाने का उसे अधिकार नहीं। इससे अधिक जो चाहता है वह चोर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाताओं की सूची

एक हजार रुपया या उसके अधिक देनेवाले :—

डा० रामशरण सिंह, राजेन्द्र नगर पटना

पांच सौ रुपये या अधिक देनेवाले :—

डा० सी० पी० ठाकुर फ्रेजर रोड, पटना

डा० छेदी चौधरी, पटना

बाल्मीकि शर्मा, पटना

शशिभूषण राय मुख्य अभियंता बिजली बोर्ड, पटना

प्रह्लाद बाबू, बिजली बोर्ड, पटना

कैलाश राय, एडवोकेट, पटना

शिवनारायण सिंह प्राचार्य, कदमकुआं, पटना

द्वारिका प्रसाद साबू, पश्चिम बोरिंग कनाल रोड, पटना।

रामनारायण बद्री दास, कदमकुआं पटना

दो सौ रुपये या अधिक देनेवाले :—

राम लषण सिंह, उद्योग विभाग, पटना

डा० ए० के० एन० सिन्हा, पटना

न्यू नेशनल स्टोर, कदमकुआं पटना

चुन्नी लाल शर्मा, गांधी मैदान सत्संग मंडली के माध्यम से पटना

रामसकल सिंह, सालिमपुर अहरा, पटना

राजेन्द्र प्रसाद सिंह, बिजली बोर्ड, पटना

सिंह एण्ड सन्स, कदमकुआं, पटना

महत वैदेही शरण जी, राजापुर, पटना

बालेश्वर प्रसाद सिंह, नेशनल पेपर हाउस कदमकुआं, पटना

गुप्तदान, गुसाईं टोला

एक सौ रुपये या अधिक देने वाले :—

बाल्मीकि प्र० सिंह भू० पू० न्यायाधीश

राम रत्न सिंह भू० पूर्व न्यायाधीश

डा० वाई० के० सिन्हा, पटना

डा० श्री निवास, पटना

डा० श्री ज्ञानी शर्मा, पटना

सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह, राजेन्द्रनगर पटना

सत्यनारायण सिंह, धनरूआ

चतुर्भुज प्रसाद सिंह, फोटो स्टेट, सक्रेटेरियट पटना

राम सुन्दर प्रसाद सिंह, छज्जुबाग, पटना

वैशाली फ्लावर मील, बाटागंज पटना

शिवनन्दन सिंह, बोरिंग रोड, पटना

कुमुद शेखर सिंह, बिजली बोर्ड, पटना

नगीना सिंह, मैनपुरा, पटना

राजेश्वर प्रसाद सिंह, मुख्य अभियंता बोरिंग कैनाल रोड, पटना

बी. पी. सिंह, मैनपुरा पटना

अशोक कुमार, राजापुर, पटना

उमाशंकर सिंह, पटना

रामचन्द्र प्रसाद सिंह, बिजली बोर्ड, पटना

नन्दलाल शर्मा, शोभा विगहा, नालन्दा

बी० पी० राजगरिया कदमकुआं पटना

राधा मोहन सिंह, कुरजी पटना

भारतीय सर्वेक्षण कर्मचारियों की ओर से, बोरिंग रोड, पटना।

विजय प्रिंटिंग प्रेस, विद्यापति मार्ग, पटना—८००००१ से मुद्रित तथा स्वामी सहजानन्द योग प्रशिक्षण संस्थान समिति द्वारा प्रकाशित

Rajkumari Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaigaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यीसु का सत्य

यीसु ख्रिस्त अपनी अलौकिक निर्भयता की बदौलत अपने सभी पूर्ववर्ती पैगंबरोंके उत्तराधिकारी तो बने ही, बल्कि उनसे कहीं आगे निकल गये। हजरत मूसा इतिहास के महान प्रज्ञावान पुरुष थे, जिनकी आश्चर्यजनक समझ ने मानव-जाति को नये सांचे में ढाला। उनका महान सत्य एक छोटे -से वाक्य में व्यक्त किया जा सकता है—सच्चा ईश्वर केवल एक है। कितना समर्थ और भव्य विचार! और कितने शानदार थे इसके परिणाम।

मूसा के बाद एक और पैगंबर आये—आमोस। मूसा के ईश्वर सबंधी विचार को आगे बढ़ाते हुए आमोस नें कहा—ईश्वर न्यायकारी ईश्वर है। यह और भी महान एवं विलक्षण विचार था, जो भले ही आज हमें बहुत साधारण लगे पर उस समय जिसकी मौलिकता और नवीनता विस्मित करने वाली थी।

कई वर्ष और बीत गये और होसिया नाम के एक और पैगंबर पैदा हुए। उन्होंने किसी नूतन ज्वलंत उन्माद से प्रेरित होकर घोषणा की कि ईश्वर मनुष्य को क्षमा करता है, वह इतना शक्तिशाली है कि हर चीज को तहत् नहस कर सकता है परन्तु साथ ही वह इतना दयालु भी है कि वैसा नहीं करता।

एकमात्र ईश्वर, न्यायकारी ईश्वर, कृपाल ईश्वर—ये थे ससार के समस्त विचारों में श्रेष्ठतम विचार के विकास के तीन पड़ाव। तब से आज तक कई पीढ़ियाँ बीत चुकी है और लगभग हर विषय में मनुष्य के विचार बदलते रहे हैं परतु इन तीन पैगंबरों ने ईश्वर का जो स्वरूप प्रतिपादित किया था, वह नहीं बदला है और संसार के अधिकाश धार्मिक चिंतन पर आज तक अपना प्रभाव डालता रहा है।

यीसु के पास ऐसा क्या था जो ईश्वर विषयक इस विचार में वृद्धि कर सकता? केवल एक विचार। पर वह विचार पहले के सभी विचारों से कहीं अधिक महान और भव्य था, उसने फिर एक बार इतिहास के प्रवाह को बदला और बहुत सुनिश्चित रूप से बदला। यीशु ने कमजोर और सम्भ्रात मनुष्यों को ईश्वर के समक्ष सीधे खड़े होने और उसकी आखोंमें झाकने का साहस दिया और कहा कि अखिल ब्रह्मांड के जन्म स्रष्टा को अपना पिता मान कर उससे बात करो यह एक ऐसा विचार था, जिसके बल पर मनुष्य निडर होकर अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने और बगावत करने के लिए उठ खड़ा हो सकता था। अगर ईश्वर समस्त मनुष्यों का पिता है, तो साधारण से साधारण और नगण्य समझा जाने वाला मनुष्य भी किसी बादशाह के बराबर है। सो उस समय के अधिकारियों का ईसा के इस विचार से भयभीत हो उठना स्वाभाविक ही था। वे ऐसे मूर्ख नहीं थे कि इससे उत्पन होंने वाले परिणामों को समझ न सकने। उन्होंने सोचा कि उनकी हकूमत और यीशु की जिंदगी दोनों में से एक को खत्म होना ही होगा।

यह था यीसु का सत्य, जिसे वे अपने बाद भी अपने ग्यारह शिष्यों के जरिये संसार के हर कोने तक पहुंचाना चाहते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परपूजा और आत्मपूजा

पृथ्वी ने एक दिन सूर्य से कहा—'मैं रात-दिन तुम्हारी परिक्रमा करती रहती हूं। किन्तु तुम कभी मुझे प्रकाशमान करते हो तो कभी अंधकारमय कर देते हो। सबको सदा प्रकाश-दान करना तो तुम्हारा स्वभाव है। उसके प्रतिकूल मेरे साथ ऐसा बरताव क्यों ?'

सूर्य ने उत्तर दिया—'मैं तो अपने स्वभाव पर ही स्थित हूं। तुम ही कभी-कभी मुझसे पीठ फेरती हो। जहां तुमने पीठ फेरी कि अंधकार हो जाता है। मेरा स्वभाव तो स्थिर रहता है; किंतु तुम अपने चंचल स्वभाव के कारण अंधकार में भटक जाती हो। तुम मेरी परिक्रमा अवश्य करती हो; किन्तु उससे पहले अपनी परिक्रमा कर लेती हो। मेरी परिक्रमा साल-भर में एक बार ही करती हो; किंतु अपनी परिक्रमा नित्य ही कर लेती हो। मेरी पूजा की अपेक्षा अपनी पूजा अधिक करती हो। जब तक तुममें यह अहंम्मन्यता रहेगी, तब तक तुम अंधकार में ही रहेगी।

पृथ्वी—'बात यह है कि यह चंद्रमा मेरी परिक्रमा कर मेरे अहंकार को बढ़ा देता है। मै समझने लगती हूं कि मैं भी कुछ हूं।'

सूर्य ने हंसकर कहा—'कुछ न होकर भी अपने को सब कुछ समझ लेना ही तो अहंकार का स्वरूप है।

—व्योहार राजेन्द्र सिंह

अगर गर्भाधान स्त्री के ऋतुस्राव-चक्र के पूर्वार्ध के बजाय उत्तरार्ध के दिनों में हो तो इसकी संभावना बहुत बढ़ जाती है कि लड़की के बजाय लड़का पैदा होगा। यह बात अमरीका में किये गये एक अध्ययन से प्रकट हुई है। स्त्री के अंडाशय से अंड का उत्सर्जन ऋतुस्राव-चक्र के मध्य में होता है और शोधकर्त्ताओं ने पाया कि अंडोत्सर्ग के दो दिन बाद जिनके गर्भाधान हुआ था, उन औरतों में से दो तिहाई ने बेटे जने। क्या गर्भाधान के समय का भावी बच्चे का लिंग निर्धारित करने में कोई हाथ है ? यह बड़ा पुराना सवाल है। शोध-रिपोर्ट ने इसका यों उत्तर दिया है—सेक्स अनुपात के अंतर का संबध ऋतुस्राव-चक्र के विभिन्न दिनों में गर्भाधान होने से है, इस मान्यता की सबल पुष्टि इस अध्ययन से होती है। 'मगर रिपोर्ट ने दंपतियों को आगाह किया है कि बेटे की आशा में केवल ऋतुस्राव-चक्र के उत्तरार्ध में ही गर्भाधान का प्रयत्न न करें। कारण उसने जेनेटिक दोषों से युक्त संतान पैदा होने का खतरा भी बढ़ जाता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अभी इस बारे में बहुत शोध होना जरूरी है कि क्या विलंबित गर्भाधान से ही ये जेनेटिक विकार उत्पन्न होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मयोग का व्यावहार-दर्शन

० ओम प्रकाश पाण्डेय 'प्रकाश'

महान् क्रान्तिकारी एवं देवघर-षड्यंत्र के वीर स्व० चुनचुन पाण्डेय के दो पुत्र भयानक चेचक से पीड़ित थे। ज्येष्ठ सच्चिदानन्द की हालत विजय कुमार से ज्यादा नाजुक थी। स्थिति अब-तब की थी। वैसी स्थिति में उनके गुरु महाराज अमर साधक, बहुभाषी उद्भट विद्वान गोलोकवासी गोवर्द्धन लाल गोस्वामी कवि चूड़ामणि—जो कि श्री वृन्दावन धाम के श्रीहित हरिवंश महाप्रभु की बारहवीं पीढ़ी में थे, का एक आवश्यक सन्देश को रामपुर भगवान् [भड़ोखर] से भागलपुर शहर तक पहुंचाने का अनुरोध आ गया। चूंकि कार्य शीघ्रता का था और चुनचुन बाबू की घुड़सवारी बड़ी नामी थी, इसी कारण यह भार उन्हीं को सौंपा जा रहा था। लेकिन उनके घर की स्थिति देखकर लोग संकोच से कुछ कह नहीं पा रहे थे। लेकिन चुनचुन बाबू ने स्वयं हठ करके वह काम अपने ऊपर ले लिया और लोगों से उन्होंने यही कहा कि मैं यहां रहकर ही क्या करूंगा, सारा कुछ तो ईश्वर के वश की बात है। गुरुदेव का काम है। मैं जाऊंगा ही। यदि हुआ तो इसी से भगवान् मेरे पुत्रों की रक्षा करेंगे। गुरु के प्रति ऐसी दृढ़ आस्था उन्होंने अपने पिता प० दामोदर पाण्डेय जैसे परम दिव्य पुरुष और दानवीर जमीन्दार से ही सीखी थी। आस्तिकता में बड़ी शक्ति निहित है। चुनचुन बाबू के रवाना होते ही उनके बेटों की हालत क्रमशः सुधरने लगी। वे मौत के मुंह से बच निकले।

दृढ़ आत्मविश्वास से शून्य जन को चुनचुन बाबू द्वारा किया गया वह काम नहीं रुचेगा। लेकिन ऐसा करके उन्होंने निज कर्त्तव्य का ही पालन किया था। निश्चित रूप से हमें सर्वप्रथम अपना कर्त्तव्य करना चाहिए। किसके प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है- यह करना ही धर्म है। और यही धर्म हिन्दू धर्म है—हमारा सनातन धर्म है। गीता आदि ग्रन्थ इन्हीं बातों से भरे पड़े हैं।

'जीवन का अर्थ, स्वार्थ नहीं"—इस प्रकार के धर्म का मर्म जो समझ लेगा, वही निष्काम कर्म करेगा।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि यदि स्वदेश अथवा स्वधर्म के लिये युद्ध करते-करते मनुष्य की मृत्यु हो जाय तो योगी जन जिस पद को ध्यान द्वारा पाते हैं, वही पद उस मनुष्य को भी मिलता है। इससे यह स्पष्ट है कि जो एक मनुष्य का कर्त्तव्य है, वह दूसरे मनुष्य का कर्त्तव्य नहीं भी हो सकता। स्वामीजी का ही कहना है कि जिस प्रकार पानी कमल के पत्ते को नहीं भिगो सकता, उसी प्रकार कोई कार्य भी फलासक्ति उत्पन्न करके निःस्वार्थी पुरुष को बन्धन में नहीं डाल सकता। अहं-शून्य और अनाशक्त पुरुष किसी जनपूर्ण और पापमय नगर के बीच ही क्यों न रहे, पर पाप उन्हें स्पर्श तक न कर सकेगा। कर्मफल की लालसा तो हमारी आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग में बाधक है, इतना ही नहीं अन्त में उसके कारण से दुःख भी उत्पन्न होता है। वह दुःख मानसिक भी हो सकता है और शारीरिक भी।

तब क्यों नहीं हम ऐसा करें जिससे कि किसी प्रकार का दुःख हो ही नहीं। हमारी माता वागीश्वरी का भी कहना है कि दुःख को भूल जाने में ही सुख है। क्योंकि दुःख भूलने से ही हम कर्म की ओर बढ़ते हैं।

वैसे देखा जाय तो हम दुःख भी अपने कर्मों के कारण ही पाते हैं। गोस्वामी तुलसी दासजी ने भी यही कहा है—

करम प्रधान विश्व करि राखा
जो जस करइ सो तस फलु चाखा

अपनी युवावस्था में प्रायः मनुष्य दूसरों के इतिहास पढ़ता है। वृद्धावस्था में प्रायः अवकाश के समय में मनुष्य अपना निरीह प्राणी-सा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipped by Heritage Foundation, Jaigaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैठा अपने इतिहास का पन्ना पलटता रहता है, अथवा कहें कि उसे पलटना पड़ता है। तब, विचार करने योग्य यहां बात यह है कि दूसरों के इतिहास का अध्ययन करते समय उसके द्वारा किये गये अनुचित कार्यों के प्रति हम नाक-भौं सिकोड़ देते हैं, जी भर कर उसे कोस देते हैं, लेकिन अच्छे कार्यों की श्लाघा करते हैं। अतः हम भी इसका ध्यान रखें कि कोई ऐसा काम हमारे माध्यम से न हो जिसके कारण हमारे इतिहास (निर्माणाधीन अर्थात् जो बन रहा है] का पन्ना गन्दा हो जाय— अथवा हमें अपने आप पर नाक-भौं सिकोड़ना पड़े। क्योंकि बढ़ापे में निश्चित रूप से हमें अपने इतिहास भी पढ़ना ही पड जाता है। और जब हम स्वयं, स्वयं पर घृणा नहीं सकेंगे तब कोई दूसरा भी हमारी या हमारे कार्यों की आलोचना नहीं कर पायेगा। बल्कि उसी तरह से श्रेष्ठता स्वीकार करेगा जिस तरह दूसरों के द्वारा किये गये अच्छे कार्यों के लिये हम उनकी श्लाघा करते थे। अतः हम मनु सन्तान मृत्यु पर्यन्त कर्म करें और सुन्दर से सुन्दर कर्म करें। क्योंकि हम जैसा करेंगे वैसा पायेंगे ही। यदि हम अपने माता पिता, भाई-बहन समाज और देश के साथ अच्छा व्यवहार रखेंगे तो ये सभी हमारे प्रति भी स्नेह रखेंगे और आपसी फूट के शिकार नहीं हो सकेंगे— न घर, न परिवार, न समाज न देश यह वैज्ञानिक सत्य है। सुप्रसिद्ध विज्ञानवेता न्युटन के कथनानुसार भी हर क्रिया के विपरीत या हर क्रिया के समान एक प्रतिक्रिया होती है। तात्पर्य कि प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होगी। अतः कर्मशील मानव, एक हाथ से जो करेगा, दूसरे हाथ से वही पावेगा।

वस्तुतः किये गये सुन्दर-सुन्दर निःस्वार्थ कार्यों का योग ही कर्म योग हैं। जिस तरह से बुरी बातों को सोचने से हमारे मन पर तुरत बुरा असर होने लगता है। यानी जैसे लोहे पर चुम्बक फेरने से लोहा भी चुम्बक हो जाता है, ठीक उसी प्रकार अच्छी बातों के सोचे जाने का हमारे तन मन पर अच्छा प्रभाव निश्चित ही पड़ता है। और जिसने भी ऐसे अच्छे अच्छे कार्य करके उसका योग बढ़ाया, साधना करके स्वयं को तपाया वही सिद्ध योगी है, महान कर्मयोगी है।

आत एतु मनः पुनः
क्रत्वे दक्षाय जीवसे।
ज्योक् च सूर्यं दृशे॥

[ऋग् १०.५७.४]

—पुनः तेरे अन्दर मनोबल संचारित हो, ताकि तू कर्म कर सके, बली बने; जीवित-जागृत होकर रहे और चिरजीवी होकर चिरकाल तक सूर्य के रमणीक दृश्य को देखता रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

B S I D C

We are dedicated for
Industrial growth in Bihar.

Some of our Forthcoming projects ;

1. Rs. 25 crore Caustic SodaProject at Garhwa Road (Palamau)
2. Rs. 7 crore paper project at Baijnathpur, Saharsa
3. Rs. 10 crore Spinning mills project at Aliganj, Bhagalpur
4. Rs. 1.5 crore Solvent Extraction project at Latehar (Palamau)
5. Rs. 4.5 crores expansion project for High Tension Insulator Factory at Namkum, Ranchi
6. Rs. 30 crore Sponge Iron project at Ranchi
7. Rs. 12 crore jute mills project at kishanganj
8. Rs. 30 crore Graphite Electrodes Project at Samastipur
9. Rs. 10 crore Anti Friction Bearing project at monghyr
10. Rs. 25 crore Nylon—6 Filament yarn project at Gaya

We are in addition, setting up a cement corporation for establishment of a chain of cement plants in Bihar.

L. Dayal, I. A. S.
Chairman-cum-Managing Director

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Compliments From :

PROGRESSIVE INDUSTRIAL CORPORATION

OLD HAZARIBAGH ROAD RANCHI—1

Manufacturers of—

A. A. C. & A. C. S. R. CONDUCTORS

WITH I. S. I. QUALITY MARK

Contribute their services to Rural Electrification & Industrialisation for growth of Country's Economy

IN

FIELD AND FACTORY

Patna Office:—

'India Machinery Building'
(2nd Floor)
Exhibition Road,
Patna—1 (Bihar)

Best compliments from:—

M/S. POWER LINE CONSTRUCTION CO.!

7, GARSTIN PLACE [1st. floor]

CALCUTTA—700001

Gram : "POWERTRANS"

Phone : 23-2831
23-3670

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार में विद्युत्-विकास:

--एक नया कीर्तिमान--

बिहार राज्य विद्युत बोर्ड ने मुख्य मंत्री, डा० जगन्नाथ मिश्र के सुदृढ़ नेतृत्व में राज्य के विद्युत्-विकास में काफी तेजी लाई है।

विद्युत—सेक्टर में विकास की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:—

(क) सुस्थिर विद्युत्-उत्पादन तथा ५५० मे० वा० का उल्लेखनीय उत्पादन।

(ख) सुवर्ण रेखा पन-बिजली केन्द्र में दूसरी ६५ मे. वा. इकाई का संप्रवर्त्तन।

(ग) उत्तरांचल से बिजली लेने के लिए २२० कि. वो. अन्तर-राज्य लाइन (९० कि. मी.) का कार्य महज तीन महीने की अल्प अवधि में संपूरित।

(घ) पतरातू और बरौनी में विस्तार—परियोजनाओं के तेजी से निष्पादन के अलावा, कई नई परियोजनाएं तथा मुजफ्फर-पुर थर्मल (२×११० मे. वा.) तेनूघाट थर्मल [२×२१० मे. वा.] और कोयलकारो हाइडेल [७१० मे० वा०] निष्पादित होने जा रही हैं जिनसे काफी हद तक बिजली-उपलब्धता बढ़ने की आशा है।

बिहार राज्य विद्युत बोर्ड।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार में क्रांतिकारी कदम

सामाजिक सुरक्षा योजना से करीब २० लाख लोग लाभान्वित

इस देश के समस्त राज्यों में बिहार पहला राज्य है जो इतने बड़े पैमाने पर विपन्न एवं उपेक्षित व्यक्तियों की सुरक्षा तथा उनकी आर्थिक सहायता के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना के अन्तर्गत भूमिहीन कृषि मजदूर, बृद्धों, विकलांगों, विधवाओं एवं बन्धुआ मजदूरों को ३० रु० प्रतिमाह का पेंशन दे रहा है ।

इस योजना के अन्तर्गत असहाय विधवाओं, विकलांगों, बंधुआ मजदूरों के अलावा यह पेंशन उनलोगों को भी देय है जो ६० वर्ष से अधिक आयु के हैं तथा जो छोटानागपुर एवं संथालपरगना क्षेत्र में ढ़ाई एकड़ तक असिंचित भूमि तथा राज्य के समस्त क्षेत्र में एक एकड़ तक भूमि रखते हैं तथा जिनकी आय ५० रु० प्रति माह से कम है। अबतक करीब २० लाख व्यक्ति इस योजना के तहत पेंशन पाने लगे हैं। इस कार्य के लिए एक निदेशालय की स्थापना की गयी है, जिसकी प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रति वर्ष एक करोड़ ३७ लाख रुपये खर्च होंगे ।

अब आप स्वयं देख सकते हैं कि बिहार के सभी गांवों तथा कस्बों में सामाजिक सुरक्षा योजना की किरणों ने रोशनी फैलाई है तथा लाखों लोगों के अन्धकारमय जीवन को आलोकित किया है ।

हम बढ़ रहे हैं

बेहतर बिहार बनाने।

सूजसनि—२९५—स (स १३२) ६१—८२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिवार कल्याण माह के अवसर पर मुख्यमंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र की अपील

प्रिय बन्धुवर,

परिवार कल्याण कार्यक्रम आज केवल देश की जनसंख्या नियंत्रित करने तक ही सीमित नहीं रह गया है, यह पूरे राष्ट्र के जीवन मरण का प्रश्न बन गया है। भारत की आबादी जो १९७१ में ६० करोड़ के लगभग थी, वह १९८१ में बढ़कर ७० करोड़ के आसपास हो गयी है। उसी प्रकार बिहार की आबादी जो १९७१ में साढ़े पांच करोड़ थी, वह बढ़कर १९८१ में सात करोड़ के लगभग हो गयी है। प्रतिवर्ष इस तेज गति से बढ़ रही आबादी के लिए जीवन की आवश्यकताएं जैसे—भोजन, कपड़ा, मकान, दवा या ऐसी अन्य चीजें बिहार जैसे राज्य के लिए अपने सीमित साधन द्वारा मुहैय्या करना कठिन है।

बढ़ती आबादी को नियंत्रित करना सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है। इसके लिए समाज के हर व्यक्ति को आगे आना होगा जिसमें एक जनमत तैयार हो सके और देश एवं राज्य जनसख्या विस्फोट के भावी संकट से बच सके।

फरवरी, १९८२ राष्ट्रीय स्तर पर परिवार कल्याण माह के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर परिवार कल्याण की सुविधाओं का भरपूर लाभ उठावें जिसमें परिवार कल्याण की कल्पना सचमुच में साकार हो सके।

जगन्नाथ मिश्र

सूजसनि ६८४ सू (स्वा०—६) / ८१-८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

BIHAR STATE SUGAR CORPORATION LIMITED

Regd. Office

HARIHAR BHAWAN — BORING CANAL ROAD

PATNA—800001

The Corporation is running eleven Sugar factories rendered sick due to mismanagement by the former Owners & taken over by the Govt. of Bihar for the purpose of serving the cane growers and ensuring employment & fair wages to the labourers of these sugar factories. Our achievements for 1980–81 and targets for 1981—82 are as follows :—

ACHIVEMENTS IN 1980–81

1. Cane Plantation—1.08 lakh Acres
2. Cane Crushed—24.50 lakh Qts.
3. Sugar Prodn. 1.98 lakh Qtls.
4. Recovery—8.12%

TARGETS FOR 1981–82

Cane plantation 1.32 Lac. Acr.
Cane Crushing—52 lakh Qtls.
Sugar Prodn.—4.48 lakh Qtls.
Recovery—8 62%

GRAM "SURCOR" PATNA
TELEPHONE 26320
26265
26266

S. PATANKAR, I. A S.,
CHAIRMAN-CUM-MG. DIRECTOR.

BIHAR STATE PHARMACEUTICAL & CHEMICAL DEVELOPMENT CORPORATION LTD.

(A Government of Bihar Undertaking)

West Boring Canal Road, Patna–800001

BORN IN 1978–79

Please watch us grow

* First joint sector undertaking 'Ranjan Chemicals Ltd.' started in January-February, 1980 has gone into production manufacturing 50 TPD Sulphuric Acid.
* In 1981–82 we are launching five projects, namely.

— Ceramic Capacitor
— Glazed Tiles
— Malathion
— Starch & Glucose &
— Sanitarywares.

They will come in production after 2–3Years.

* In 1982–83 we are launching 7 projects, in 1983–84 8 Projects and in 1984–85 another 8 projects.

Our achievements are modest but our desire to serve Bihar intense.

—MANAGING DIRECTOR.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Aligarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नये २० सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन के लिए

बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कारपोरेशन लि०

पटना—१

माननीय मुख्यमंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र

के नेतृत्व में

राज्य के सभी नागरिकों को सुन्दर सुरुचिपूर्ण उपयोगी एवं सस्ती पाठ्यपुस्तकें समय पर उपलब्ध कराने का संकल्प लेता है।

बिहार के परम्परागत हस्तशिल्पियों के लिए स्वर्ण अवसर

बिहार सरकार द्वारा बिहार के निम्नलिखित केन्द्रों में परम्परागत हस्तशिल्पियों एवं विभिन्न हस्तशिल्पों में प्राप्त अनुभवी शिल्पियों को एक वर्ष / ६ माह की अवधि का प्रशिक्षण दिया जाता है—

स्थान	प्रशिक्षण का विषय
१- मनेर- मुंज एवं बेंत वस्तु	
२- सीवान—मृणमय—[मिट्टी पात्र]	
३- गया, नवादा, छपरा, विक्रमगंज - गुड़िया	
४- खड़गपुर [मुंगेर] चाँदी, पीतल मछली	
५- डुमरांव [भोजपुर] लाह रंजित	
६- वेतिया, [पश्चिम चम्पारण] सिंघ वस्तु	
७- बेगूसराय-मृणमय	
८- उ० म० शिल्प अनुसंधान संस्थान पटना [जनवरी-जून] [जुलाई- दिसम्बर]	गुड़िया, बेंत, बांस, पेपरमसी लाह रंजित, व्यवसायी शिल्प, कास्ट खिलौना, टिकुली बाटिक, पच्चीकरण, बुनाई पौट्री, चर्म शिल्प, कालीन बुनाई [६ महीना]
९- जसीडीह मृणमय	१०- चेलागी रजत शिल्प
११-रातु [रांची]	टुपुदाना कास्ट खिलौना
१२- राजमहल, [संथालपरगना]—सिरामिक्स	
१३- गोड़ाडीह। [जमशेदपुर] सिरामिक्स	
१४- सरायकेला—पेपरमसी [जमशेदपुर]	१५- हल्दीपोखर बेंत, बांस, फर्नीचर सहित
१६- तीन पहाड़ [दुमका]	कसीदा एवं एपलीड
१७- करमाटाड़ [दुमका]	कसीदा एवं एपलीक
१८-बारापलासी-बेंत, बांस, फर्नीचर सहित	
१९- देवघर--गुड़िया	२०- भागलपुर गुड़िया
२१- मुजफ्फरपुर-गुड़िया	२२- सहरसा-गुड़िया
२३- जमालपुर [मुंगेर]-गुड़िया अलकृत मृणमय	
२४- सिंहेश्वर स्थान [सहरसा] बेंत,	
२५- नारीयार टोला [सहरसा] बेंत, बांस	
२६- कौआकोल [नवादा] बेंत, बाँस	
२७ रानीपतरा [पूर्णियाँ] जट-सूत एव बेंत-बाँस	
२८- पत्थरकट्टी [गया] पाषाण शिल्प	

१- प्रत्येक शिल्पियों को प्रतिमाह ७५ रु० छात्रवृत्ति दी जाती है।

२-हस्तशिल्पियों को ५० प्रतिशत अनुदान औजार आदि क्रय करने हेतु दिया जाता है।

३- राज्य स्तर पर दस दक्ष शिल्पियों को नगद पुरस्कार के रूप में एक हजार रुपया, अंग वस्त्र एवं ताम्रपत्र तथा ६ शिल्पियों को योग्यता प्रमाण पत्र दिया जाता है।

हस्तशिल्पियों को उचित मूल्य पर कच्चा माल उपलब्ध कराया जाता है।

उद्योग निदेशक, बिहार

रा०ज०स०नि० ४९३—स/उद्यो—६५/८१-८२

Digitized by Gurukul Kangri Shiksha Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक लि०

जमा राशि पर। २-३-१९८१ से प्रचलित

ब्याज की दरें

१	चालू खाता	$\frac{१}{४}$ प्रतिशत
२.	बचत खाते पर	$५\frac{१}{४}$%
३	सर्वाधिक जमा धनराशि (टर्म डिपोजिट)	
	(क) १५ से ४५ दिनों तक के जमा पर	— २.७५%
	(ख) ४६ से ९० दिनों तक के जमा पर	— ३.२५%
	(ग) ९१ दिनों और उससे अधिक परन्तु ६ माह से कम के लिए जमा पर	— ४.२५%
	(घ) ६ माह और उससे अधिक परन्तु ९ माह से कम के लिए जमा पर	— ४.७५%
	(ङ) ९ माह और उससे अधिक परन्तु एक (१) वर्ष से कम के लिए जमा पर	— ५.७५%
	(च) १ वर्ष और उससे अधिक परन्तु २ वर्ष से कम तक के जमा पर	— ७.७५%
	(छ) २ वर्ष एवं २ वर्ष से अधिक परन्तु ३ वर्ष से कम तक के जमा पर	— ८.७५%
	(ज) ३ वर्ष एवं उससे अधिक अवधि के लिये जमा पर	— १०.२५%

सभी व्यावसायिक बैंकों की तुलना में यह बैंक $\frac{१}{४}$% अधिक ब्याज प्रदान करता है।

† खाता खोलिए—केवल ५/- रुपयों से ही।

† आवश्यक होने पर अपनी मियादी जमा रसीदों पर कर्ज लीजिए।

† लौकर्स की भी सुविधा पटना के न्यू मार्केट शाखा तथा जमशेदपुर, विष्टुपुर शाखा में है।

† हमारी आकर्षक जमा योजनाओं—आवर्त्ती जमा खाता, लक्ष्मी जमा खाता, नगद प्रमाणपत्र, कल्याण निधि प्रमाणपत्र, एवं अन्य योजनाओं की विस्तृत जानकारी के लिए हमारी निम्नांकित शाखाओं में से किसी से भी सम्पर्क स्थापित करें।

हमारी शाखाएँ :—

पटना में—बाँकीपुर, नया सचिवालय, मुसल्लहपुर हाट, न्यू मार्केट एवं कंकड़बाग।
जमशेदपुर में—विष्टुपुर, गोलमुरी तथा टेल्को
बरौनी में विहट।

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

अधिक बचत के लिए हमारे यहाँ खाता खोलकर बिहार राज्य की कृषि एवं कृषि-आधारित उद्योगों के विकास में सहभागी बनें।

बिहार स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक लि०

मूल्य—दस रुपये मात्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक-स्मारिका

"स्वतंत्रता है जन्म सिद्ध अधिकार हमारा" • बीज मंत्र को बना देश की चिन्ता धारा
लोक शक्ति को नयी दिशा दी तुमने प्रभुवर • कोटि कोटि ब्रह्मर्षि झुकाते श्रद्धा से सर

"खाक" बनारसी

तिलक सेवा केन्द्र, वाराणसी

२३ जुलाई १९७७

मूल्य दो रुपये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Best Compliments From :-

Vijay Kumar Panday

B. S. M. E (Calif. U. S. A.)

M/s. Anson Engineering Company (Pvt.) Ltd.

Designers & Manufacturers

AIR AND VACCUM BRAKE SYSTEMS

FOR

DIESEL LOCOMOTIVES

AUTHORISED REPRESENTATIVES

IN INDIA

For

MONTREAL LOCOMOTIVE INDUSTRIES

A DIVISION OF

BOMBARDIER - MLW LTD.

Manufacturers of DIESEL LOCOMOTIVES FOR WORLD RAILWAYS.

MONTREL, CANADA.

Factory :

JEONATHPUR ROAD
RAMNAGAR
VARANASI-221008
Phone : 52185
Gram : 'ANSCO'

Office :

B. 66 RAVINDRAPURI
VARANASI-221005
Phone : 54345
Gram : 'ANSCO'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0.-In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक-स्मारिका

संपादक-मंडल :

रामचन्द्र नरहर बापट

डाक्टर गंगाधर राय

शक्तिनारायण सिंह

प्रो० बी०.एन० सिंह

प्रतापनारायण सिंह

चित्रकार : नारायण अनन्त फडके

प्रकाशक :

तिलक सेवा केन्द्र, वाराणसी

मुद्रक : ज्योतिष प्रकाश प्रेस, कालभैरव मार्ग, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

भारतीय समाज में जब तब आने वाली विकृतियों के प्रति सजग रह कर उन्हें दूर करने के लिए प्राणपन से प्रयत्न करने वाले देश के कोने कोने में बिखरे प्रहरियों उठो ! जागो ! स्वयं अपने को पहचानो ! इतिहास में तुमने कब कब और कैसे कैसे धार्मिक, सांस्कृतिक एवं अन्य प्रकार की क्रान्तियाँ की हैं तथा विदेशी आक्रमणकारियों के प्रभाव को न जमने देने में तुमने क्या क्या कार्य किये हैं और आखिर उन्हें जड़मूल से उखाड़ फेंकने के लिए तुमने किस प्रकार आवश्यकतानुरूप गुप्त रूप से शस्त्रास्त्रों के द्वारा तथा प्रकट रूप में शान्तिपूर्ण प्रचारात्मक ढंग से आन्दोलनों का नेतृत्व किया है और भारत के भाल को बार बार समुन्नत एवं उज्वल बनाये रखने में किस प्रकार योग दिया है इस पर विचार करो और वर्तमान संदर्भ में तुम्हें पुनः किस प्रकार सक्रिय होकर अपना कर्तव्यपालन करना है इस पर चिंतन और मनन करो और फिर देश के विभिन्न भागों में तुम चाहे भिन्न भिन्न नामों एवं रूपों से क्यों न पहचाने जा रहें हो अपने पूर्वजों के गौरवपूर्ण इतिहास के संदर्भ में पुनः राष्ट्रव्यापी स्तरपर सुसंघटित होकर देश का ही नहीं संसार का पुनः मार्गदर्शन करो।

तुम में ब्राह्म तेज है । तुम्हारी बुद्धि प्रखर है। आध्यात्मिक समस्याएँ हों अथवा भौतिक विज्ञान की दृष्टि से सूक्ष्मतम अध्ययन करने का प्रश्न हो तुम्हारी गति सर्वत्र तेज है। साधना करना तुम जानते हो, ब्राह्म तेज के साथ साथ तुम में क्षात्रतेज भी है। आततायियों को तुम चुनौती भी दे सकते हो। उन्हें समुचित दंड देने एवं उनके समूचे वर्ग को आतंकित करने में भी तुम माहिर हो। यही नहीं तुम शासन सूत्र भी संभालने की क्षमता रखते हो। तुम्हारी वाणि में ओज है। तुम अधिकार के साथ समयोचित आदेश भी दे सकते हो। समाज के विभिन्न वर्गों के कर्णधारों का तुम जब चाहो तब समुचित मार्ग दर्शन भी कर सकते हो। तुम्हारे ही पूर्वजों के लिए कहा जाता है कि अग्रतश्चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः । इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि।

तुम्हारा यह रूप होते हुए भी आज तुम स्वयं को नहीं पहचान रहे हो। देश के विभिन्न भागों में बिखरे हुए अहंमन्य बने हुए अपने में मस्त रहने की धुन में परस्पर अपरिचित का सा व्यवहार कर रहे हो। तुम आपस में मिलते जुलते नहीं। परस्पर सद्भाव नहीं बढ़ाते। परस्पर संघटित होकर समुदायिक हितों के प्रश्नों पर भी कभी विचार नहीं करते। आज तुम अपने ही पारिवारिक सामाजिक दोषों के प्रति उदासीन बने हुए हो और काल प्रवाह के साथ बहते हुए तुम्हारी स्वयं की स्थिति उत्तरोत्तर बिगड़ती जा रही है। जब तुम अपने ही प्रति अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर रहे हो तो समूचे भारतीय समाज एवं मानव मात्र का मार्गदर्शन तुम क्या करोगे ? इसका यह अर्थ नहीं कि तुममें वह क्षमता नहीं। तुम सब कुछ कर सकते हो। आवश्यकता है केवल मोह-निद्रा त्याग कर अपने कर्तव्य के प्रति पूर्णतः सजग एवं राष्ट्रीय स्तर पर संगठित होने की। केरल में तुम नम्बूद्री कहलाते हो। महाराष्ट्र में तुम चित्पावन ब्राह्मण हो। गुजरात में तुम अनाविल हो बिहार एवं उत्तर प्रदेश में तुम भूमिहार कहलाते हो तो कश्मीर एवं पंजाब में तुम्हें मोहियाल कहा जाता है। तुमही हरियाणा एवं पश्चिमी उत्तरप्रदेश में त्यागी, मध्यप्रदेश में जुझौतिया, राजस्थान में पुष्करणे, पश्चिम बंगाल में ठाकुर, उड़ीसा में अदनुआ ब्राह्मण कहलाते हो।

देश के विभिन्न भागों में तुम चाहे विभिन्न नामों से पहिचाने जाते हो तब भी तुम लोगों का सर्वत्र स्वरूप एक ही है और वह है समाज की विकृतियों के प्रति सदैव सजग प्रहरी का। रामायण एवं पौराणिक काल में तुम्हारे पूर्वजों ने क्षत्रियों में आयी विकृतियों को दूर करने के लिए जहां तहां क्षत्रियों का विनाश किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्रतश्चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः
इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि

स्वागतम

परशुराम के विमल वंशधर शतशः तव अभिनन्दन
श्रद्धा-सुमन मात्र स्वीकारो दुर्लभ शीतल चन्दन
युग-युग से निर्बाध प्रवाहित राष्ट्रभक्ति की धारा
लोकहिताय समर्पित है पावन समुदाय तुम्हारा
श्रेष्ठ विप्र जन्मना अलंकृत क्षात्र धर्म के धारक
मानवता के अप्रतिम प्रहरी, संरक्षक, उद्धारक
काल पृष्ठ का अक्षर-अक्षर करता तेरा वन्दन

पौरुष का अनुलित पराक्रम, साहस, गौरव गाथा
विश्व विजेता तक का जिसने झुका दिया था माथा
विष्णु गुप्त की चिन्ता-धारा युग-युग का है सम्बल
अनुप्राणित है जिससे कण-कण जो स्तुत्य है प्रति पल
युगपथ का निर्माता तेरा आभारी है जन-जन

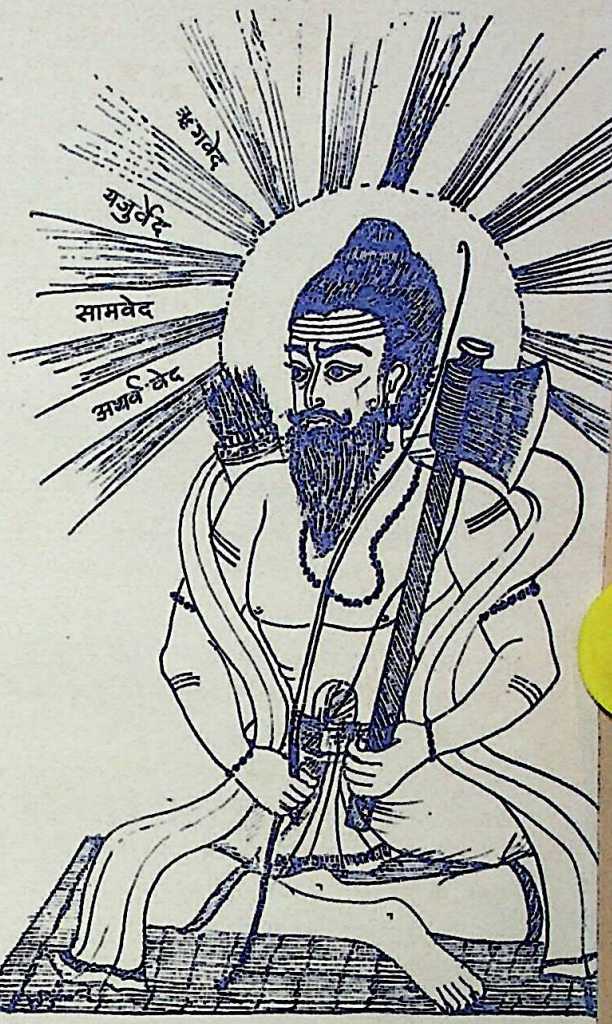

(भगवान परशुराम)

तिमिराच्छादित हुई धरा जब अवतारी बन आये
कभी शंकराचार्य, गोखले, कभी तिलक कहलाये
दिग् दिगन्त में मुखरित तव स्वर मूल मंत्र कल्याणी
सहजानन्द सरीखे ऋषि से हुई सार्थक वाणी
उन्नत भाल रहे भारत का यही अहर्निशि चिन्तन

—शक्तिनारायण सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग पुरुष—

स्व० स्वामी सहजानन्द सरस्वती

भारतमाता के तपः पूत

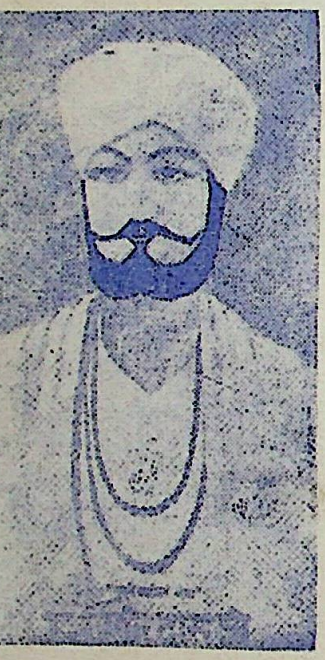

भाई मतिदास

अ० भा० ब्रह्मर्षि सम्मेलन के
भूतपूर्व अध्यक्ष

पुराणेतिहासाचार्य
स्व० पं० अनन्त शास्त्री फडके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्होंने वेदाध्ययन कर वैदिक धर्म को सुरक्षित रखा तथा चारों वर्णों एवं आश्रमों की मर्यादा बनाये रखने में योग दिया। जब देश में वर्ण और आश्रम व्यवस्था का उच्छेद कर दो ढाई हजार वर्ष पूर्व जब देश के सूत्रधारों ने 'बुद्धं शरणं गच्छामि' कहने वाले हर व्यक्ति या स्त्री को विहारों में स्थान देकर समाज के अधःपतनका मार्ग प्रशस्त किया तब तुम्हारे ही पूर्वजों ने देश के विभिन्न भागों से एकत्र होकर देश का मार्गदर्शन किया था। इसी प्रकार तुम्हारे ही पूर्वजों ने इस्लामी आक्रमण का जहांतहां प्रतिकार किया था और फिर विदेशी शासन का उच्छेद करने में योग दिया था। इसी प्रकार ब्रिटिश सरकार का भी विरोध करने में तुम्हारे ही वर्ग के लोगों ने प्रयास किया और आखिर इस सब के बाद भी अंग्रेजो ने भारत में अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया तब उसकी नींव खोखली कर उनका अस्तित्व समाप्त करने में भी तुम्हारे वर्ग के लोग आगे रहे है। अब अंग्रेज तो गये किन्तु अंग्रेजी, अंग्रेजीयत एवं पाश्चात्य जीवन दर्शन की मानसिक दासता से भारत आज भी मुक्त नहीं हो पाया है। इस दृष्टि से भारत वस्तुतः स्वतंत्र नहीं हो पाया है। भारतीय समाज की विकृतियों के सजग प्रहरियों आज तुम्हें पुनः अपनी निद्रा त्याग कर राष्ट्रीय स्तर पर संघटित होना है। परस्पर सौहार्द बढ़ाना है। अपनी समस्याएँ सहयोग के आधार पर हल करते हुए नये विश्व संदर्भ में भारतीय चिन्तन धारा को नये रूप में प्रस्तुत करते हुए वर्तमान भौतिकवादी विज्ञान ने इस पृथ्वी पर मानव ही नहीं समस्त जीव जगत के लिए पारमाणविक अस्त्रों के निर्माण द्वारा जो संकट निर्माण कर रखा है उसे दूर करने के लिए एवं मानव को अंधकारपूर्ण भविष्य से बचाने के लिए भारतीय आध्यात्म एवं समग्र जीवन दर्शन के आधार को नये ढंग से प्रस्तुत कर मानवता को तुम्हे ही नया संदेश देना है। निश्चय ही यह सारा कार्य तुम्हारे जाग्रत होकर सतर्क बुद्धि के सहारे परम्परागत ढंग से अपने असिधारा व्रत के पालन करने से ही संभव है।

शिव

सेन्ट्रल सेल टैक्स नं० बी० एन० २८६

मशीनरी स्टोर्स

आयल ईन्जन स्पेयर पार्ट, राईस हालर, आटा चक्की, हेयर व रबड़वेल्ट, बालबेरिंग तथा हर प्रकार के मशीनों के पार्ट व पुर्जे इलेक्ट्रिक मोटर इत्यादि उचित रेट पर मिलते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनोखी भारतीय क्रान्ति के प्रमुख घटक

— रामचन्द्र नरहर बापट —

मैं कौन हूँ ? सृष्टि का स्वरूप क्या है ? उसके निर्माता का और मेरा सम्बन्ध क्या है ? दुःख क्या है ? क्या दुख से निवृति मिल सकती है ? केवल लौकिक दुःख से ही नहीं बार बार जन्म लेने, मृत्यु होने और माता के गर्भ में शयन करने के दुश्चक्र से भी क्या जीव को कभी मुक्ति मिल सकती है और यदि हां तो कैसे आदि सूक्ष्म एव गंभीर प्रश्नों पर मनन, चिंतन, कर ज्ञान प्राप्त करते हुए स्वयं नये प्रतिपादित मार्ग पर अग्रसर होते हुए समूचे समाज को उस पर चलने की प्रेरणा देनेवाले भारतीय मनिषियों चिन्तकों, ऋषि, महर्षियों तथा विचारकों ने भारत के इतिहास के विभिन्न अवसरों पर अहिंसात्मक ढंग से मुख्यतः धार्मिक, सांस्कृतिक वैचारिक एवं कहीं कहीं राजनीतिक व्यापक क्रांतियों तक का पथ प्रशस्त किया है। एसी ही एक महान् क्रान्ति के लिए ढाई हजार से कुछ अधिक वर्ष पूर्व भगवान बुद्ध ने गया में बोधिसत्व प्राप्त कर सारनाथ में आकर अपने पाँच शिष्यों को उपदेश करने के बहाने जो धर्मचक्र प्रवर्तन किया उसने प्रारंभ में धीरे धीरे अग्रसर होते हुए सम्राट अशोक को अपने प्रभाव में लेकर सारे भारतवर्ष को नहीं उस समय के सारे संसार को अर्थात् समूचे एशिया एवं यूरोप तक को नयी धार्मिक दिशा प्रदान की और यह सारा महान् कार्य हुआ पूर्णतः अहिंसात्मक ढंग से ही। राष्ट्रीय एव अन्तरराष्ट्रीय स्तर की इस महान् धार्मिक एव सांस्कृतिक क्रान्ति के विभिन्न पहलुओं पर इतिहास निश्चय ही कुछ न कुछ प्रकाश डालता है तथा नयी खोजों एवं अनुसंधान के फलस्वरूप इस महत्कार्य के किसी न किसी पहलू पर जब तब प्रकाश पड़ता ही रहता है।

इस महान क्रान्ति के पश्चात् भारत में एक दूसरी क्रान्ति हुई। उस पर इतिहास लगभग मौन है। जिस भारतवर्ष से बौद्ध धर्म का प्रसार तत्कालीन सारे संसार में हुआ और जिसका अस्तित्व आज भी बहुत कुछ देखा जाता है उसी भारत से लगभग बारह सौ वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म पूर्णतः लुप्त हो जाता है। आखिर यह दूसरी क्रान्ति कैसे हुई ? इसे देशव्यापी स्वरूप कैसे मिला और किन, लोगों ने यह सारा कार्य किया ? क्रान्ति का झंडा उठाने के पूर्व उन लोगों का क्या रूप था ? क्या वे किसी एक क्षेत्र के रहने वाले थे अपने देश के कोने कोने से बौद्ध धर्म के गढ़ में चारों ओर से एकत्र होकर उन्होंने उसे नेस्तनाबूद करने का उपक्रम किया था ? यदि तथ्य यही है तो देश के विभिन्न भागों से आने वाले इन लोगों का व्यापक प्रेरणा स्रोत क्या था ? क्या इन लोगों ने कोई देशव्यापी संघटित दल बनाया था ? यदि हां तो उसका स्वरूप क्या था ? उसकी कार्य प्रणाली क्या थी ? आखिर इतनी व्यापक क्रान्ति करने वाले तथा देश के विभिन्न भागों में रहने वालों के बीच दीर्घ परम्परा के आधार पर कौनसा साम्य था ? क्या इस वर्ग के लोग भारतीय समाज में जब तब उत्पन्न होने वाली विकृतियों को दूर करने के लिए सदैव सतर्क एवं सचेष्ट रहते हुए आवश्यकतानुरूप सदैव सक्रिय होते रहते हैं। ये एवं ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिन पर इतिहास कुछ भी प्रकाश नहीं डालता।

इतिहास केवल इतना ही बताता है कि कुमारिलभट्ट ने वैदिक धर्म की पुनःस्थापना का संकल्प कर बौद्ध धर्म का सम्पूर्ण अध्ययन करने के लिए नालन्दा विश्वविद्यालय में वहाँ के गुरू से दीक्षित होकर तेजी से एक के बाद एक ऐसी सौ सीढ़ियाँ पार करते हुए उन्हीं को वाद विवाद के लिए चुनौती दी तथा उन्हें परास्त कर दिया। इस पर उनके गुरू ने गुरूद्रोह करने के लिए पुरानी परम्परा के आधार पर कुमारिलभट्ट को आत्मदाह कर लेने का आदेश दिया। यह उन्होंने इस शर्त पर स्वीकार किया कि जब उनका उत्तराधिकारी आजायगा तब वे आत्मदाह करेंगे। बताया जाता है कि इस प्रकार जब वे आत्मदाह करने के लिए प्रयाग में प्रस्तुत थे तभी दूर दक्षिण प्रदेश केरल के कालडी नामक स्थान से रवाना होकर नर्मदा के किनारे अपने गुरू गौडपादाचार्य से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दीक्षित होकर बौद्ध धर्म का उच्छेद कर पुनः वर्णाश्रम व्यवस्था को प्रतिष्ठित करने के लिए कृतसंकल्प शंकराचार्य वहाँ पहुँचते हैं। कुमारिलभट्ट उन्हें आशीर्वाद देकर आत्मदाह करते हैं तथा शंकराचार्य वाराणसी आते हैं। इसके पूर्व वे मण्डन मिश्र और उनकी पत्नी सरस्वती को वाद-विवाद में हरा चुके होते हैं। वाराणसी में आप की चांडाल के रूप में भगवान शंकर से भी वार्ता होती है और फिर बौद्ध धर्म की नींव उखाड कर भारत वर्ष के चारों कोनों में चार पीठ स्थापन कर देशव्यापी धार्मिक क्रान्ति सफलतापूर्वक सम्पन्न कर कुल बत्तीस वर्ष की अवस्था में वे अपनी इहलीला समाप्त कर ब्रह्मलीन हो जाते हैं।

यह सब कुछ बुद्धिग्राह्य नहीं प्रतीत होता। हाल के इतिहास तथा जिन ऐतिहासिक क्रान्तियों का क्रमबद्ध रूप मिलता है उन्हें देखने से यह स्पष्ट होता है कि शंकराचार्य ने उन दिनों जो व्यापक क्रान्ति की उसके लिए देश के विभिन्न भागों में और विशेष कर भारत में बौद्ध धर्म के गढ, अर्थात् सारनाथ से लेकर बोधगया के भूभाग में असंख्य व्यक्तियों ने इसके लिए दीर्घकाल तक प्रयत्न कर पूर्णतः अनुकूल वातावरण बना रखा होगा तथा शंकराचार्य के आने के साथ सब के इस सम्मिलित प्रयास के फलस्वरूप बौद्धों का गुट जो आन्तरिक कमजोरियों से पहले से ही जर्जर एवं क्षत विक्षत हो चुका था देखते देखते ढह गया। सारा कार्य अहिंसात्मक ढंग से हुआ किन्तु अर्वाचीन ढंग से इतिहास लिखने की तब प्रवृत्ति एवं साधन न होने के कारण सब कुछ लुप्त हो गया। तब चाहे जो हुआ हो अब भी यदि नयी दृष्टि से देखा जाय तो भारतीय इतिहास की इस महत्वपूर्ण क्रान्ति पर व्यापक प्रकाश पड़ सकता है।

वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधृत भारतीय समाज की विशेषता यह है कि इसका नेतृत्व सदैव ब्राह्मणों के हाथ में रहा है और विशेष कर उनके जो सदैव समाज में आने वाली बुराइयों को देखने और समझने के लिए आँखों में तेल डालकर सजग रहते हैं तथा प्राणपन से उन खराबियों को दूर करने के लिए कृतसंकल्प हो तत्काल कार्यरत होते हैं एवं सफलता मिलने पर सब कुछ छोड़ कर चिन्तनमनन एव अपने श्रम से आजीविका प्राप्त कर सात्विक जीवन व्यतीत करने का मार्ग पुनः अपनाते है। रामायणकाल में इसका सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है भगवान परशुराम ने। उन दिनों क्षत्रिय अपने क्षात्रतेज का उपयोग समाज की आततायी दानवों एवं राक्षसों से रक्षा करने के लिए न कर अपने राज्य विस्तार एवं भोगलिप्सा के लिए करते थे। ब्राह्मण वर्ग भी ऐसे क्षत्रियों का साथ देकर अपने लक्ष्य और आदर्श से विरत हो रहा था। इस पार्श्वभूमि में भगवान परशुराम ने "इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि' का रौद्ररूप धारण कर पृथ्वी को ऐसे विकृत क्षत्रियों से २१ बार मुक्ति दिलायी और आखिर जब उन्होंने देखा कि गुरू वसिष्ठ के द्वारा दीक्षित भगवान रामचन्द्र आदर्श क्षत्रिय का कर्तव्य पालन करने के लिए कृतसंकल्प हो उसके लिए सब कुछ न्यौछावर करने के लिए प्रस्तुत हैं तो सब कुछ छोड़ कर दक्षिण भारत के पश्चिमी तट पर समुद्र से भूमि अवाप्त कर कृषि के सहारे आजीविका चलाते हुए कृषि को ही आधार मान कर समाज की हर प्रकार की विकृतियों को दूर करने वाले उच्च कोटिके ब्राह्मणों की परम्परा उन्होंने सारे देश में फैला दी। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक तथा गुजरात से लेकर उड़ीसा तक भारत के हर भाग में कृषि को अपनी आजीविका का साधन बनाकर एक ओर चारों वेदों का अध्ययन करते हुए ब्राह्मण धर्म का पालन करने के साथ साथ क्षात्रतेज भी आपने विकसित करते हुए समाज में आने वाली विकृतियों के प्रति सजग रहते हुए उन्हें दूर करने के लिए जब तब सक्रिय होने वाले ब्राह्मण अपने अपने ढंग से बराबर कार्यरत रहे हैं।

सारे भारतवर्ष में ही नहीं उस समय के सारे संसार में बौद्ध धर्म के प्रसार के बाद इन ब्राह्मणोंने देखा कि मनुष्य को अपने दुःखों से मुक्त कराने के लिए व्याकुल भगवान बुद्ध ने सारनाथ में धर्मचक्र प्रवर्तन प्रारम्भ कर समाज के सभी वर्गों को साधना के मार्ग पर आरूढ करने का 'प्रशस्त कर दिया है। किसी वर्ग का व्यक्ति क्यों न हो' बुद्ध शरणं गस्सामि कहते ही उसे बौद्धधर्म में दीक्षित कर दिया जाता है तथा उसे चीवर प्रदान कर बौद्ध विहारों में पहुचाकर उसे साधना में रत कर दिया जाता है। वर्ण और आश्रम को तिलांजली दी जाने एवं स्त्रियों को भी आसानी के साथ भिक्षुणियां बनाना प्रारंभ होने से चतुर्थाश्रम में पदार्पण करने के लिए आवश्यक जिन कठोर परीक्षाओं की आवश्यकता होती है उनमें तेजी से ह्रास होने लगा तथा बौद्ध भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के विहार अर्थात् आश्रम उन्मुक्त विहार के गढ हो गये।

[शेष पृष्ठ २५ पर]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाज सुधारके आद्य प्रेरक—

भगवान परशुराम

—विनायक रामचन्द्र रटाटे—

निश्चित ही वह एक विलक्षण विशिष्ट अद्भुत शक्ति-सम्पन्न महान् क्रान्तिकारी, समाज सङ्घटक, दूरदर्शी राज-नीतिज्ञ, तानाशाह शासन तन्त्र के विध्वंसक, स्वातन्त्र्य और लोकतन्त्र के प्रतिष्ठाता, उग्र प्रशासक, प्रकाण्ड विद्वान्, तन्त्राचार्य, अक्खडस्वभाव वाले तेजःपुञ्ज साक्षात वासुदेवांश, आवेशी ऋषि ब्राह्मण तेज की मूर्ति-मन्त ज्वलन्त प्रतिमा थी। जिसके आगे चारों वेद, पीछे सशर धनु, एक साथ शाप और बाण (अस्त्र-शस्त्र) व्यवस्थित हैं, स्पष्टतः यह तो ब्रह्म-क्षत्र का प्रत्यक्ष युगपत् सहज दिव्य मिलन है जो समाज और राष्ट्र की चिर सुव्यवस्था के लिए परमोपयोगी सिद्ध हुआ। इस चिरञ्जीवी, ब्रह्मचारी भार्गवकुलभूषण के असङ्ख्य अनुयायी आज भी उनकी परम्परा और गुणों का अनेक कष्ट सहते हुए अव्याहत रूप से पालन करते चले आ रहे हैं। खेद है कि कुछ मतिमन्द विभिन्न वर्गों में स्थित इस आर्ष सन्तति के तेज, कुशलता, निर्भीकता, स्वातन्त्र्यप्रियता गुरु एवं प्रशासकीय प्रवृत्ति को सहन न कर इनपर अनेक गन्दे आरोप लगाते हैं। ऐसा लगता है मानों ये क्षुद्र पण्डितं-मन्य बिना समझे-बूझे ही मनमाना बकते-झकते हैं। वास्तव में गहराई से विचार किये बिना किसी बात का निष्कर्ष निकालना मूर्खता ही सिद्ध होती है। अतः यहां भी इन वर्गविशेषों—महाराष्ट्र के चितपावन, (कोकणस्थ) बिहार और उत्तरप्रदेश के भूमिहार, समस्त उत्तर भारत में व्याप्त महियाल-जिझौतिया-त्यागी, गुजरात के अना बिल, बङ्गाल के ठाकुर, भौमिक और तामिलनाडु के नम्बूदरीपाद आदि का यथार्थ इतिहास एवं गुण-कर्म को जानने के लिए आवश्यक होगा कि सर्वप्रथम हम उनके मूल आदर्श पुरुष के सम्पूर्ण चरित्र को ठीक-ठीक समझें।

उपर्युक्त समुदाय द्वारा अनन्य भाव से समादृत जमदग्निपुत्र का सर्वप्रथम परिचय हमें ऋग्वेद[1] के एक सूक्तद्रष्टा के रूप में मिलता है। अथर्ववेद[2] के—

ये सहस्रमराजन्नासन् दशशता उत।
ते ब्राह्मणस्य गां जग्ध्वा वैतहव्याः पराभवन्॥

इस मन्त्र में पिता जमदग्नि के आश्रम से कार्तवीर्य द्वारा जबरन धेनु ले जाने के कारण हैहय—सहस्रबाहू कार्तवीर्य का ही नहीं अपितु भविष्य में उसके सम्पूर्ण वंश का विनाशक परशुराम के परम उग्र क्रान्तिकारी चरित्र का सङ्केत मिलता है। वेदों में अन्यत्र प्रसङ्गतः इसके और भी उल्लेख मिलते हैं।

ब्रह्म-क्षत्र—परशुराम के वर्तमान कुछ अनुयायियों में भी वर्णद्वय से सम्बद्ध नाम-गुण (शर्मा, त्रिपाठी, सिंह ठाकुर तथा शिक्षा और सैनिक) परिलक्षित होने से संसार में कुछ भ्रन्तियां व्याप्त हैं। वस्तुतः विचार से इनका मूल विशुद्ध ब्राह्मण ही है। इसका स्पष्टीकरण हमें परशुराम के पितामह ऋचीक भार्गव के पारिवारिक विवरण से होता है। पुराणों में कथा है—

एक बार ऋचीक भार्गव ने कान्यकुब्ज के विख्यात राजा गाधि की सुलक्षणा लावण्यवती कन्या सत्यवती से विवाह करने की इच्छा व्यक्त की। कुशिक गोत्रीय गाधि ने परम्परा के अनुसार ऋचीक से शुल्क के रूप में एक सहस्र श्यामकर्ण घोड़ों की मांग की। तदनुसार ऋचीक ने वरुण से एक सहस्र घोड़ों को प्राप्त कर गाधी को दिये और सत्यवती तथा ऋचीक का विवाह सम्पन्न हुआ।

१—'जमदग्निर्भार्गवः, रामो, वा जामदग्न्यः' ऋग्वेद १०, ११०
२—५, १८, १०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पश्चात सत्यवती तथा उसकी माता (पत्नी तथा सास) ने ऋचीक से पुत्र की याचना की ऋचीक ने दोनों के लिए पुत्र हेतु चरु अभिमन्त्रित कर उसे दोनों को अपना-अपना हिस्सा खाने के लिए कहा और स्नानसन्ध्या के लिए चले गये। इधर सत्यवती की माने कपटवश पायस के हिस्से को अपनी कन्या से बदल कर भक्षण किया। ऋचीक ने लौटने पर सत्यवती से पायस भक्षण के विषय में पूछताछ की तो उन्हें ज्ञात हुआ कि पायस परस्पर में बदल गया। वे बड़े खिन्न होकर बोले सब काम उलटा हो गया। और कहा—'घोरो दण्डधरः पुत्रो भ्राता ते ब्रह्मवित्तमः। तुम्हारा पुत्र घोर दण्डधर होगा तथा भाई ब्रह्मवित्तम। यह सुनते ही सत्यवती अत्यन्त दुःखी हुई। ऋचीकने उसे दुःखी देख उक्त वचन में परिवर्तन करके कहा यह घोरात्मक फल तुम्हारे पौत्र को प्राप्त होगा, पुत्र को नहीं। इस ऋषिवाक्य से सत्यवती को ऋचीक से जमदग्नि तथा जमदग्नि से कामली रेणुकाको परशुराम पुत्र रूप में प्राप्त हुए।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि यह ब्रह्मर्षि वंश विशुद्ध ब्राह्मण ही है। पितामही द्वारा आचरित कपट निमित्त से परशुराम को ब्राह्मणत्व के साथ उग्रता (क्षत्र-स्वभाव) जन्म से ही विशेषरूप में प्राप्त थी।

आप ही सोचें जिनके उपास्य का ऐसा चरित्र है उसके उपासकों में यदि युगपत् ब्रह्म-क्षत्र सूचक नाम-गुण यथा— त्रिपाठी, दूबे, चौबे, शर्मा राव, राय, सिंह, बहादुर नाम तथा बुद्धि और शूरता के गुण पाये जाते हैं तो इससे इनके विशुद्ध ब्राह्मणत्व में क्या आपत्ति है। प्राचीन काल से ही ऐसे अनेक उदाहरण मिलते भी हैं।

इस प्रसङ्ग से तत्कालीन पारिवारीक, वैवाहिक व्यवहारों का भी विशेष अनुमान लगता है।

परशुराम ने समय-समय पर माता-पिता, कश्यप, अगस्ति, मार्कण्डेय, शिव, गणेश आदि देवी-देवताओं से आशीर्वाद, अनेक गूढ़ विद्याओं को तपः पूर्वक अनुशासन में रहकर प्राप्त किया है। कहीं कहीं इनके विरोधी विवरण भी उपलब्ध हैं। यथा—ब्रह्माण्ड (३.४२) में इनके द्वारा गणेशजी का दांत तोडने का प्रसङ्ग है, तो मत्स्यपु० ३६ में गणेश की अराधना का वर्णन है। आज्ञापालक परशुराम ने एक बार पिता के कहने पर माता रेणुका का वध भी किया जो पुनर्जीवित भी कर दी गयी। इन्होंने ४१ से ज्यादा शस्त्रास्त्रों का पूर्ण ज्ञान अर्जित किया था। ब्रह्माण्डपुराण[1] के अनुसार कार्तवीर्य की हत्या के पाप निवारणार्थ प्रायश्चित्त करने में रत परशुराम की अनुपस्थिति में कार्तवीर्य पुत्रों द्वारा जमदग्नि का वध कर दिया गया था तथा उनके लौटने के बाद पिता की मृत्यु का दुःखद समाचार रेणुका ने इक्कीस बार छाती पीटकर पुत्रको सुनाया इसके बदले में परशुराम ने इक्कीस बार निःक्षत्रिय पृथ्वि कर माता को भावात्मक शान्ति प्रदान की। हैहय तथा उनके समर्थकों का तो उसने पूर्ण सफाया कर ही दिया। हैहयविरोधी इस भारतीय प्रथम महायुद्ध में अयोध्या कान्यकुब्ज और जमदग्नि आदि का मातृपक्ष था, इसके अतिरिक्त वैशाली, विदेह, काशी आदि देशों के राजा भी परशुराम के पक्ष में आ गये थे। मामा दत्तात्रय की आज्ञा से परशुराम ने माता-पिता का अन्तिम संस्कार किया। इसी प्रसङ्ग में इक्कीस बार निःक्षत्रिय पृथिवी की सङ्गति इक्कीस बाणों से सम्बद्ध की हुई तन्त्र तथा पुराणों में प्रकारान्तर से पढ़ने में आती है जो विशेष मननीय है। व्यवसायी भी—भार्गवों में न केवल क्षत्रिय वृत्ति का उल्लेख मिलता है बल्कि प्रसङ्गतः शिक्षा वृत्ति तथा अर्थाभाव से बचने के लिए वैश्य और शूद्र का कार्य भी इन्होने किया है। स्वयं परशुराम ने भी नाविक वृत्ति की है। निरुक्त में भी प्रसङ्गतः प्रश्न है—दुर्भिक्षे केन जीवति ? उत्तर है—'शकटः शाकिनी गावो जालमस्यन्दनं वनम्। उदधिः पर्वतो राजा दुर्भिक्षे नव वृत्तयः" ॥इति॥ भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर रहते हुए इनके योरप, अफ्रीका आदि अनेक विदेशी राज्यों से व्यापार होते थे। पश्चिम से हैहयों को नष्ट कर भृगुकच्छ=भड़ौच (बन्दरगाह) से कन्याकुमारी तक सम्पूर्ण प्रदेश पुनः प्रतिष्ठित करने का श्रेय परशुराम को ही है। इस समुद्रस्थ भूमि को मानवोपयोगी आपने ही किया है। वर्तमान में यह स्थान शूर्पारक कहलाता है।

सम्पूर्ण भारत में प्रभुत्व—तानाशाह हटाओ और राष्ट्र तथा सम्पूर्ण समाज बचाओ के व्रत के माध्यम से परशुराम ने भारत के चतुर्दिक अनेक बार भ्रमण किया है। आपने कभी दुष्ट राजाओं के बहाने या कभी विद्याओं

१—३. २९. १४;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अर्जन अथवा कभी क्षत्रिय हत्या से लगे पाप के प्रायश्चित के निमित्त अनेक प्रदेश, नगर, तीर्थ और पर्वतों पर तप में १२-१२ वर्षों तक का समय व्यतीत किया। बदले की भावना आपमें भयंकर थी। क्षत्राणियों के गर्भस्थ शिशु भी आपने नष्ट किये।

शत्रुओं को परास्त कर जीति हुई भूमिको गुरु को समर्पित कर दी और स्वयं के लिए पुनः नये आश्रम का निर्माण किया। आपके 'बहुजन हिताय' योग्य विचारों से सहमत अनेक सूज्ञ क्षत्रियों ने भी आपके दुष्ट क्षत्रिय-विरोधी आन्दोलन में पूर्ण सहयोग किया है। इस प्रकार आपके बृहत्तर भारत में सर्वत्र अनुयायी फैल गये। आपके प्रमुख स्थान ये हैं जहां आपने विशेष कार्य किये—जमानिया (जमदग्नि आश्रम), उत्तर काशी, कुरुक्षेत्र, सङ्गमेश्वर, कोकण, मान्धाता, उत्तर प्रदेश के मेरठ के पास हिण्डन (प्राचीन 'हर') नदी के किनारे पञ्चतीर्थी पर परशुरामेश्वर शिवमन्दिर। मातृतीर्थ—महाराष्ट्र में माहूर—रेणुका का दहन स्थान। महेन्द्र पर्वत—आधुनिक पूरबघाट। यह परशुराम का तपः स्थान था। महेन्द्रपर्वत आदि भूमि का दान कर परशुराम ने 'शूर्पारक' = सोपारा की स्थापना बम्बई में कर वहां तप करने लगे। गोकर्णक्षेत्र—कारवार जिले में, इसे भी समुद्र से बचाकर इसे तपके योग्य बनाया गया था। जम्बुवन—राजस्थान में कोटा के पास। यह भी तपो भूमि रही। परशुरामतीर्थ—नर्मदाकिनारे लोहान्या ग्राम—तपः स्थान। परशुराम ताल—पञ्जाब में। यहां रेणुकातीर्थ तथा जमदग्नि पर्वत है। रेणुकागिरि—अलवर में परशुराम आश्रम है। चिपळून—महाराष्ट्र में यहां परशुराम का भव्य मन्दिर है। रामह्रद—कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध परशुरामतीर्थ, पञ्चकुण्डी—'समन्तपञ्चक' इत्यादि ग्रन्थ प्रमाण—वेद-पुराण एवं तन्त्र में यत्र-तत्र परशुराम के अनेक पुष्ट विवरण तो प्राप्त होते ही हैं। 'परशुराम कल्पसूत्र' तथा 'परशुराम प्रताप' के अतिरिक्त परशुराम तन्त्रान्तर्गत और भी अनेक स्तोत्र, और प्रयोग आदि स्थल-स्थल पर निर्दिष्ट हैं। मालाबार में अभी भी परशुराम शक प्रचलित है जिसका एक चक्र एक हजार वर्षों का होता[1] है। भा० ज्यौ० ३७७)

उपर्युक्त परशुराम चरित्रको पढ़ने से स्पष्ट होता है कि इन्होंने उसी काल में एक विशिष्ट समाजवाद को जन्म दिया। दुष्टों के समस्त विरोधी अधिकार नष्ट कर उनकी सम्पत्ति को लोकोपयोगी बनाया, योग्य शासक की स्थापना करना तथा स्वयं उससे निर्लिप्त रहने का आचार परशुराम ने ही सिखाया। परिस्थितिवश प्राप्त अनिवार्य पाप का भी प्रायश्चित्त कर विशुद्ध बने रहने का विचार आपने ही दिया। परशुराम परम्परा—इस परम्परा की अग्रिम (मध्य) पुष्ट कड़ी चाणक्य तथा आचार्य शङ्कर आदि को कह सकते हैं। विदित हो कि अष्टविधनामधारी—

"वात्सायनो मल्लनागः कुटिलश्चणकात्मजः।
द्रामिलः पक्षिलस्वामी विष्णुगुप्तोङ्गुलश्च सः[2]॥"

कौटिल्य से अपना सम्बन्ध जताने वाली भूमिहारों की एक शाखा 'चणकिया' और 'आर्थवप' नाम से आज भी बिहार के कुछ गावों में सङ्कुचित रूप में मिलती हैं। यहां चणकिया स्पष्टतः चाणक्य से मिलता हुआ रूप है तथा 'आथर्वप' अथर्ववेद से सम्बद्ध है। सर्वविदित है कि भार्गव से अथर्वाङ्गिरस सम्बद्ध रहे हैं और कौटिल्य का अर्थशास्त्र और उसके विचार आथर्वण सम्प्रदाय से बहुत मेल खाते हैं। इस प्रकार यहां चाणक्य का परशुराम और अथर्व सम्प्रदाय से सम्बद्ध होने तथा परशुरामानुयायी चाणक्य के चणकिया और आथर्वपों के इतिहास पर भी कुछ प्रकाश अवश्य पड़ता है।

वर्तमान में परशुराम के अनुयायियों में हमें लोकमान्य बाल गङ्गाधर टिलक तथा गोखले प्रभृति मिलते हैं। जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ 'स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है', 'स्वयमेव मृगेन्द्रता' आदि उद्घोष से अपने आदर्श पुरुष के ही विचार को पुनः दोहराया है। इनके अलावा समय-समय पर पेशवा, बलवन्त सिंह, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, महामना मालवीय आदि अनेक महापुरुष भी इस पुण्य भूमि पर अवतीर्ण हुए हैं जिन्हों ने अपनी परम्परा का निर्वाह अनेक कष्टों को सह कर किया है। अन्त में हम उन विलक्षण तेजः पुञ्जों से प्रणाम पूर्वक उस राष्ट्र देवता के सर्वाङ्गीण उत्कर्षकी कामना करते हैं

शुकुलपुरा
वाराणसी

१—उपर्युक्त परशुराम चरित्र 'प्राचीन चरित्र कोश' से सङ्कलित किया गया है।
२—सिद्ध हेमचन्द के 'अभिधान चिन्तामणि' का यह श्लोक श्री अम्बिका प्रसाद वाजपेयी लिखित 'हिन्दू राज्य शास्त्र' पृ० २० में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवद्गीता पर आधारित योग का मूल्यांकन

डा० गंगाधर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रस्तुत निबन्ध में 'योग' शब्द का मूल्यांकन श्रीमद्भगवद्गीता के आधार पर किया गया है। आजकल 'योग' एक बहुचर्चित विषय है। इस शब्द का प्रयोग इतनी स्वच्छन्दतापूर्वक किया गया है कि इसके विविध अर्थ व्यक्त होते हैं।[1] 'योग' शब्द एकाग्रतार्थक 'युज' धातु से निष्पन्न है। 'युज' धातु के बाद करण और भाववाच्य में घञ् प्रत्यय लगाने से 'योग' शब्द बनता है। 'युज' धातु का अर्थ है 'समाधि'। अतः योग का वास्तविक अर्थ जानने के लिए 'समाधि' शब्द का भी अर्थ समझना आवश्यक है। 'समाधि' का अभिप्राय है सम्यक् प्रकार से भगवान् के साथ युक्त हो जाना, मिल जाना। जीव को कामना, वासना, आसक्ति, संस्कार आदि सब प्रकार की मलीनताओं को दूर कर, अपने स्वरूप में स्थित होकर मुख्यभाव से भगवान में मिल जाना ही समाधि है। 'योग' शब्द का भी अर्थ है जीव तथा ब्रह्म का पूर्ण मिलन अर्थात् विजातीय, स्वजातीय एवं स्वगत् भेदों से रहित होकर जीव और ब्रह्म का मिलन होना। मिलन या योग के दो स्वरूप वर्णित है-१-अपने अस्तित्व को समाप्त करके यथा—शंकर का विशुद्धाद्वैत २-अपने पृथक स्वरूप को, स्वगत भाव को अलग करके यथा—रामानुज का विशिष्टाद्वैत—अपने धार्मिक अर्थ में 'योग' मनुष्य की पूर्णता के भाव को प्रकट करता है। यह मनुष्य की अन्तर्मुखी होने की प्रवृत्ति है जो अपने अन्दर किसी रिक्तता का अनुभव करती है तथा इस रिक्तता को किसी दैवीय, बोधि या साक्षात्कार के द्वारा पूर्ण करके शरीरबद्ध आत्मा का बाह्य तत्व के साथ मिलन कराती है।

'योग' का मुख्य अर्थ भावाच्य में भगवन् मिलन ही है परन्तु गौण अर्थ में करण वाच्य में भगवान के साथ मिलन कराने वाली समस्त साधन प्रणाली है।

'योग' शब्द के इस तत्व को समझने के पूर्व एक विचारणीय प्रश्न उठता है कि 'योग' की क्या आवश्यकता है? धार्मिक मनुष्य के लिए 'योग' ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान या ईश्वरज्ञान के लिए आवश्यक है। प्रत्येक ज्ञान के दो पक्ष होते हैं-सैद्धान्तिक और व्यावहारिक। किसी पक्ष का बौद्धिक अनुशीलन उसका सैद्धान्तिक पक्ष है तथा उसका क्रियात्मक रूप व्यवहार पक्ष है। दार्शनिकों के समक्ष प्रथम पक्ष का अधिक महत्व होता है, किन्तु उसके फलस्वरूप जीवन का उद्देश्य अपूर्ण रह जाता है, चाहे भले ही उसकी बौद्धिक पिपासा शान्त होती हो। किन्तु यहाँ स्मरणीय है कि ब्रह्मज्ञान जीवन को स्पर्श करता है, उसे परिवर्धित करता है। इस अर्थ में ब्रह्मज्ञान का व्यावहारिक पक्ष सबल है। जब यह ज्ञान जीवन के साथ जुड़ता है तो इसे योगशास्त्र की संज्ञा दी जाती है।

१—टिप्पणी—'योग शब्द के निम्नाङ्कित अर्थ लगाये जा सकते हैं :—

(क) गणित शास्त्र का योग (जोड़) यथा २+२=४

(ख) दो द्रव्यों का योग यथा-पानी और दूध

(ग) दो गैसों का योग यथा-हाइड्रोजन तथा आक्सीजन

(घ) दो धातुओं का योग यथा-लोहा तथा तांबा

(च) वशीकरण, जादू, इन्द्रजाल, हठ योग आदि भी योग हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब प्रश्न है कि गीता में 'योग' का क्या अभिप्राय है? गीता वेदान्त की प्रस्थानत्रयी में से एक है। पातञ्जलि योगसूत्र, घेरण्डसंहिता, शिव-संहिता आदि धर्मग्रन्थों में योग का आशय समझाया गया है। गीता में 'योग' के स्वरूप का अनूठा वर्णन प्राप्त होता है। गीता उपासक तथा उपास्य के बीच साक्षात् वार्तालाप का एक अपूर्व प्रमाण है। इस आध्यात्मिक वार्तालाप का मुख्य विषय इस ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अन्त मे स्पष्ट है यथा-ब्रह्मविद्या और योगशास्त्र। ये दोनों शब्द गीता के ज्ञान रूपी कपाट की कुंजियां हैं। ब्रह्मविद्या का अभिप्राय है ब्रह्म अथवा ईश्वर का ज्ञान। यहाँ एक बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि गीता में भी अन्य धार्मिक ग्रन्थों के समान परमसत्ता के ज्ञान का मर्म छिपा है। किन्तु गीता मे वर्णित इन दो शब्दों में 'योगशास्त्र' शब्द का विशिष्ट महत्व है। 'योगशास्त्र' क्या है? यहाँ 'शास्त्र' शब्द को इसके संकीर्ण अर्थ में न लेकर इसे 'विज्ञान' का ही पर्याय मानना उचित है। गीता का रहस्य यह है कि इसका उद्देश्य न केवल ब्रह्मज्ञान को व्यक्त करना है, अपितु इसका मूल विषय इस परम ज्ञान को प्राप्त कराने वाले साधनों को बतलाना है। सम्भवतः इसी अर्थ में 'योगशास्त्र' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'गीता एक योग शास्त्र है···। योग सभी धर्मों का आधार तथा लक्ष्य है। किन्तु धर्मों के द्वारा स्वीकृत इस सामान्य अर्थ के अतिरिक्त योग का एक व्यापक अर्थ भी है। धार्मिक आकांक्षावादी व्यक्तियों द्वारा स्वीकृत योग के अर्थ से भिन्न एक मनोवैज्ञानिक व्याख्या भी है। अतः 'योग' शब्द के द्वारा मानव मन के विभिन्न पहलू-क्रियात्मक, दार्शनिक भावनात्मक, मानसिक इत्यादि का बोध होता है। गीता में उनके लिए विभिन्न योग की संज्ञा दी गयी है-कर्म-योग, ज्ञानयोग, भक्तियोग तथा राजयोग। ये विभिन्न मार्ग मनुष्य तथा ईश्वर को मिलाने वाले साधन है।"[1] गीता पर आधारित योग के दो अर्थ हैं-१-योग वह साधन है जिसका लक्ष्य मानव का मानवेतर अर्थात् परम सत्ता के साथ एकीकृत करना है, २-योग एक रहस्यानुभूति है, जिसमें परमसत्ता का दर्शन या अनुभव होता है। योग का यह अर्थ पातंजलि के 'चित्तवृत्तिनिरोध' के अर्थ में निहित है, क्योंकि चित्त की वृत्तियों का निरोध किसके लिए आवश्यक है? स्पष्ट है कि वह ध्यान का एक मार्ग है और ध्यान का लक्ष्य केवल शुद्ध अनुभूति करना ही है।[2]

भारतीय दार्शनिक परम्पराओं पर दृष्टिपात करने से हमें ज्ञात होता है कि योग की सच्ची व्याख्या सांख्य दर्शन तथा पातंजलि योग सूत्र में मिलती है। वैसे तो विभिन्न उपनिषदों, तंत्रों तथा बौद्ध सम्प्रदाय में योग की विशद चर्चा की गयी है। सांख्य के अनुसार पुरुष-प्रकृति का पृथकत्व उनकी वियोगावस्था में पुरुष के स्वरूप में स्थित होना योग है-यथा-'पुंप्रकृत्योर्वियोगेपि योग इत्यभिधीयते'। पातंजलि योगसूत्र के अनुसार योग चित्त की वृत्तियों का निरोध करना है-'योगश्चित्तवृत्ति-निरोधः'। योग-सूत्र में वर्णित इस परिभाषा को ध्यान में रखकर एक प्रश्न किया जा सकता है कि मन या चित्त की वृत्तियों को रोकने की क्या आवश्यकता है? कारण स्पष्ट है क्योंकि हम परमशान्ति की खोज करते हैं, अतः योग के द्वारा मन को निर्मल करके ही उस ज्योति का दर्शन कर सकते हैं। इसलिए पतञ्जलि ने विभिन्न योग-साधन अर्थात् यम, नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि के अभ्यास का औचित्य बतलाया है। अतः इसका तात्पर्य यह है कि पतञ्जलि के अनुसार योग एक विज्ञान है जिसे प्रायोगिक रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है। परन्तु योग का लक्ष्य प्रमाणित या अप्रमाणित करना नहीं है अपितु इस सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

१—स्वामी निखिलानन्द : 'दि भगवद्गीता'-भूमिका, रामकृष्ण विवेकानन्द सेन्टर, न्यूयार्क, १९५२, पृ० ६-७।

२—मिर्सिया इलियड : योग, इम्मार्टलिटी एण्ड फ्रीडम, अनु० विलियम आर० ट्रास्क, प्रिन्सेटन युनिवर्सिटी प्रेस १९७०, पृ० १५३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमद्भगवद्गीता में 'योग' का अर्थ कई प्रकार से स्पष्ट किया गया है। दसवें अध्याय में कहा गया है कि व्यक्ति भगवान की परमैश्वर्य रूप विभूति को और योग-शक्ति को तत्त्व से जानता है वह व्यक्ति निश्चल ध्यान-योग द्वारा ईश्वर में ही एकीभाव से स्थित होता है।[1] नवें अध्याय में ईश्वर की योग माया का वर्णन मिलता है जिसके आधार पर ही मनुष्य और ईश्वर का संबंध व्यक्त है। गीता में 'योग' शब्द की परिभाषा बड़े मार्मिक ढंग से व्यक्त करते हुए स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि समस्त आसक्ति अर्थात् सुख-दुःख, पाप-पुण्य, शत्रु-मित्र, शीतोष्ण आदि द्वन्द्वों से अतीत सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर समत्व प्राप्त करना ही 'योग' है।[2] यहां 'समत्व' शब्द का भी अर्थ स्पष्ट करना उचित है अर्थात् जो कुछ भी कर्म किया जाय उसके पूर्ण होने और न होने में तथा उसके फल में समभाव रहने का नाम 'समत्व' है। आगे और भी स्पष्ट किया गया है कि परमात्मा के स्वरूप में अचल और स्थिर होकर समत्व प्राप्त करना ही योग है।[3] इस भाव को और भी अधिक रूप से स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि समत्व का भाव कब होता है ? अर्थात् जब कर्मों के प्रति मनुष्य उदासीन हो जाता है। अतः योग का एक और भी अर्थ निकला कि कर्म करने की चतुरता ही योग है—योगः कर्मसु कौशलम्।[4] गीता में 'योग' शब्द के अर्थ की पतंजलि के द्वारा निरूपित योग से तुलना भी की जा सकती है। पतंजलि ने 'योग' में 'नियम' की चर्चा की है। गीता में स्पष्ट वर्णन है कि योग किसे प्राप्त होता है। यह न तो अत्यधिक भोजन करने वाले, न तो उपवास करने वाले, न अधिक सोने वाले और न तो अधिक जागने वाले को प्राप्त होता है।[5] इसका तात्पर्य यह है कि योगी वही है जो सभी स्थितियों में एक ही भाव रखता है तथा ईश्वर के प्रति समर्पण का भाव रखता है।[6] इसीलिए गीता में योगी को सर्वश्रेष्ठ पुरुष कहा गया है। योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है और समस्त शास्त्रों के पंडितों से भी श्रेष्ठ है।[7]

गीता में वर्णित 'योग' के उपर्युक्त अर्थ को जान लेने के बाद एक समीचीन प्रश्न उठता है कि गीता में किस प्रकार के योग की शिक्षा दी गयी है ? वस्तुतः गीता के योगों को विभिन्न संज्ञाएं दी गयी हैं। समस्त अध्यायों को अलग-अलग योग के नाम से वर्णन किया गया है। काका कालेलकर ने गीता के ५२ योगों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। उदाहरण के लिए डा० पी० एन० मोदी द्वारा चर्चित कुछ योगों का नाम लिया जा सकता है—उन्होंने गीता के प्रथम दो अध्यायों में ९ योगों की चर्चा की है। यथा—स्वजनदर्शनयोग, अर्जुन विषाद योग, उत्थान योग, स्वधर्म कर्म योग, स्वजन कृपा योग, प्रबोधन योग, साम्ययोग, बुद्धियोग तथा स्थित-

---

१—एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्तितत्वतः। सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः॥ १०—७

२—'मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः', ९—४। 'न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्'। ९—५

३—योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनञ्जय। सिद्धसिद्धयोः समो भूत्वा समत्व योग उच्यते॥ २—४८

४—श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला। समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यति॥ २-५३

५—बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते। तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्॥ २-५०

६—नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः। न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन॥ ६-१६

७—अध्याय ७, श्लोक ४६।

८—सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः। सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते॥ ६-३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रज्ञ योग।[1] 'योग' के इन विभिन्न स्वरूपों पर विचार करने से यह समझा जा सकता है कि 'योग' को कई दृष्टि से देखा गया है। 'योग' का लक्ष्य है मन तथा शरीर को प्रशिक्षण देना। तात्पर्य यह है कि योग की उन्नति निराशा तथा दुर्बलता में नहीं होती। विषादयुक्त मनुष्य योग से वञ्चित रहता है। किन्तु प्रश्न उठता है कि क्या योग की यह धारणा गीता में वर्णित योग से मेल खाती है। तो स्पष्टरूप से कहा जा सकता है कि गीता में योग विषाद से ही उत्पन्न होता है। अर्जुन किस परिस्थिति में है, यह स्पष्ट है। वह विषादयुक्त होकर दुःखित मन से निराश हो चुका है, तभी उसके मन में योग की चेतना जागृत की जाती है। इस लिए गीता का प्रथम अध्याय अर्जुन विषाद योग' कहा गया है। विषाद योग के अर्थ को समझने के लिए हमे क्लेश और विषाद में अन्तर करना होगा। क्लेश का तात्पर्य है भौतिक पीड़ा, जो व्यावहारिक इच्छाओं को असन्तुष्टि से उत्पन्न होती है। किन्तु विषाद जिससे अर्जुन युद्ध के मैदान में ग्रसित था, वह भौतिक इच्छाओं के कारण नहीं अपितु वह इतना व्यग्र हो उठा था कि उसके समझ में नहीं आता था कि वह क्या करे, अपना कर्तव्य पूरा करे या विनाश को प्राप्त हो। जीवन एक रहस्य धारा है, जिससे मनुष्य को उसके रास्ते पर ही चलना पड़ता है। जीवन का यह बोध मनुष्य को भौतिकवादिता से ऊपर उठाती है। अर्जुन को भी इसी कारण मोह से वैराग्य उत्पन्न हुआ था। उसे आध्यात्मिक बोधि प्राप्त हुई, इसीने अर्जुन को योग के लिए उद्यत किया। विषाद से ही ज्ञान प्राप्त होता है, अन्धकार से ही प्रकाश का महत्व होता है।

अब हमें यह विचार करना चाहिए कि गीता के योग का स्वरूप क्या है? विभिन्न भाष्यकारों ने अपने सम्प्रदायों के अनुकूल ज्ञान, भक्ति तथा कर्म में से उत्तम मार्ग को चयन करके गीता का उसी अर्थ में अनुमोदन किया है। अतः सामान्यतया यह माना जा सकता है कि गीता में सब प्रकार के योगों का समन्वय है। एक बौद्धिक अनुशीलन के बाद गीता के अठारहों अध्यायों को तीन भागों में बांटा जा सकता है, और प्रत्येक भाग में ६ अध्याय है। पहले ६ अध्यायों में भगवान ने पांच प्रकार की साधना प्रणाली का वर्णन किया है। यथा ज्ञान, भक्ति, कर्म ध्यान तथा राज-योग। दूसरे ६ अध्यायों में मूल गीता का रहस्य मिलता है। अन्त के ६ अध्यायों में श्री कृष्ण ने विशिष्ट तथा दुरूह सिद्धान्तों की मीमांसा की है, जिन्हें समझना योग को पूर्णतः व्यवहार में लाने के लिए आवश्यक है।[2] गीता के आधार पर योग' की व्याख्या में कर्म योग को प्रधानता दी जा सकती है। गीता इस बात की जांच करती है कि क्या केवल ध्यान या अनुभूति ही आत्म-साक्षात्कार का साधन है अथवा क्या वह कर्म के द्वारा भी प्राप्य है। वस्तुतः गीता कर्म व ध्यान का एक समन्वय है। यद्यपि दोनों के वाह्य स्वरूप भिन्न हैं किन्तु मूलतः दोनों सक्षम मार्ग हैं। क्या वहां पाश्चात्य विचारकों द्वारा भारतीय दर्शन पद्धति पर उठाये गये आक्षेपों का सही उत्तर नहीं दिया जा सकता? अवश्य ही हमें यहां उन आपत्तियों के विरुद्ध एक जोरदार समर्थन मिलता है, जहां पाश्चात्य चिन्तक श्वेटज़र आदि यह मानते हैं कि हिन्दू दर्शन पद्धति केवल ध्यान पर आधारित है, इससे कर्म का तिरस्कार होता है। गीता का उदाहरण अपरिहार्य है जहां कर्म को ध्यान का विरोधी नहीं अपितु समान रूप से योग्य साधन कहा गया है। लोकमान्य बाल गगाधर तिलक ने अपने विषद ग्रंथ 'गीता रहस्य' में पाश्चात्य एवं भारतीय दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए तथा पाश्चात्य दर्शनों को अधूरा बताते हुए स्पष्ट किया है कि भारतीय दर्शन सर्वांगीण है तथा उनका सारा निचोड गीता में सुन्दर ढंग से व्यक्त किया गया है। इसके साथ ही तिलकजी ने जोरदार ढंग से प्रतिपादित किया है कि गीता का उपदेश मूलतः कर्मयोग प्रधान है और इसका स्पष्ट प्रमाण यही है कि अपने ही स्वजनों के साथ युद्ध किस लिए किया जाय इस विवञ्चना

१—डा० पी० एन० मोदी : दि भगवद्गीताः ए फ्रेश अप्रोच, १९५५, पृ ६६।

२—यह वर्गीकरण श्री कृष्ण प्रेम भिखारी ने 'गीता में योग का स्वरूप' नामक निबन्ध में प्रस्तुत किया है—'कल्याण' वर्ष १०, संख्या १ अगस्त १९३५ पृ० १२३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में पड़ा हुआ अर्जुन भगवान कृष्णके प्राप्त गीतामृत का पान कर अपनी सभी शंङ्का-कुशङ्काओं पर विजय प्राप्त करता हुआ धनुष-बाण उठाकर स्वतः को युद्ध के लिए प्रस्तुत कर स्वकर्म में पूर्ण निष्ठा एवं आत्मविश्वास के साथ प्रवृत्त होता है। स्वामी चिदान्द ने लिखा है कि गीता प्रत्येक मनुष्य के लिए उपयुक्त ग्रन्थ है। एक कर्मयोगी गीता में प्रवेश करता है तो उसे यहां कर्मयोग का आधार मिलता है। एक भक्त को यहां साधना का आधार मिलता है तथा ज्ञानी को भी यहां संतोष प्राप्त होता है।[1] गीता में वर्णित 'योग' का मूल मंत्र यह है कि मनुष्य का सच्चा कर्म यह है कि वह अपने कार्यों में रत होकर अपना उत्तरोत्तर विकास करे। सच्चा ज्ञान यह है कि साधना के द्वारा अपने आप में शक्ति का संचय करे। सच्ची भक्ति यही है कि वह अपने समस्त कर्मों को श्रद्धावान होकर ईश्वर पर समर्पित करे तथा फल की आकांक्षा छोड़ दे।

अन्त में यह कहना समीचीन लगता है कि गीता योग के धर्म की शिक्षा देता है। इसका निष्कर्ष यह है कि मानव जीवन की सार्थकता ब्रह्म प्राप्ति में है। परन्तु उस ब्रह्म प्राप्ति के लिए किसी विशेष सामाजिक साधन की अपेक्षा नहीं है। वह प्रत्येक अवस्था और प्रत्येक स्थिति में सम्पन्न हो सकती है। समाज का कोई धर्म न उसमें सहायक हो सकता है और न दूसरे प्रकार का धर्म बाधक ही हो सकता है। सामाजिक बन्धनों, नियमों का उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ब्रह्मप्राप्ति तो भगवत् शरणागति से ब्रह्म चिन्तन से होती है। भगवान् को स्मरण करने से, उसकी शरण में अपने को समर्पित करने से ही 'योग' का सच्चा अभ्यास होता है।

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

महावीर कालोनी
विनयका वाराणसी–१

१—स्वामी चिदानन्द : योग, योग वेदान्त फारेस्ट एकडमी, १९६०, पृ० १८।

राष्ट्र के अद्वितीय योद्धा प्रथम स्वातंत्र्य सेनानि
फतेह बहादुर-शाही की स्मृति में
राजा इन्द्रजीत प्रताप बहादुर शाही द्वारा संस्थापित

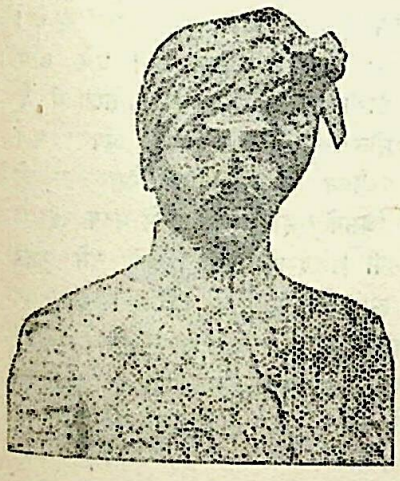

तमकुही राज एजूकेशन सोसायटी

संचालित

फतेह मेमोरियल कालेज

(भटवलिया तमकुही–देवरिया)

कृषि, विज्ञान, कला की उन्नत शिक्षा प्रदान में उत्तरोत्तर की तमान की ओर अग्रसर।

तमकुही राज-परिवार डिग्री कालेज का रूप देने के लिए सचेष्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेय और प्रेम मार्गों का स्वरूप

विजयबहादुरसिंह

अपने यहाँ पुराणों में यह प्रसंग आया है कि मनुष्य दो राहे पर खड़ा है। दोनों रास्ते भिन्न-भिन्न दिशा में जाते हैं। एक जाता है प्रकाश से अन्धकार की ओर और दूसरा जाता है अन्धकार से प्रकाश की ओर। एक मार्ग से अशुभ की प्राप्ति होती है तो दूसरे से शुभ की प्राप्ति होती है। एक में तमोगुण की अभिवृद्धि है तो दूसरे में सतोगुण की श्रेष्ठता है।

प्रकाश से अन्धकार की तरफ जाने वाला मार्ग अन्धकार मार्ग कहलाता है। यह अन्धकार मार्ग मोह, चिन्ता, ईर्ष्या, इन्द्रिय-सुख व तृप्ति, अज्ञान, परनिन्दा, तथा पाप व नरक का मार्ग है। अश्रद्धा और अविश्वास का सहारा लेकर मनुष्य इस रास्ते पर आगे बढ़ता है। जिसके पुरस्कार हैं रोग, मृत्यु, नारकीय जीवन और अन्त में अकाल मृत्यु!

दूसरा मार्ग यद्यपि शुरु में अन्धकारपूर्ण सा प्रतीत होता है वह वस्तुतः अन्धकार से प्रकाश की ओर जाता है। यह संयम, सदाचार परोपकार, ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, सुख, ऐश्वर्य, और भगवद्भजन का पवित्र मार्ग है। श्रद्धा और विश्वास का सहारा लेकर यात्री इस मार्ग से आगे बढ़ता है। शास्त्र और पुराण इस मार्ग के पथ प्रदर्शक है। इस मार्ग से मनुष्य अमृतरूप परमपद को प्राप्त होता है। संतोष, शान्ति, दीर्घजीवन इसके पुरस्कार है।

कठोपनिषद में एक श्लोक है—

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत-
स्तो सम्परीत्य विविनानि धीरः।
श्रेया हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते–
प्रेयो मन्दो योग क्षेमाद् वृणीते॥

श्रेय और प्रेय दोनों मिले हुए आते हैं। जो बुद्धिमान है वे दोनों में अन्तर समझ कर श्रेय का वरण करते हैं और जो मूर्ख हैं वे प्रेय को ही ग्रहण करते हैं। दोनों में बड़ा अन्तर है। प्रेय अन्त में दुःख और सांसारिक बन्धन की ओर ले जाता है लेकिन श्रेय मार्ग ज्ञान का मार्ग है और ले जाता है सुख, आनन्द की ओर। लेकिन विडम्बना है कि हम अपने स्वरूप तथा स्वधर्म दोनों को समझने में असमर्थ है।

पातन्जलि योग सूत्र में यह कहा गया है कि वृत्ति सारुपम्। पुरुष वैसाही दीखता है जैसी उसकी वृत्ति होती है। प्रमाद ही मृत्यु है और अप्रमाद ही अमृत है। प्रमाद ही के कारण आसुरी सम्पति वाले मनुष्य मृत्यु से पराजित हुए हैं। प्रमाद से रहित दैवी सम्पति वाले महापुरुष ब्रह्मस्वरूप हो जाते हैं। यह निश्चय है कि मृत्यु व्याघ्र के समान प्राणियों का भक्षण नहीं करती, क्योंकि उसका कोई रूप देखने में नहीं आता है। जैसे मतवाले पुरुष चलते-चलते गड्ढे की तरफ दौड़ पड़ते हैं उसी प्रकार कामी पुरुष भोगों में सुख मानकर उनकी तरफ दौड़ पड़ते हैं।

देवता लोग चरवाहों की तरह डंडा लेकर किसी की रक्षा नहीं करते वरन् जिसकी रक्षा करना चाहते हैं उसे आत्मबुद्धि से युक्त कर देते हैं ताकि वह स्वयम् अपनी रक्षा कर लेता है।

दुखमेव सर्वं विवेकीनाम

शरीर का अन्तिम परिणाम् है मृत्यु जिसकी कल्पना ही कम्पित कर देती है। प्राणी संसार कूप में पड़ा है। यही जीवन है यह न रुपक है न कहानी है। संसार के इस रसहीन कूप में प्राणी यही जीवन बिता रहे हैं। मृत्यु से चारों ओर ग्रस्त यह जीवन है। एक ओर कालरूपी कराल हाथी कुचल देने की प्रतिक्षा में है तो दूसरी और मौत रूपी विकराल सर्प अपना फन फैलाये प्रस्तुत है। जीवन के बचे दिन, आयुलता, जो उसका सहारा है जिसके सहारे उस कूप में भटक रहा है दिन और रात रुपी सफेद और काले चूहे उसे कुतर रहे हैं। क्षण क्षण आयु क्षीण होती जा रही है। इतने पर भी मनुष्य मोहान्ध हो रहा है। उसे मृत्यु दीखती नहीं है। विरुप सुखरुपी मधुकण जो उसे यदा कदा प्राप्त हो जा रहे है उसी में वह रम रहा है। उसी को पाने की चिन्ता में वह व्यग्र है।

उमरखैय्याम के शब्दों में दिन रात इस तरह व्यक्त है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिल विचारों है क्या तुमने ।
कही क्या यह अद्भुत बात ॥
गला फाड़ कर चिल्लाता है ।
कुक्कुट होते देख प्रभातः
कहता है दिनकर की प्रथम किरण का लो संदेश
जीवन की दो घड़ियों में से लो यह चली और एक रात
मानव स्वभाव में एक अपूर्व क्लिष्टता है ।
वह सुख अपने लिए चाहता है ।
परन्तु वह देखता है बाह्य वस्तुओं की ओर ।
उसकी दृष्टि बहिर्मुखी है ।
वह अपनी आन्तरिक वृत्ति को नहीं पहचानता ।

परम्परागत संस्कारों की वजह से आजकल अधिकांश जनसमुदाय का झुकाव भौतिकवाद तथा इन्द्रिय सुखों की तरफ आसानी से हो जाता है । अगर उन्नति करनी है तो इन बहिर्मुखी वृत्तियों को आन्तरिक वृत्तियों की ओर वैराग्य और अभ्यास द्वारा मोड़ना पड़ेगा । क्योंकि विलासिता जिस आनन्द की अनुभूति देती है उसका अन्त उन्माद और दुख है और उसके सारे सुख साधन अन्त में रोग और मृत्यु की तरफ ले जाते हैं । यह कटुसत्य है । यही विडम्बना है । यह जानते हुए कि विषयों का संयोग बल बुद्धि-तेज तीनों का हनन करता है । फिर भी मनुष्य मोहवश सुख की लालसा से इसी ओर आकर्षित रहते हैं ।

इसीलिए कहा गया है कि इस विश्व समुद्र में मनुष्य का जीवन एक नौका के समान है । जो कर्म-रूपी लकड़ी के तख्तों से निर्मित है । पुरुषार्थ रूपी पतवार से वह जीवन रुपी नौका को विश्वसमुद्र के पार ले जाता है । नाविक का काम विवेक करना है ।

कठोपनिषद् का एक श्लोक है । (अभ्यास १ श्लोक १४)

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्नि बोधत ।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया, दुर्गं पथस्तत्वकवयो वदन्ति ॥

अरे अविद्या से ग्रस्त लोगों उठो । अज्ञान निद्रा से जागो । श्रेष्ठ पुरुषों के पास जाकर श्रद्धा से कल्याणकारी ज्ञान प्राप्त करो । जिस प्रकार तलवार की धार तेज होती है उसी प्रकार तत्व को जानने वाला तत्वज्ञानी उस मार्ग को भी वैसा ही दुस्तर और दुर्गम मानते हैं ।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में ऐसी भी घड़ियाँ आती है जब देवता लोगों का प्रभाव रहता । ऐसी घड़ी में थोड़ा परिश्रम से ही ज्ञान प्राप्त हो जाता है । दूसरे काल में हमारे ऊपर ऐसी देव तुल्य प्रभावकारी शक्तियाँ हमसे दूर हट जाती हैं और हम अपनी कमजोरियों के उपर छोड़ दिये जाते हैं । हम अभागे हैं जब ऐसी देव तुल्य घड़ी पा देवमुहुर्त्त में जागरुक नहीं रहते और हम उसका स्वागत करने तथा उससे फायदा उठाने में असमर्थ होते हैं और बाद में पछताते हैं । इस पुनीत तिलक जयन्ती के अवसर पर हम यह व्रत लें कि हम आगे बढ़ें तथा अपने जाति समुदाय के लोगों को इस मार्ग में कर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ायें ।

विभूति निवास, वैजनत्था वाराणसी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तमकुही राज : इतिहास के पृष्ठों में

रघुनाथ प्रसाद शाही

१५५६ का पानीपत का युद्ध हुमायूं के लिए निर्णायक साबित हुआ। १३ वर्ष का अकबर अपनी सैनिक और प्रशासनिक क्षमता के कारण शासक बना। बिहार और बंगाल प्रायः प्रत्येक मुगल सम्राट् के लिए परेशानी का कारण बना था। अनेक राजाओं को सैनिक और कूटनीतिक शक्ति से पराजित कर अकबर अपने साम्राज्य का विस्तार करने लगा किन्तु वर्तमान बिहार और बंगाल का वातावरण समयानुसार विपरीत होता जाता था। यह अकबर की प्रशासनिक व्यवस्था और राज्य विस्तार के लिए एक गम्भीर चुनौती थी। अकबर एक ऐसे योग्य तथा वीर नायक की खोज में था जो उसके शासन के पूर्वी राज्य की प्रशासनिक दुरवस्था को समाप्त कर सके। छोटी-छोटी रियासतें उन दिनों स्वतन्त्र हो-होकर विप्लव पैदा करने लगी थीं। अकबर ने कल्याणमल को ५१०० सैनिक देकर पूर्वी भाग में बढ़ती अराजकता और स्वतन्त्रता की घोषणा को प्रतिबंधित करने के लिए भेजा। कल्याणमल एक योग्य सेनानायक तथा निर्भीक पुरुष थे। युद्ध में उनकी क्षमता उभर आती थी। उनकी भुजाएं बड़ी, शरीर सुगठित तथा पुष्ट था। उनमें साहस इतना था कि थोड़े सैनिकों को भी लेकर वे युद्ध घोषणा कर देते थे। कल्याणमल ने ५००० पैदल तथा १०० घुड़सवारों को लेकर पूर्वी भाग की अराजकता समाप्त कर दी। छोटी और बड़ी रियासतों की महत्वाकांक्षा को शान्त कर दिया। अकबर का सिरदर्द समाप्त हुआ। कल्याणमल की वीरता और पराक्रम देखकर उक्त भाग की व्यवस्था का पूर्ण भार अकबर ने उनको दिया और उनको १५६५ के आसपास महाराज की उपाधि दी। वर्तमान गोपालगंज (सीवान जिला) से लगभग १६ मील पश्चिम कल्याणमल ने कल्याणपुर बसाया। वहां भव्य और विस्तृत किले का निर्माण कराया। कल्याणपुर राज्य अपनी सैनिक क्षमता से निरन्तर प्रभावशाली बनने लगा। महाराजा कल्याणमल सैनिक वृत्ति के व्यक्ति थे। चुपचाप बैठना उन्हें अभीष्ट नहीं था। निरन्तर युद्धों में भाग लेने के कारण उनकी युद्ध वृत्ति उभर आयी थी। फिर भी अपने राज्य के निवासियों की सुख समृद्धि के लिए उन्होंने बहुत काम किया। मुगल परिवार के साथ इनका सम्बन्ध निरन्तर दृढ़ बना रहा। अकबर के बाद जहांगीर की शासन व्यवस्था में कमजोरी आ गयी। इसका लाभ उठाकर पूर्व भाव की आकांक्षा पुनः जगी और विप्लव प्रारम्भ होने लगे। जहांगीर अशान्त हुआ। महाराजा कल्याणमल शान्त हो चुके थे। उनके पुत्र राजा क्षेमकर्ण अपने पिता की भांति ही शूरवीर थे। अपने पिता के साथ उन्होंने अनेक युद्धों में भाग लिया था। जहांगीर ने राजा क्षेमकर्ण को पूर्वभागीय विप्लव को शान्त करने के लिए कहा। उन्होंने वीरतापूर्वक विप्लव पैदा करने वालों को दण्डित किया।

उपाधि और विशेष सम्मान।

जिन क्षेत्रों में अशान्ति की स्थिति आयी राजा क्षेमकर्ण की सैनिक क्षमता की आवश्यकता पड़ी। इसी से सन्तुष्ट होकर जहांगीर ने इनको बहादुर शाही की उपाधि और "माहे मरातिब" का चिन्ह प्रदान किया। इस उपाधि का प्रयोग आज भी उनके वंशज तमकुही राज और हथुआ राज के लोग करते हैं। राजा क्षेमकर्ण बहादुर शाही ने कल्याणपुर से लगभग ५ मील हस्सेपुर में किले का निर्माण कराया और इसे अपनी राजधानी बनाया। हस्सेपुर का किला बहुत विस्तृत और मजबूत था। राजा क्षेमकर्ण शाही के पुत्र भूपति शाही राजा बने। भूपति शाही धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति थे। उनके बाद उनके पुत्र राजा संग्राम शाही प्रशासनिक और सैनिक दृष्टि से समर्थ थे। राजा रुद्रशाही तथा उनके राजा नृपति शाही उर्फ त्रिभुवन शाही राजा हलधर शाही, राजा युवराज शाही और राजा चेत शाही इस राज्य के शासक रहे। हुस्सेपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रियासत के सबसे प्रभावी और बहादुर शासक थे महाराजा सरदार शाही। सरदार शाही महाराजा कल्याणमल की तरह योग्य सैनिक तथा सेनानायक थे। अपने यौवन-काल में उन्होंने अनेक युद्धों में भाग लेकर अपने प्रभाव का विस्तार किया था। ऐसे देशप्रेमी तथा विश्वस्त योद्धा का सहयोग अली वर्दी खां को अनेक बार मिला था। यही कारण है कि वह इनकी दूरगामी प्रतिभा तथा वीरता का सम्मान करता था। उन्होंने मझौली रियासत की विस्तारवादी नीति से ऊबकर युद्ध किया तथा नगाड़ा और ध्वज का उपयोग न करने के लिए बाध्य किया।

फतह शाही का शौर्य

महाराजा सरदार शाही की वीरता और साहस की वास्तविकता उनके पुत्र फतेहबहादुर शाही में आ गयी। महाराजा फतेहबहादुर शाही निर्भिक और बहादुर व्यक्ति थे। उनकी वृत्ति स्वतन्त्र और भावना उदार थी। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध मीर कासिम से सहयोग किया था। मुंगेर से लेकर बक्सर तक मीरकासिम को उनका सैनिक सहयोग मिलता रहा। १७६५ की इलाहाबाद संधि के अनुसार बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी का, जो अंग्रेजों को मिली, उन्होंने विरोध किया। मुगल सम्राट् से दीवानी देखने का प्रमाण-पत्र, जो अंग्रेजों को मिला था, उसकी अवहेलना करने वाले बेतिया तथा हुस्सेपुर राज्य सहयोगी बन गये। संयुक्त रूप से इन्होंने कम्पनी सत्ता की व्यवस्था को चुनौती दी। आगे चल कर बेतिया नरेश कम्पनी सरकार से समझौता कर गये किन्तु महाराजा फतेह बहादुर शाही ने घुटना नहीं टेका।

वे निरन्तर कम्पनी सरकार के प्रशासकों और सैनिकों से लड़ते रहे। हुस्सेपुर राज्य से जब किसी प्रकार कर वसूल न हो सका तब इन्होंने इनके चचेरे भाई बसन्त शाही को फोड़ लिया और उन्हें राज्य देने का आश्वासन दिया। बसन्त शाही की द्रौहिता से क्षुब्ध होकर फतेह बहादुर शाही ने बसन्त शाही की हत्या कर दी। यादवपुर में बसन्त शाही और मीरजमाल कर वसूलने के लिए रुके थे। लगभग २५ घुड़सवारों को लेकर फतह बहादुर शाही ने बसन्त शाही और मीरजमाल की हत्या कर कम्पनी सरकार के साहस को कम कर दिया। इस घटना से दुःखी होकर जान आर्किंसन (१६वीं बटालियन का लेफ्टिनेन्ट) ने बड़का गांव कैम्प से ४ मई १७७५ को प्रान्तीय परिषद के प्रधान को लिखा था 'सूर्यास्त के समय मुझे मीर मुगल का पत्र मिला। उससे मुझे सूचना मिली की अचानक २५ घुड़सवारों को लेकर फतह शाही ने प्रातः आक्रमण किया और बसन्त शाही तथा मीरजमाल की हत्या कर दी।' फतह बहादुर शाही ने बसन्त शाही की द्रोहिता से ऊब कर ऐसा किया था। वास्तव में ऐसी परिस्थिति में कोई भी स्वाभिमानी व्यक्ति ऐसा ही निर्णय कर सकता है। फतह बहादुर शाही ने बसन्त शाही का सिर हुस्सेपुर उनकी पत्नी के पास भेज दिया जिसको गोदमें लेकर ग्यारह स्त्रियों के साथ वे सती हो गयीं। सती होने के पहले उन्होंने यह कहा था कि फतह बहादुर शाही के परिवार और वंश के यहां जलग्रहण न किया जाये।

राज्य की स्थापना

फतेह बहादुर शाही की विप्लवी स्थिति से ऊब कर कम्पनी सरकार हुस्सेपुर में कर वसूलने का काम नहीं कर सकी। इसकी सूचना वारेन हेस्टिंग्ज को मिली। वारेन हेस्टिंग्ज ने बहुत प्रयास किया कि फतह बहादुर शाही की सैनिक क्षमता और प्रभुता का दमन किया जाय लेकिन वह विफल रहा। हुस्सेपुर से दूर हट कर महाराजा फतह बहादुर शाही ने अवध साम्राज्य की सीमा में तमकुही राज्य की स्थापना की। यह तमकुही वर्तमान देवरिया से ४२ मील उत्तर पूर्व पर है। अवध का क्षेत्र जब कम्पनी सत्ता के प्रभाव में आ गया तब महाराजा फतह बहादुर शाही की विप्लविता सीमित हो गयी। सम्पूर्ण भारत पर अंग्रेजों का प्रभाव देखकर उन्होंने अपनी रणनीति बदल दी। १७९० के आसपास उन्होंने विप्लवी क्रियाएं त्याग दीं तथा राज्य की व्यवस्था अपने पुत्रों पर छोड़कर घर त्याग दिया और संन्यासी हो गये। ब्रूम के शब्दों में सम्भवतः फतेह शाही ही अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठाने वाले पहले व्यक्ति और भारतीय हैं। उस समय सारे देश को विदेशी शासन की अपमानजनक दासता की अनुभूति नहीं थी। इससे फतह बहादुर शाही की वीरता तथा स्वातन्त्र्य-भावना का पता चलता है। फतह शाही के अनन्तर तमकुही राज अंग्रेजी सत्ता का अधीनस्थ राज्य हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया। इस लम्बी अवधि में तमकुही राज के सर्वाधिक प्रभावशाली राजा हुए महाराजा इन्द्रजीत प्रताप बहादुर शाही। इन्द्रजीत प्रताप बहादुर शाही योग्य और कर्मठ व्यक्ति थे। वे अत्यन्त लोकप्रिय तथा साहित्यानुरागी थे।

तमकुही राज्य की विशेषताएं

तमकुही राज्य सांस्कृतिक कार्य-कलापों का केन्द्र रहा है। अखिल भारतीय स्तर की पहली कुश्ती का आयोजन कर उन्होंने कुश्ती को गरिमा प्रदान की। गामा जैसे पहलवान उनके यहां वार्षिक कुश्तियों में सम्मिलित होते थे। संगीतज्ञों का जमघट लगाने वाले उनके चाचा कुंवर सर्वजीत प्रताप बहादुर शाही संगीत के जाने-माने कलाकार थे। सैकड़ों कलाकारों से घिरे हुए कुंवर साहब संगीत की साधना तथा संगीतज्ञों का मनोवर्द्धन करते थे। रसिक गोपाल तथा तुलसीराम जैसे सन्त संगीतज्ञ, जिनके स्वर तथा वाद्य में अपूर्व शक्ति थी उन्हीं के सहयोगी कलाकार थे। कलाकारों की प्रतियोगिता में कुश्ती की प्रतियोगिता से कम आनन्द नहीं मिलता था। कहा जाता है तमकुही राज्य की परिभूमि का प्रत्येक श्रोता नागरिक ताल देता दिखायी पड़ता था। संगीत के प्रति अपूर्व अनुराग और कुश्ती के प्रति आस्था की भावना इसी केन्द्र से पैदा हुई है। वास्तव में यह कवियों, साहित्यकारों, संगीतज्ञों और कलाकारों, कला प्रेमियों तथा पहलवानों के मनोवर्द्धन का केन्द्र रहा है।

राजा खगेन्द्र प्रताप बहादुर शाही

महाराजा इन्द्रजीत प्रताप बहादुर शाही के बाद तमकुही राज की यह विशिष्टता समाप्त हो गयी। अब राजा खगेन्द्र प्रताप बहादुर शाही का शिक्षा और संगीत प्रेम उमड़ आया है। भारतीय इतिहास के प्रति आपके भीतर अनन्य निष्ठा तथा अनुराग की भावना है। संगीतज्ञों का मनोवर्द्धन, साहित्यकारों को प्रश्रय और ऐतिहासिक विचारों को बल प्रदान करना आपके चरित्र की विशेषता है। शिक्षा में राष्ट्रीयता का अभाव आपको खलता है। वर्तमान परिवेश में शिक्षा का स्वरूप ही अभारतीय है ऐसा आपका अभिमत है। इसी को ध्यान में रखकर आपने तमकुही में विद्यालय का संचालन किया है। उस विद्यालय को विस्तृत भूभाग भी प्रदान किया है। आशा और विश्वास है कि उनका यह मनोभाव सम्वर्धित होकर राष्ट्रीय दिशा में प्रभावशाली बन सकेगा। कुंवर विश्वेश्वर प्रताप बहादुर शाही और कुंवर नवेन्द्र प्रताप बहादुर शाही उनके छोटे भाई हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति

तमकुही राज शिक्षा संस्थान के चार अमूल्य कीर्ति-स्तम्भ

पठन-पाठन के० सभी साधनों से सुसज्ज

१—जितेन्द्र स्मारक इन्टरमीडियट कालेज, नारायणपुर, देवरिया
२—आर० के० पी० एस० विद्यालय, गजिया, तमकुही, देवरिया
३—छत्रपति लघु मा० विद्यालय, रामपुर-बरहन, देवरिया
४—लोकेश्वरी देवी बालिका विद्यालय, रामपुर-बरहन, देवरिया

संस्थापक—खगेन्द्र प्रताप शाही

पता—सूर्य निकेतन, डी० ५३।११७, लक्सा रोड, वाराणसी

फो० नं० ६५६०७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक का कर्मयोग

(बसंत नारायण सिंह)

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

कर्म ही जीवन है। बाल गंगाधर तिलक ने श्रीमद्भगद्गीता के इस अमर संदेश को अपने समय के तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिवेश में पुष्ट करते हुए देश के सुप्त अर्जुनों को कृष्ण बनकर पुनर्जाग्रत किया और अपने इसी रूप के कारण लोकमान्य के पद से विभूषित हुए। गीता का उपदेश देने वाले श्रीकृष्ण कारावास में पैदा हुए और इन उपदेशों की सूत्र रूप में कर्मयोग की बृहत् व्याख्या का महान् कार्य लोकमान्य तिलक ने कारावास में ही किया।

भारतीयता के पोषक, पराभवोन्मुख भारतीय संस्कृति-चेतना के पुनरुद्धारक तिलकजी ने निवर्तमान अंतर्द्वंद्व से मुक्ति दिलाने हेतु समयानुसार अपने पक्ष को 'गीता-रहस्य' के माध्यम से पुष्ट करते हुए महाभारत और पुराणों से स्थल-निर्देश किया है। जिनमें भावनाओं को कोई स्थान नहीं है, 'कर्म प्रधान विश्व करि राखा' का भाव प्रमुख है। यथा—

"गुरु वा बालवृद्धं वा"—चाहे गुरू हों, बालक हो या वृद्ध हो, "आततायिनमायातं हन्यादेव विचारयन्"—अर्थात् आततायी को देखकर चाहे वह किसी भी रूप में क्यों न हो विचारपूर्वक हनन करने की व्यवस्था करनी चाहिए। द्रोणपर्व के इस श्लोक के अनुसार ही अनेक अन्य प्रसंग है जो गीता-रहस्य में उद्धृत किये गये हैं। जैसे एक बड़ा ही मार्मिक प्रसंग उस समय का है जब द्रौपदी अपने पांच पुत्रों के हत्यारे अश्वत्थामा को अर्जुन द्वारा दण्ड निर्धारण के लिए पशुवत् खड़ा पाती है। स्त्री का कोमल हृदय अश्वत्थामा को इस रूप में देखकर द्रवीभूत हो उठता है और वह उसे क्षमादान करना चाहती है किंतु उसी समय श्रीकृष्ण का उपदेश सुनायी पड़ता है—"धर्म पर चलने वाला व्यक्ति सोये हुए को, बालक, स्त्री, जड़, शरणागत आये हुए को, विरथ और भयभीत शत्रु को भी नुकसान नहीं पहुँचाता किंतु इस दुष्ट ने तो सोये हुए पांच बालकों की हत्या जैसा जघन्य कर्म किया है अतः 'न्यायार्थ अपने बंधु को भी दण्ड देना धर्म है'। और तब अर्जुन को अपने कर्त्तव्य का बोध होता है।

यहां प्रश्न यह है कि लोकमान्य तिलक ने 'गीता-रहस्य' में इसी प्रकार के अन्यान्य उदाहरणों को ही क्यों स्थान दिया है या गीता के प्रतिपाद्य तीन विषयों 'ज्ञान-कर्म-भक्ति' में से कर्म को ही क्यों चुना? दूरद्रष्टा मनीषी तिलकजी यदि भारतीय वाङ्मय, चिंतन धारा का पूर्ववर्त्ती रूप में आकलन करते तो सम्भवतः उतनी सफलता न मिलती और वे सुजला-सुफला शस्यश्यामला मातृभूमि को स्वतंत्र कराने का महायज्ञ आरम्भ न कर सकते। अतः उन्होंने उपर्युक्त उद्धरणों की नये दृष्टिकोण से व्याख्या करने के लिए पुराणों की अन्य सूक्तियां भी दी हैं।

यथा—'वपनं द्रविणादानं स्याननिर्यापणं तथा'
एषादि ब्रह्मबन्धूनां वधो न्यान्योस्ति दैहिकः।

(श्रीमद्भागवत् (१।७।५७)

अश्वत्थामा के ही संदर्भ में इस श्लोक को लेने पर, चूंकि अश्वत्थामा पाण्डवों का ब्रह्मबंधु है फिर भी वह आततायी है इसलिए इसका मुण्डन करा देना, द्रव्यादि हरण कर लेना, अपने स्थान से निष्कासित करके अपमानपूर्वक घुमाना; यही दण्ड इसके लिए वधतुल्य है। केवल शस्त्र द्वारा प्राणहरण करना ही वध नहीं है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी प्रकार तिलकजी ने उपर्युक्त सूक्ति की पुष्टि के लिए पुराणों से अनेक दण्डसंबंधी उद्धरण देते हुए यहां तक कहा है कि इस प्रकार के व्यक्ति को इस स्तर तक लाने में तुम यदि असमर्थ हो तो सार्वजनिक रूप से मात्र 'तुम' कह कर अपमानित करना ही उसके लिए वधतुल्य है।

लोकमान्य ने इस प्रकार कर्म को ही प्रधानता देते हुए तत्कालीन सुप्त युवकों, विद्वानों, राजनीतिज्ञों को नयी दिशा दी और स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता-संग्राम में यह आवश्यक नहीं कि सभी केवल प्रदर्शन करें या जुलूस निकालें या शस्त्र ही चलावें। बल्कि हर व्यक्ति अपने स्तर पर इन आततायियों का उपरिवर्णित नियमों के अनुसार हनन करे। तिलकजी केवल उपदेश में नहीं विश्वास करते थे बल्कि उसे रचनात्मक दिशा प्रदान करते थे। महाराष्ट्र में गणेशोत्सव की आड़ में युवकों को लाठी, भाले, तलवार चलाना, मल्लयुद्ध सिखाना और संघटित करना उनके कर्मयोग का ही एक रूप था। बुद्धिजीवी स्तर पर वैचारिक क्रांति हेतु 'केसरी' जैसे पत्रों का प्रकाशन तिलक जैसे कर्मठ पुरुष के ही वश की बात थी। ये तो थे तिलक के तत्कालीन परिस्थितियों से निबटने के उपाय। दूसरी ओर उस युगद्रष्टा की दृष्टि से वह बात छिपी नहीं थी कि यह धूर्त अंग्रेज कौम भारतीयों को मनसा-वाचा-कर्मणा गुलाम बनाने के लिए पाश्चात्य संस्कृति, रहन-सहन, वेश-भूषा का तीव्र प्रचार के साथ-साथ भारतीयों के आदि ग्रंथों वेदों पुराणों, से स्वयं के ग्रंथों को प्राचीन सिद्ध करने लगे थे। इससे पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुयायिओं को बल मिलने लगा था। भारतीय वाङ्मय के अनुसार वेद देशकाला-वच्छिन्न अपौरुषेय तो हैं ही। किन्तु लोकमान्य ने पश्चिमी विचारकों के प्रत्युत्तर में वेदों की ऋचाओं का काल-निर्धारण करके इन्हें सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ सिद्ध करने का वैज्ञानिक-आधार तैयार किया।

अपने अन्वेषण कार्य के दौरान तिलक जी को मृगशिरा नक्षत्र पर 'वसंत सम्पात' के संबंध में एक मंत्र-विशेष प्राप्त हुआ और इसी के आधार पर उन्होंने वेद की ऋचाओं का काल निर्धारित किया है। यहां इस प्रसंग में यह प्रश्न है जब कि प्रत्येक नक्षत्र का एक निश्चित भोगकाल होता है और प्रत्येक २७ नक्षत्रों का एक चक्र होता है। तब यह मृगशिरा नक्षत्र किस चक्र का है। यह विषय अत्यावश्यक अन्वेषणीय है। यह सर्वमान्य है जिस नक्षत्र-विशेष के काल में तिलकजी यह अन्वेषण कार्य कर रहे थे उसमें मृगशिरा नक्षत्र तक की गणना करके उन्होंने वेदों का काल-निर्धारण कर दिया और इस प्रकार मैक्समूलर आदि पाश्चात्यों की विचारधारा के विपरीत वेदों का काल कई हजार वर्ष पीछे चला गया तथा उनके इस महत् प्रयास से तत्कालीन चिंतनधारा में वेदों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ। यद्यपि यहां वेदों के काल निर्धारण में कुछ विवाद भी है किंतु यह विद्वानों के गूढ़ शोध का विषय है।

वर्तमान युग में तिलकजी का कर्मयोग गीता के समान ही अजस्र प्रेरणा का स्रोत है। पाश्चात्य चिन्तन का स्वरूप भोगवादी है जब कि भारतीय चिंतन का स्वरूप योग है। आज जिस तेजी से हमारे नैतिक मूल्यों एवं चरित्र का ह्रास हो रहा है वह हमारी बौद्धिक गुलामी को अधिकाधिक पुष्ट कर रहा है। आज हम भौतिक रूप से स्वतंत्र अवश्य हैं किंतु हर क्षेत्र में पश्चिम का अनुगमन करना हमारी कुत्सित मनोवृत्ति का परिचायक है। इसी के फलस्वरूप आज हमें गणित, ज्योतिष, खगोल आदि अनेक अन्य विद्याओं का जिन पर कभी हमने विश्व को नयी दिशा दी उन्हीं के प्रामाणिक उक्त अध्ययन के लिए पश्चिम की शरण लेनी पड़ रही है। यदि यही स्थिति रही तो वह दिन भी दूर नहीं जब हम आयातित बुद्धि के बूते स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगे। इन सबका मूल कारण तिलक के कर्मयोग की महान देन 'स्व' का विस्मरण है। अतः भारतीयता का पोषण तथा समाज के सर्वांगीण विकास के लिए यह अनिवार्य है कि हम स्वयं को बौद्धिक दासता से मुक्त करें, 'स्व' का विकास करें और स्व-स्थ हो जांय। यही करने से उस महान् युगद्रष्टा मनीषी की जन्मतिथि पर हम सबके सच्चे श्रद्धा-सुमन अर्पित होंगे और उनके द्वारा प्रणीत महान कर्मयोग सिद्धांत का सही अर्थों में अनुगमन हो सकेगा।

पत्रकारनगर
विनयका-वाराणसी १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक : संक्षिप्त परिचय

राधेश्याम शर्मा

लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक का जन्म २३ जुलाई सन् १८५६ ई० को महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले में एक चित्पावन ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनका वास्तविक नाम केशव था किन्तु ये अपने बचपन के नाम 'बाल' से ही सुविख्यात हुए। इनके कुल का संबंध इतिहास के गौरवशाली पेशवाओं से था। तिलक के पिता रामचन्द्र तिलक अध्यापक थे। ये संस्कृत भाषा के उच्चकोटि के ज्ञाता थे, जिसके कारण वे गंगाधर शास्त्री के रूप में कहलाने लगे। ये सन् १८६६ ई० से सन् १८७६ ई० तक स्कूल के डिप्टी एजुकेशन इन्सपेक्टर के पद पर रहे, किन्तु संस्कृत काव्यों एवं रचनाओं के प्रति इनकी रुझान सदैव बनी रही। एक दिन जब गंगाधर शास्त्री संस्कृत के एक काव्य 'कादम्बरी' के कुछ अंशो की व्याख्या कर रहे थे तब 'बाल' ने, जो उन्हीं के निकट खेल रहे थे, पिता से उक्त पुस्तक की याचना की। 'बाल' के आरंभिक जीवन में ही संस्कृत भाषा के प्रति मोह का यह लक्षण है। 'बाल' का जीवन आरंभ से ही संघर्षमय था। बाल्यावस्था की अल्पवय में ही माता की मृत्यु के उपरान्त इनका पालन-पोषण चाचा-चाची गोविन्दराव और उनकी पत्नी ने किया। माता की मृत्यु के ६ वर्ष बाद ही पिता की भी मृत्यु हो गयी। उस समय बाल मैट्रिक में पढ़ रहे थे और उनकी उम्र १६ वर्ष की थी। बाल का विवाह पिता ने अपनी मृत्यु के कुछ महीने पूर्व ही किया था। विवाह के समय बाल की पत्नी १० वर्ष की थीं।

तिलक का जीवन भारतीय समाज के एक मध्यम वर्ग के परिवार में व्यतीत हुआ था। तिलकवंश के लोग चिखल गांव के खोत थे और उनके कई पीढ़ियों से अलग हुए पौत्र संभवतः अपने गांव के खोत के रूप में ही कार्य करते रहे, जब कि तत्कालीन बंबई सरकार ने खोतों को समाप्त कर दिया था। खोत रत्नागिरि कोलाबा और थाना जिलों के भागों में छोटे-छोटे जमींदार थे। वे बंजर-भूमि में किसानों को बसाकर उसमें खेती करवाने में सहायता करते थे और सरकार के लिए मालगुजारी एकत्र करते थे। लेकिन जमींदारों का यह वर्ग सम्पन्न नहीं था। खोत किसी प्रकार जीवन-यापन के स्तर से कुछ ऊपर का जीवन व्यतीत करते थे। किन्तु वे शिक्षित एवं बुद्धिमान होते थे। घर पर ही इन्हें आत्मविश्वास, सावधानी, दक्षता, निर्णयबुद्धि और साहस की शिक्षा मिल जाती थी। बाल का लालन-पालन भी इसी परिवेश में हुआ था।

बाल के पितामह जो अधेड़ उम्र में ही संन्यासी हो गये थे उन्हें नानासाहब, तात्या टोपे, झांसी की रानी, अवधबेगम तथा दिल्ली के सम्राटों की कहानियां सुनाया करते थे। इन्हीं कहानियों से प्रेरित होकर बाल के अन्दर देशभक्ति का बीज अंकुरित हुआ और उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध व्रत का संकल्प लिया। सन् १८९० ई० में उन्होंने सस्ती शिक्षा योजना बनाकर 'पूना न्यू इंग्लिश स्कूल' खोला और उसमें वे स्वयं बीजगणीत के अध्यापक हुए। देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर आपने पूना में ही 'मराठा' और 'केसरी' नामक समाचार पत्रों का संचालन किया। सन् १८९०-९१ ई० में आपने तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के 'सम्मति आयु विधेयक (एज ऑफ कन्सेन्ट बिल) का गंभीर विरोध किया फलतः आप हिन्दू जनता के लिए आदरणीय नेता बन गये। हिन्दुओं में वीर भावना एवं राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने के उदेश्य से धार्मिक धारणाओं की आपने सहायता की। धार्मिक महोत्सव सदैव से ही हिन्दू जनता के लिए प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इसी भावना से प्रेरित होकर तिलकजी ने महाराष्ट्र में 'शिवाजी उत्सव' एवं 'गणपति उत्सव' मनाने की प्रथा कायम की। यह तिलक की प्रतिभा और ओजस्विता का ज्वलंत प्रमाण है।

लोकमान्य राष्ट्र का निर्माण एक नये सिरे से करना चाहते थे। इस उद्देश्य से उन्होंने अनेक प्रकार का त्याग किया था। उनका आदर्श 'सेवा एवं कष्ट' था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे स्वावलंबन पर भरोसा रखते थे। सामान्य जनता की समस्याओं से देश को परखने का प्रयास करते थे। उन्होंने समस्या के समाधान हेतु विरोध को अस्त्र बनाया. और वे इसे अंग्रेजी शासन को समाप्त करने का अचूक हथियार मानते थे। राष्ट्रीय शिक्षा, स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, निष्क्रिय प्रतिरोध तथा संवैधानिक आन्दोलनों के द्वारा वे स्वराज्य प्राप्त करना चाहते थे। उन्होंने तत्कालीन सरकार के अनेक सिद्धान्तों की भर्त्सना की तथा 'लगानबन्दी' जैसे आन्दोलन प्रारंभ किये, जिसके फलस्वरूप आपको ब्रिटिश शासन के द्वारा दी गयी अनेक यातनाएँ सहनी पड़ी। फिर भी उन्होंने अपने साहस के बल पर हिन्दू जनता के कान में एक जोरदार मंत्र फूँका कि 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।' इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने उदारवादियों के मत के विरुद्ध कठोर नीति अपनाने पर बल दिया और कहा था कि 'हमें सरकार की नियत का भरोसा नहीं है। वह जितनी भलाई हमारे साथ दिखाये उतना ही सहयोग हमें उसके साथ करना चाहिए।'

सर वेलेन्टीन शिरौल की दृष्टि में तिलक भारतीय विप्लव के जन्मदाता थे और नौकरशाही उन्हें अपना कट्टर शत्रु समझती थी। राष्ट्रीय आन्दोलन में तिलक एक उग्रवादी, गरम दल के पोषक थे। उन्होंने तुलसीदास की वाणी 'बिनु भय होय न प्रीति' को चरितार्थ करने का दावा किया था। डा० एनी बेसेन्ट ने लोकमान्य की वीरता से प्रभावित होकर लिखा है कि 'यदि भारतवर्ष की जनता में राजनीतिक चेतना पर्याप्त मात्रा में होती तो तिलक क्रोमवेल के समान देश के सफल नायक होते।' पंडित नेहरू ने अपनी कृति 'दि डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' में व्यक्त किया है कि इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भारतवर्ष में राजनीति से प्रेरित अधिकांश व्यक्तियों ने तिलक एवं उनके वर्ग को समर्थन दिया था।'

तिलक की रूचि हर विषय में थी। गणित, संस्कृत के अतिरिक्त उन्होंने इतिहास, ज्योतिष, शरीर-रचनाशास्त्र, एवं शरीरशास्त्र का अपने ढंग से अध्ययन किया था। राष्ट्र-निर्माण में उनके गंभीर चिंतन का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है। 'गीता रहस्य' तथा वेद पर अपने लेखों एवं पुस्तकों द्वारा आपने हिन्दू संस्कृति एवं विचार-धारा में एक नया अध्याय जोड़ने का सफल प्रयास किया है।

तिलकजी की स्पष्टवादिता, सच्चाई के प्रति आदर का भाव, निर्भयता समस्त चित्पावन वंशजों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। भारत भूमि में विस्तृत यह वंश अपनी विभिन्न धाराओं से देश को हर समय हर प्रकार की अगुआई के लिए तत्पर रहता है। लोकमान्य तिलक के १२१ वें जन्म दिवस पर ये थोड़े से भाव उनकी याद में अर्पित हैं।

महावीर कालोनी
विनयका वाराणसी–१

हार्दिक अभिनन्दन

फोन नं० ६४९७९

शान्ति केमिकल एण्ड इन्जीनियरिंग वर्क्स

ए—६, इन्डस्ट्रियम स्टेट,

वाराणसी २२१००२

डीजाइनर एवं नाना प्रकार के रसायनिक उद्योग यन्त्र तथा प्लान्ट के निर्माता :—

इनआरगेनिक पिगमेन्ट्स गैसे प्रूसियनब्यू, चाइनीच ब्लू (नील) के उत्पादन कर्त्ता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक सेवा-केन्द्र

उद्देश्य और उपलब्धियाँ

प्रो० बी० एन० सिंह

मानव स्वभावतः समाजवादी होता है, इसके लिए उसका प्रयास रहता है एक आदर्शवादी समाज की प्रति स्थापना। भारतीय इतिहास में इस प्रयास का श्रेय यहाँ के सन्तों को ही मिला है जिनकी प्रेरणा से हर समुदाय विशेष का महत्त्व अक्षुण रह पाया है। समाज में प्रत्येक समुदाय विशेष का अपना एक कृतित्व होता है, जिसके आधार पर उसका सामाजिक मूल्यांकन होता है। दुर्भाग्य की बात है कि इस प्रकार के सामुदायिक महत्वों को रौंदने के लिए कुछ शक्तियाँ सनातन से यत्नशील रही हैं। इसी परिवेश में पूरे इतिहास का गौर से अवलोकन करने पर एक ऐसा समुदाय उभड़ कर सामने आता है जिसकी गाथा और तत्सम्बन्धी कार्य पाठक के मस्तिष्क पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ती है। विषम-परिस्थितियों में भी शौरगाथा, कर्त्तव्यपरायणता, धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय सम्मान और कुशल प्रशासन में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाये रखने वाला यह समुदाय सनातन से ब्रह्मर्षि समाज के नाम से जाना जाता रहा है। काल चक्र के क्रूर प्रहार और राजनीति की दुर्नीति ने समय समय पर इसकी प्रगति और प्रवाह को बराबर कुण्ठित करने का कुत्सित प्रयास किया है लेकिन इन सब विषम परिस्थितियों में भी भारत वर्ष के हर हिस्से में बसने वाले इस समुदाय के लोगों ने अपने आदर्शवादी सामाजिक संगठन के अस्तित्व को और गौरवपूर्ण इतिहास को संजोये रखने का सफल उद्यम किया है। आज मुझे उस समुदाय विशेष की गाथा और उसके संगठन के बारे में कुछ बातें कृपालु पाठकों के सम्मुख रखने में महान गौरव का अनुभव हो रहा है। वैदिक युग से लेकर आजतक का इतिहास इस बात के लिए साक्षी है कि वसुधैव कुटुम्बम् और मानव कल्याण के लिए विस्तृत योजना के सृजन और उसके कार्यान्वयन का केन्द्र सदैव से पावन गंगा के तटपर बसी बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी ही रही है। यहाँ हरयुग में ऐसी विभूतियों का अवतरण होता रहा है जिन्होंने निष्ठापूर्वक, दृढ़ सकल्प के साथ इस अलख को बराबर जगाये रखने का प्रयास किया है। उपरोक्त परम्परा के अनुरूप ब्रह्मर्षि समुदाय के सभी लोगों को जो राष्ट्र के विभिन्न अंचलों में भिन्न भिन्न नामों से बसकर एक दूसरे को भूल गये हैं, उन सभी लोगों को संगठित कर अपने को पहचानने और नये सिरे से इतिहास बनाने की शक्ति प्रदान करने के उद्देश्य से ही इस समुदाय के युगद्रष्टा, महान क्रान्तिकारी, वर्तमान भारत के प्रणेता लोकनायक श्री बाल गंगाधर तिलक के नाम पर काशी नगरी में तिलक सेवा-केन्द्र की स्थापना की गई है। इस केन्द्र की स्थापना में ब्रह्मर्षि समाज के सभी वर्गों यानी मोहियाल, चित्पावन, त्यागी, अनाविल, नम्बूदरी और भूमिहार आदि का सम्यक् सहयोग और सहायता प्राप्त हुई है। इस केन्द्र के माध्यम से ब्रह्मर्षि समुदाय के मूल-भूत एवं परम्परागत आदर्शों में अटूट आस्था रखने वाले समग्र लोगों को संगठित कर समुदाय में सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक क्रान्ति के साथ-साथ अन्य निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति का लक्ष्य निर्धारित किया गया है—

मुख्य—१. समाज के निर्धन एवं मेधावी छात्रों के अध्ययन की व्यवस्था करना एवं उनको जीवनोपार्जन सम्बन्धी जानकारी देना तथा उसमें अपेक्षित सहायता करना।

२—अभियान और व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करना एवं उनमें शिक्षा प्रसार हेतु शिक्षा संस्थायें स्थापित करता और उनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रबन्ध व रख-रखाव हेतु भूमि भवन एवं धन प्राप्ति का प्रयास। ३—अपने समाज की विधवा एवं परित्यक्ता तथा निराश्रित स्त्रियों के लिए रोजगार परक ट्रेनिंग और रोजगार की व्यवस्था करना।

४—अपने समाज के सभी महान पुरुषों की जिन्होंने राष्ट्र की अखण्डता एवं समाजसेवा में अपने को उत्सर्ग किया हो, से सम्बन्धित साहित्य और उनके कृतित्व का प्रचार एवं प्रकाशन तथा उनकी स्मृति में समारोहों व गोष्ठियों का आयोजन करना।

५—समाज के लोगों में सह अस्तित्व और भ्रातृत्व की भावना का विकास एवं आर्थिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े लोगों के समुन्नति हेतु रचनात्मक सुझावों का आदान-प्रदान

६—समाज के विशिष्ट व्यक्तियों तथा सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में कार्यरत लोगों की सूची तैयार करना और उनमें आपसी सद्भाव बढ़ाने का प्रयास करना

७—स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सम्बन्धी संगठनों का गठन तथा व्यवस्था, चिकित्सालय व औषधालयों का निर्माण एवं व्यवस्था करना।

८—युग के अनुरूप आचरण करने तथा तदनुसार कार्यशील रहने के लिए लोगों में जागृति पैदा करना और समाज को मुख्य कृषि कार्य के साथ-साथ व्यापार, उद्योग धन्धा, रोजगार आदि में भी रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित करना।

ख—समय-समय पर सदस्यों की राय से अन्य प्रकार के संगठनो एवं रचनात्मक कार्यों का विकास करना।

निर्धारित उद्देश्यों के परिप्रेक्ष में जिस गति से हम इस केन्द्र के कार्यों को गति देकर, भविष्य संवारने का प्रयत्न कर रहे हैं, वह आशापूर्ण है। राजा, रंक, बुद्धिजीवी, श्रमिक, पत्रकार, नेता सभी इस केन्द्र की प्रगति के आवाहन में अपना हर सम्भव सहयोग दे रहे हैं, मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि यह केन्द्र आगे चलकर समुदाय का सर्वाङ्गीण विकास करने में सक्षम होगा। भावनात्मक एकता अस्थायी होती है लेकिन परम्परागत आदर्शों पर आधारित एकता हमेशा स्थायी होती है। यह केन्द्र अपने प्रत्येक कार्य कलाप में इसी भावना को विकसित करने के लिए प्रयत्नशील है। तिलक सेवा केन्द्र की स्थापना से पूर्व भी भूमिहार-ब्राह्मण संघ, ब्रह्मर्षि समाज आदि संस्थाओं ने समाज की तरक्की में अपना बहुमूल्य योगदान किया है। भारतवर्ष के अन्य हिस्सों में इस समय भी मोहियाल सभा, भूमेश्वर समाज, आदि नामों से विभिन्न संस्थायें कार्य कर रही हैं। इस केन्द्र का यह भी प्रयास है कि इन सब संस्थाओं का आपस में सौहार्द एवं पूर्ण सम्बन्ध हो। प्रसन्नता है कि लखनऊ में कार्यरत भूमेश्वर समाज जिसके अध्यक्ष है प्रसिद्ध उद्योगपति श्री एम. सी. मोहन, स्थानीय भूमेश्वर समाज के महामंत्री श्रीदयाशंकर सिंह एवं डी० एल० डब्लू में कार्यशील भूमिहार-ब्राह्मण समाज जिसका नेतृत्व एक कुशल मोहियाल बन्धु श्री जितेन्द्र-कृष्ण मेहता के हाथ में है, आदि सभी संस्थायें इस केन्द्र को अपना पूर्ण सहयोग दे रही हैं! आप को यह जानकर लिखा विशेष प्रसन्नता होगी कि इस केन्द्र ने अपने नव जात स्थिति में ही ब्रह्मर्षि समाज के लोगों को संगठित कर उनमें दृढ़ मनोबल का संचार किया है, यह इसी का प्रतिफल है कि वैचारिक भिन्नता के बावजूद भी हर सभा व समारोह में बिना किसी भेद-भाव के सभी लोग एकत्रित होकर इसके आदर्शों और उद्देश्यों की पूर्ति में सहयोग दे रहे हैं।

वृहन्महाराष्ट्र सम्मेलन में सम्मिलित होने वाले चित्पावन ब्राह्मणों एवं अन्यलोगों का विगत जनवरी माह में इस केन्द्र की ओर भूतपूर्व राजा विक्रम नारायण सिंह जी के औसानगंज स्थित राजप्रासाद में उन्हीं के संयोयकत्व में अभिनन्दन, आगामी २४ जुलाई सन् १९७७ ई० को सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल कमच्छाके सरगा हाल में लोकमान्य तिलक की १२१ वीं जन्मतिथि समारोह का आयोजन तथा सामुदायिक सौहार्द हो इस दृष्टि से श्री ईश्वर शरण सिंह (भाई जी) की अध्यक्षता में बन्धु-मिलन गोष्ठी आदि का आयोजन, उद्देश्य प्राप्ति में पत्र-पत्रिकाओं के महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए इस स्मारिका का प्रकाशन और भविष्य में बराबर एक मासिक पत्रिका के प्रकाशन का संकल्प इस बात का सबूत है कि हम लोग इस केन्द्र के ऊपर वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने में सफल होंगे।

यह केन्द्र अपने समुदाय के भूतपूर्व सांसद एवं भारत सरकार के अनेक महत्वपूर्ण संगठनों के पदाधिकारी डा० रघुनाथ सिंह का जिन्होंने अपने दशाश्वमेध स्थित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[शेष पृ० ५ का]

दुःख से निवृत होने के लिए व्याकुल बौद्धों ने विहार में ही जीवन का परम सुख प्राप्त करना प्रारंभ कर दिया। फलस्वरूप सारनाथ से लेकर बोधगया तक के प्रदेश में विहारों की संख्या में इस तेजी से वृद्धि हुई कि सारा मगध ही विहार बन गया।

समाज में आनेवाली हर प्रकार की विकृतियों के प्रति सजग रहने एवं उन्हें दूर करने के लिए कृत-संकल्प कृषिजीवी अयाचक ब्राह्मणों का वह वर्ग जो सारे देश में परशुराम के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रस्तुत रहता आया है उसे बौद्धधर्म के साथ भारतीय समाज में आयी यह महान विकृति कैसे सहन हो सकती थी। कश्मीर, केरल कोंकण, पंजाब, उत्तरा खंड के अन्य सभी भूभाग आदि के इन ब्राह्मणों ने पुनः ब्रह्मचर्याश्रम के महत्व तथा गार्हस्थाश्रम एवं वानप्रस्थाश्रम के बाद ही संन्यास की दीक्षा देने की आवश्यकता क्यों है, केवल 'बुद्धं सरणं गस्सामि' कहने वाले को चीवर प्रदान करना कैसे हानिकर एवं समाज को पतनोन्मुखी बनाने वाला है इस सम्बन्ध का अपने अपने ढंग से जोरदार प्रतिपादन करना शुरू कर दिया। कोंकण के चित्पावन पंजाबके मोहियाल गुजरात के अनाविल, उत्तर प्रदेशके त्यागी अर्थव आदि देश के विभिन्न क्षेत्रों के इस परम्परावाले उत्साही ब्राह्मणों ने बौद्धधर्म का पूरे देश से उच्छेद करने के लिए बौद्धधर्म के गढ सारनाथ से लेकर बोधगया के प्रदेश में पहुँचना शुरू किया। उन दिनों यातायात के रेलवे, मोटरें, बसे वायुयान आदि साधन तो थे नहीं और न तब डाक तार रेडियों अथवा समाचारपत्र आदि साधन थे जिनके सहारे कहीं भी रहते हुए अपने मूल स्थान से सम्बन्ध बनाये रखना सम्भव होता। अतः देश के कोने-कोने से जो ब्राह्मण उन दिनों यहाँ आते रहे वे यहाँ एकत्र होकर संघठित रूप से कार्य करने लग गये किन्तु जिन भूभागों से वे आये थे उनसे उनका सदा के लिए सम्बन्ध विच्छेद हो गया। कोंकण से आनेवाले एवं तब विहार में बसे हुए चित्पावन ब्राह्मण यह तो नहीं भूल पाये हैं कि वे चित्पावन है किन्तु कोंकण के साथ उनका अपना भौतिक सम्बन्ध बनाये रखना सम्भव न होने के कारण उनके खानपान, आचार विचार, लोकाचार आदि पर स्थानीय प्रभाव बढ़ता गया तथा देश के विभिन्न भागों से धार्मिक सांस्कृतिक क्रान्ति करनेवाले अन्य ब्राह्मणों के समुदाय के साथ वे घुलते मिलते चले गये। अपने पृथक अस्तित्व का ध्यान रहते हुए भी विहार में धार्मिक सांस्कृतिक क्रान्ति करने वालों के साथ ये भी भूमिहार कहे जाने लगे किन्तु अपने आपको चित्पावन बताने वाले कोकंण से आये हुए ये महाराष्ट्रीय ब्राह्मण चित्पावनियाँ भूमिहार कहलाते हैं और आज भी वे अपने आपको यही बताते हैं। आज भी गया, मुंगेर पटना एवं बिहार के कुछ अन्य जिलों में चित्पावनियाँ भूमिहारों के गाँव के गाँव बसे हुए हैं।

यही स्थिति कश्मीर, पंजाब अथवा उत्तर भारत के अन्य भागों से तब आये हुए ब्राह्मणों की है। विन्ध्याचल के दक्षिण से आये ब्राह्मण अपने बान्धवों के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रख पायें और न आज वहाँ के चित्पावन नम्बूदरी आदि ब्राह्मणों को ही यह पता है कि उनके पूर्वज हजार बारह सौ वर्ष पूर्व देश में एक महान धार्मिक क्रान्ति सम्पन्न करने गये थे तथा वही बस गये हैं। उत्तर भारत के महियाल एवं त्यागियों को यहाँ की भौगोलिक स्थिति अपने प्रदेश से सम्बन्ध बनाये रखने में अनुकूल होने के कारण उन्हें अपने पूर्वजों की इस कृति एवं अपने जैसे वर्ग के अन्य ब्राह्मणों के साथ के अपने सम्बन्ध का कुछ अस्पष्ट ही क्यों न हो थोड़ी बहुत जानकारी होना स्वाभाविक है। जो भी हो परशुराम के पद-चिन्हों पर चलने वाले देश के विभिन्न भागों के जिन ब्राह्मणों के पूर्वजों ने मिल कर देश में जो महान् ऐतिहासिक क्रान्ति की थी उन्हें अब पुराने अपने सभी सम्बन्धियों के साथ पहले जैसा ही भ्रातृभाव पुनः स्थापित करना चाहिये तथा वर्तमान भौतिकवादी पाश्चात्य सभ्यता द्वारा देश को जो चुनौती दी गयी है तथा जो भारतीय स्वतंत्रता के तीस वर्ष बाद भी उतनी ही उग्र रूप में विद्यमान है उसका मुकाबला करने के लिए पुनः अखिल भारतीय स्तर पर संघठित होना चाहिये। निश्चय ही इस वर्ग ने ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी स्वातंत्र्य आन्दोलनों में प्रमुख भाग लिया है किन्तु अपने व्यापक ऐतिहासिक रूप एवं परिप्रेक्ष्य को पहिचाने बिना। आज आवश्यकता इस बात की है कि पूरा समुदाय अपने गौरवपूर्ण दीर्घकालीन इतिहास को ठीक से स्मरण करता हुआ इतिहास के पृष्ठों पर पड़ी हुई धूल झाड़ता हुआ तथा भूत एवं वर्तमान से बल प्राप्त करता हुआ देश को नयी दिशा देने के लिए संघठित हो, आपस में व्यापक भ्रातृभाव स्थापित करे तथा पुनः व्यापक क्रान्ति के लिए स्वयं सन्नद्ध होकर सारे देश को ही नहीं समूचे संसार को भारतीय जीवन दर्शन के आधार पर नये ढंग से मार्ग दर्शन कर नयी क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त करें।

पत्रकार नगर, वाराणसी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक जी—स्वतंत्रता के प्रकाश स्तम्भ

तिलक सेवा केन्द्र शक्तिशाली हो।

विद्युत-भवन

सो. ४।३७३ सराय गोवर्धन, चेतगंज ❀ वाराणसी

हर प्रकार के बिजली सम्बन्धी तथा मिल स्टोर्स के सामानों

के एकमात्र थोक एवं फुटकर विक्रेता

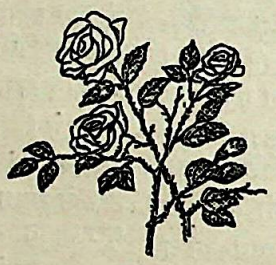

अधिकृत विक्रेता :—ओरियन्ट मोटर

Rajendra Mishra Sarayu Jalgaon Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुस्थ समाज

डाक्टर नन्दलालसिंह

'समाज' एक व्यापक शब्द है। इसके अन्तर्गत विभिन्न जन-समूहों का बोध होता है। भूमंडल के अनेक खण्डों पर निवास करने वाले मनुष्यों को सामूहिक रूपसे मानव समाज कहते हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की धारणा भारतीय संस्कृति की मानव मात्र से प्रेम की उत्कृष्ट भावना रही है। इस विशाल जन-समूह वाले मानव-समाज से लेकर अल्प जन-संख्या वाले 'ग्राम-समाज' इसी शब्द के साथ उपयुक्त विशेषण लगाकर व्यक्त किये जाते हैं। किसी एक परिवार के प्राणियों का भी पारिवारिक समाज होता है। अपने देश में वर्ण-व्यवस्था पर आधारित जाति एवं उपजातियों के नाम पर अनेक समाज हैं, जैसे ब्राह्मण-समाज, याचक अथवा अयाचक-समाज, अग्रवाल-समाज, क्षत्री-समाज इत्यादि। इसी प्रकार प्रचलित धर्मों के अनुयायियों के भी अनेक समाज हैं, जैसे सनातन-धर्म-समाज, वैष्णवसमाज, आर्य-समाज इत्यादि। किसी समाज के प्राणियों में प्रायः एक समान गुण, रहन-सहन, खान-पान, वात-व्यवहार पाये जाते हैं। प्रत्येक समाज की निजी विशिष्टता होती है।

किसी समाज की सुस्थता उसमें सम्मिलित व्यक्तियों की प्रकृति एवम् प्रवृत्ति से आँकी जा सकती है, यद्यपि व्यक्ति तथा समाज दोनों अन्योन्याश्रित होते हैं। समाज की छाप सामान्य प्राणी पर सहज ही पड़ सकती है जब कि समाज को प्रभावित करने वाले बिरले ही महान् प्राणी होते हैं जो अपनी रहन-सहन से, जीवन से, व्यवहार-बर्ताव से और निःस्वार्थ सेवा से समाज की गति-विधि में मोड़ ला सकते हैं। अतः समाज के निर्माण में व्यक्ति का विशेष महत्त्व होता है।

सुस्थता मुख्यतः दो प्रकार की होती है। शारीरिक और मानसिक। किन्तु दोनों प्रबल रूप से युग्मित रहती हैं। शारीरिक स्वास्थ्य अपनी संस्कृति में निर्दिष्ट नित्य-नैमित्तिक कर्म करने से, संयम-नियम का पालन करने से, शुद्ध वातावरण का सेवन करने से सुलभ होता है और तभी मनुष्य का मानस पटल भी स्वच्छ रहता है। संयमी प्राणी को भीतर बाहर सदा सुख का अनुभव होता है। असंयमी व्यक्ति वात, कफ, पित्तजनित अनेक रोगों में से एक न एक का शिकार बना रहता है। उसका मन

[शेष पृष्ठ २४ का]

मकान को कार्यालय के रूप में प्रयोग करने की सुविधा प्रदान की है, भूतपूर्व राजा जिविक्रमनारायण सिंह एवं भूतपूर्व राजा श्री खगेन्द्र प्रतापशाही, तमकुही स्टेट, पत्रकार बाबू शक्ति नारायण सिंह, श्री रामचन्द्र नरहर बापट, केन्द्र के अध्यक्ष भूतपूर्व विभागाध्यक्ष भौतिकी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय डा० नन्दलालसिंह, डा० गणेशप्रसाद-सिंह, श्रीविजयबहादुर सिंह केमिकल भौतिकी, इंजीनियर, डा० गंगाधर राय, कोषाध्यक्ष डा० गोविन्दनारायण सिंह-रीडर तथा अन्य पदाधिकारियों उनके बहुमूल्य सहयोग और मार्ग निर्देशन के लिए कृतज्ञ है।

कुशल नेतृत्व, और सही संकल्प किसी भी संगठन की रीढ़ होती है। मुझे आशा है कि यदि इसके लिए उद्यम किया गया तो हर सफलता केन्द्र का कदम चूमेगी। उसी का जीवन सफल है जो अपने समुदाय के समुन्नति के लिए समर्पित हो क्योंकि—

अस्मिन् संसारे मृतः को वा न जायतो स जातो येन जातेन वंशम् समुन्नतिम् ॥

केन्द्र अपने उद्देश्य में सफल हो, इसके लिए भगवान विश्वनाथ से प्रार्थना है।

हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी

दिनांक १७. ७. ७७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक जयन्ती हरवर्ष मनायी जाय

फोन ४७४१२०।६९१५७६

शर्मा इण्डस्ट्रियल इस्टेट

बालभट रोड गोरेगाँव [पूर्व]

बम्बई—४०००६३

सरकारी मान्यता प्राप्त भारी औद्योगिक स्टेट
सभी प्रकार के उद्योगों के लिए
विभिन्न लम्बाई चौड़ाई वाले गाला उपलब्ध
एन. ओ. सी विद्युत् शक्ति तथा जल आपूर्ति
पक्का आर० सी० सी० निर्माण
अपना विद्युत् सब स्टेशन

नये उद्योग स्थापित करें—देश को शक्तिशाली बनावें

वाराणसी में

जयकरण शर्मा औषधालय

हाथी बाजार—वाराणसी ।

शीघ्र जनता की सेवा प्रारंभ करेगा

जयकरण ट्रस्ट का निर्माणधीन धर्मार्थ औषधालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठीक से न तो सोच विचार कर सकता है और न तो इन्द्रियाँ ही कोई काम कर सकती हैं। ऐसा व्यक्ति सदा चिन्ताग्रस्त रहता है। उद्देश्य की पूर्ति न होने से खेद होता है असमर्थता के कारण उसे क्रोध आता है।

काम, क्रोध, लोभ, मोह पाप के मूल कहे गये हैं। ये ही मानसिक रोगों के मूल हैं। मानसिक तथा शारीरिक रोगों का समन्वित निरुपण तुलसीदास जी ने थोड़े से ललित पदों में किया है।

मोह सकल व्याधि कर मूला, तेहिते पुनि उपजहिं बहुसूला।
काम बात कफ लोभ अपारा, क्रोध पित्त नित छाती जारा।
प्रीति करहिं जौं तीनिहुँ भाई, उपजइ सन्निपात दुखदाई।
विषय मनोरथ दुर्गम नाना, ते सब सूल नाम को जाना।
अहंकार अति दुखद डवरुआ, दम्भ कपट, मदमाननेहरुआ।
ममता दाद कन्णु इर्ष्याई, हरष विषाद गरह बहुताई।
तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी, त्रिविध ईषना तरुन तिजारी।
जुग विधि ज्वर मत्सर अविवेका, कहलगि कहउँ कुरोग अनेका।
एक व्याधि ते नर मरहिं, ए अधाधि बहु व्याधि।
पीड़त सन्तत जीव कहँ, सो किमि लहइ समाधि।

मानसिक रोगों से मुक्त व्यक्ति का शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। अतः इन रोगों के निवारण हेतु मनुष्य को सतत सचेष्ट तथा प्रयत्नशील रहना चाहिये। ऐसे ही मानसिक रोगों से मुक्त और शारीरिक अङ्गों से पुष्ट प्राणियों से स्वस्थ समाज का निर्माण सम्भव होता है। समाज का उत्थान व्यक्ति और समष्टि दोनों की समान स्वस्थता से ही सम्भव होता है। व्यक्ति के स्वस्थ (शारीरिक तथा मानसिक) होने पर मूल इकाई पारिवारिक समाज स्वस्थ होता है फिर समूचा ग्राम-समाज स्वस्थ हो सकता है और इसी क्रम से श्रेणी का बड़ा समाज स्वस्थ हो सकता है।

किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य का निर्माण माता के गर्भ से ही प्रारम्भ होता है। माता के उदरस्थ डिंब में माता-पिता के गुण, दोष, स्वभाव, प्रकृति आदि केन्द्रित रहते हैं। डिंब में जीव के प्रादुर्भाव होते ही माँ के रहन-सहन वातावरण का प्रभाव पड़ता है। कहते हैं अभिमन्यु को माता के पेट में ही चक्रव्यूह में प्रवेश करने और छह फाटक तोड़ने का ज्ञान अर्जुन की प्रासंगिक वार्ता से हो गया था। वार्ता में सातवें फाटक पर पहुँचते सुभद्रा को नींद आ गई थी।

जन्म होने पर शिशु पर बालपन में माता पिता तथा सारे परिवार की छाप पड़ती है। परिवार के प्राणियों में यदि सद्भावना है, पारस्परिक प्रेम है, आहार-व्यवहार में स्वच्छता एवं ईमानदारी है तो वह बालक युवावस्था में चरित्रवान होता है। इसके प्रतिकूल वातावरण होने से वह उच्छृङ्खल, उद्दंड होता है। कहते हैं मोहनदास कर्मचन्द गांधी अपनी बाल्यावस्था में दाई एवं दादी से हितोपदेश, रामायण आदि सद्ग्रन्थों की कहानियाँ तथा आख्यानों को सुनते रहे। वही आगे चलकर महात्मा गांधी हुए।

मुझे एक बार रेलयात्रा में एक पिता को अपने दो पुत्रों को चालाकी और धोखा धपाड़ी की शिक्षा देते देखकर बड़ी ग्लानि हुई थी। तीनों सफेद पोश, सूटेड-बूटेड त्रितीय श्रेणी में मेरे साथ बनारस छावनी पर फैजाबाद पैसेंजर ट्रेन में सवार हुए। पिता बड़ी सतर्कता से भीतर बाहर ताकते झाँकते रहे। मैं पहले नहीं समझ पाया। बाबतपुर में पिता के इशारे पर तीनों उतर गये और प्लेटफार्म पर निर्भीक टहलने लगे। ट्रेन चली तो आगे के तीसरे डिब्बे में जाकर बैठे! हमारे डिब्बे में तुरन्त बाद टिकट चेकर आगया। पिता ने देख लिया था कि वह आगे की ओर से टिकट देखते पीछे की ओर सम्भवतः इसी डिब्बे में आ रहा है। दो स्टेशन बाद जब टिकट चेक करने वाला आगे के डिब्बों की तरफ गया तो वे लोग आँख बचाते पीछे के डिब्बे में जा बैठे। मैंने सोचा इन पिताजी से पुत्रों को मात्र चोरी करने की शिक्षा मिल रही है। ऐसे अभिभावक के आचरण-व्यवहार का प्रभाव बच्चों के जीवन को कैसे उज्वल बना सकता है। इसी प्रकार हम देखते हैं कि व्यापारियों में शायद ही कोई हो जो सचाई, ईमानदारी से परिश्रम के अनुसार मुनाफा लेकर, ईमानदारी के साथ मोल-भाव तथा तौल-नाप करता हो। नौकरी पेशावाले भी मौका पाकर नाजायज पैसा लेने से नहीं हिचकते। बेइमानी को दक्षता बुद्धिमानी, चातुरी और व्यापार की कुशलता समझी जाती है। ऐसे लोग धनोपार्जन कर अपना बड़प्पन, प्रकट करते हैं। समाज भी आदर सम्मान देता है। देखा-देखी न केवल उनके बच्चों में वरन् सारी जनता में अनैतिक रीतियों से बिना परिश्रम धन संग्रह करने की भावना जागरित होती है। बेइमानी से अथवा घूसखोरी के धन से ऐसे व्यक्ति वैभव-सम्पन्न होते देखे जाते हैं। उनकी आलीशान अट्टालिकाएं खड़ी जो जाती है। वे हर प्रकार के सुख का अनुभव करते हैं। किन्तु उनका सुख स्थायी नहीं रहता। प्रायः देखा गया है उन्हीं के जीवनकाल में अथवा कुछ कालान्तर उनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के० से० टै नं०
व्ही० एन० ४४५८

उ० प्र० से० टै० नं०
व्ही एन० ६३११

तिलक सेवा केन्द्र का संघटन राष्ट्रव्यापी हो

सर्वोदय मशीनरी स्टोर्स

मशीनरी व्यापारी

आयल इंजन, उनके पुर्जे, जी. आई. पाइप, पाइप फिटिंग, गन मेटल फिटिंग, आटा चक्की, पुली, तेल कोल्हू की बिजली मोटर, स्टार्टर, पम्पिंग सेट, हेअर एवं रबर बेल्ट, बाल बेयरिंग, हाथ के औजार तथा अन्य मशीनरी पुर्जे उचित मूल्य पर प्राप्य।

आधिकारिक विक्रेता

(१) व्होटा इलेक्ट्रिक मोटर

(२) व्होटा आयल इंजन

(३) व्ही बेल्ट फेन्नर

(४) हेअर बेल्ट सुपर स्वान

सी० के० ६२।१११ काशीपुरा, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बच्चों के दुराचरण से जो समान गुणों से स्वतः दीक्षित हो जाते हैं सारी सम्पत्ति धन तथा वैभव का विनाश हो जाता है।

कुछ दिन हुए गेरुआ वस्त्र धारण किये ५० वर्षीय प्रसन्न वदन एक सन्यासी जी से मेरी अकस्मात भेंट हो गई। परिचय हुआ। पहले वे पुलिस विभाग में दारोगा रहे। वेतन के अतिरिक्त जायज-नाजायज अपार धन अर्जित किये। अपने गाँव में पक्का मकान बनवाये। निकटवर्ती शहर में दो कोठियाँ खड़ी कर लीं। बैंक के खाते में भी पर्याप्त रकम जमा हो गई। परिवार खुशहाल था। दो पुत्र उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। पुत्री का ब्याह रुपये के बल पर खानदानी सुयोग्य वर से कर दिये थे। किन्तु रिटायर होने के पहले ही नौकरी छोड़कर सन्यासी हो गये थे। बोले "दैवी कोप से दोनों पुत्रों और तुरन्त बाद मेरी पत्नी का देहावसान हो गया। इनका विछोह तो कुछ दिन तक सहता रहा; किन्तु जब मैंने अपनी लाडली बेटी के वैधव्य की खबर सुनी तो मुझे घोर वेदना हुई। नास्तिकता के अन्धकार में जो मैंने कुकृत्य किये थे उनका एक-एक करके स्मरण होने लगा। धन सम्पत्ति के विमोह का पर्दा फटने लगा और मुझे दैवी शक्ति का अनुभव हुआ। ईश्वरी प्रेरणा से इस बाने को धारण किया। अब उन्हीं का और उन्हीं की सत्ता का ध्यान करता हूँ। निश्चिन्त हूँ" मैं सब सुनकर स्तब्ध रहा क्योंकि वे प्रसन्न वदन थे। दुराचार तथा दुष्कर्म का फल कभी शीघ्र कभी देर से मिलता ही है। हमारी आँखे खुलनी चाहिए किन्तु मोहान्धकार में पड़े हम ऐसी आसुरी वृत्तियों में फँसे रहते हैं। साथ ही ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ सदाचार से, सत्यनिष्ठा से कमाते, परिवार पोषण करने वाले व्यक्तियों की तथा उनके परिवार की उन्नति हुई है। ऐसे परिवार के प्रणियों के व्यवहार में शिष्टाचार, सद्भाव, पारस्परिक प्रेम प्रस्फुटित होता है। पास-पड़ोस परिवार उनसे प्रभावित होते हैं। ग्राम-वासियों तथा सम्बन्धियों पर सुखद प्रभाव पड़ा है। ऐसे परिवार की उन्नति तब तक होती रहती है जबतक बच्चों में अनैतिक कुरीतियों का संचार नहीं हो जाता। ऐसे कुसंस्कार शहरी, तथा कथित सभ्यता के अनुकरण से, सिनेमा के अश्लील चित्रों के देखने से, कामोत्तेजक उपन्यास कहानियों से, बुरी संगत से उत्पन्न होते हैं। परिवार-सुधारकों, समाज-सुधारकों को इन सबसे दूर रहना चाहिए। विडंबना यह है कि शहर तो सिनेमाघरों से अच्छादित थे ही अब गाँवों के पास भी उनका प्रसार होता जा रहा है। सम्भवतः सिनेमा घर बनाने में अमीर लोगों को नम्बर २ का पैसा लगाने की छूट सरकार ने दे रखी है। समाज का नैतिक पतन हो रहा है। समाज धन, धर्म दोनों से गिर रहा है।

एक समय ऐसा था कि परिवारों में एकता थी। गाँवों में समाज में एकता थी। सहकारिता थी। लेन-देन में धोखा धपाड़ी का नाम नहीं था। कर्जदार पैसा लौटाना अपना धर्म समझता था। कर्ज न लौटा सकने के कारण उसे मानसिक कष्ट होता था "दूसरे जन्म में किसी का धरता क्यों रहूँ ?" किन्तु आज झाँसा पट्टी देकर माल मार लेना, हड़प कर लेना स्वाभाविक गुण हो गया है। बड़े-छोटे के बीच पारस्परिक व्यवहार में सौजन्य था। बच्चे शीलवान होते थे। बड़े लोगों के सामने बैठने, हँसी मजाक करने का उन्हें साहस नहीं होता था। आवश्यकता पड़ने पर अथवा बुलाने पर वे आदरसूचक शब्दों सहित सम्मुख होते थे। बड़े भी अपने से छोटे को प्यार के शब्दों से सम्बोधित करते थे। आज की स्थिति इन परिपाटियों के बिल्कुल विपरीत दिखाई पड़ती है। आमने सामने बैठकर सिगरेट पीना, पान तम्बाकू खाना, संगी साथियों के साथ बड़ों के सामने हंसी ठट्ठा, गाली-गलौज करना सामान्य सा हो गया है विशेष कर पढ़े लिखे युवकों तथा युवतियों में ऐसे व्यवहार उग्रतर होते जा रहे हैं। एक विद्वान अमेरिका से दो-एक डिगरियाँ हासिल कर घर लौट रहे थे। बूढ़े पिताजी आह्लादित हो कुछ लोगों के साथ स्टेशन पर उनका आगत स्वागत करने गये। मुँह में सिगरेट का कश लेते साथियों से मिले। पिताजी पर नजर पड़ी झुक कर पाँव छूना तो दूर रहा "हलो मिस्टर राम....." कहते हाथ मिलाने बढ़े। पिताजी को यह तहजीब कहाँ मालूम। उन्हें आशा थी कि उनका पुत्र शिक्षित होकर शीलवान हो गया होगा। परन्तु ऐसे व्यवहार से उनका माथा ठनका होगा इसमें सन्देह नहीं। आधुनिक शिक्षा और तथा कथित सभ्यता का यह फल है। ऐसे अर्धशिक्षितों के व्यवहार से अन्य बच्चों पर बुरा असर पड़ता है, फिर समाज में सुस्थता कैसे आवे। इसके लिये अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठा जरूरी है किसी दूसरी संस्कृति एवं सभ्यता की नकल करने से दुखद परिणाम होता है। "स्वधर्मे निधनं श्रेयो पर धर्मो भयावहः"

इस परिवर्ती संसार में निरतंर उथल पुथल होती रहती है। कहा है:

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक की १२१ वीं जन्मतिथि पर सादर श्रद्धा-सुमन अर्पित :—

मोहन फरनीचर्स

अधिकृत विक्रेता

वाराणसी मण्डल

खीरा स्टील वर्क्स (प्रा०) लिमिटेड

बम्बई

जंगमबाड़ी

वाराणसी

सभी प्रकार की आकर्षक आलमारियों, पलंग, सोफा-सेट, आफिस-फनीचर्स

आदि के विक्रय का एकमात्र विश्वसनीय प्रतिष्ठान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते,
स जातो येन जातेन, याति वंश समुन्नतिम्।

मनुष्य का जन्म लेना और कालान्तर मृत होना निश्चित है किन्तु वही व्यक्ति मृत नहीं होता जो अपने वंश की, अपने समाज की दशा सुधारने में जीवन अर्पण कर देता है और उसी को सत्पुरुष कहते हैं। "ये के सत्पुरुषाः परार्थ घटकाः स्वार्थान् परित्यज ये"। स्वनाम धन्य बाल गंगाधर तिलक जी, महात्मा गांधी जी, महामना मालवीय जी ऐसे ही इस युग के महान् पुरुष हुए जिन्होंने समाज उत्थान के लिये अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। ईश्वरी सत्ता में पूर्ण आस्था रखकर अपने सदाचार से, सत्यनिष्ठा से अपनी कथनी-करनी में एकरुपता से समाज को सुस्थ बनाने की चेष्टा की और सफलता प्राप्त ली। उनका नाम व कीर्ति अजरअमर हो गई। भारत की गुलामी दूर हुई। राजनैतिक स्वराज मिला। 'तिलकजी' ने उद्घोष किया था कि "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है—Swaraj is our birth right" उसके लिए उनको अंग्रेज शासकों ने देश-निष्काशन की सजा दी और उन्हें आजीवन कारावास माण्डले द्वीप में भोगना पड़ा। किन्तु सत्पुरुष की वह वाणी आगे चलकर सत्य हुई। महात्मा गांधी तथा कांग्रेस के अन्य नेताओं के त्याग तपस्या से भारत स्वतंत्र हुआ।

३० वर्षों तक स्वतंत्र भारत पर शासन कांग्रेस सरकार ने किया, किन्तु देश की आर्थिक तथा सामाजिक दशा नहीं सुधरी वरन् बिगड़ती गई। राजनीतिक सत्ता पाकर देशवासी तथा शासक ईश्वरी सत्ता को भूलने लगे। भारत ऐसे आस्तिक भावना-प्रधान देश में नास्तिकता उपरिमूल हुई। घूसखोरी, चोरी, डाका, हत्या आदि घटनाएं बढ़ती गई जातिवाद, भाईभतीजावाद, का बोलबाला होता ही गया। गरीबों की गरीबी बढ़ती गई और अमीर अपनी पहुँच के बल तथा रुपये के बल पर अधिक सम्पन्न होते गये। 'जयप्रकाश' जी ने इन अनैतिक कारगुजारियों के विरोध में 'क्रान्ति' का शंख बजाया। जनता में कुछ चेतना आई। लोक नायक के नेतृत्व में जनता को उमड़ते देख कांग्रेस सरकार का तख्त डगमगाया। भयभीत कांग्रेस सरकार ने २५ जून, १९७५ को सारे देश में आपात स्थिति घोषित की। शीर्षस्थ नेताओं को जेल में बन्द कर दिया। समाचार पत्रों पर नियंत्रण लगाकर उन सभी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को जो कांग्रेस की नीति के पक्ष में नहीं थे और घोर अनीति के विरोधी समझे गये, कारागार की यातनाएं सहनी पड़ी। बाहर आपात स्थिति से लाभ उठाकर शासन कर्मचारी घोर अत्याचार करने लगे। जन संख्या वृद्धि रोकने के नाम पर जबरन नसबन्दियाँ की जाने लगीं जिससे किशोर अवस्था के बालक भी नहीं छूटे। पुरस्कार पाने की लालच में छोटे बड़े अफसरान नसबन्दियों की पूर्ति करने में क्या २ ज्यादतियाँ नहीं किये! भ्रूण हत्याएं, बलात्कार, सभी राक्षसी विधियों का उपयोग किये। कुर्सी कायम रखने के लिए कांग्रेस के संसद सदस्यों ने कायदे कानून मनमाने बदल दिये। भारत की गौरवपूर्ण शासन पद्धति में आमूल परिवर्तन कर न्याय का गला घोंटा गया। संसद तथा कुछ विधान-सभाओं की अवधि बढ़ा दी गई ताकि बौखलाई जनता को पूर्णरूप से अपंग कर दिया जाय।

प्रधानमंत्री ने स्वतंत्र एवं स्वपरिचालित दफ्तर खोल रखा था जो आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित था ताकि देश के किसी पक्ष की गति विधि का पता लगाया जा सके। किन्तु कर्म का फल अमिट होता है। ईश्वरीय सत्ता को घोर अन्याय का फल तत्काल देना था। "मति भ्रम मोर कि आन विशेषा" अभी संसद की अवधि एक वर्ष रह गई थी तथापि कांग्रेस की जीत सुनिश्चित समझ कर प्रधान मंत्री ने संसद चुनाव की घोषणा करवा दी। राजनैतिक बन्दी मुक्त कर दिये। अनैतिकता का फल मिला कांग्रेस अपदस्थ हुई। 'अत्युग्रपापपुण्यानामिहैव फलमश्नुते'। कारागार में जन्म लेकर हलधर चिन्ह वाली 'जनता पार्टी' दिल्लीतख्त पर आरूढ हुई।

वोट की लड़ाई में चार राजनीतिक दलों के संघटित होने के कारण जनता पार्टी की विजय हुई। इन दलों ने जनता पार्टी में सम्पूर्ण विलयन का संकल्प लिया था। सभी दलों के नेता स्वतंत्रता के सेनानी रहे हैं, त्यागी हैं, अनुभवी हैं और पूर्ण विलयन के समय अपनी अपनी पार्टियों का अस्तित्व मिटा चुके हैं किन्तु ऐसा स्पष्ट दीख रहा है कि सभी नेता निजी दल के विमोह में ग्रस्त है। विभिन्न दलों के कार्यकर्ता पद पाने के लालच में पड़े हैं। यदि दलगत स्वार्थ तथा व्यक्तिगत स्वार्थ की प्रधानता रही और त्याग तपस्या की भावना दूर रही तो फिर समाज सेवा, राष्ट्र सेवा का संकल्प जो जनता पार्टी ने लिया है कैसे पूरा हो सकेगा। कारण फूट, विरोध की वृद्धि होगी और आगे के फल का निर्णय कर्मानुसार वही ईश्वरी सत्ता ही देगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब तक हमने व्यक्ति और समाज की वर्तमान स्थिति पर विहंगम दृष्टि डाली है और संकेत किया है कि व्यक्ति के आचरण-व्यवहार का प्रभाव परिवार पर शासन-तंत्र पर और उत्तरोत्तर सम्पूर्ण समाज पर पड़ता है। समाज की सुस्थता के लिए समाज के सभी प्राणियों को शारीरिक तथा मानसिक दोनों रूप से सुस्थ होना है। प्रथमतः हमें स्वयं अपने को सुस्थ बनाना है।

मनुष्य अथवा मानव के आदि पुरुष वैवस्वत् मनु थे। महर्षि मनु ने 'मनुस्मृति' के द्वारा सामान्य एवं विशेष धर्मों का निरूपण मात्र के लिए किया है। मनु द्वारा प्रतिपादित विधान के अनुसार आचरण करने वाले ही 'मानव' कहे जाते हैं और उसी का पर्यायवाची शब्द 'मनुष्य' है। मानव में व्याप्त सहज गुण धर्म को 'मानवता' कहते हैं। आहार, निद्रा, भय, प्रजनन इत्यादि क्रियाएं तो मनुष्यों में पशुओं के समान होती हैं। मानवता ही वह विशेष धर्म है जो मनुष्यों को पशु से भिन्न करता है। मनु जी के बताये धर्म के दस गुण-धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह ही, विद्या, सत्य और अक्रोध, मानवता में समाहित हैं; इनके अनुसार आचरण करने वाला प्राणी सच्चा मानव होता है। उनमें दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, लोभ, मोह पिशुनता इत्यादि आसुरी दोष नहीं पाये जाते तुलसीदास जी के अनुसार उनके हृदय में स्वयं ब्रह्म प्रतिष्ठित होता है :

काम, कोह, मद, मान न मोहा
लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा
जिनके कपट, दम्भ नहिभाया, तिनके हृदय वसहु रघुराया।

वह दैवी गुणों से आभूषित होता है। मानवीय सिद्धान्त के अनुसार वह प्राणीमात्र के साथ समानता, निःस्वार्थ मैत्री, आत्मिक एकता और भ्रातृत्व की भावनाओं से ओतप्रोत रहता है और समष्टि हित के लिए प्रयास करता है। सब प्राणियों को समान दृष्टि से देखता है :

सबके प्रिय सबके हितकारी, दुखसुख सरिस प्रशंसा गारी।
कहहि सत्य प्रिय बचन विचारी, जागत सोवत शरण तुम्हारी।
जननी सम जानहिं पर नारी, धन पराव विषते विष भारी।
जे हरषहिं पर सम्पति देखी, दुखी होहिं पर विपति विसेखी।

उनकी समस्त मानसिक, वाचिक तथा कायिक क्रियायें विवेकपूर्ण होती हैं। वे सोच विचार कर बोलते हैं। उनकी वाणी मधुरता, प्रेम, आदर सम्मान से स्निग्ध होती है।

श्रूयतां धर्म सर्वस्वम् श्रुत्वा चाप्य वधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

हमें दूसरों के साथ वैसा व्यवहार कदापि नहीं करना चाहिये जैसा हम चाहते हैं कि दूसरे हमारे साथ न करें।

मानवता की पूर्ण व्याप्ति से ही मनुष्यों में सत्यं, शिवम् सुन्दरम् की प्रतिष्ठा होती है और वह पूर्ण मानव बन कर देश जाति, समाज राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण कर सकता है।

हमें पारस्परिक ईर्ष्या, डाह, द्वेष, मद मात्सर्य तथा स्वार्थपरता छोड़कर इन सहज मानव-धर्मों का पालन करके समाज को उपर उठाना चाहिये। इसी में जीवन की सार्थकता है।

विश्वभर की जातियाँ सब बढ़ी आगे जारहीं।
देखकर पीछे हमें उँगली उठा चेता रहीं।
कमर कसके दौड़ प्यारे साथ में मिल जाइये।
जाति की धर्मध्वजा को आप भी फहराइये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशीराज

ईश्वरशरणसिंह (भाईजी)

वाराणसी जिसकी राजधानी रही वह काशीराज महती शक्ति का, ऐश्वर्य का वीरता का प्रतीक रहा है। महाराज का हरहर महादेव के घोष से अभिनन्दन जनता करती रही है। ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएँ काशीराज से सम्बद्ध हैं। आदर्श और शिष्टाचार, विवेक तथा मर्यादा इस पुनीत राज्य के जन-मानस में रम गयी है। यहाँ के निवासी उच्च-विचार से ओत-प्रोत रहे हैं। बाबा-विश्वनाथ की नगरी का अकिंचनता ही धन है इस पर धनकुवेर भी मस्तक झुकाते हैं, यह महान् गौरव यहाँ प्राप्त है। काशीराज के शौर्य और पौरूष पर गम्भीर प्रहार सन् ११ सौ ईसवी में मुहम्मद गोरी द्वारा हुआ जब महाराज बनार पराजित हुए और काशी अपनी परम्पराओं में दीन बन गयी। चतुर शासकों ने गोरी, गुलाम, खिलजी, तुगलक, से यह लोदी, मुगलवंश के अंतिम दिन तक अनेक सुल्तान-बादशाहों ने धर्म की नगरी काशी में किसी को राजा रहने ही नहीं दिया और १७३९ तक काशीराज की महिमा कुंठित पड़ी रही। वह शुभ मंगल-मय दिन आया जब बाबू मंसाराम ने मुगल साम्राज्य में अवध के नवाब से अपने प्रवीण कुशल, दक्ष-पुत्र बलंवत सिंहजी को राजा की उपाधि से विभूषित कराकर गंगापुर (थिथरिया) में किला का निर्माण कर भाग्य का दरवाजा खोल दिया। राज्य सीमा का प्रसार करने में, शांतिसुव्य-वस्था में राज की गरिमा और कीर्ति की वृद्धि में महाराजा वलवंत सिंह लग गये और १७५० में रामनगर का किला निर्मित हुआ। कुछ ही दिनों में ख्याति के प्रसार से वीरता की धाक से सीमा पर हलचल मच गयी। दक्षिण में मराठा शक्तिशाली हो रहे थे। पूर्व में ईस्टइण्डिया कम्पनी और पश्चिम में नवाब अवध को काशीराज एक प्रश्न के रूप में दृष्टगोचर होने लगा—ज्ञातव्य है काशि राज के अन्तर्गत अजेय दुर्ग थे। पटीरा का किला जो आज अहरौरा बांध के मध्य में है। उनियार ५० फिट पानी रहता है ध्वस्त हालत में है। शतीशगढ़, विजयगढ़-अगोरी का किला नौगढ़ का दरी में प्राकृतिक किला राजदरी का पत्थर चट्टान है परन्तु सामारिक दृष्टि से सब से प्रमुख किला चुनार पर राजा ने ध्यान नहीं दिया था यहाँ महाराज भार्तृहारी भरथरी की समाधि है इससे उसे अपने अन्तरंग नहीं रखना चाहते थे इसी किला ने १७८१ से काशिराज पर साघांतिक चोट की थी महाराजा बलवंतसिंह का पहला शुभ विवाह पिण्डराकोट पर हुआ था और फूल कुंवर महारानी थी। इनसे एक लड़की पद्मा कुंवर थी और दूसरा बियाह शकलडीहा कोट पर हुआ था। जिसकी लोकोक्तियों, भाटों की संस्तुतियों, वंशपरम्परा के लोक-गीतों और किवंदतियों में उल्लेख है। रानी पन्ना कुंवर क्षत्राणी कन्या थीं और इन्हें—गंगा के किनारे शिवाला मुहल्ले में रहने के लिए एक भव्य रंगमहल बना था इनके पुत्र महाराजा चेतसिंह थे। उन्होने १५ वर्ष की अवस्था में गाजीपुर के भयंकर युद्ध में सेनापतित्व का कार्य सभाला और विजयश्री लेकर सूवेदार को परास्त किया १७७१ में महाराजा बलवंत सिंह के स्वर्गवास के बाद राजा चेतसिंह सेना और अधिकारियों की सहायता से राजगद्दी पर बैठे इनके प्रिय शासन में जनता अतीव प्रसन्न रही परन्तु आपसी कूट-चक्र एवं आभ्यन्तरिक उहा-पोह में बहुत समय लगाना पड़ा। इसी बीच १७८१ में वारेनहेस्टिंगज जो गवर्नरजेनरल था। इस्टइंडिया कम्पनी के मातहत काशी-राज को लाने की चाल चला। १७८१ में काशीराज पर चढ़ाई करके वाराणसी को आक्रान्त स्थिति में ला दिया। काशी की जनता ने बहुत ही विश्वास के साथ राजा का साथ देकर अंग्रेजी फौज को गली में घेर कर मार डाला वारेण हेस्टीगंज नाव के द्वारा छिप कर चुनार किला भागा। वहीं से सैन्य संघटन और संचालन करके रामनगर किला पर चढ़ाई की गयी जिसमें पुनः अंग्रेजी फौज ने मात खाई पर राजाचेत सिंह जिन्होंने अंग्रेजों से सुनियोजित विद्रोह किया था उन्हें सीमा के राजाओं की सहायता समय से न मिल सकी तो सुरक्षा की दृष्टि से विजयगढ़ किला मीरजापुर दक्षिणाञ्चल में रानी पठणा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुंवर राजमाता के साथ चले गये। इधर महाराजा बलवंतसिंह जी की पहली स्त्री के पुत्री के पुत्र राजामहीप नरायण सिंह जी को राजगद्दी प्रदान करके अंग्रेजों ने विजयगढ़ किला को घेर लिया। वहाँ पर अनेक प्रश्न आये सधि की कूट रचना करके राजमाता पन्ना कुंवर को अंग्रेजों ने पीड़ित किया और उसी समय ३०० उंट, बैल, घोड़े पर जहाँ जवाहरात और स्वर्णमुद्रा तथा आभूषण विजयागढ़ के विख्यात तालाब में फेंक कर अथाह जलाशय-पहाड़ चोटी पर से उतर कर अंग्रेजों को भयंकर युद्ध जारी करके राजाचेत सिंह ग्वालियर की तरफ चले गये। अंग्रेज उनका बालबांका न कर सके। राजाचेत सिंह वास्तव में सुनियोगजित विद्रोह के पणेता रहे हैं और इस्ट इण्डिया कम्पनी के विरुद्ध स्वतन्त्रता संग्राम प्रथम सेनानी रहे हैं। राजचेतारी ने १८१० में अंग्रेजों के षडयन्त्र करने में असफल होने के नाते विषपान कर इहलीला समाप्त कर दी।

काशी में १२१ वां जन्म दिवस समारोह भारत के महान सपूत लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का हम मनाने जा रहे हैं। जिन्होंने "स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" का उद्घोषाकिया। इस पुण्यपर्व पर काशी के वीर पुरुष स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम सेनानी राजाचेत सिंह के कर्तृत्वों पर ऐतिहासिक लेख का हम प्रथम प्रयास कर रहे हैं निकट भविष्य में "काशी राज" नामक पुस्तिका सेवा में भेंट करुँगा।

युगपुरुष तिलकजी के चरणों में बन्दना करता हूँ।

निगुरा कोट चन्दौली वाराणसी।

उचित मूल्य पर उपलब्ध सभी प्रकार के एलोपैथिक दवाओं के विश्वसनीय विक्रेता

गिरिजा फार्मेसी

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

युनिवर्सीटी रोड लंक वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi. Digitized by Sri Vidya Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्पावन ब्राह्मण

शोभनाथ सिंह

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः,
पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्याह्येताश्चतुर्दश ॥
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेत्यनुक्रमात्,
अर्थशास्त्रं परं तस्मात् विद्याह्यष्टादशस्मृताः ॥

(शि० पुराण वा० सं० १।२५-२६)

वैदिक एवं शास्त्रीय शब्द संपत्ति का वर्गीकरण अनेक प्रकार से उपलब्ध है तथापि उपर्युक्त वर्गीकरण अपेक्षाकृत अधिक सुस्पष्ट तथा मान जा सकता है। प्राचीनकाल से इस देश के ममुख विद्या के दो विक्रमशिला तथ्यशिला, नालंदा पुष्कारण्य (ओर छा) आदि में इन अट्ठारह विद्याओं का विधिवत अध्ययन-अध्यापन होता था। काशी तो मोक्ष भूमि रही है। कालांतर में दक्षिणात्यों ने इने विद्याकेंद्र भी बनाया जिसमें परशुराम सम्प्रदाय के नम्बदरीपायआद्यशंकराचार्य का विशेष योगदान रहा है। उनके बाद इस सम्प्रदाय की विधिन्न शाखाओं में से कोंकण्यध्य चित्पावनों ने भी इसे अपणी नेधावी बुद्धि से ओर भी पुष्ट किया। यहां 'वेदमूर्ति रामचंद्र शास्त्री रटाटे स्मृति ग्रंथ' पं० भाऊशास्त्री वझे लिखित मराठी इतिहास तथा अन्य पुस्तकों से केवल चित्पावनों का संक्षिप्त अंश प्रस्तुत किया जा रहा है।

समाज की विभिन्न दिशाओं में सभी दृष्टि से आरंभ से ही अपने को अग्रिम पंक्ति में रखने वाले चित्पावन ब्राह्मणों को कोंकणस्थ ब्राह्मण के नाम से भी जाना जाता है। ये दोनों मूलतः एक होने पर भी शाखा-भेद से किञ्चित भिन्न हैं ऋग्वेदान्तर्गत आश्वलायन कोकणस्थ तथा कृष्ण चतुर्वेदान्तर्गत तैत्तिरीय हिरण्यकेशी चित्पावन कहलाते हैं। इन्हें बचपन में ही पौराणिक एवं उपनयन पश्चात् वेद का व्यवस्थित संस्कार दिया जाता है। फलतः ये ज्ञान-विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में अपने मूल संस्कारों को नहीं भूलते। यहाँ विद्याओं का मूल वेद एवं वैदिक वाङ्मय की संक्षेप में प्रस्तुति स्वाभाविक है। चार वेद एवं उनकी ११३० शाखाओं का बहुत बड़ा विस्तार है। ऋग्वेद में मुख्यतः दश[1] ग्रन्थों को पढ़ने वाला वैदिक कहलाता था। क्रमपूर्वक विकृतियों[2] का पाठ करने वाला विशेष सत्कृत होता था, जटा और घनपाठी कम होते थे। विशेषतः महाराष्ट्र प्रदेश एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में यह समुदाय कोंकणस्थ नाम से ही लोकप्रिय है। कोंकण क्षेत्र के ही मूल निवासी होने के कारण यह नाम अधिक सुबोध और व्यवहृत है। पुणें की चित्पान सभा की ओर से प्रकाशित पत्रिका में चित्पावन का शुद्ध रूप क्षितिपावन लिखा गया है। क्षिति का अर्थ पृथ्वी होता है और इससे यह स्पष्ट है कि इस समुदाय के लोगों का भी कृषि से मुख्य सम्बन्ध रहा है और आज भी है।

चित्पावन ब्राह्मणों के इतिहास का अध्ययन किया जाय तो उसमे भारत के वैविध्यपूर्ण इतिहास की झांकी मिलेगी। ऋगादि अष्टादश विद्याओं में निष्णात क्या—इतिहास, क्या राजनीति, क्या धर्म और क्या विज्ञान सभी क्षेत्रों में इस समुदाय के ब्राह्मणों का गौरवपूर्ण स्थान रहा है और वर्तमान समय में भी यह

१—संहिता, ब्राह्मण और आरण्यकोपनिषद् शाखा कहलाती है। निरुक्त सूत्र (श्रौत-गृह्य-धर्म), अष्टाध्यायी और शिक्षा चतुष्टय—(शिक्षा, ज्यौतिष, छन्द निघण्टु) शिक्षा-कल्प (सूत्र) व्याकरण छन्द ज्योतिष और निरुक्त को वेदाङ्ग कहते हैं।

२—शिखा माला जटा रेखा ध्वज दण्ड रथ और घन। इनके भी अवान्तर भेद होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक-सेवा-केंद्र वाराणसी द्वारा

युगपुरुष तिलकजी के २१ वें जन्म दिवस पर आयोजित समारोह के प्रति हमारी

हार्दिक शुभकामनाएँ

फोन-दुकान—६२४७९;
फैक्ट्री—६६४३६;

निवास :—५४३४६

बनारस बैटरी वर्क्स

कम्पनी

परिवहन के साधनों की सक्षमता का प्रतीक-हिन्दको' बैटरी एवं प्लेटों के

निर्माता—

बैटरी Hindco

दुकान—एस १७।५४;

नदेसर; वाराणसी—१

फैक्ट्री—डी. १ इण्डस्ट्रियल एस्टेट

वाराणसी—२

बेहतर सेवा हमारा प्रमुख

लक्ष्य है।

Rajesh Mehta Chennai. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आलंकरण अक्षुण्ण बना हुआ है। "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" का मंत्र फूंकने वाले अतुलनीय युगपुरुष स्वर्गीय बाल गंगाधर तिलक के अतिरिक्त गोपालकृष्ण गोखले, महादेव गोविन्द रानडे, स्वातंत्र्य वीर-विनायक दामोदर सावरकर, महर्षि कर्वे, नरसिंह चिन्तामणि केलकर, प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता हरि नारायण आप्टे तथा बहुमुखी प्रतिभासंपन्न महामहोपाध्याय अभ्यंकर इसी समुदाय के ब्राह्मण थे जो अपने क्षेत्र के प्रकाशपुञ्ज रहे हैं तथा जो आज भी अद्वितीय समझे जाते हैं।

गोत्र और उपाधियाँ

चित्पावन ब्राह्मणों के १४ गोत्र होते हैं जो अत्रि, कपि, काश्यप, कौंडिण्य, कौशिक, गार्ग्य, जामदग्न्य, नित्युंदन, प्राभ्रव्य, भारद्वाज, वत्स, वासिष्ठ, विष्णुवृद्ध और शाण्डिल्य हैं। इनकी उपाधियाँ निम्नलिखित हैं।

अग्निहोत्री, अभ्यंकर, आखवे, आगरकर, आगलावे, आगाशे, आगिटकर आचवल, आचार्य, आचारी आठवले, आधिटकर, आपटे, आंबेकार, आमडेकर, उकिडवे, उपाध्ये, ओक, ओंकार, ओगले, ओलकर, कटके, कण्याचे, करंदीकर, करमरकर, करवीर, करवे, करंजे, काकतकर, काकेतकर, काणे, कातरणे, कानडे, कानिटकर कान्हेरे, कापशे, काफरेकर, कामाठी, कार्लेकर, काशीकर, काले, किडमिडे, किणकिणे, कुंटे, कुटुम्बे, कुटुंबले, केतकर, केलकर, कोन्हे, कोंकणे कोझरेकर, कोपरकर, कोल्हटकर खरे, खंगले, खंजणे, खानविलकर, खाडिलकर, खांबेटे, खासगीवाले, खुले, गणपुले, गद्रे, गागल, गांगल, गागलेकर, गारगेकर, गाडगिल, गांधारे, गानू, गोगटे, गोकटे, गोखले, गोडबोले, गोडसे, गोंधलेकर, गोरे, गोंवडे, गोले, घनबटकर, घांगरेकर, घांगुरडे, घाणेकर, घारपुरे, घारे, घुले घेघोल, घैसास, चक्रदेव, चाफेकर, चितले, चिपलू, णकर, चोलकर, छत्रे, जाईल, जामदार, जोग, जोगदेव, जोगदंड, जोशीलेकर, जोशी, झर्र, टकले, तिलक, टणे, टोले ठोसर, डोंगरे, डमडेरे, ताम्हनकर, तिरडे, तिरुके, तिवरेकर, तुलपुले, थत्ते, थोरात, दलाल, दर्वे, दांडेकर दातार, दातीर, दाते, दाबके, दामले, दामोदर, दारशेतकर दिवेकर, दुगुल, देव, देवल, देवघर, देशमुख, दोणकर, धामणकर, धारु, धारप, नगरकर, नखणे, नाईक, नातु, नामजोशी, नित्सुरे, नेकणे, नेथू, नेने, पटवर्धन पणदेव, पद्ये, परचुरे, परांजपे, पर्वते, पलणटिकट, पलूसकर पाऊलबुद्धे, पागे, पांगुल, पाटणकर, पाथेकर, पावगी, पावशे, पालकर पालंदे, पिटकर, पिंपलखरे, पेटे, पेठकर, पेंडसे, पोतदार पोंक्षे, फडके, फणसे, फणसूकर, फके, फाटक, फालके, बकालकर, बडे, बर्वे बर्वे, बाकलकर, बागुल, बांटे, बापट, बापये, बाम, बाल, बिवलकर, बेडेकर, बेलेकर, बेन्द्रे, बेहरे, बोडस, बोरकर, भट, भवाले, भस्मे, भागणे, भागवत, भाटे, गाडभोले, भाडझोके, भातखंडे, भानु, भोम, भावे, भिडे, भुसकुटे, भेंडे, भैख, भोगले, मटंगे, मंडलीक, मतुक, मधुमतें, मनोहर, मन्ये, मर्य्ये, मराठे, मरुकर, महावल, माईल, माखलकर, माटे, मायदेव, मायले, मालशे, मेहेंदले, मेठेकर, मोने, मोनटे, म्हसकर, रटाटे, रसाल, रहालकर, राजवाडे, राजमाथीकर, राणे, रानडे, रास्ते, रिसबुड, रेशमेकर, लागू, लंगोटे लचहं, लवाटे, लावेकर, लिमये, लेणे, लेले, लेलगे, लोंढे, लोणकर, वझे, वर्तक, वाटवे, वाड, वाडदेव, वालशे, विंझे, विध्वंस वेलणकर, वेहेलकर, विनोदे, वैद्य, वैशंपायन व्यास शारंगपाणि, शिंगरे, शित्रे, शिधये, शिघोरे, शिवणेकर शेंडे, शेंडे, शेरकर, शेलगे, शेवडे, शौचे, श्रीखंडे, सटकर सहस्र बुद्धे, साटे, साठ्ये, साडमानी, साने, साफले, सावरकर, सासते, सुकाडकर, सुकुणा, सुतारे, सुनाके, सोमण, सोहनी, स्वयंपाकी, हरबुडे, हसनवीस, हिरे, हुवे, हेर और हाले।

वेदाभ्यास के पांच प्रकारों—

वेदस्वीकरणं पूर्वं विचारोभ्यसनं जपः।
शिपेभ्यश्चैव तद्दानं वेदाभ्यासो हि पञ्चधा॥

में से इन विद्वानोंने वेदकण्ठस्थीकरण पर ही विशेष ध्यान दिया। शास्त्रों में भी विद्या के कण्ठस्थीकरण का ही विशेष महत्त्व प्रतिपादित है। वेद से सम्बद्ध श्रौत प्रकरण का भी अपना विशेष महत्व है। यज्ञों के माध्यम से मानो राष्ट्र और समाज के समस्त रीति-रिवाज और व्यवहार श्रौत में प्रायेगिक रूप में समझाये गये हैं। इससे वैदिक—धर्म, अर्थ नीति और शासन आदिपर भी प्रकाश पड़ता है। श्रौत-स्मार्त को सुस्पष्ट करने तथा वेदसम्बद्ध अन्य महत्वपूर्ण विषयों को सुलझाने के लिए भी इन विद्वानों ने प्रातिशाख्य, भाष्य आदि ग्रन्थों का भी पर्याप्त अध्ययन कर नये-नये मौलिक ग्रन्थों की भी रचना की हैं। जो गवेषणा कार्य कहा जा सकता है।

काशीके चित्पावनों का संक्षिप्त परिचय

अपने समय के भीष्मपितामह—दिनकर (अण्णा) जोशी सर्वोच्च कोटिके वैदिक विद्वान थे। आपके दो पुत्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देश को नवजागृति देने वाले महान् कर्मयोगी बाल गंगाधर तिलक

की १२१ वीं जन्मतिथि पर हार्दिक अभिनन्दनः—

कलकत्ता-आयरन-स्टोर्स

सभी प्रकार की लौह-वस्तुओं के डीलर तथा सप्लायर ।

समाज की लोहे सम्बन्धी वस्तुओं की मांग को पूर्ति हेतु सतत्

प्रयत्नशील ।

सी० ३०।३५; मलदहिया

वाराणसी ।

उत्तर-प्रदेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामकृष्ण तथा रामजी और शिष्य बाल दीक्षित काले प्रसिद्ध वैदिक थे। आहिताग्नि-बाल दी० काले ने गुरुपुत्रों सहित अनेक योग्य शिष्य तैयार किये। आप बड़े गुरुभक्त तथा महान पराक्रमी थे। पुत्र-सोमयाजी सोन दीक्षित क्रमान्ती थे। महाडकर—कृष्ण दी० जटापाठी तथा उत्तम याज्ञिक थे। आपके पुत्र दामोदर दी० क्रमान्ती तथा पौत्र दत्तात्रेय दी० वैयाकरण हैं। इसी परिवार के शम्भूजी उत्तम गायक हैं। फडके—यह परिवार प्रारम्भ से वैदिक रहा है। पेशवाओं ने जिन पांच उत्तम वेदमूर्तियों को १६ सौ अशर्फियों से पुरस्कृत किया था उनमें यह परिवार अग्रणी रहा है। रामकृष्ण दी० घनपाठी सुमधुर और सुस्पष्ट पाठ के लिए प्रसिद्ध थे। आपने पुणें में योग्य सम्मान प्राप्त किया था। आपके प्र० पुत्र विनायक दी० 'घन' तक के ज्ञाता थे। अन्य विद्या और कलाओं में भी रुचि थी। द्वि० पुत्र नारायण दी० दशग्रन्थ के साथ ध्रुपदिये भी थे। सीतारामदी० भी क्रमान्ती वैदिक थे। पुत्र चिन्तामणि वैदिक हैं। विनायक नारायण दी० जोशी क्रमान्ती थे। प्र० पुत्र वेणीमाधव दी० दशग्रन्थी थे। द्वि० पुत्र नारायण (बाळ) दी० उत्तम वैदिक हैं। पुराणिक—कृष्ण भट्ट क्रमन्ति तथा कर्मकाण्डी थे। पुत्र—राजाराम भट्ट भी वैदिक थे। इसी परिवार के नानाशास्त्री ने प्रतिवार्षिक पूजा-कथा संग्रह लिखकर प्रकाशित किया है। गोरे—रामकृष्ण भट्ट उत्तम वैदिक, कुण्डमण्डप के ज्ञाता थे। पुत्र भी दशग्रन्थी हैं। वैदिकभूषण-गोपाल भट्ट जटापाठी थे। दोनों पुत्र विद्वान हैं। देव-वामन गङ्गाधर उत्तम वैदिक थे। आपके पुण्यप्रभाव से प्र० पुत्र व्यवहारचतुर प्रदेश सरकार से सम्मानित डा० श्रीकृष्ण ऋग्वेद के योग्य विद्वान अन्य वेदों, श्रौत आदि में भी पैठ रखते हैं। व्युत्पन्न कर्मकाण्डी हैं। द्वि० पुत्र प्रदेश सरकार से सम्मानित डॉ० विश्वनाथ तो कुल मिलाकर इन १२१ वर्षों के एकमात्र व्यक्तिविशेष हैं। समाजसेवक, नगर सभासद श्री विश्वनाथ ने १६ वें वर्ष में ही घन पारायण कर अलौकिक ख्याति अर्जित की हैं। देवबन्धु का सम्पूर्ण परिवार ही सुशिक्षित है। पाटनकर-नारायण दीक्षित महान थे। सोनशास्त्री तथा विष्णु अण्णा वैदिक एवं शास्त्री थे। आठवले-गोपीनाथ भट्ट घन पारायणी थे। भ्राता-ढुण्डिराजशास्त्री ज्योतिषी थे। पुत्र रामचन्द्र ऋग् एवं अथर्व के ज्ञाता हैं। पौत्र भी विद्वान हैं। बेहेरे-ढुण्डिराज भट्ट उत्तम वैदिक थे। पुत्र-सोमनाथजी उत्तम ध्रुपदिये हैं। पटवर्धन-वैदिक महर्षि व्यङ्कटेश (भिकंभट) ने सैकड़ो शिष्य तैयार किये। पुत्र-अनन्तराम (बाबागुरु) ने भी पिता कि तरह डॉ० विश्वनाथ जैसे शिष्य तैयार किये। प्र० पुत्र-भाऊ शास्त्री ज्योतिषी, द्वि० पुत्र यशवन्त जटापाठी तथा अन्य भी योग्य हैं। केलकर-विष्णु भट्ट उत्तम वैदिक थे आपके पुत्र भी योग्य थे। पौत्र वैदिक है। वंश में दामोदर शास्त्री भी वैदिक तथा पैराणिक थे। नारायणशास्त्री पौराणिक हैं। हरिभाऊ गायक हैं। शङ्कर दामोदर न्यायाचार्य हैं। फाटक-जगन्नाथशास्त्री दशग्रन्थी, व्याकरण तथा कला कुशल हैं। अथर्ववेद के श्रेष्ठ विद्वान, चलते-फिरते पढ़ते रहना आपका स्वभाव है। भ्राता-नारायणशास्त्री पुराण एवं न्याय के विद्वान थे। डॉ० मधुकर नारायण व्याकरण के उत्तम विद्वान हैं। वैद्य-सखाराम भट्ट रटाटेजी के शिष्य थे, गाड़गीळ-शास्त्रीय परम्परा में यह वंश प्राचीनकाल से प्रसिद्ध रहा है। सपरिष्कार व्याकरण, न्याय, मीमांसा, तन्त्र आदि पर इस परिवार की ओर से पर्याप्त लेखन तथा उत्कृष्ट शिष्य परम्परा तैयार हुई है। सम्प्रति पण्डित शिरोमणि राजा-रामशास्त्री वेद, शास्त्र, अंग्रेजी, फारसी के योग्य विद्वान हैं। कार्लेकर-प्रसिद्ध विद्वान राजारामशास्त्री (अभ्यंकर) वेद एवं व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान थे। सर जान साहब ने आपको भारत-देशीय धर्मशास्त्र सम्मति दानार्थ तथा सर वेलेण्टाइनने काशी राजकीय महाविद्यालय के साङ्ख्य शास्त्राध्यापक पद पर प्रतिष्ठित किया था। राजारामशास्त्री बोडस तथा बालशास्त्री रानाडे (बाल सरस्वती) आपके ही शिष्य थे। सोमयाजी बाल सरस्वती की वेद एवं शास्त्रज्ञ होने की ख्याति विश्वविश्रुत है। आपने पण्डित परम्परा सुव्यवस्थित की। देवघर-श्रीकृष्ण भट्ट, लेले-आहिताग्नि वेणीमाधव (भिकू) दी० प्रसिद्ध वैदिक थे। ओक—राम दी० नारायण दी० माधव दी० (बाबा, अन्ध) उत्तम वैदिक थे। गोडबोले—इस वंश में हरभट्ट आदि अनेक पराक्रमी वैदिक हो गये हैं। अनन्तराम भट्ट वेद के साथ व्यायाम के महान आचार्य थे। आप मलखम्भ की कुछ नयी विधाओं के प्रवर्तक थे। आपका कोणभटगुर का अखाड़ा आज भी प्रसिद्ध है। देव—सोनूजी भी व्यायाम कला में प्रसिद्ध थे। पाळन्दे-नारायणशास्त्री क्रमान्ती, श्रौती तथा पौराणिक थे। पुत्र चिन्तामणि, गणेश तथा विश्वनाथ परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं। बापट—आद्या के महान उपासक बालकृष्णशास्त्री स्वशाखा के साथ साम (राणायणी) के उत्तम उद्गाता थे। वर्तमान सामग परम्परा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक सेवा केन्द्र का संघठन व्यापक हो

सेन्ट्रल-सेलटैक्स नं० वी० एन० ५३२२ दिनांक ३-५-७२ फोन : ६२ ६२

उत्तर प्रदेश इन्जीनियरिंग कम्पनी

* मशीनरी मर्चेन्ट *

डीलर—ज्योति मोटर स्टार्टर एवं मोनो ब्लाक सेट्स तथा मरकुरी रबर मिल्स का क्राम्पटन व ओरियन्ट रबर वेल्ट्स तथा सेवको ब्राण्ड आटा चक्की

स्टाकिस्ट—फेनर व्ही वेल्ट व डावर क्वालिटी आटा चक्की के पत्थर, पम्पिंग सेट इलेक्ट्रिक इक्युपमेन्ट, राइस हालर, हेयर बेल्ट, रबर वेल्ट, साफ्टीन, वालवेयरिंग, तेल मशीन, पाइप व पाइप फिटिंग, गन मेटल फिटिंग, टूल्स एवं हर प्रकार की मशीनों के पार्ट्स के प्रमुख विक्रेता

सी० के० ६१।४७ विभूति कटरा

काशीपुरा—वाराणसी।

ज्योति इलेक्ट्रिक मोटर ही हमेशा प्रयोग करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के आप ही एकमात्र आचार्य थे। इसी परिवार के गणेश (सोमनाथ) भट्ट कृष्णयजु, साम तथा श्रौत के योग्य विद्वान हैं। प्रदेश सरकार से सम्मानित हैं। भ्राता सदाशिव शास्त्री उत्तम ज्यौतिषी हैं। लेले—गङ्गाधरभट्ट उत्तम वैदिक थे। परशुरामभट्ट वैदिक हैं। पुत्र-मधुकर आकाशवाणी में हैं। वैशम्पायन, दाते तथा शिधोरे-परिवारों में अनेक उत्तम वैदिक थे। उक्तपरिवारों में आज भी विद्वान पुत्र हैं। देव—म०म० बापूदेवशास्त्री सी, आई० ई० ज्यौतिष गणित के उद्भट विद्वान थे। आपने 'पञ्चाङ्ग' भी चलाया। पटवर्धन—म० म० तात्या शास्त्री व्याकरण के उद्भट विद्वान थे। अनेक ग्रन्थ लिखे। आप के वंश में अन्य विषयों के भी विद्वान हुए हैं। काशीनाथ शास्त्री, श्री कृष्ण शास्त्री पौराणिक थे। रघुनाथशास्त्री उत्तम सितार वादक थे। पुत्र—वीरेश्वर भी सितारवादक हैं। फडके—गणपत राव अपने समय के गान-वाद्य की अनेक विधाओं के सर्वश्रेष्ठ जानकार थे। हार-मोनिय, जलतरङ्ग में तो सिद्धहस्त थे। फोटोग्राफी, चित्रकला के भी शौकीन थे। सम्प्रति बालकृष्ण विश्वनाथ भी उच्चशिक्षा प्राप्त कर गीतवाद्य का अध्यापन कर रहे हैं। वीरेश्वर शास्त्री भुस्कुटे उत्तम सितारिये थे। विश्वनाथ राव थथ्थे तबलिये हैं।

रामकृष्ण (तात्या) केलकर योग्य वैदिक एवं श्रोती होते हुए 'टप्पा' गान के लिए प्रसिद्ध थे। रटाटे—पं० विनायक शास्त्री प्राचीन पौराणिको में सर्वाग्रणी रहे। पेशवा के विशेष आग्रह पर अनेक शर्तों के साथ आपने पुराण सुनाया। प्र० पुत्र गोपाल शास्त्री पुराण, व्याकरण एवं साहित्य के विद्वान थे। आपने घरेलू बाल पाठशाला भी चलायी थी। चातुर्मास्ययाजी रामचन्द्र श्री कृष्ण ने बाल दी० से क्रमान्त ऋग्वेद पढ़कर क्रमशः यजु, साम, तथा अथर्व तन्त्र का भी अध्ययन किया था। अथर्व-वेदोद्धारक रटाटे जी ने सैकडों छात्रों को पढ़ाया। एकाद को छोड़ वर्तमान अथर्व परम्परा के आप ही एकमात्र आचार्य थे। वृद्धावस्था में आप वा० सं० वि० वि० के सम्मानित प्राध्यापक पदपर नियुक्त किये गये। आप के सम्मान में 'वे० मू० रामचन्द्र शास्त्री रटाटे स्मृति ग्रन्थ' का प्रकाशन हुआ है। आपने सभी पुत्रों को समान रूप से अथर्ववेद पढ़ाया। प्र० पु० ढुण्ढिराज अथर्व के साथ ही अन्य विद्या-कला के भी ज्ञाता थे। द्वि० पुत्र नारायण वेदाध्यापक हैं। तृ० पुत्र विनायक बाल्यावस्था से प्रव-ञ्चित होते हुए भी वेद, पुराणोतिहास, सङ्गीत, ज्यौतिष आदि के अध्यवसायी हैं। प्रदेश सरकार से सम्मानित आपका वैदिक राजनीति पर 'शोध प्रबन्ध' प्रस्तुत है। अनेक लेख तथा पुस्तकें प्रकाशित हैं। च० पुत्र श्रीकृष्ण चित्रकार हैं। डा० जर्नादन गङ्गाधर प्रतिभाशाली व्युत्पन्न, विनम्र विद्वान हैं। उत्तम कवि हैं। पुस्तके प्रकाशित हैं। नेने—पं० गोपाल शास्त्री व्याकरण, धर्मशास्त्र के उत्तम विद्वान थे। पुस्तकें लिखी हैं। आप के अनेक योग्य शिक्षत पुत्र हैं। इस परिवार में अनेक उत्तम वैदिक थे डोंगरे—डॉ० नारायण गोपाल प्रतिभासम्पन्न विद्वान हैं। समाज से वी हैं। भागवत—पं० विनायक गणेश पुराण, संगीत आदि के साथ विशिष्ट कीर्तनकार थे। प्र० पुत्र रामचन्द्र शास्त्री उत्तम कीर्तनकार थे। द्वि० पुत्र श्रीकृष्ण संगीतज्ञ हैं। बेलावादन में विशेष योग्यता है। आपके सभी पुत्र प्रतिभाशाली हैं।

भावे—रामचन्द्र बुआ देशप्रसिद्ध ध्रुपदिये थे। संगीत की सभी विधाओं में पारङ्गत थे। आप के पिता कीर्तन-कार थे। दातार-बालशास्त्री उत्तम पौराणिक थे। माधव शास्त्री, रामशास्त्री भी पौराणिक थे। विश्वनाथ रामशास्त्री पुराण के साथ न्यायशास्त्र के विद्वान है। अनुज—नारायण शास्त्री उत्तम वैदिक हैं। वझे—म० म० भाऊ शास्त्री वेदान्त पुराण के उत्कृष्ट प्रवचनकर्ता थे। पुस्तकें लिखी हैं। पुत्र—रामचन्द्र शास्त्री भी उत्तम विद्वान थे। फडके—वेद, व्याकरण, मीमांसा, वेदान्त तथा पुराणेति-हास के उद्भट विद्वान पण्डित अनन्त शास्त्री महान हो गये हैं। वा० सं० वि० वि० में लम्बे समयतक अध्यापन कर पश्चात आपने पुत्रों के सहयोग से अमेरिका, जर्मनि आदि देशों में लगभग २६ डाक विद्यालय चलाये। नरउर में अखिल भारतीय ब्रह्मर्षि सम्मेलन के आप अध्यक्ष रहे। अनेक ग्रन्थों के लेखन, सम्पादन के साथ 'हिन्दू संस्कार' सम्बन्धी अन्तिम ग्रन्थ, जो विश्वहिन्दू परिषद के लिए है आप की अमर कृतियां हैं। आप के सभी पुत्र उच्च शिक्षा के साथ विशेष योग्यता के लिए प्रसिद्ध हैं। प्र० पु० नारायण चित्रकार, द्वि पु० डॉ० हरि (कुरुक्षेत्र) तृ० पु० माधव पुराणेतिहास, साहित्य आदि के व्युत्पन्न विद्वान् हैं (गोरखपुर) बापट—राजाराम शास्त्री पुराण, के विद्वान हैं। आपके पुत्र योग्य हैं।

जोगलेकर—वकालत में सर्वश्रेष्ठ गोविन्द काशीनाथ सुप्रसिद्ध थे। आप के सभी पुत्र अत्यन्त योग्य, विद्वान हैं। भावे, थथ्थे प्रभृति भी वकील हैं। नारायण राव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान परशुराम तिलक सेवा केन्द्र को शक्तिशाली एवं सम्पन्न बनावें

सप्रेम भेंट :

टेलिफोन { कार्यालय : ९५७१९
स्टोरेज—बाबतपुर : २६

श्री हरिहर कोल्ड स्टोरेज

आधुनिक यन्त्रों से सुसज्जित तथा थर्मोकोल द्वारा निर्मित आलू के सुरक्षा का एक मात्र स्थान

स्टोरेज :—
बाबतपुर, बसनी मार्ग
वाराणसी।

कार्यालय :—
एस. २१–११६, एफ. १
परेड कोठी, कैन्ट, वाराणसी

Rajguru Math, Shri Kashi Vishwanath Temple Trust/Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महियाल ब्राह्मण

मेहता जितेन्द्र कृष्ण वैद

भगवान परशुराम जी महाराज ही ऐसे पहले अवतार थे जिन्होंने आदर्शों के लिए ब्राह्मणों को युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया। वस्तुतः आपसे ही ब्राह्मण समुदाय में युद्ध करने की योग्यता आयी, इसलिए महियाल शाखा का प्रारंभ अति प्राचीन माना जाता है। वे भगवान परशुराम ही थे जिसने काल और काम को जीता।

महियाल शब्द महि आल से बना है जिसका अर्थ होता है पृथ्वी के मालिक, या मोहान आल से बना है जिसके माने हैं दुश्मनों के मुँह के सामने रहने वाले। जिसका अपभ्रंश महियाल हो गया।

महियाल हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि अरब, मध्य एशिया, अफगानिस्तान, ईरान तथा चीन तक फैले हुए हैं। इन्होंने अपने जमाने में बहुत सी लड़ाईयाँ लड़ी और हर जगह विजय पायी। प्राचीन काल में अधिकांश राजा महियाल ही थे तथा अन्य राजाओं के शासन काल में भी महियालों को एक विशेष स्थान प्राप्त था। इतिहास भी इस बात का गवाह है कि अंग्रेजी शासन में महियालों को सेना में एक विशेष स्थान प्राप्त था और आज भी भारतीय सेना में और दूसरे क्षेत्रों में महियाल सब से आगे हैं।

इनकी सात उपाधियाँ होती हैं जो लव, भूमवाल, मोहन, वेद, दत्त, बाली, छिब्बर हैं। इनके गोत्र ऋषि, धनवन्तरि, कौशिक, वशिष्ठ, कश्यप, भारद्वाज, पराशर और भृगु हैं। इनकी टाइटिल रायजादा, बख्शी, मेहता, दीवान, चौधरी, और भाई वगैरह हैं, मुसलमानों के शासन में इनको खान, सुल्तान अलंकरणों से सम्मानित किया जाता था। ये गोत्र बिहार एवं उत्तर प्रदेश में त्यागियों, भूमिहार ब्राह्मणों में, महाराष्ट्र में चितपावनों में, केरल में नम्बूदरी ब्राह्मणों में भी पाये जाते हैं, समुदाय की एकता का यह भी एक प्रमुख कारण है।

[अध्यक्ष भूमिहार ब्राह्मण समाज
डीजल लोकोमोटिव वर्क्स
मडुवाडीह, वाराणसी]।

[पृ० ४३ का शेष]

बापट, वि० पु० किल्लेदार, केशवराव भावे चित्रकार हैं। दामले—महाराष्ट्र के राजाओं के पुरोहित इस वंश में विविध प्रकार के व्यक्ति हुए हैं। जगन्नाथ चिन्तामणि बनारसी कपड़े के व्यापारी थे। पुत्र—चन्द्रशेखर पैतृक व्यापार को और वृद्धिंगत कर रहे हैं। स्वदेश में प्रथम तथा विश्व में सप्तम स्थान पर सम्मानित 'एक्यु अरी' के ज्ञाता, 'जेड' अक्षर के विचारक सदाशिव चिन्तामणि भू० पू० वित्तसचिव महाराष्ट्र सरकार, की बुद्धिप्रखरता अविस्मरणीय रहेगी। भालचन्द्र चिन्तामणि उत्तम गायक हैं। पुत्र भी योग्य है। नारायण व्यङ्कटेश पत्रकार हैं।

जोशी—डॉ० नीलकण्ठ पुरुषोत्तम पुरातत्व के विशिष्ट ज्ञाता हैं साथ ही दर्शन-संगीत-कीर्तन के भी शौकीन है। पुत्र विद्वान है। लेले—राजाराम भट्ट वैदिक होने के बावजूद उद्योग में प्रवृत्त हुए। आपने देश में सर्व प्रथम कलावत्तू में विशेष योग्यता अर्जित कर तत्कालीन शासन से 'राय बहादुर' उपाधि पायी। आप के दो योग्य पुत्र थे। सम्प्रति आप के पौत्र साहित्य, सङ्गीत, विज्ञान आदि में विशेष योग्यता अर्जित कर कुछ विदेश तथा स्वदेश में उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हैं। विद्याधर राव ने हीरे को छेदने में योग्यता अर्जित की है। गङ्गाधर शास्त्रीने पुराणेतिहास आदि अनेक विद्याएं पढ़ी है। गतवर्ष आपको 'योग्य परिवार सञ्चालन' हेतु 'तत्त्व चर्चा' की ओर से सम्मानित किया गया। म्हसकर—ज्योतिष प्रकाश प्रेस के संस्थापक पं० बालकृष्ण शास्त्री बड़े ही विनम्र तथा योग्य थे। 'गणेश आपा' का पञ्चाङ्ग आप के ही यहां से निकलता है। आप के विद्वान पुत्र नारायण राव परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं। पावगी, गोडसे, एवं चितले जी मुद्रण कार्य में प्रसिद्ध रहे हैं। भैया सोहोनी बनारसी साड़ी के व्यापारी थे। खाडिलकर—भैरव बापू व्यवसायी थे। आपका 'माहेश्वर तेल' प्रसिद्ध है। रामकृष्ण रघुनाथ प्रसिद्ध पत्रकार थे। 'आज' में अनेक वर्ष तक अग्र लेख लिखा है। विदेश भ्रमण कर ख्याति अर्जित की। पुस्तकें लिखी है। वसन्त रघुनाथ व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्ता। मनोहर रामकृष्ण योग्य पत्रकार हैं। बापट—क्रान्तिकार रामचन्द्र नरहरि ने अनेक वर्ष तक 'आज' में अग्रलेख लिखकर देश और समाज की सेवा की है।

चिकित्सकों में विश्वनाथ झर्र, डॉ० पटवर्धन, डॉ० घाणेकर, डॉ० नाना पाटनकर प्रभृति प्रसिद्ध हैं।

[उक्त सूची उपलब्ध तात्कालिक सामग्री के आधार पर तैयार की गयी है। जो नाम छूट गये हों उनके लिए लेखक क्षमाप्रार्थी है।]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक सेवाकेन्द्र को सुसंघटित करें

सेन्ट्रल सेल टैक्स नं० वी० एन० ५३५० दिनांक १५-२-७२

यू० पी० सेल टैक्स नं० वी० एन० ५७५ दिनांक १५-२-७२

उत्तर प्रदेश मशीनरी कम्पनी

—: मशीनरी मर्चेन्ट :—

अधिकृत विक्रेता—ज्योति, जी० ई० सी, सिमेन्स इलेक्ट्रीक मोटर व स्टार्टर एवं कूपर फील्ड मार्सल महेन्द्रा डीजल इञ्जन व पम्पसेट वोल्ट टाइम राजस्थान आटा चक्की—

स्टाकिस्ट—फेनर वी वेल्ट व डावर क्वालिटी आटा चक्की के पत्थर, पम्पिंग सेट, इलेक्ट्रिक इक्युपमेन्ट, राइस हालर, ह्वेयर वेल्ट, रबर वेल्ट, साफ्टीन, बालवेरिंग, तेल मशीन, पाइप व पाइप फिटिंग, गन मेटल फिटिंग, टूल्स एवं हर प्रकार की मशीनों के पार्ट्स के प्रमुख विक्रेता।

जी. टी. रोड गोपीगंज, वाराणसी

ज्योति इलेक्ट्रिक मोटर ही हमेशा प्रयोग करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Varanasi.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षि समुदाय और सार्वदेशिकता

खगेन्द्र प्रताप शाही

ब्रह्मर्षि समुदाय वस्तुतः विभिन्न नामों से लोकप्रिय उन ब्राह्मणों का समूह वाची नाम है जो भगवान् परशुराम को अपना मूल पुरुष मानते हैं तथा कृषि जीवी होते हैं। यह समुदाय हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तथा आसाम और पश्चिम बंगाल से लेकर महाराष्ट्र, गुजरात तक फैला हुआ है। महाराष्ट्र में इस समुदाय के लोगों को चित्पावन (कोंकणस्थ), गुजरात में अनाविले, पंजाब कश्मीर में महियाल, राजस्थान में पुष्कर्ण, मध्यप्रदेश में जुझौतिया, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में त्यागी, पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार में भूमिहार, केरल में नम्बूदरी, उड़ीसा में अदनुआं तथा पश्चिम बंगाल में ठाकुर, मौमिक, पश्चिमा और जमीनदार ब्राह्मण कहा जाता है।

स्वर्णिम अतीत

ब्रह्मर्षि समुदाय का इतिहास लिखा जाय तो निस्संदेह वह पूरे भारत वर्ष का इतिहास हो जायेगा और इतिहास भी कोई दो चार सौ वर्षों का इतिहास नहीं, डेढ़ दो हजार वर्षों का। विदेशी इतिहासकारों ने "विश्व विजेता" कहकर जिस सिकन्दर को अबतक का सबसे महान् योद्धा बताया है उसे एक नहीं अनेक बार पराजित करने वाला राजा पुरु (पोरस) इसी समुदाय का रहा है। राजा पुरु महियाल ब्राह्मण था जिसके बारे में अब निर्विवाद रूप से यह स्वीकार किया जाने लगा है कि वह सिकन्दर से कभी पराजित नहीं हुआ था। यह विदेशी इतिहास नेताओं की कारामात् है कि सिकन्दर को विश्व विजयी सिद्ध करने के लिए उन लोगों ने एक सफेद झूठ को सत्य मानने हेतु हमें विवश किया। उस समुदाय की अन्य हस्तियों में राजा दाहिर का नाम आज भी बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। राजा दाहिर भी महियाल ब्राह्मण रहा है। शंकराचार्य की कीर्ति जग जाहिर है। नम्बूदरी ब्राह्मण कुलोत्पन्न शंकराचार्य ने सावन के मेघ की भांति आच्छादित बौद्ध धर्म का मूलोच्छेदन कर देश में वैदिक धर्म की पुनः स्थापना की तथा हिन्दू धर्म को बहुत बड़े संकट से उबार लिया। चाणक्य ब्रह्मर्षि समुदाय का ऐसा गौरवशाली नीतिवेत्ता राजशास्त्र वेत्ता हो गया है जिसकी व्यवस्थाओं के बारे में आज तक उंगली उठाने का कोई साहस नहीं कर सका है। लगभग दो सौ वर्षों के भीतर इस समुदाय ने देश के विभिन्न भागों में ऐसे महापुरुष दिये हैं जिन्होंने भारत की संस्कृति, साहित्य, राजनीति, समाज व्यवस्था की यश सुरभि की वृद्धि करने के साथ-साथ देश की अखंडता की रक्षा की और स्वतंत्रता संग्राम में कुशल नेतृत्व प्रदान किया। बाल गंगाधर तिलक का योगदान सर्वोपरि रहा है जिन्होंने "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" का नारा देकर देश में जागरण, सामर्थ्य और संकल्प का मंत्र फूंका। स्वतंत्रता के लिए जूझने वाले, जीवन को उत्सर्ग कर देने वाले वीरों, स्वातंत्र्य सेनानियों ने इस नारे को स्वतंत्रता संघर्ष के बीजमंत्र के रूप में ग्रहण किया। जो आजादी की लड़ाई में सफलता का मूल कारण बना। गोपाल कृष्ण गोखले स्वतंत्रता संग्राम में सफल नेतृत्व करने वाले अन्यतम व्यक्ति थे। इस सरणी में महादेव गोविन्द रानडे, नरसिंह चिन्तामणि केलकर, विनायक दामोदर सावरकर के नाम लिये जा सकते हैं। संगीत की दिशा में भी इस समुदाय के लोगों ने अतुलनीय स्तर स्थिर किया है। इस सन्दर्भ में स्वर्गीय डी. वी. पलुस्कर, विनायक राव पटवर्द्धन तथा संगीत की नयी विधा बनाने वाले भातखंडे के नाम विशेष उल्लेख्य हैं। ये सभी चित्पावन ब्राह्मण थे। प्रसिद्ध वायलिन वादक श्री वी. जी. जोग तथा संगीतज्ञ श्री राम मराठे की गणना वर्तमान युग के मूर्धन्य कलाकारों में होती है। स्वातंत्र्य संग्राम के अप्रतिम सेनानियों में भाई परमानन्द का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। वे महियाल ब्राह्मण थे। जुझौतिया ब्राह्मणों में पंडित मदन मोहन मालवीय के स्तर को अभी तक कोई स्पर्श नहीं कर सका है। देश को स्वतंत्रता दिलाने में महामना मालवीय ने बहुमूल्य योगदान दिया ही, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना उनकी एक ऐसी यशस्वी कीर्ति है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसका दूसरा उदाहरण आज तक नहीं मिल सका है। हिन्दी भाषा और साहित्य के उन्नयन, संवर्द्धन में स्वर्गीय कामता प्रसाद गुरु (जुझौतिया) और पद्मसिंह शर्मा (त्यागी) के अवदानों को नहीं भुलाया जा सकता। दोनों ही व्यक्ति हिन्दी भाषा साहित्य के प्रतिष्ठापक समझे जाते हैं। सहजानन्द सरस्वती देश के उन गिने चुने विद्वानों में हो गये हैं जिनके कई ग्रन्थ कर्मकांड और इतिहास की अत्यन्त उपादेय सामग्री माने जाते हैं। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर (पश्चिम बंगाल के ठाकुर समुदाय के अनमोल रत्न) को भारत ही नहीं विश्व स्तर का अत्यन्त समादृत साहित्यकार माना जाता है। राष्ट्र-कवि रामधारी सिंह "दिनकर", रामवृक्ष बेनीपुरी, उपन्यास-कार ना. सी. फड़के, इतिहासकार हरिनारायण आपटे पुराणोतिहास आचार्य पंडित अनन्त शास्त्री फड़के इसी समुदाय के जाज्वल्यमान्य नक्षत्र रहे हैं जो भारतीय साहित्य के इतिहास में सदैव आदर के साथ स्मरण किये जायेंगे। राजनीति क्षेत्र के अन्यतम उल्लेख्य व्यक्तियों में स्वर्गीय डाक्टर श्रीकृष्ण सिंह का नाम इस दृष्टि से सबसे पहले लिया जायेगा कि वे सबसे लम्बे समय तक (२४ वर्ष) बिहार प्रदेश के मुख्य मंत्री रह चुके थे। अपने देश के किसी भी राज्य में अबतक यह गौरव किसी अन्य मुख्य मंत्री को नहीं प्राप्त हो सका है। इस क्षेत्र के अन्य स्वर्गीय व्यक्तियों में बाल गंगाधर खेर (तत्कालीन बम्बई प्रदेश के मुख्य मंत्री) महेश प्रसाद सिंह (भूतपूर्व उद्योग, परिवहन मंत्री-बिहार) बी. एन. दातार (भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री) के नाम उल्लेख्य हैं। राजनीति क्षेत्र के ही राष्ट्रीय स्तर के अन्य नेताओं में स्वर्गीय शंकरराव देव, महादेव देसाई, भूलाभाई देसाई (अनाविले ब्राह्मण) सर गणेश दत्त सिंह के नाम इतिहास में आदर के साथ सुरक्षित हैं।

गौरव पूर्ण वर्तमान

ब्रह्मर्षि समुदाय का वर्तमान स्वर्णिम अतीत की ही भाँति गौरवपूर्ण एवं सुखद बना हुआ है। इस श्रृंखला में सबसे पहले आचार्य विनोबा भावे का नाम लेना होगा जिनके कर्तृत्वों, समाज सेवाओं का अन्तर राष्ट्रीय स्तर पर मूल्यांकन हुआ है। भारत के प्रधान मन्त्री श्री मोरारजी देसाई (अनाविल) इसी समुदाय के ऐसे रत्न हैं जिनपर कोई भी गौरव कर सकता है। ब्रह्मर्षि समुदाय के अन्य उल्लेखनीय व्यक्तियों में जननेता एवं केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री राजनारायण, भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री महावीर त्यागी, भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री आर० के० खडिलकर भूतपूर्व केन्द्रीय विधि मन्त्री श्री एम० आर० गोखले पंजाब के भूतपूर्व राज्यपाल श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंह, श्री श्यामनन्दन मिश्र, श्रीमती तारकेश्वरी सिंह, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, डाक्टर भाई महावीर, श्री गंगाशरण सिंह, श्री दांडेकर, श्री योगेन्द्र शर्मा, श्री शीलभद्र याजी प्रभृति व्यक्तियों की सेवाओं, राष्ट्रउपासनाओं के बारे में विशेष परिचय की आवश्यकता नहीं। तिलक जन्म तिथि का शुभारंभ कर रहे जन नेता तथा भूतपूर्व संसदसदस्य, भूतपूर्व मन्त्री (बिहार) श्री कृष्णकान्त सिंह जी ने समुदाय के उत्थान हेतु यथासामर्थ जो कुछ कार्य किया है या कर रहे हैं उनका विशेष मूल्य है। प्रारंभ से ही आप समाजहित के कार्य में मनसा वाचा कर्मणा रुचि लेते आ रहे हैं और आगे भी यह क्रम जारी रखने को बद्ध परिकर हैं। उत्तर प्रदेश के विद्युत मन्त्री श्री रवीन्द्र किशोर शाही, लघुउद्योग राज्यमन्त्री श्री रेवतीरमण प्रसाद सिंह भूमिहार ब्राह्मण समुदाय के संभ्रान्त एवं गौरवशाली परिवारों के व्यक्ति हैं जिनके ब्रह्मर्षि समुदाय में सादर के साथ नाम लिये जाते हैं। लोकसभा के सदस्य श्री ओम-प्रकाश त्यागी, उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व कृषि मन्त्री श्री गेंदा सिंह, भूतपूर्व राज्य मन्त्री श्री रामायण राय, श्री राजबिहारी सिंह, विधान परिषद के भूतपूर्व सदस्य श्री ईश्वरशरण सिंह, भूतपूर्व संसदसदस्य डाक्टर रघुनाथ सिंह विधायक श्री रामजन्म राय, श्री रामअधार राय, श्री विक्रमा राय, संसद सदस्य श्री गौरी शंकर राय, प्रसिद्ध नेता श्री एन० जी गोरे, उनकी पत्नी श्रीमती गोरे, श्री मधु लिमये, श्री एस० एम० जोशी, बिहार के वित्त मन्त्री, श्री कैलाशपति मिश्र, मन्त्री श्री कपिलदेव सिंह, भूतपूर्व मन्त्री श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही, श्री रामाश्रय प्रसाद सिंह श्रमिक नेता श्री बसावन सिंह, राज्यसभा के सदस्य श्री इन्द्रदीप सिंह के नाम यशस्वी जनसेवा के लिए सदैव आदर के साथ लिये जाते रहेंगे। प्रसिद्ध विद्वान डाक्टर एस० बी० सोहनी का नाम देश में ही नहीं विदेश में भी उजागर है। उद्योग, व्यवसाय, कृषि, शिक्षा, संगीत साहित्य, पत्रकारिता, कुश्ती राजकीय सेवाओं तथा सेना में भी इस समुदाय के लोग अपनी कार्य कुशलता, बुद्धि प्रखरता से समाज का मस्तक ऊंचा कर रहे हैं जिन्हें देखते हुए निश्चय के साथ यह कहा जा सकता है कि इस समुदाय के लोग भविष्य में भी अपनी यशस्वी कीर्ति अक्षुण्ण बनाये रखेंगे।

सूर्य निकेतन
पूर्वी रथयात्रा चौराहा, वाराणसी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर चाहिये

शक्तिनारायण सिंह

ब्रह्मर्षि समुदाय समाज की सभी दिशाओं में आरंभ से ही अग्रसारिता की अपनी कीर्ति स्थापित करता आ रहा है भले ही वह दिशा जनसेवा की हो, शिक्षा की हो, राजनीति, इतिहास, साहित्य, संस्कृति विज्ञान की हो अथवा संगीत, कला तथा कुश्ती की हो किन्तु आत्मचेतना की दिशा में यह समुदाय देश के किसी भी समुदाय से पीछे है। संभव है यह उदासीनता अथवा पिछड़ापन उसकी विशालहृदयता की दृष्टि से सराहा जाय, अवश्य ही राष्ट्रोपासना अथवा "मानिय सकल राम के नाते" के आदर्श की दृष्टि से यह स्तुत्य है भी किन्तु स्व अस्तित्व की रक्षा के विचार से आत्मचेतना का अभाव वस्तुतः घोर अभाव अत्यन्त चिन्त्य है। जिस समुदाय ने सहस्त्राधिक वर्षों से सभी स्तरों पर राष्ट्र की सेवा की है, उसकी अखंडता की रक्षा की है, वैदिक धर्म की पुनः स्थापना की है, साहित्य, इतिहास, विज्ञान, वाङ्मय राजनीति के स्तरोन्नयन में अपने को सदैव उत्सर्ग किया है उसकी अस्तित्व-रक्षा उपर्युक्त सभी दृष्टि से परमावश्यक है। यह कहना आपत्तिजनक नहीं होना चाहिये कि देश का कोई भी अन्य समुदाय राष्ट्र का, राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का उतना सजग प्रहरी, नहीं है जितना ब्रह्मर्षि समुदाय। इस समुदाय ने राष्ट्र चिन्तना की है, लोक कल्याण के लिए प्राणों तक की बाजी लगा देने की अपनी अतुलनीय परम्परा कायम रखी है लेकिन अपने समुदाय की अस्तित्व रक्षा की ओर अत्यल्प ध्यान दिया है जो प्रायः शून्य के बराबर है।

आलोच्य पहलू

इस समुदाय के लोगों में अब तक जो भी व्यक्ति सामर्थ्यवान बना है, महान बना है, महान बनकर अनेक प्रकार से समाज की सेवा की है उसका श्रेय उसके अपने बुद्धिबल, योग्यता तथा पात्रता को है न कि समुदाय को। यह सही है कि योग्य व्यक्ति के लिए दूसरे का अवलंबन सापेक्ष नहीं हुआ करता, जो योग्य है, मेधावी है अथवा जिसमें समाज की सेवा करने की सामर्थ्य है वह तो दूसरों को स्वतः पीछे छोड़कर आगे बढ़ेगा किन्तु कभी कभी प्रतिभावान बालक साधन अथवा किसी संरक्षण के अभाव में आगे नहीं बढ़ पाते और कुंठा के शिकार हो जाते हैं। इस समुदाय में ऐसी प्रतिभाओं का बाहुल्य देखा जाता है कि जिन्हें किसी प्रकार का समुदाय गत संरक्षण नहीं प्राप्त होता। इस समुदाय का कोई केन्द्रीय सामाजिक संघटन न होना एक ऐसा अभाव है जिसकी ओर सबसे पहले ध्यान जाता है। समुदाय के विभिन्न घटकों की कुछ इकाइयां यत्र तत्र अवश्य बनती बिगड़ती रहती है पर समुदाय कल्याण की दृष्टि से इस प्रकार के संघटनों का कोई खास अर्थ नहीं होता। कहीं कोई संघटन बना तो जिला स्तर पर, कोई क्षेत्रीय स्तर पर अथवा बहुत हुआ तो कुछ संघटनों ने अखिल भारतीय मंच होने का दावा कर दिया लेकिन पूछा जाय कि काम क्या हुआ, समुदाय की सेवा क्या हुई तो उत्तर नकारात्मक या यों कहिये कि शून्य के सिवा कुछ नहीं होगा। इस समुदाय की कोई भी इकाई, कोई भी संघटन-शाखा यह कहने का गौरव नहीं ले सकती कि उसने किसी योग्य प्रतिभा को बढ़ावा दिया है, किसी जरूरत मंद परिवार अथवा व्यक्ति की मदद की है, किसी निर्धन मेधावी छात्र को वृत्ति दी है, किसी बे-सहारे को सहारा देकर उसका भविष्य बना संवार दिया है। समुदाय के कुछ उपकारी सम्पन्न व्यक्तियों, नेताओं ने व्यक्तिगत रूप से यह सब भले ही किया हो, अपना कोई संघटन इस प्रकार का दावा तो नहीं ही कर सकता। यह विशेषण लज्जा करने का है अथवा गौरव करने का इसका निर्णय समुदाय के लोगों को ही करना है। इकाइयाँ बनती है, संघटन बनते है, नियमावलियां स्वीकृत हो जाती हैं, लम्बे चौड़े स्मृति पत्र, घोषणा पत्र तैयार होते हैं, कुछ कार्य-क्रमों की भी घोषणा कर दी जाती है किन्तु परिणाम कुछ नहीं निकलता है। किसी संघटन का अस्तित्व साल दो साल होता है, कोई एकाध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समारोह अथवा अधिवेशन भी करा लेता है अथवा बहुत हुआ तो किसी ने कोई स्मारिका अथवा वर्ष दो वर्ष तक पत्रिका निकाल दी लेकिन गाड़ी इससे आगे नहीं बढ़ पाती, अपने समुदाय के पिछले ६०-७० वर्षों का इतिहास यह कटु सत्य कहने को विवश करता है। यह स्थिति अति दुखद है, इस पर समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति को विचार करना है और इसका समाधान प्राप्त करना है। समय आ गया है जब अपनी अस्तित्व रक्षा के लिए, आदर्शों मूल्यों की रक्षा के लिए इस समुदाय को सभी भेदभाव और अहमियत भुलाकर एक केन्द्रीय सामाजिक संघटन की अतिशीघ्र स्थापना कर लेनी चाहिये। सभी जिलों, प्रदेशों में समुदाय चिन्ता में निमग्न व्यक्तियों की कमी नहीं है, आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे व्यक्ति सक्रिय हों और केन्द्रीय संघटन का महत्व समझते हुए, उसे मूर्त रूप देने का प्रयास करें। पूना में चित्पावन सभा, दिल्ली और पंजाब में महियाल ब्राह्मणों के एकाधिक मंच, गुजरात, राजस्थान में क्रमशः अनाविले, पुष्कर्णे और नम्बूदरी ब्राह्मणों की इकाइयां, उत्तर प्रदेश, बिहार में भूमिहार ब्राह्मणों के कई संघटन किसी न किसी रूप में जीवित हैं जिनका एकीकरण कर एक भारतीय संघटन बना लेने की आवश्यकता है। ब्रह्मर्षि महासभा के तत्त्वावाधान में वर्ष १९७० में गया में संपन्न अखिल भारतीय अधिवेशन हुआ था जिसमें अध्यक्ष पद से श्री महावीर त्यागी ने इस प्रकार के संघटन की आवश्यकता पर बल दिया था। अधिवेशन के शुभारंभकर्त्ता, डाक्टर सूर्य प्रकाश पुरी, स्वागताध्यक्ष स्वर्गीय रुक्मिणीरमण प्रसाद सिंह, कृष्णकान्त सिंह ब्रह्मर्षि सेवा समिति के अध्यक्ष स्व० सूर्य नारायण सिंह, संयोजक संघटन के महामंत्री श्री राजकुमार प्रसाद नारायण सिंह, प्रसिद्ध स्वातंत्र्य सेनानी एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री रामचन्द्र नरहर बापट तथा स्वामी हरिनारायणानन्द जी ने जोरदार ढंग से अभिलाषित संघटन की बात उठायी थी और तत्सम्बन्धी कुछ कार्यक्रम भी स्थिर किये गये थे। किन्तु अबतक उक्त 'महान्' कार्यक्रम का कागजी अस्तित्व समाप्त नहीं हो सका। ऐसी कौन सी बाध आयी और कौन सा तत्त्व इसमें बाधक बना यह प्रश्न किससे किया जाय और इसका उत्तर कौन देगा।

सेवा का आदेश देकर निश्चिन्त हो जायं

ट्रेडस को०

कैलाश भवन लंका वाराणसी २२१००५

निर्माता एवं सप्लायर्स

वैज्ञानिक उपकरण, कांच के सामान, रसायन और दवाएं,
इंजीनियरिंग की वस्तुएं तथा लोहे के सामान।

तिलक सेवा केन्द्र के आयोजन—तिलक जन्मतिथि समारोह एवं बन्धु मिलन
गोष्ठी की सफलता की कामनाओं सहित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्तर प्रान्तीय अयाचक ब्राह्मण परिचित व संघठित हों

प्रतापनारायण सिंह

समाज सम्बन्धी भारतीय कल्पनानुरूप जिस प्रकार मानव शरीर के मस्तक, बाहु आदि शरीर के विभिन्न अवयव समस्त शरीर के परस्पर अग है उसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य युक्त समाज की चातुर्वर्ण्य व्यवस्था पूर्णतः परस्पर पूरक है। इस स्थिति के बावजूद जिस प्रकार शरीर में मस्तक का स्थान सर्वोपरि है उसी प्रकार समाज में ब्राह्मणों का स्थान सर्वोपरि है। ब्राह्मणों में भी अयाचक ब्राह्मणों का भारतीय समाज में अनोखा स्थान है और ये भारत के सभी राज्यों में फैले हुए हैं। ये अयाचक ब्राह्मण अपनी आजीविका के लिए मुख्यतः कृषि कार्य करते आये हैं और वे दान आदि नही लेते रहे हैं। इसी कारण वे अयाचक कहलाते हैं। इनका मुख्य कार्य मनन, चिन्तन पठन पाठन एवं समाज में आनेवाली विकृतियों के प्रति सजग रहना रहा है। इस वर्ग के ब्राह्मणों ने जब-जब और जहाँ जहाँ समाज में उल्लेखनीय खराबियाँ आयी है, व्यक्तिगत रूप में स्थानीय अथवा देश के विभिन्न भागों से एकत्र होकर सामूहिक एवं संघठित रूप में ऐतिहासिक दृष्टि से उल्लेखनीय कार्य किये हैं। इतिहास इनके वास्तविक स्वरूप एवं इसके योगदान के सम्बन्ध में चाहे सुस्पष्ट प्रकाश नहीं डालता हो किन्तु भारतीय इतिहास को इस दृष्टि से देखने से सारी बातें पर्याप्त स्पष्ट हो जाती हैं।

देश के विभिन्न भागों में रहने वाले ये अयाचक ब्राह्मण स्थानीय अथवा प्रांतीय रूप में कहीं भूमिहार, कही चित्पावन कहीं, महियाल, कहीं अनाविल, कहीं नम्बूदरी, कहीं जझौतिया कहीं अदुनुआ, तो कहीं जमींदार ब्राह्मण कहलाते हैं। यद्यपि सबकी प्रवृत्ति में अत्यधिक साम्य है फिर भी देश की विशालता एवं भौगोलिक दूरी के कारण वे सामान्यतः परस्पर अपरिचित से ही हैं किन्तु राष्ट्रीय स्तर पर जब जब भी समाज के लिए अथवा राष्ट्र के लिए किसी प्रकार का संकट पैदा हुआ इस वर्ग के ब्राह्मण स्थानीय रूप में एवं राष्ट्रीय रूप में सक्रिय हुए हैं। अब जब यातायात के एवं वार्ताविहन के साधनों की प्रचुरता के कारण सारा देश एक हो चुका है एव देश के विभिन्न भागों में रहने वाले इस समुदाय के लोग एक दूसरे से परिचित होने जा रहें है मूलभूत प्रवृत्ति, आदर्श एवं कार्य परम्परा के साम्य के कारण इन सब का परस्पर परिचित होकर निकट आना ही नहीं एक देशव्यापी समान शील वाले समुदाय के रूप में संघटित होने का मार्ग भी प्रशस्त हो रहा है। यह पूरा समुदाय इस प्रकार परस्पर प्रकृतिगत साम्य से परिचित होकर सामूहिक रूप में पुनः सक्रिय होकर वर्तमान समाज की उल्लेखनीय विकृतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इसके लिए यह नितांन्त आवश्यक है कि देश के विभिन्न भागों में व्याप्त अयाचक ब्राह्मणों के पृथक-पृथक नामों से पहचाने जाने वाले ये वर्ग राष्ट्रव्यापी समुदाय का रूप ग्रहण करें।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक काशी में

डाक्टर रघुनाथ सिंह

एक समय था। सभा में जाना अंग्रेजी सरकार की शत्रुता मोल लेना था। उस समय मैं ९ वर्ष का था। घर में राजनीति का प्रवेश सन् १८८८ ई० में ही हो गया था। सन् १९०५ से जेल यात्रा भी आरम्भ हो गयी थी। अतएव मैं भी टाउनहाल पहुँचा। भी तीन या चार से अधिक नहीं थी। एक छोटा टेबुल चौकी पर रखा था। उसीपर दो कुर्सियाँ रखी थी। एकपर श्री लोकमान्य तिलक तथा दूसरी पर खापर्डेजी बैठे थे।

खापर्डेजी बड़ी पगड़ी बांधते थे अतएव वे आकर्षण के केन्द्र थे। तिलकजी मराठी पगड़ी, धोती, मिरजयी तथा मराठी चप्पल पहने थे। खापर्डेजी कुछ हिन्दी जानते थे। उन्होंने व्यंगात्मक भाषण दिया। लोग हंसने लगे। तिलकजी ने लगभग ५ मिनटतक हिन्दी में बोलने का प्रयास किया। परंतु बोल न सके। अंग्रेजी वे धारा प्रवाह बोलते गये। मुझे आजतक एक ही शब्द अच्छी तरह स्मरण है कि आन्दोलन करो। अन्दोलन पर वे बहुत जोर दे रहे थे।

डा० भगवानदास के पुत्र स्वर्गीय चन्द्रभालजी ने उनदिनों बी०ए० पास किया था। वे चौकी के एक कोने पर टेबुल के पास बैठे थे। उन्होंने भाषण का हिन्दी में अनुवाद किया।

तिलकजी के उत्साह, उनकी शैली तथा भारतीय वेशभूषा से काशी की जनता बहुत प्रभावित हुई थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समुदाय के विशिष्ट महानुभाव

राजा त्रिविक्रमनारायण सिंह

'मानस' की एक चौपाई है—मिलत एक दारुण दुख देहीं, बिछुरत एक प्राण हर लेहीं, राजा साहब के सम्बन्ध में चौपाई का पूर्वार्द्ध शत प्रतिशत चरितार्थ होता है, आपके सम्बन्ध में परोक्षरूप से जो कोई कुछ सुनता है वह आप से एक बार अवश्य मिलना चाहता है और जो एक बार मिल लेता है वह बार-बार मिलना चाहता है। वस्तुतः आपके व्यक्तित्व में एक साथ ऐसे अनेक गुणों का समन्वय है जो मनुष्य को सच्चे अर्थ में मनुष्य कहे जाने के लिए आवश्यक होते हैं। सौजन्य, शील, विनय, मृदु भाषिता और संवेदन शीलता आप के आचरण के, दैनंदिन व्यवहार के ऐसे पहलू हैं जो किसी भी व्यक्ति को आकृष्ट किये बिना नहीं रहते। ऊंचे स्तर की निःस्वार्थ समाज सेवा राजा साहब की हाबी है और आपकी इस विशेषता ने देश के मूर्धन्य राजनेताओं को प्रभावित किया है। अपने पिता स्वर्गीय राजा केदारनारायण सिंह की ही भांति राष्ट्र के लिए कल्याणकारी कार्यों के साथ-साथ आप बचपन से ही ब्रह्मर्षि समुदाय के उत्थान में विशेष रुचि रखते हैं तथा उस दिशा में किये जाने वाले किसी भी प्रयास में आपका अग्रगण्य योगदान प्राप्त होता है। फरवरी सन् १९६८ में आयोजित अखिल भारतीय ब्रह्मर्षि समुदाय सम्मेलन में स्वागताध्यक्ष के रूप में आपने जो उद्बोधन किया वह आज भी इस समुदाय के लिए प्रकाश स्तंभ है। सन् १९७२ में गठित तिलक सेवा केन्द्र के आप लगातार चार वर्ष तक अध्यक्ष रहे हैं तथा आप के अध्यक्षता काल में युग पुरुष तिलक की जन्मतिथि मनाने की यशस्वी परम्परा आरंभ हुई। तिलक सेवा केन्द्र के तत्वावधान में गत वर्ष दिसम्बर में वृहन्महाराष्ट्र सम्मेलन के अवसर पर आपने अपने राज प्रासाद (औसानगंज) में बाहर से आये प्रतिनिधियों के सम्मानार्थ उद्यान गोष्ठी का आयोजन किया जिसमें नगर के गणमान्य नागरिक सम्मिलित हुए। इस अनूठे आयोजन की देश के अनेक पत्रों में चर्चा हुई जो ब्रह्मर्षि समुदाय के लिए वस्तुतः गौरव की बात है।

राजा साहब चित्पावन शाखा के ब्राह्मण हैं तथा आप के पूर्वज लगभग १ हजार वर्ष पूर्व बीजापुर जिले से यहां आये थे।

डाक्टर रघुनाथ सिंह,

पी० एच–डी० डी० लिट्०

गौतम गोत्रीय डाक्टर रघुनाथ सिंह अखिल भारतीय स्तर के लोकप्रिय कांग्रेस-नेता रहे हैं तथा अब आप जनता पार्टी के वरिष्ठ कर्णधारों में है। आपने १९५२ से १९६७ तक लगातार तीन बार लोकसभा में वाराणसी नगर तथा जिले के पश्चिमी अंचल का सफलता एवं लोकप्रियता के साथ प्रतिनिधित्व किया है। राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य के लिए अपने आपको उत्सर्ग कर देने वाले व्यक्तियों में आप सबसे आगे रहे हैं तथा १९२१, १९२६, १९३०, १९३२, १९४० और १९४२ में आपने जेल यात्रा की। कई वर्ष तक आप जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में लोक सेवा कर अपनी अपूर्व क्षमता का परिचय दे चुके हैं। आपका दैनंदिन जीवन सादगी, ईमानदारी तथा आडम्बर-हीनता का प्रतीक है तथा सामान्य से लेकर विशिष्ट वर्ग के लोगों में आरंभ से ही आपके प्रति आदर निष्ठा बनी हुई है। डाक्टर रघुनाथ सिंह जी प्रभावशाली वक्ता होने के साथ-साथ उच्चकोटि के लेखक भी हैं तथा आपने कई खोजपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। आपके ग्रन्थों की संख्या काफी है जिनमें धर्मशास्त्र, राजनीति, इतिहास आदि विषय मुख्य रूप से प्रतिपादित हैं।

आपके लेख दैनिक "आज" और दैनिक "हिन्दुस्तान" सहित देश के मूर्धन्य पत्रों में समय-समय पर प्रकाशित हुए हैं। लोकसभा में दिये गये आपके अनेक भाषणों की आज भी आदरपूर्वक चर्चा होती है। डाक्टर रघुनाथसिंह जी हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के चेयरमैन, मझगांव डक (बम्बई), तथा यूनाइटेड कामर्शियल बैंक के संचालक तथा राष्ट्रीय नव परिवहन के सदस्य रह चुके हैं।

श्री जगदीश नारायण सिंह (बच्चा बाबू)

भूमिहार ब्राह्मण समुदाय के प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न श्री जगदीश नारायण सिंह जी बड़े मृदुभाषी, सुशील और विनम्र व्यक्ति हैं। देश के मूर्धन्य विद्वानों, राजनेताओं, समाजसेवियों एवं साहित्य-कारों से निकटता और साहचर्य आपकी पारिवारिक विशेषता है। आपकी इस प्रकार की अतुलनीय यश सुरभि से केवल अपना समुदाय ही नहीं उद्योग व्यवसाय के क्षेत्र की गौरव वृद्धि हुई है। समाज-वाद के अनुपमेय चिन्तक-प्रणेता स्वर्गीय आचार्य नरेन्द्रदेव के साथ आपका परिवार के व्यक्ति जैसा सम्पर्क रहा है। फैजाबाद जिला में आपका प्रमुख उद्योग होने के कारण डाक्टर लोहिया जी के अत्यन्त निकट होने का भी आपको गौरव प्राप्त रहा है। वाराणसी में आने वाले किसी भी विशिष्ट व्यक्ति के लिए आपका आवास स्थान लक्ष्मी निवास सच्चे अर्थों में मिलन केन्द्र सिद्ध होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक सेवा केन्द्र अपने उद्देश्यपूर्ति में सफल हो
समुदाय का मार्ग दर्शन करे, मेरी हार्दिक शुभ कामनायें

डॉ० रघुनाथ सिंह

⊙

परशुराम, चाणक्य, पोरस, शंकराचार्य, तिलक
मदनमोहन मालवीय, रविन्द्र नाथ ठाकुर

से

प्रेरणा लेकर उनके पथ पर चलने वाले
समुदायों के सदस्यों

तिलक सेवा केन्द्र

वाराणसी

को

वाराणसी एवं पूरा उत्तर-प्रदेश तथा भारत के प्रत्येक राज्य में
उसका विस्तार कर राष्ट्रव्यापी संघटन का रूप प्रदान करें,
अपने परिवार वालो को, परिचितों को सदस्य बनायें
समुदाय के प्रत्येक कार्यों को पूरी जानकारी
केन्द्र के कार्यालय को भेजें

केन्द्र को साधन सम्पन्न एवं शक्तिशाली बनायें

कार्यालय-डी० १७/१२१ दशाश्वमेध
वा रा ण सी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक सेवा केन्द्र को लोकमान्य तिलक जन्म तिथि
समारोह के आयोजकों को
हार्दिक बधाइयाँ

श्री होजियरी इन्टरप्राइजेज

होजरी थान, सिंकर एवं इन्टरलाक
तथा
गंजी, मंजुश्री, रैना, जेसी
एवं गुड्डू के
निर्माता

पता : लक्ष्मी निवास, चेतगंज
वाराणसी

टेलीफोन : 63596

आवरण : खण्डेलवाल प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स, मानमन्दिर - वाराणसी (फोन ६४४३३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.